THE PROSODY OF *PIṄGALA*

(A Treatise of Vedic and Sanskrit Metrics with applications of Vedic Mathematics)

(*With Hindi & English Translation*)

Largely based on *Halāyudha Bhaṭṭa's* Commentary with rationale in terms of modern mathematics of pratyayas

Translated by

Dr. Kapil Deva Dvivedi
Dr. Shyam Lal Singh

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN, VARANASI

Foreword

Piṅgala Nāga's Chandaḥ Sūtram is an important text in the history of ideas that is of significance both to scholars of prosody and mathematics. My own interest in it arose from research in the classification of the Vedic metres, for which it is the earliest source, and from the study of history of combinatorics and number representation.

We do not know if *Piṅgala* was only systematizing an already established body of knowledge or if he was the originator of it. If we accept the latter of these two propositions, then there is no doubt that the *Meru Prastāra* and other series expansions and the representation of binary numbers and their mapping into decimal numbers are two landmarks in mathematical thought for which *Piṅgala* deserves to be counted as an immortal in the history of ideas. In an article several years ago in the Bhandarkar Oriental Research Institute (Vol. 81, 2000, pp. 269-272), I argued that in addition to these two contributions, the *Kaṭapayādi* notation, which was widely used in India for word representation of numbers for centuries, also had its origin in *Piṅgala's* mapping for versefeet.

We are in the midst of a profound change in our understanding of the Indian sciences. It is emerging that Indian mathematics, astronomy and medicine have been much more influencial outside India than was believed untill recently. The influence of Indian sciences to the East through the agency of missionaries and traders is well known; now, it is becoming clear that the influence towards the West may have started as early as the second

millennium BC through the intermediary Indic kingdoms, such as that of the Mitannis, that were spread as far as Syria, and networks of traders and artists. In this transmission process, *Piṅgala's* work may be as significant as that of the better known *Paṅini*, who was his elder brother if the testimony of *Ṣaḍguru-śiṣya*, the author of *Vedārtha Dīpikā*, is to be believed. *Piṅgala's Chandaḥ Sūtra* is to combinatorics, sequence and number theory and metres what *Pāṇini's Aṣṭādhyāyī* is to grammer, linguistics and formal system theory. *Pāṇini* and *Piṅgala*, themselves, were at the end of a long series of *Ṛṣis* and scholars who created the extensive Vedic sciences that covered not only the science of the Self (*ātmavidyā)* in the *Saṁhitās, Brāmhaṅas* and the *Upniṣads*, but also the subsidiary sciences of *Vedāṅgas, Upvedas, Darśanas*, and the many specialized *Sāstras*. The Indian sciences are not disconnected fragments of observation and analysis; underlying them is a unique cosmology and vision, which is of enduring relevance to our modern age.

In recent centuries, Indian students of prosody and metres have primarily depended on *Kedāra Bhaṭṭa's Vṛtta Ratnākara*. Although this text suffices for the classification of the metres of the Vedic and the classical literature, *Piṅgala's Chandaḥ Sūtra* remains of paramount importance for a deeper understanding of the subject to appreciate the earlier sources of the tradition in the *Brāmhaṅas*. It is for this reason that I am very pleased that Professor Kapil Dev Dvivedi, a well known scholar of the Vedas, and Professor Shyam Lal Singh, formerly head of the mathematics department and Principal of Sciences at Gurukula Kangri University, have combined their

formidable scholarship to give a new translation of the *Piṅgala's sūtras* in Hindi and English. Their book provides an introduction to the text, translation by word, and contextual meaning of each *sūtra.*

Given the worldwide upsurge of interest in the Indian sciences and the arts, this translation by Dvivedi and Singh fulfils an important need. The new translation will make the *Chandaḥ Sūtra* accessible to new generations of scholars of music, prosody and mathematics. It will also make it easier for scientists and the laypersons to know more about the subject, which will open new doors of entry into Indian sciences and wisdom and provide endless hours of pleasure.

Subhash Kak
Donald C. and Elaine T. Delaune
Distinguished Professor of Electrical Engineering
and Professor of Asian Studies
Louisiana State University
Baton Rouge, Louisiana, U.S.A.

December 5, 2006

विषयानुक्रमणी
CONTENTS

टिप्पणी : सविस्तार विषय-सूची आगे है ।

Note : A detailed index for Hindi readers follows.

छन्दःसूत्रम्

विषयानुक्रमणी

Roman Transliteration of Devanāgari

VOWELS

Short :	अ	इ	उ	ऋ	ऌ	(and ळ)	
	a	i	u	ṛ	ḷ		
Long :	आ	ई	ऊ	ए	ओ	ऐ	औ
	ā	ī	ū	e	o	ai	au

Anusvāra : ं = ṁ

Visarga : ः = ḥ

Non-aspirant : ऽ = s

CONSONANTS

Classified :	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
	k	kh	g	gh	ṅ
	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
	c	ch	j	jh	ñ
	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
	ṭ	ṭh	ḍ	ḍh	ṇ
	त्	थ्	द्	ध्	न्
	t	th	d	dh	n
	प्	फ्	ब्	भ्	म्
	p	ph	b	bh	m

Un-Classified :	य्	र्	ल्	व्	श्	ष्	स्	ह्
	y	r	l	v	ś	ṣ	s	h

Compound :	क्ष्	त्र्	ज्ञ्
	kṣ	tr	jñ

प्राक्कथन

छन्द शब्द सीमित और विराट् रूप में विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है। सीमित रूप में यह पद्य-बन्ध का द्योतक है। छन्द भावों को गेय रूप निर्धारित वर्णों या मात्राओं के आधार पर प्रदान करता है। विराट् रूप में इसका अभिप्राय है छन्द शब्द जीवन या जीवनी शक्ति, देने वाला, आनन्दवर्धक या आधारभूत पदार्थ है। छन्द का अभिप्राय आच्छादन, विचारों या भावों को मूर्त रूप देना है। वेदांगों के छः अंगों में छन्द भी एक है। छन्द को वेद ब्रह्म का पैर माना जाता है। ऐतरेय ब्राह्मण में छन्द-शास्त्र का प्रारम्भ प्राप्त होता है। आचार्य पिंगल प्रारम्भ के आचार्यों में हैं। पिंगल का छन्दःसूत्र वैदिक और लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों का प्रामाणिक ग्रन्थ है। पिंगल की भाषा सूत्रात्मक होने से दुर्बोध है। अतः इस पर भाष्य की आवश्यकता पड़ी। इस पर अनेक विद्वानों ने भाष्य लिखे। लिखे गए भाष्य संस्कृत भाषा में हैं। हिन्दी और अंग्रेजी में इन भाष्यों का भी अनुवाद नहीं हुआ है। पिंगल ने छन्दःसूत्र ग्रन्थ में अनेक गणितीय सूत्रों का प्रयोग किया है। उन रहस्यों का भी उद्घाटन इस ग्रन्थ में किया गया है।

हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में अनुवाद व्याख्या की योजना विषय को स्पष्ट करने के लिए बनायी गयी। हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद में पिंगल के गणितीय ज्ञान के रहस्यों को भी स्पष्ट किया गया है। पिंगल ने गणितशास्त्र को भी समृद्ध किया है।

प्रस्तुत संस्करण की विशेषताएं

सरलता और स्पष्टता के लिए निम्नलिखित विधि अपनाई गई है-

१. सूत्रों के प्रत्येक पद को स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम शब्दार्थ दिया गया है।

२. हिन्दी अर्थ में सूत्र का वास्तविक अर्थ दिया गया है।

३. अंग्रेजी जानने वालों की सुविधा के लिए English Translation दिया गया है।

४. उसके बाद संबद्ध छन्द का उदाहरण दिया गया है। साथ ही निर्देश दिया गया है कि कितने पाद का वह छन्द है और प्रत्येक पाद में कितने अक्षर हैं।

५. लौकिक छन्दों के उदाहरणों में लघु-गुरु के चिह्न और गणों के नाम भी दिए गए हैं।

६. टिप्पणी में सभी आवश्यक विषय स्पष्ट किया गया है। 'सूचना' और 'विशेष' शब्दों के द्वारा यथास्थान आवश्यक निर्देश दिए गए हैं।

७. प्रस्तार-विधि इस ग्रन्थ की मुख्य विशेषता है। प्रस्तार-विधि का विस्तृत विवेचन किया गया है। प्रस्तार के भेदों की विस्तृत व्याख्या सोदाहरण दी गई है।

८. खंड २ में प्रस्तार विधि की वैज्ञानिक विशेषता वर्तमान गणितशास्त्र (Modern Mathematics) के अनुसार विस्तार से दी गई है। यह खंड गणितशास्त्र के विद्वानों के लिए अधिक उपयोगी है।

९. परिशिष्ट में प्रस्तार के भेदों और उपभेदों का विस्तृत विवेचन किया गया है।

१०. ग्रन्थ के अन्त में विशेष उपयोगिता की दृष्टि से दो अनुक्रमणियां दी गई हैं:- १. सूत्रानुक्रमणी, २. छन्दोऽनुक्रमणी। दोनों अनुक्रमणियाँ अकारादि क्रम से दी गई हैं।

११. भूमिका में छन्द, छन्दःशास्त्र, पिंगल और छन्दःशास्त्रीय आचार्यों का विस्तृत विवेचन किया गया है।

कृतज्ञता-प्रकाशन

इस ग्रन्थ के लेखन में हलायुध भट्ट की मृतसंजीवनी व्याख्या और कविरत्न पं० अखिलानन्द शर्मा के छन्दःसूत्रम् से विशेष सहयोग लिया गया है। लौकिक छन्दों के उदाहरण प्रायः हलायुध भट्ट से लिए गए हैं। वैदिक छन्दों के उदाहरण में अखिलानन्द शर्मा का ग्रन्थ अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है। दोनों लेखकों के प्रति कृतज्ञता-प्रकाशन आवश्यक है। प्रस्तार-विधि के विवेचन में पं० ज्योति प्रसाद मिश्र 'निर्मल' की पुस्तक पिंगल-प्रबोध से विशेष सहायता ली गई है। तदर्थ हम उनके कृतज्ञ हैं। कंपोजिंग का कार्य सुरेश चन्द्र पाठक ने किया है।

ग्रन्थ के प्रकाशन की स्वीकृति स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी जी ने प्रदान की थी। ग्रन्थ के तैयार होने के विषय में वे सदा उत्सुक रहते थे। ग्रन्थ को अन्तिम रूप देने में विलम्ब हुआ। यह ग्रन्थ उन्हीं के निर्देशन में प्रकाशित होना था। श्री

पराग मोदी के निर्देशन में प्रकाशित हो रहा है, अतः वे बधाई और धन्यवाद के पात्र हैं ।

प्रयत्न किया गया है कि ग्रन्थ की छपाई सर्वथा शुद्ध हो । फिर भी संभव है, कुछ त्रुटियां शेष रह गई हों । विद्वज्जनों और पाठकों के संशोधन, संवर्धन, परिवर्तन आदि के परामर्श सधन्यवाद स्वीकार किए जाएंगे ।

ज्ञानपुर (भदोही) कपिलदेव द्विवेदी

दिनांक 1.1.2008 ई०

(प्रथम संस्करण २००८)

Preface

In 2004, I was inspired to translate *Piṅgala's* renowned work on Prosody into English. Since I found the task difficult, I requested my esteemed colleague at Gyanpur (Varanasi) Professor Kapil Deva Dvivedi, who not only readily agreed but finished the translation of *Piṅgala Nāga's Chandaḥ Sūtram* based on its commentary by 10th century scholar *Ācārya Halāyudha Bhaṭṭa* from Sanskrit into Hindi in record time. I went through his version, compared it with original and made many changes, especially the matter related to Mathematics. Simultaneously, I translated it into English. It gives me a sense of fulfillment to have been able to play this role with Professor Dvivedi who is a great scholar of Vedas and Sanskrit.

Prosody is a prime limb of the Vedas. *Ācaārya Piṅgala's* exposition on Vedic and classical Sanskrit metres is an unparalleled work in the history of knowledge. He has applied several mathematical formulae in metrics which are much ahead of time. He has to be credited for his fundamental contribution of applying the theory of binary numbers, combinations, geometric progression and Fibonacci sequence to metrics.

I believe that this bilingual work can give pleasure and insight not only to persons of poetic taste and lovers of mathematics but to every class of readers, from sophomores to senior citizens.

Rishikesh
15-11-2006
(First Edition 2008)

S. L. Singh

प्राक्कथन (Preface)

(द्वितीय संस्करण, Second Edition)

विश्व के सुधी पाठकों ने प्रथम संस्करण का स्वागत किया है। उनके सुझावों का स्वागत करते हुए त्रुटियों का परिमार्जन किया गया है तथा कतिपय टिप्पणियाँ बढ़ाई गयी हैं जिससे विभिन्न छंदों के उदाहरणों में वर्णों की गिनती सरलतापूर्वक की जा सके। योर्क विश्वविद्यालय (कनाडा) के प्रोफेसर हंसराज जोशी के बहुमूल्य सुझावों के प्रति बहुशः आभार व्यक्त करता हूँ। डॉ० भारतेन्दु द्विवेदी (ज्ञानपुर), डॉ० दिनेश चन्द्र शास्त्री (हरिद्वार) एवं अन्य विद्वानों से प्राप्त सहायता एवं सहयोग के लिए साधुवाद करता हूँ।

The first edition has been well received by the scholars all over the world. In view of the comments and suggesitions received from them, the first edition has been thoroughly corrected and some notes have been inserted to that counting of syllables in some examples of metres may be accomplished easily. Professor Hansraj Joshi of York University (Canada) deserves high appreciation for his useful comments and suggestions. Assistance and cooperation received from Dr. Bhartendu Dvivedi (Gyanpur), Dr. Dinesh Chandra Shastri (Haridwar) and other scholars are thankfully acknowledged.

ऋषिकेश Rishikesh
28-06-2012

एस. एल. सिंह
S. L. Singh

छन्दः सूत्रम्

भूमिका

1. छन्द का अर्थ और स्वरूप

छन्द शब्द की अनेक प्रकार से व्याख्या की गई है, जिससे ज्ञात होता है कि छन्द शब्द सीमित और विराट् रूप में विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त होता है । सीमित रूप में यह पद्य-बन्ध का द्योतक है । अपने भावों को गेय रूप देते हुए निर्धारित वर्णों या मात्राओं में अपने भावों को प्रकट करने के अभिप्राय से छन्द के लक्षण दिए हैं-

(क) यदक्षरपरिमाणं तच्छन्दः ।

(ख) मात्राक्षर-संख्या-नियता वाक् छन्दः ।

अर्थात् - निर्धारित मात्रा और अक्षर-संख्या वाली पद्यात्मक रचना छन्द है। इसका अभिप्राय यह है कि छन्द के लिए आवश्यक है कि वह पद्यात्मक रचना हो और उसमें अक्षर या मात्राएं निश्चित संख्या में हों । सामान्य रूप से छन्द का यही अर्थ स्वीकृत किया जाता है ।

छन्द का स्वरूप- कौषीतकि ब्राह्मण में छन्द का अर्थ प्राण किया गया है, अर्थात् छन्द पद्यात्मक रचना का जीवन है, प्राण है । छन्द कवि के भावों को जीवित रखता है । अतः अन्यत्र भी कहा गया है कि छन्द प्राण-स्वरूप हैं ।

प्राणा वै छन्दांसि । कौषी०ब्रा० 7.9

प्राणमात्रा छन्दः ।

छन्द का विराट् रूप- यजुर्वेद के छः मंत्रों (यजु0 14.9, 10, 18, 19। 15.4,5) में छन्दों का विस्तार से वर्णन है । इन मंत्रों में प्रसिद्ध छन्दों के अतिरिक्त पृथिवी, अन्तरिक्ष, द्युलोक, नक्षत्र, वाक् , मन, कृषि, हिरण्य, गौ, अजा, अश्व, प्रजापति आदि को छन्द कहा गया है । इसका अभिप्राय यह है कि छन्द शब्द जीवन या जीवनी शक्ति देने वाले, आनन्दवर्धक और आधारभूत पदार्थों को भी छन्द कहा गया है । यजुर्वेद में छन्द की व्याख्या 'छदि' की है अर्थात् जो आच्छादन करता है, ढकता या रक्षा करता है । निरुक्तकार यास्क ने भी छन्द की व्याख्या आच्छादन की है । छन्द का अभिप्राय होता है- आच्छादन, विचारों या भावों को मूर्तरूप देना, उन्हें समन्वित रूप में रखना । इन्हीं भावों का

गेय रूप देने पर छन्द हो जाता है ।

(क) छदिश्छन्दः । यजु० 15.5

(ख) छन्दांसि छादनात् । निरुक्त 7.12

(ग) मा छन्दः, प्रमा छन्दः,

गायत्री छन्दः, त्रिष्टुप् छन्दः, जगती छन्दः ० । यजु० 14.18

(घ) पृथिवी छन्दः, अन्तरिक्षं छन्दः,

कृषिश्छन्दः, गौश्छन्दः ० । यजु० 14.19

(ङ) प्रजापतिश्छन्दः, परमेष्ठी छन्दः,

बृहती छन्दः, ककुप् छन्दः । यजु० 14.9

(च) पंक्तिश्छन्दः, जगती छन्दः,

विराट् छन्दः, अनुष्टुप् छन्दः ० । यजु० 14.10

इन मंत्रों में इन प्रसिद्ध छन्दों का उल्लेख है- पंक्ति, जगती, त्रिष्टुप् , विराट् , गायत्री, उष्णिक् , अनुष्टुप् , बृहती, ककुप् , सतोबृहती आदि ।

2. छन्दों का महत्त्व

छन्दों का महत्त्व बताते हुए आचार्य पाणिनि ने पाणिनीय शिक्षा में छः वेदांगों का उल्लेख किया है-- शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष और कल्प । ये शब्दरूपी वेद-ब्रह्म के शरीर के अंग हैं। इनसे वेदार्थ का ठीक-ठीक ज्ञान होता है । इनमें से छन्द को वेद-ब्रह्म के पैर माना जाता है । जिस प्रकार पैर मानव-शरीर का आधार है, उसी प्रकार वेदों का आधार छन्द है । वेदों की स्थिति पद्यात्मक मन्त्रों पर है ।

छन्दः पादौ तु वेदस्य, हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते । पा०शिक्षा 41

छन्दों के प्रमुख लाभ ये हैं-

1. छन्द भावों को सूक्ष्म रूप देते हुए पद्यात्मक बनाता है ।
2. छन्द गेय होते हैं । सरलता से स्मरण होते हैं ।
3. छन्दों में अनावश्यक विस्तार न होकर सूत्र रूप में बात कही जाती है।
4. छन्दों में मधुरता है, आकर्षण है, संगीतात्मकता है और स्थायित्व है।
5. छन्द काव्य को स्थायित्व देते हैं, गद्य नहीं ।
6. छन्दोरचना प्रतिभा का प्रकाशन है ।

3. छन्दों के नाम और उनकी सार्थकता

इस छन्दःशास्त्र में छन्दों के जो नाम दिए हैं, उनमें से अधिकांश की व्याख्या करना संभव है । कुछ ऐसे भी छन्द हैं, जिनको रूढि शब्द समझना चाहिए । कुछ छन्द ऐसे भी हैं, जो छन्द के लय, गति आदि पर निर्भर हैं । कुछ छन्दों के नाम लघु-गुरु वर्णों की योजना पर निर्भर हैं । कुछ छन्दों के नाम उच्चारण की विधि पर निर्भर हैं । कुछ छन्दों के नाम ललनाओं की आकृति, गति, लावण्य आदि से संबद्ध हैं । उदाहरणार्थ-

छन्द की गति, स्वर-माधुर्य आदि से संबद्ध छन्द- अमृतधारा, अश्वललित, ऋषभगज-विलसित, चण्डवृष्टिप्रधान, जलोद्धतगति, मन्दाक्रान्ता।

संगीत की भावना पर निर्भर छन्द- मत्तमयूर, माणवकाक्रीडितक, वंशपत्रपतित, कुटिलगति, द्रुतमध्या, वातोर्मी ।

वस्तु की आकृति पर निर्भर- शैलशिखा, सिंहोन्नता, हलमुखी, श्येनी, केतुमती, क्रौंचपदा, शिखा ।

लघु-गुरु-वर्ण-योजना पर निर्भर- माणवकाक्रीडितक, कुमारललिता, भुजगशिशुसृता, द्रुतविलम्बित, शार्दूलविक्रीडित, यवमध्या, यवमती ।

ललना-लावण्य पर निर्भर- वरयुवती, विलासिनी, शशिवदना, चञ्चलाक्षिका, कुसुमितलतावेल्लिता, प्रमुदितवदना, चपला, चारुहासिनी, चित्रपदा, नागी, नवमालिनी, तन्वी, तनुमध्या, जघनचपला, ललना, सुवदना, स्त्री ।

प्रकृति पर निर्भर- भ्रमरविलसिता, वातोर्मी, मधुमाधवी, मालिनी, माला, पृथ्वी, ज्योतिः, हंसरुत, हरिणप्लुता, प्रकृति, मयूरसारिणी, वाराही, विद्युन्माला, शिखरिणी ।

4. प्राचीन छन्दःशास्त्र प्रणेता

प्राचीन ग्रन्थों में छन्दःशास्त्र के प्रणेता के रूप में इन आचार्यों का उल्लेख मिलता है । इनके जीवन-वृत्त के विषय में विशेष विवरण अप्राप्य है । ये आचार्य हैं-

शिव, पार्वती, नन्दी, गुह, सनत्कुमार, बृहस्पति, इन्द्र, शुक्र, कपिल, माण्डव्य, वसिष्ठ, सैतव, भरत, कोहल, यास्क, रात, क्रौष्टुकि, कौण्डिन्य, ताण्डी, अश्वतर, कम्बल, काश्यप, बाभ्रव्य, पांचाल, पतञ्जलि, उक्थकार, शौनक, पिंगल, कात्यायन, गरुड, गार्ग्य, शांखायन एवं वेंकटमाधव ।

छन्दःशास्त्र का प्रारम्भ- छन्दशास्त्र का प्रारम्भ हमें सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण में दृष्टिगोचर होता है- **'नवा एकेनाक्षरेण छन्दांसि वियन्ति, न द्वाभ्याम्** (ऐत0 ब्रा0 1.6) । इसके पश्चात् शांखायन (सांख्यायन) ब्राह्मण में कतिपय छन्दःशास्त्रीय उद्धरण प्राप्त होते हैं । **'न ह्येकेनाक्षरेणान्यच्छन्दो भवति, न द्वाभ्याम्'** (शां0 ब्रा0 27.1) । सांख्यायन श्रौतसूत्र (7.27) में गायत्री, उष्णिक्, ककुप् , विराट् , बृहती, जगती, अनुष्टुप् आदि छन्दों की वर्णसंख्या का उल्लेख है ।

इसके पश्चात् आचार्य पिंगल (पिंगल नाग) का नाम आता है । इनका छन्दःसूत्र वैदिक और लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों का प्रामाणिक ग्रन्थ है ।

पिंगल-पूर्ववर्ती छन्दःशास्त्रकार- आचार्य पिंगल ने अपने पूर्ववर्ती कतिपय छन्दःशास्त्रकारों का उल्लेख किया है । ये हैं- (कोष्ठ में सूत्र-संख्या है) एक (5.15), काश्यपः (7.9), क्रौष्टुकिः (3.29), ताण्डी (3.36), यास्क (3.30), रात-माण्डव्य (7.35), शाकल्य (7.9) एवं सैतव (5.18, 7.10)।

यास्क- महाभारत शान्तिपर्व में निरुक्तकार यास्क का उल्लेख है कि वे छन्दःशास्त्र के आचार्य थे और यज्ञों में छन्दों का पाठ करते थे ।

यास्को मामृषिरव्यग्रो, नैकयज्ञेषु गीतवान् । महा०शा. 343.72

ताण्डी (ताण्डिन्)- महाभारत अनुशासन पर्व (16.1) में आचार्य तण्डि का उल्लेख है । आगे उल्लेख है कि उसका पुत्र ताण्डी शिवजी के आशीर्वाद से छन्दःसूत्रकार हुआ (अनु0 16.70) ।

काश्यप- मन्दारमरन्दग्रन्थ की टीका में श्री कृष्ण शर्मा ने उल्लेख किया है कि काश्यप सूत्रकार हुए हैं । **'भगवता सूत्रकारेण काश्यपेन0'** (पृ0 6)। कृष्णशर्मा 14वीं शती ईं0 में हुए थे ।

रात-माण्डव्य- इन दोनों आचार्यों ने मिलकर ग्रन्थ-रचना की है । महाभारत आदिपर्व (अ0 107) में माण्डव्य का उल्लेख है । रात-माण्डव्य ने धर्मशास्त्र भी लिखा है ।

क्रौष्टुकि और शाकल्य- ये दोनों आचार्य यास्क से भी प्राचीन हैं। आचार्य यास्क ने निरुक्त में क्रौष्टुकि का (8.2) में और शाकल्य का (6.28) में उल्लेख किया है ।

अन्य आचार्यों के विषय में विवरण अप्राप्य है ।

छन्दोविषयक ग्रन्थ

छन्दःशास्त्र से सम्बद्ध सामग्री इन ग्रन्थों में प्राप्त होती है ।

ऋक्-प्रतिशाख्य- शौनकीय ऋक्प्रतिशाख्य के पटल 16 से 18 में वैदिक छन्दों का विवरण दिया गया है । इसमें छन्दों के सूक्ष्मभेद भी दिए गए हैं। इसमें पिंगल के छन्दःसूत्र के कुछ सूत्र उसी रूप में मिलते हैं, अतः यह पिंगल के बाद का ग्रन्थ है ।

शांखायन श्रौतसूत्र- केवल 7.27 में छन्दों पर विचार है ।

सामवेदीय निदानसूत्र- ।

कात्यायन-प्रणीत **ऋक्सर्वानुक्रमसूत्र** और **शुक्ल यजुःसर्वानुक्रम-सूत्र** ।

इन दोनों ग्रन्थों में प्रायः ऋक्-प्रतिशाख्य का ही अनुसरण किया गया है। शुक्ल यजुःसर्वानुक्रमासूत्र प्रायः ऋक्सर्वानुक्रमसूत्र पर ही आश्रित है ।

अग्निपुराण- अध्याय 328 से 335 तक । इसमें प्रस्तार-सहित सम-विषम-वृत्तों आदि का वर्णन है ।

गरुड-पुराण- इसमें पूर्वखण्ड में अध्याय 207 से लेकर 212 तक प्रस्तार-विधि सहित वृत्तों का वर्णन है ।

विष्णुधर्मोत्तर पुराण- खंड 3 के अध्याय 3 में सम-विषम-आदि वृत्तों का वर्णन है । साथ ही प्रस्तार विधि का भी वर्णन है ।

लौकिक छन्दों पर निम्न आठ आचार्यों ने ग्रन्थ लिखे हैं--

आचार्य भरतमुनि (नाट्यशास्त्रकार), जनाश्रय गणस्वामी, जयकीर्ति, कालिदास, केदारभट्ट, हेमचन्द्र, गंगादास एवं जयदेव ।

5. आचार्य पिंगल नाग

जीवनवृत्त- आचार्य पिंगल का प्रामाणिक जीवनवृत्त अप्राप्य है । पिंगल के विषय में कुछ स्फुट उद्धरण मिलते हैं । आचार्य पिंगल का पूरा नाम पिंगल नाग है । उन्हें पिंगल और नाग दोनों शब्दों से संबोधित किया जाता है । महाभारत में सर्पयज्ञ में मरने वालों में एक पिंगल नामक नाग का उल्लेख मिलता है ।

निष्ठानको हेमगुहो नहुषः पिङ्गलस्तथा । (महा० आदिपर्व 35.9)

यह मुनि नहीं हैं, अतः यह पिंगल कोई अन्य है ।

मत्स्यपुराण में नग और पैंगल शब्द मिलते हैं । नग का पुत्र नाग संभव है। इसी पुराण में पैंगल का भी उल्लेख है । संभव है वह पिंगल का पुत्र रहा हो।

बोधिर्नगः सौगमाक्षिक्षीरयोरिकिरेव च । मत्स्य० 196.6

ज्ञात्वायनो हरिर्वाश्यः पैंगलश्च तथैव च । मत्स्य० 196.32

आचार्य पतंजलि ने महाभाष्य के नवाह्निक में पैंगल और काण्व का उल्लेख किया है । पिंगल के छन्दःशास्त्र के लिए पैंगल शब्द है और यजुर्वेद की कण्वशाखा के लिए काण्व शब्द है । इससे यह भी ज्ञात होता है कि पिंगल आचार्य पतंजलि (150ई0 पू0 के लगभग) से प्राचीन हैं।

पैङ्गल-काण्व० । (आह्निक 9, सू. 73).

वामनपुराण में सांख्यदर्शन के आचार्य आसुरि के साथ पिंगल का नाम आया है । स्कन्दपुराण के काशीखंड में भी पिंगल का नाम आया है । उस पर शिवजी की कृपा का वर्णन है । उसने शिव-मन्दिर की स्थापना की थी ।

(क) सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः,
सनातनो ऽप्यासुरि-पिङ्गलौ च ।। वामन० 14.25

(ख) गणेन पिङ्गलाख्येन, पिङ्गलेशाख्यसंज्ञितम् ।
लिंगं प्रतिष्ठितं शम्भोः कपर्दीशादुदग् दिशि ।।
स्कन्द० 55.2

सबसे पुष्ट और प्रामाणिक विवरण वेदार्थदीपिका (1184 ई0स0) में षड्गुरुशिष्य का मिलता है।

सूत्र्यते हि भगवता पिङ्गलेन पाणिन्यनुजेन । (पृष्ठ 70)

इसमें दो बातें स्पष्ट रूप से लिखी हैं कि पिंगल छन्दःसूत्रकार हैं और वे आचार्य पाणिनि के छोटे भाई थे ।

मीमांसादर्शन के भाष्यकार श्री शबरस्वामी ने भी पिंगल का नाम लिखा है और छन्दःसूत्रकार के रूप में उसका वर्णन किया है कि उन्होंने मगण से तीन गुरु वर्ण लिए हैं ।

यथा मकारेण पिङ्गस्य सर्वगुरुस्त्रिकः प्रतीयते। (मी०भा० 1.1.5)

इससे ज्ञात होता है कि आचार्य पिंगल शबरस्वामी से पूर्ववर्ती हैं ।

पिंगल की मृत्यु के विषय में पंचतन्त्र में उद्धृत एक श्लोक के आधार पर किंवदन्ती है कि छन्दःशास्त्र के प्रणेता पिंगल की मृत्यु समुद्र के किनारे एक मगर

से पकड़े जाने के कारण हुई। इसी श्लोक में पाणिनि की मृत्यु का कारण एक शेर को बताया गया है ।

सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरत् प्राणान् प्रियान् पाणिनेः,
छन्दोज्ञाननिधिं जघान मकरो वेलातटे पिङ्गलम् ।।

(पंचतन्त्र, मित्रसंप्राप्ति, श्लोक 36)

पिंगल की वंश-परंपरा- पतंजलि ने महाभाष्य (1.1.20) में पाणिनि को दाक्षीपुत्र कहा है । इससे ज्ञात होता है कि पाणिनि की माता का नाम दाक्षी था। पिंगल पाणिनि के छोटे भाई थे, अतः इनकी भी माता दाक्षी थी । 'संग्रह' ग्रन्थ के लेखक आचार्य व्याडि का नाम दाक्षि और दाक्षायण है । इससे ज्ञात होता है कि व्याडि पाणिनि और पिंगल के मामा थे । अतः संक्षेप में इनकी वंश-परम्परा यह है - व्यड (दक्ष) के पुत्र व्याडि (दाक्षि) और पुत्री दाक्षी । दाक्षी के पति का नाम पणिन् है । पणिन् और दाक्षी के दो पुत्र हुए- पाणिनि और पिंगल ।

पिंगल का देश और काल- पाणिनि के छोटे भाई होने के कारण पिंगल का निवास-स्थान भी शालातुर था । पाणिनि का एक नाम 'शालातुरीय' भी है । शालातुरीय का अर्थ है- 'जिनके पूर्वज शलातुर ग्राम के निवासी थे ।' इससे ज्ञात होता है कि पाणिनि के पूर्वजों का निवास-स्थान शलातुर था । पुरातत्त्ववेत्ताओं के अनुसार पेशावर जिले में अटक के समीप 'लाहुर' ग्राम ही प्राचीन शलातुर है।

संस्कृत शास्त्रों के प्रसिद्ध इतिहासकार आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार दाक्षीपुत्र पाणिनि का समय लगभग 750 बी0सी0 बैठता है । युधिष्ठिर मीमांसक ने अपनी नवीनतम खोजों के आधार पर वैदिक-छन्दोमीमांसा में पाणिनि व पिंगल का समय 2850 बी0सी0 से पूर्व निर्धारित किया है ।

6. पिंगल और पाणिनि के ग्रन्थों में साम्य

पिंगल के छन्दःसूत्र और पाणिनि की अष्टाध्यायी में कुछ साम्य मिलता है। ये साम्य हैं-

1. दोनों ने वैदिक और लौकिक संस्कृत दोनों पर अपने ग्रन्थ लिखे हैं । पाणिनि ने लौकिक और वैदिक संस्कृत दोनों का व्याकरण लिखा है । पिंगल ने भी वैदिक और लौकिक छन्दोंका विस्तृत विवरण दिया है ।

2. दोनों ने सूत्र-पद्धति अपनाई है । सूत्र भी अत्यन्त संक्षिप्त हैं ।

3. दोनों ने सूत्रों में पूर्वसूत्रों से अनुवृत्ति की पद्धति अपनाई है ।

4. अष्टाध्यायी में आठ अध्याय हैं, छन्दःसूत्र में भी आठ अध्याय हैं ।

5. दोनों ने अपने ग्रन्थों में अपने पूर्ववर्ती आचार्यों का उल्लेख दिया है और उनका मत भी दिया है । पाणिनि ने अपने पूर्ववर्ती दस आचार्यों का उल्लेख किया है। पिंगल ने अपने पूर्ववर्ती नौ आचार्यों का उल्लेख किया है। काश्यप और शाकल्य दो आचार्यों का दोनों ने उल्लेख किया है। ये दोनों आचार्य व्याकरण और छन्दःशास्त्र दोनों के अद्भुत विद्वान् थे । दोनों ने दोनों विषयों पर अपने ग्रन्थ लिखे थे ।

6. दोनों के ग्रन्थों के प्रारम्भ में मंगलाचरण है । पाणिनि ने शुभसूचक वृद्धि (वृद्धिरादैच् , 1.1.1) शब्द रखा है, पिंगल ने भी शुभसूचक धी श्री (धी श्री स्त्री, 1.1) शब्द रखा है ।

7. दोनों की शैली सर्वथा पारिभाषिक अर्थात् तकनीकी है ।

इससे ज्ञात होता है कि पिंगल ने अपने बड़े भाई पाणिनि की शैली अपनाई।

7. आचार्य पिंगल की कृति और उसके भाष्यकार

छन्दःसूत्रम्- आचार्य पिंगल की केवल एक ही कृति 'छन्दःसूत्रम्' प्राप्त होती है । इनकी किसी अन्य रचना का उल्लेख नहीं मिलता है । 'प्राकृत-पिंगल' किसी अन्य की कृति है ।

भाष्यकार- पिंगल के छन्दःसूत्र के अनेक भाष्यकार हुए हैं । पिंगल की भाषा सूत्रात्मक होने से अत्यन्त दुर्बोध है, अतः इस पर भाष्यों की आवश्यकता पड़ी । इस छन्दःसूत्र के प्रमुख भाष्यकार ये हैं :-

सबसे प्रसिद्ध भाष्यकार हलायुध (10वीं शती ई0) हैं । इनकी सुप्रसिद्ध व्याख्या 'मृत-संजीवनी' है । इसमें सूत्रार्थ को स्पष्ट करने के साथ ही अन्य ग्रन्थों में वर्णित छन्दों के भेद-उपभेदों का भी विस्तृत वर्णन है ।

भास्करराय (17वीं शती ई0) ने इस पर दो टीकाएं लिखी हैं । उनके नाम हैं- छन्दःशास्त्र-भाष्य, वार्तिकराज । भास्करराय के छोटे भाई सखाराम भट्ट ने इसकी व्याख्या 'लघु वृत्ति' नाम से लिखी है ।

इनके अतिरिक्त अन्य भाष्यकारों के नाम हैं-

नाग वर्मा, यादव-प्रकाश, भास्करराय, श्रीहर्ष शर्मा, दामोदर, वाणीनाथ, पं0 अखिलानन्द शर्मा, आचार्य मेधाव्रत आदि ।

***

PROSODY

INTRODUCTION

Chanda means metre. *Chandaḥ Śāstra (CS)* stands for prosody or metrical science. The CS is one of six *Vedāṅgas* or limbs of Vedas. The grammarian *Pāṅini* and other top ranking scholars consider *Chanda* as the base of Vedas. *Pāṅinīya Sikṣa* declares "*Chandaḥ pādau tu vedasya*", i.e. *chanda* connotes the legs of Vedas.

There is no poetry in Sanskrit (and other languages derived from Sanskrit) without *chanda* or metre. The great poet *Dāṇḍī* emphasizes that the lore of chanda is the boat to cross the deep ocean of poetry. In order to understand, appreciate and enjoy or assimilate any poetical composition, a knowledge of metrics is of paramount importance. Each *chanda* has its own mood, movement and flavour. So, with a view to describing or expressing any emotion, experience, feeling or action, an appropriate choice of a *chanda* is of vital importance. Indeed, the art of metrical composition pervades Sanskrit poetry and the metrical science is the backbone of the crowning glory of Sanskrit poetry.

The study of metrics seems an integral part of Vedas and literature auxiliary to Vedas. A good description of *chandas* is found in *Yajurveda* (14.9, 10,18, 19 and 15.4.5). *Agni Purāṅa* (through chapters 328-335), *Garuḍa Puraṇa* (through chapters 207-212) and *Viṣṇudharmottar Purāṅa* (chapter 3 of section 3) discuss even metres, uneven metres and methods of *pratyayas*.

The earliest surviving and most important work in Sanskrit prosody is *Chandaḥ Sūtraṁ*, a *magnum opus* of sage *Piṅgala Nāga*, popularly called *Ācārya Piṅgala* or simply *Piṅgala*. The Sanskrit prosody is so closely knitted

with *Piṅgala* that, generally, *Piṅgala* connotes *Piṅgala's Chandaḥ śāstra/sūtraṁ.* Sanskrit prosody seems as old as Vedas as also the following list of ancient prosodists suggests:

Śiva, Pārvatī, Nandī, Guha, Sanatkumāra, Bṛhaspati, Indra, śukra, Kapila, ***Māṇḍavya****, Vasiṣtha,* ***Saitava****, Bharata, Kohala,* ***Yāska****,* ***Rāta****,* ***Krauṣuṭki****, Kauṇḍinya;* ***Tāṇḍi****, Aśvatara, Kambala,* ***Kāśyapa****, Babhravya, Pāñcāla, Patañjali, Ukthakāra, Śaunaka, Piṅgala, Kātyāyana, Garuḍa, Gārgya, Śāṅkhāyana* and *Veṅkaṭa Mādhava.*

However, *Ācārya Piṅgala* has referred the work of some of his predecessors by name. They are: *Kāśyapa* (7.9, i.e. 9th *sūtra* of 7th chapter). *Krauṣṭuki* (3.29), *Tāṇḍī* (3.36), *Yāska* (3.30), *Rāta-Māṇḍvya* (7.35), *Śākalya* (7.9) and *Saitava* (5.18, 7.10). *Krauṣṭuki* and *Śākalya* are predecessors of *Yāska* as *Ācārya Yāska* has cited them in his work on *Nirukta.*

The following eight terrestrial prosodists are well-known in Sanskrit literature:

Ācārya Bharata Muni, Janāśraya Gaṇasvāmī, Jayakirti, Kālidāsa, Kedāra Bhaṭṭa, Hemacandra, Gaṅgādāsa and *Jayadeva.*

The time of *Ācārya Piṅgala* is suggested 750 BC or before. According to "सूत्र्यते हि भगवता पिङ्गलेन पाणिन्यनुजेन" from *Vedārtha Dīpikā* (*circa* 1184 AD) of *Ṣaḍ-guru śiṣya, Piṅgala* is prosodist and younger brother of (grammarian) *Pāṇini* (*circa* 750 BC). *Dākṣī* and *Paṇin* were their parents, Their forefathers lived in village *Śalātura* near Ataka of present Peshawara district. However, as regards the most plausible time of the two brothers- *Pāṇini* and *Piṅgala*-

Yudhisthira Mimānsaka in Vaidika-Chandomīmānsā cotegorically ascribes before 2850 BC.

According to a verse found in *Pañcatantra, Pāṅini* and *Piṅgala* were killed respectively by a lion and a crocodile. Of course, there are other similarities between *Pāṅini* and *Piṅgala.* The great work *Aṣṭādhyāyī* of *Pānini* is composed in eight chapters, while the *Piṅgala Chandaḥ Sūtraṁ (PCS)* consists of eight chapters as well. For details, one may refer to *Ācārya Baladeva Upādhyāya's* Sanskrit *Śāstron Kā Itihāsa.*

Following the ancient Indian tradition of great Sanskrit scholars, the *PCS* is composed in terse cryptic language, which can be understood by great teachers having complete mastery over the subject, or else through commentaries written by them.

Sanskrit scholar and mathematician *Halāyudha Bhaṭṭa* and philosopher *Yādava Prakāśa (circa* 975-1040 AD), the teacher of *Rāmānujācārya* are the earliest commentators of the *PCS. Halāyudha Bhaṭṭa's* commentary *"Mṛtasañjīvanī"* on the PCS was written in 10th century AD. This commentary has been widely used as a popular reference to Sanskrit prosody. Other commentators are: *Nāgavarma* (990 AD), *Bhāskara Rāya (circa*1680-1745 AD), his younger brother *Sakhārāma Bhaṭṭa, Śriharṣa Śarmā, Ācārya Medhāvrata, Akhilānand Śarmā* and others. However, to the best of our knowledge, *Halāyudha's Mṛtasañjīvanī* has not yet been translated from Sanskrit into Hindi or English. The present work is intended to fullfil the desire and expectations of the large class of readers knowing Hindi or English. Further, *Piṅgala's* computer mathematics discussed in this book is expected to have a good impact on the history of mathematics.

***

ओम्

श्री पिंगलाचार्य-विरचितम्

छन्दःसूत्रम्

अनादिनिधनं ब्रह्म,
प्रणम्य विघ्न-नाशकम् ।
व्याख्या पिंगल-सूत्रस्य,
क्रियते प्रीतये बुधाम् ।।

आदि और अन्त से रहित, विघ्नों के नाशक, ब्रह्म को नमस्कार करके विद्वानों की प्रीति के लिए इस पिंगल-सूत्र की व्याख्या की जा रही है ।

OM

THE PROSODY OF *PIṄGALĀCĀRYA*

Salutations to Brahman,
Who is devoid of beginning and extreme.
Salutations to the remover of all obstacles,
This exposition on metrics
May gratify holy readers.

***

प्रथमोऽध्यायः

CHAPTER I

छन्दोविषयक आवश्यक निर्देश

1. छन्द के प्रकार - छन्द दो प्रकार के होते हैं- **वृत्त एवं जाति** । वृत्त को वर्णवृत्त या वर्णिक छन्द कहते हैं । इसमें प्रत्येक पाद में गणों के अनुसार वर्णों की गणना की जाती है । जैसे- इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा आदि । जाति को मात्रिक छन्द भी कहते हैं । इसमें प्रत्येक पाद में मात्रागणों के अनुसार मात्राओं की गणना की जाती है। जैसे- आर्या आदि । प्रत्येक श्लोक में 4 पाद या 4 चरण होते हैं । श्लोक के चतुर्थांश भाग को पाद या चरण कहते हैं ।

2. छन्द के भेद- वृत्त (छन्द) के तीन भेद होते हैं :- समवृत्त, अर्धसमवृत्त और विषमवृत्त । **समवृत्त**- इसमें चारों पादों में वर्णों की संख्या बराबर होती है। जैसे- इन्द्रवज्रा में 11 वर्ण, वसन्ततिलका में 14 वर्ण आदि । **अर्धसमवृत्त**- इसमें प्रथम- तृतीय और द्वितीय- चतुर्थ चरण में समानता होती है । जैसे- वियोगिनी, पुष्पिताग्रा आदि। कुछ छन्दों में प्रथम-द्वितीय और तृतीय-चतुर्थ में समानता होती है । ये अर्धसमवृत्त हैं । **विषमवृत्त**- इसमें प्रत्येक पाद में वर्णों की संख्या विषम होती है । जैसे- उद्गाता और गाथा छन्द ।

3. लघु-गुरु-विचार- ह्रस्व स्वर को लघु कहते हैं । लघु स्वर ये हैं- अ, इ, उ, ऋ, ऌ । दीर्घ स्वर को गुरु कहते हैं । गुरु स्वर ये हैं- आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ । लघु स्वर के बाद यदि अनुस्वार, विसर्ग या कोई संयुक्त व्यंजन होगा तो वह लघु स्वर गुरु माना जाता है । पाद या चरण का अन्तिम लघु स्वर आवश्यकता के अनुसार गुरु भी माना जाता है ।

सानुस्वारश्च दीर्घश्च, विसर्गी च गुरुर्भवेत् ।
वर्णः संयोगपूर्वश्च, तथा पादान्तगोऽपि वा ।।

संकेत - लघु के लिए ल (।) संकेत है ।

गुरु के लिए ग (ऽ) संकेत है ।

ल का अर्थ है - एक लघु । लौ- दो लघु अक्षर ।

ग का अर्थ है - एक गुरु । गौ का अर्थ है- दो गुरु अक्षर ।

आगे लक्षणों में लः, लौ, गः, गौ का प्रयोग है । एक लघु के लिए ल, दो लघु के लिए लौ । एक गुरु के लिए ग, दो गुरु के लिए गौ । लगौ का अर्थ

है- एक लघु, एक गुरु ।

4. गण विचार- (क) वर्णिक गण- प्रत्येक श्लोक को गणों में विभक्त किया जाता है । लक्षणों में इन्हीं गणों का निर्देश है । वर्णिक छन्दों में गणना के लिए गणों का उपयोग किया जाता है । एक गण में तीन अक्षर होते हैं । लघु वर्ण के लिए '।' सीधी लकीर चिह्न है और गुरु वर्ण के लिए 'ऽ' चिह्न। अंग्रेजी छन्द-विचार के अनुसार लघु के लिए ˘ (अर्धचन्द्र) चिह्न है और गुरु अक्षर के लिए– (सीधी लंबी लकीर) चिह्न है । गणों के नाम और लक्षण के लिए निम्नलिखित श्लोक स्मरण कर लें ।

मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो,
भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः ।
जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः,
सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः ।।

मगण	ऽऽऽ	(तीनों गुरु),	नगण	।।।	(तीनों लघु)
भगण	ऽ।।	(आदि गुरु, 2 लघु),	यगण	।ऽऽ	(आदि लघु, 2 गुरु)
जगण	।ऽ।	(मध्य गुरु, शेष लघु),	रगण	ऽ।ऽ	(मध्य लघु, शेष गुरु)
सगण	।।ऽ	(अन्त गुरु, शेष लघु),	तगण	ऽऽ।	(अन्त लघु, शेष गुरु)

अर्थात् ***मगण*** में तीनों गुरु अक्षर होंगे; ***नगण*** में तीनों लघु अक्षर होंगे; ***भगण*** में प्रथम अक्षर गुरु होगा, शेष दोनों लघु होंगे; ***यगण*** में प्रथम अक्षर लघु होगा, शेष दोनों गुरु; ***जगण*** में मध्य अक्षर गुरु होगा, शेष दोनों लघु; ***रगण*** में मध्य अक्षर लघु होगा, शेष दोनों गुरु; ***सगण*** में अन्तिम अक्षर गुरु होगा, शेष दोनों लघु; ***तगण*** में अन्तिम अक्षर लघु होगा, शेष दोनों गुरु ।

गणों को जानने के लिए निम्नलिखित श्लोक भी उपयोगी हैं:-

आदिमध्यावसानेषु,
य-र-ता यान्ति लाघवम् ।
भ-ज-सा गौरवं यान्ति,
मनौ तु गुरु-लाघवम् ।।

अर्थात्- यगण, रगण और तगण में क्रमशः प्रथम, मध्यम और अन्तिम अक्षर लघु होते हैं। भगण, जगण और सगण में क्रमशः प्रथम, मध्यम और अन्तिम अक्षर गुरु होते हैं। मगण में तीनों अक्षर गुरु और नगण में तीनों अक्षर लघु ।

गणों को जानने का एक अन्य प्रकार यह भी है-

य-मा-ता-रा-ज-भा-न-स-ल-गम् ।

इसमें आठों गणों के नाम और लघु (ल)- गुरु (ग) का नाम दिया हुआ है । जो गण गिनना हो, उसके लिए उस गण के अक्षर को लेकर आगे के दो वर्ण और ले लें । वे तीनों वर्ण जैसे हैं अर्थात् लघु या गुरु जिस क्रम से हैं, उसी क्रम से वह गण बनेगा । जैसे-

1. यगण- 3 वर्ण, यमाता, 1 लघु, 2 गुरु। **2. मगण**- मातारा, तीनों गुरु। **3. तगण**- ताराज, प्रथम दो गुरु, अन्तिम लघु । **4. रगण**- राजभा, मध्य लघु, शेष दो गुरु । **5. जगण**- जभान, मध्य गुरु, शेष दो लघु। **6. भगण**- भानस, प्रथम गुरु, शेष दो लघु । **7. नगण**- न स ल, तीनों लघु अक्षर । **8. सगण**- स ल गम् (गा), प्रथम दो लघु, अन्तिम गुरु । **9. ल**- ल, लघु अक्षर । **10. गम् (गा)**- गम् , गुरु वर्ण । ह्रस्व अक्षर के बाद म् अर्थात् अनुस्वार होगा तो पूर्ववर्ती अक्षर गुरु होगा ।

(ख) मात्रिक गण- मात्रिक छन्दों में प्रत्येक पाद या चरण की मात्राएँ गिनी जाती हैं । प्रत्येक मात्रिक गण में 4 मात्राएँ होती हैं । लघु (ह्रस्व) अक्षर की 1 मात्रा मानी जाती है और गुरु (दीर्घ) की दो मात्राएं । मात्रागण पाँच हैं। इनके नाम और चिह्न ये हैं :-

1. मगण- ऽऽ (दो गुरु अक्षर), **2. नगण**- ।।।। (चार लघु अक्षर), **3. भगण**- ऽ।। (आदि गुरु, दो लघु), **4. जगण**-।ऽ। (मध्यगुरु, शेष दो लघु), **5. सगण**- ।।ऽ (अन्त गुरु, शेष दो लघु)

5. यति और गति- (क) यति-श्लोक या पद्य को पढ़ने में आवश्यकतानुसार कुछ अक्षरों के बाद अल्पविराम होता है, उसे यति कहते हैं। बड़े छन्दों को पढ़ने में बीच में एक, दो या तीन स्थानों पर स्वल्प विराम करना पड़ता है । इस स्वल्प विराम को यति कहते हैं। अंग्रेजी में इसके लिए दो शब्द हैं- Pause (पाज़) और Caesura (सिज्यूरा) । छन्दों के लक्षणों में इस बात का स्पष्ट निर्देश किया गया है कि अमुक छन्द में इतने वर्णों के बाद यति आती है । लक्षणों के साथ कोष्ठ में यति का संकेत किया गया है ।

(ख) गति- गति का अर्थ प्रवाह या लय है । प्रत्येक छन्द की अपनी पृथक् उच्चारण की शैली होती है । उस छन्द को उसी प्रवाह या लय से गाना

होता है । अंग्रेजी में इसके लिए Rhythm (रिद्म) शब्द है । रिद्म का अर्थ है- ताल या लय ।

कतिपय सांकेतिक निर्देश

आचार्य पिंगल ने छन्दों के लक्षणों में मगण आदि के निर्देश के साथ संख्याओं के बोध के लिए 1, 2, 3, 4 आदि न कह कर कुछ सांकेतिक शब्द दिए है । पाठकों को इन संकेतों का ज्ञान होना चाहिए। यहाँ किस संख्या के लिए क्या सांकेतिक शब्द दिया गया है, उसका विवरण दिया जा रहा है। पाठक इसे स्मरण कर लें --

संख्या	सांकेतिक शब्द	संख्या	सांकेतिक शब्द
1	चन्द्र, ईश्वर	2	नेत्र, पक्ष
3	गुण, काल, वह्नि, राम	4	वेद, युग, समुद्र
5	भूत, यक्ष, बाण, इन्द्रिय,	6	अंग, शास्त्र, ऋतु, रस
7	मुनि, स्वर, ऋषि	8	वसु, याम,
9	ग्रह, निधि, नन्द	10	दिक्, दोष
11	रुद्र	12	आदित्य, सूर्य, मास
13	विश्वेदेव	14	भुवन, मन्वन्तर
15	तिथि	16	कला
17	दिक्-स्वर	18	दिग्-वसु
19	दिग्-ग्रह	20	नख

जैसे- यह कहना है कि 14 अक्षर वाले अपराजिता छन्द में 7, 7 पर यति होती है । उसके लिए आचार्य पिंगल ने '**अपराजिता-स्वरऋषयः**' कहा है। स्वर और ऋषि दोनों शब्दों का अर्थ सात है । अतः अर्थ होता है- अपराजिता छन्द में सात-सात पर यति होती है । उपर्युक्त सारणी के अनुसार विभिन्न शब्दों के अर्थ समझें। वेद अर्थात् चार, वसु अर्थात् आठ, रुद्र अर्थात् ग्यारह, तिथि अर्थात् 15 आदि ।

धी श्री स्त्री म् ॥ 1 ॥

अर्थ- जहाँ पर तीनों अक्षर गुरु (दीर्घ) होते हैं, वहाँ पर मगण होता है। मगण-ऽऽऽ । जैसे- धी श्री स्त्री ।

Meaning. Where all the three syllables are long ones, then it is called *Magaṇa.* For example - धी श्री स्त्री,*(dhī, śrī, strī).* Here all the three syllables have long *ī* (ई).

टिप्पणी- 1. धी श्री स्त्री मगण के लिए है । तीनों में दीर्घ ई है, अतः तीनों गुरु अक्षर हैं । जहाँ तीनों गुरु अक्षर (ऽऽऽ) होते हैं, वह मगण होता है। जैसे- 8 अक्षर वाले विद्युन्माला छन्द में 2 मगण और 2 गुरु होते हैं। **'विद्युन्माला मौ गौ'** (सूत्र 6.6)। इसको इस प्रकार लिखेंगे, विद्युन्माला म म ग ग, ऽऽऽ. ऽऽऽ, ऽऽ।

2. ग्रन्थ के प्रथम सूत्र में धी (बुद्धि) शब्द का प्रयोग मंगलार्थक है । शास्त्रीय नियम है कि- ग्रन्थ का प्रारम्भ मंगलवाचक शब्द से करे ।

3. सूत्र में एक शिक्षा भी है कि पहले धी अर्थात् विद्या-बुद्धि या ज्ञान का उपार्जन करे । तत्पश्चात् श्री अर्थात् धनोपार्जन करे । तत्पश्चात् स्त्री अर्थात् विवाह करे । विद्या और ऐश्वर्य प्राप्त करने के बाद ही विवाह करना चाहिए ।

4. आचार्य पिंगल ने सीधे ये न कहकर कि त्रिगुरु (तीन गुरु अक्षर वाला) मगण होता है, उन्होंने उसका उदाहरण ही रख दिया है। जैसे- धी श्री स्त्री। ये तीनों गुरु अक्षर है। इसी प्रकार जहाँ तीनों गुरु अक्षर होंगे, वहाँ मगण होगा। इसी प्रकार आगे के सूत्रों में भी गणों का निर्देश उदाहरण के द्वारा किया है।

Fundamentals

In Sanskrit, there is no poetry without *chanda* or metre. To understand and appreciate any poetical composition, a good knowledge and a feel of *chanda* is essential. "The lore of *chanda* is the boat for those who desire to cross the deep ocean of poetry", says poet *Daṇḍī*, in his *Kāvyādarśa*.

To express or describe any experience, feeling, emotion or action, the choice of the appropriate *chanda* is very important, because each metre has its own mood, rhythm and movement.

While using a particular metre, says Kshemendra, in his *Suvṛttatilaka*, "One has to see the *Rasa*, the mood,

the nature of the description and context." Therefore one should have the knowledge of *chanda*.

In Sanksrit and in Indian Languages derived from Sanskrit, the *chanda* is determined by the arrangement of short and long syllables. The large number of possible permutations and combinations has given rise to a large variety of *chandas*.

Almost all the *padyakāvyas* or poetical compositions in Sanskrit follow a metrical structure. Therefore, to understand and appreciate them, the knowledge of metrics or *chandas* is essential.

The vast body of Sanskrit literature which we have with us in the present day is the legacy of the *ṛiṣis* (great scholars) both ancient and modern. It is an inexhaustible wealth of inspiration for a student of poetic metres.

The study of metrics has a long tradition as an important branch of Vedic learning. The text that deals with the rules of metrics is called *Chandaśāstra* and is one of the six *Vedāṅgas* or limbs of the *Vedas*. Indeed, the *chanda* itself is considered to be the two legs of *Vedas* by eminent grammarian *Pāṇini* (750 BC or before), the great mathematician and astronomer *Bhāskarācārya* (b.1114 AD) and other top ranking scholars.

***Chanda* or metre**

Literary compositions (*kāvyas*) in Sanskrit may be in the form of prose (*gadya*) or in the form of verse (*padya*). A poetical stanza or verse in Sanskrit is called *padya*. Generally a *padya* or a verse contains four *pādas* or quarters or metrical lines.

Sanskrit verses are classified into groups and subgroups according to

(a) the number of syllables or syllabic instants that they contain in each quarter, and

(b) the position or placement of short and long syllables within the verse.

These groups and subgroups are called *chandas*.

Pāda or quarter

All verses in Sanskrit contain generally four lines. Each line is called a *pāda* (also called quarter if the verse has four metrical lines). The first two *pādas* from the first half of a verse and the remaining two *pādas* from the last half of the verse.

A *pāda* or quarter is regulated either by number of syllables (*akṣara*) or by the number of syllabic instants, that is morae (*mātrās*).

Akṣara or syllable

An *akṣara* is as much of a word as can be pronounced distinctly at once or by one effort of the voice. So a vowel with or without one or more consonants is considerd as one syllable. A syllable can be short (*laghu*) or long (*guru*), depending on whether its vowel is short or long.

Laghu or short syllables

The vowels अ (a),इ (i), उ (u), ऋ (*ṛ*) and ऌ (*ḷ*) are short. Whenever any of these is used in a verse separately or with one or more consonants, it will be considered as a short syllable. For example क (ka), कि (ki), etc. are short syllables.

The vertical bar (ı) is used to represent a short syllable in scansion and metrical analysis.

Guru or long syllables

The vowels आ (*ā*), ई (*ī*), ऊ (*ū*), ॠ (*ṝ*), ए (e), ऐ (ai), ओ (o), औ (au) are long. Whenever any of these is used in a verse separately or with one or more consonants, it will be considered as long. For example, का (*kā*), की (*kī*) etc.

are long syllables.

The symbol ऽ is used to represent a long syllable in scansion and metrical analysis. A short vowel gets the practical status of long under the following three conditions:

(i) If a vowel is followed by an *anusvārava*. For example, तं (*taṁ*), गं (*gaṁ*), etc.

(ii) If a vowel is followed by a *visarga*, for example, तः (*taḥ*), गः (*gaḥ*), etc.

(iii) If a vowel is followed by a conjunct consonant, for example, बन्ध (*bandha*). Notice that the short syllable *ba* has to be counted long, since it is followed by the conjunct न्ध (*ndha*).

As a final remark about the counting of syllables in a metre, a short syllable at the end of a quarter of a metre may be considered a long syllable and its vice versa as per the chanting or singing requirements of the metre.

As an illustration we present a verse in *anuṣṭup* metre showing only its scansion into short (।) and long (ऽ) syllables.

। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ
। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ
। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ
। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ

This scansion may be considered a matrix, wherein we have not followed the modern taste of using brackets or similar notations.

Indeed, an even metre may be defined as a matrix of 4 x n, that is a matrix consisting of four rows and *n* columns, wherein each element of a row is either । or ऽ and all the four rows have the same syllabic arrangement. (The modern symbols for । and ऽ are 1 and 0 respectively.) Notice that, in the above illustration, the number of

elements in each row is 8 and all the four rows are identical. This motivates to designate an even metre by an even matrix of order 4 x n.

Mātrā or metrical unit

A unit of metrical quantity is called a mora *(mātrā)*, or 'instant'. A *mātrā*, or 'instant' denotes the time required to utter a short vowel. All short vowels are regarded as consisting of one mora. All long vowels and diphthongs are regarded as consisting of two morae.

Verse Classification

All *padyas* or verses in Sanskrit may be classified as either *vṛtta* or *jāti*. In all that follows, we adhere to Piṅgla's discussion on *vṛttas* or verses with four quarters.

A *vṛtta chanda* is that which is regulated by the number and positions of syllables in each *pāda* or quarter.

Vṛtta chanda is further divided into three categories, such as:

(a) *Samavṛtta* or even metres.

(b) *Ardhasamavṛtta* or half-even metres.

(c) *Viṣamavṛtta* or uneven metres.

Verses in which all the (four) quarters contain an equal number of syllables and the same syllabic arrangement are called *Samavṛttas* or even metres. Thus if the metrical scansion of a metre has all the four rows identical then the metre is called even. If alternate rows of the scansion are identical then the metre is categorized as half-even. An uneven metre is neither even nor half-even. It is important to notice that, in general, the class of even metres is contained in the class of half-even metres.

Apart from 8 *Varṇic Gaṇas* (if. the table below), *Piṅgala* uses two other *gaṇas*, viz, *La* (ल) for short (*laghu*) and *ga* (ग) for long (*guru*). The system consisting of eight *gaṇas*, that is

The 8 tri-syllabic feet or *gaṇas*.

serial number	1	2	3	4	5	6	7	8
Name of *gaṇas* in English character	*Magaṇa*	*Yagaṇa*	*Ragaṇa*	*Sagaṇa*	*Tagaṇa*	*Jagaṇa*	*Bhagaṇa*	*Nagaṇa*
Name of *gaṇas* in Hindi character	मगण	यगण	रगण	सगण	तगण	जगण	भगण	नगण
Symbols denoting *gaṇas*	ऽ ऽ ऽ	। ऽ ऽ	ऽ । ऽ	। । ऽ	ऽ ऽ ।	। ऽ ।	ऽ । ।	। । ।
Examples in Hindi	मायावी	यशोदा	राधिका	सरसी	तांबूल	जलेश	भावन	नमन
English or Latin equivalents	molossus	Bacchius	Amphi-macer	Anapae-stus	Anti-Bacchius	Amphi-brachys	Dactylus	Tribra-chys
Symbolic initial letters	*Ma* म	*Ya* य	*Ra* र	*Sa* स	*Ta* त	*Ja* ज	*Bha* भ	*Na* न

Note that English Poetry is regulated by accent whereas Sanskrit (and other languages derived from Sanskrit) poetry is regulated by quantity called mora (*mātrā*).

Ma, Ya, Ra, Sa, Ta, Ja, Bha, Na and the other two *La, Ga* are called the ten syllables of *Piṅgala*. They pervade the whole creation of metres. The best way to remember them (and their elements) is to read them in the following musical order.

(TSP) *Ya - Mā - Tā - Rā - Ja - Bhā - Na - Sa - La - Gaṃ*

It needs a little explanation. Suppose we wish to know *Yagaṇa*. We start with *Ya* and notice that *Ya* is a short (ɪ) syllable, *Mā* (the next entry in the (TSP) is long (ऽ) and *Tā* (the further next entry in the system (TSP) is also long (ऽ). Thus *yagaṇa* stands for ɪऽऽ. Similarly, to know *Ragaṇa* we start with *Rā* and notice that *Rā* is long (ऽ) and the next two entries in the (TSP), viz, *Ja* and *Bhā* are short (ɪ) and long (ऽ) respectively. So *Ragaṇa* stands for ऽɪऽ. In order to know S*agaṇa* quickly, we see that *Sa-La-Gaṃ* gives ɪɪऽ. Recall that *La* and *Ga* (which is written as *Gaṃ* in TSP) stand for short (ɪ) and long (ऽ) respectively. Thus one can know the structure of any of eight *gaṇas*. Notice that the 8 *gaṇas* have two complementary subclasses when long (ऽ) and short (ɪ) are interchanged. Thus *Ma, Ya, Ra* and *Sa* are in one subclass and *Ta, Ja, Bha* and *Na* are in another subclass. Thus, for example, the binary complement of *Ma* is *Na*, and that of *Sa* is *Ta*.

One of the most surprising aspects of masterly composition of various examples and definitions of various *chandas* is that in many cases, the definition of each *chanda* is itself composed in that particular example of the *chanda* (see, for instance, *Sūtras* 4.40 & 8.2 and its examples or any other *Sūtra* and its example). (Here and elsewhere as well, 8.2 stands for the second formula of the 8th chapter.)

Words of numerals

There is a fashion to use words for numerals in Sanskrit literature. A list of prominent words representing respective numbers is given below.

Number	Words	Number	Words
1	*Candra, Iśvara*	2	*Netra, Pakṣa*
3	*Guṇa, Kāla, Vahni, Rāma*	4	*Veda, Yuga, Samudra*
5	*Bhūta, Yakṣa, Bāṇa, Indriya*	6	*Aṅga, Śastra, Ṛtu, Rasa*
7	*Muni, Svara, Ṛṣi*	8	*Vasu, Yāma*
9	*Graha, Nidhi, Nanda*	10	*Dik, Doṣa*
11	*Rudra*	12	*Āditya, Sūrya, Māsa*
13	*Viśvedeva*	14	*Bhuvana, Manvantara*
15	*Tithi*	16	*Kalā*
17	*Dik-svara*	18	*Dig-vasu*
19	*Dig-graha*	20	*Nakha*

वरा सा य ॥ 2 ॥

अर्थ- जहाँ प्रथम अक्षर लघु और शेष दो गुरु होते हैं, वहाँ यगण होता है। यगण- ।ऽऽ । जैसे- व रा सा ।

Meaning. Where the first syllable is short and the rest two syllables are long, then it is called यगण *(Yagaṇa)*, यगण- ।ऽऽ, For example - वरा सा, here the first syllable व is short and the rest रा सा are long.

टिप्पणी- 1. जहाँ त्रिक (तीन अक्षर) में प्रथम अक्षर लघु होगा और शेष दो गुरु होंगे, वहाँ यगण होगा। जैसे- व रा सा, व लघु है, रा और सा गुरु हैं, अतः यह यगण है। उदाहरण- '**भुजंगप्रयातं यः**' (सूत्र 6.38) 12 अक्षर वाले भुजंगप्रयात छन्द में 4 यगण होते हैं।

का गुहा र् ॥ 3 ॥

अर्थ- जहाँ त्रिक (तीन अक्षर या तीन वर्ण) में मध्य अक्षर लघु हो और शेष दो (प्रथम और तृतीय) गुरु होते हैं, वहाँ रगण होता है। रगण- ऽ।ऽ, जैसे- का गुहा, इसमें मध्य अक्षर गु लघु है, शेष दो 'का हा' गुरु हैं।

Meaning. Where the middle syllable is short and the rest two syllables are long, then it is called रगण (*Ragaṇa*), रगण- ऽ।ऽ, For example - का गुहा, here the middle syllable गु is short and the rest का हा are long.

टिप्पणी- 1. जहाँ त्रिक में मध्यागत अक्षर लघु होता है और शेष दो गुरु होते हैं, वहाँ रगण होता है। उदाहरण- स्रग्विणी रः (सूत्र 6.38), 12 अक्षर वाले स्रग्विणी छन्द में चार रगण होते हैं।

वसुधा स् ॥ 4 ॥

अर्थ- जहाँ पर त्रिक में अन्तिम अक्षर गुरु हो और शेष दो लघु होते हैं, वह सगण होता है। सगण-।।ऽ। जैसे- वसुधा, इसमें अन्तिम वर्ण धा गुरु है, शेष दो 'व सु' लघु हैं।

Meaning. Where the last syllable is long and the remaining rest two are short, then it is called सगण (*Sagaṇa*), सगण- ।।ऽ, For example - वसुधा, here the last syllable धा is long and the rest व सु are short ones.

टिप्पणी- जहाँ त्रिक (तीन वर्णों का समूह) में अन्तिम वर्ण गुरु होता है और शेष दो लघु होते हैं, उसे सगण कहते हैं। उदाहरण- तोटकं सः (सूत्र 6.32) अर्थात् 12 अक्षर वाले तोटक छन्द में चार सगण होते हैं।

सा ते क्व त् ॥ 5 ॥

अर्थ- जहाँ पर त्रिक में अन्तिम अक्षर लघु होता है और शेष दो गुरु होते हैं, वहाँ तगण होता है। तगण- ऽऽ।। जैसे- सा ते क्व में अन्तिम वर्ण क्व लघु है और शेष दो 'सा ते' गुरु हैं।

Meaning. Where the last syllable is short and the rest two are long, then it is called तगण (*Tagaṇa*), तगण- ऽऽ।. For example - सा ते क्व, here the last syllable क्व is short and the rest सा ते are long.

कदा स ज् ॥ 6 ॥

अर्थ- जहाँ पर त्रिक में मध्यगत अक्षर गुरु होता है और शेष दो अर्थात् प्रथम और तृतीय लघु होते हैं, वहाँ पर जगण होता है। जगण- ।ऽ। । जैसे- कदा स, इसमें मध्यगत वर्ण 'दा' गुरु है तथा शेष दो 'क स' लघु हैं।

Meaning. Where the middle syllable is long and the rest two (i.e. the first and third) are short, then it is called जगण (*Jagaṇa*), जगण- ।ऽ।, For example - क दा स, here the middle syllable दा is long and the rest क स are short.

किं वद भ् ॥ 7 ॥

अर्थ- जहाँ त्रिक में प्रथम अक्षर गुरु होता है और शेष दो (द्वितीय और तृतीय) लघु होते हैं, वहाँ भगण होता है। भगण- ऽ।। । जैसे- किं वद, इसमें प्रथम वर्ण 'किं' अनुस्वार सहित होने से गुरु है और शेष दो अर्थात् द्वितीय और तृतीय वर्ण 'वद' लघु हैं।

Meaning. Where the first syllable is long and the rest two (i.e. the second and third) are short, then it is called भगण (*Bhagaṇa*), भगण- ऽ।।. For example- किं व द, here the first syllable किं is long, because इ is followed by an *anusvāra* (अनुस्वार). The rest (i.e. the second and third) are short.

न हस न् ॥ 8 ॥

अर्थ- जहाँ पर त्रिक में तीनों अक्षर लघु (ह्रस्व) होते हैं। वहाँ पर नगण होता है। नगण- ।।। । जैसे- न हस, इसमें तीनों वर्ण लघु हैं, अतः यह नगण है।

Meaning. Where all the three are short syllables, then it is called नगण (*Nagaṇa*), नगण- III. For example- न ह स, here all the three syllables are short ones. Hence it is *Nagaṇa* (नगण).

गृ ल् ॥ 9 ॥

अर्थ- ह्रस्व अक्षर ल् अर्थात् लघु होता है । जैसे- गृ में ऋ ह्रस्व है, अतः यह लघु अक्षर है । यहाँ ल् वर्ण लघु का बोधक है ।

Meaning. A short syllable is लघु (short). For example in गृ (*gṛ*), the vowel ऋ (*ṛ*) is short, hence it is called short. In the above *sūtra*, ल् (l) denotes short vowel.

गन्ते ॥ 10 ॥

विशेष- यहाँ पूर्व सूत्र से गृ की अनुवृत्ति की जाती है । गृ शब्द लघु अक्षर का द्योतक है । सूत्र का पदच्छेद है- ग् +अन्ते ।

अर्थ- ह्रस्व अक्षर अन्त में (पाद के अन्त में होता है तो) वह गुरु माना जाता है ।

Meaning. (Here the word गृ (*gṛ*) is taken from the previous *sūtra.* It denotes a short syllable). A short syllable at the end of a पाद *(pāda),* is treated as a long syllable. (पाद *(pāda)* means one part of the verse.)

टिप्पणी- इस सूत्र में पूर्व सूत्र 'गृ ल्' से गृ (अर्थात् लघु अक्षर) की अनुवृत्ति की जाती है । अनुवृत्ति पारिभाषिक शब्द है । इसका अर्थ है- पूर्व सूत्र से किसी पद या शब्द को लेना । दो बार पढ़ने की जगह अनुवृत्ति का आश्रय लिया जाता है । इससे पुनरुक्ति दोष नहीं होता है । अनुवृत्ति के कारण सूत्र होता है- गृ गन्ते, गृ ग् +अन्ते । इसका अर्थ है- गृ (लघु अक्षर) को ग् (गुरु अक्षर) माना जाता है, अन्ते अर्थात् पाद (चरण) के अन्त में हो तो ।

ध्रादिपरः ॥ 11 ॥

विशेष- इस सूत्र में पूर्वसूत्रों से गृ और ग् की अनुवृत्ति की जाती है । अतः सूत्र बनता है- गृ ग् ध्रादिपरः । तदनुसार अर्थ किया जाता है ।

अर्थ- गृ अर्थात् लघु अक्षर ग् (गुरु अक्षर) माना जाता है, यदि बाद में संयुक्त व्यंजन हो तो । ध्रादिपरः का अर्थ है- ध्र् (ध्+र्) आदि अर्थात् संयुक्त व्यंजन बाद में हो तो आदि शब्द से विसर्ग (:), अनुस्वार (ं) का भी ग्रहण होता है।

Meaning. (Here गृ *(gṛ)* and ग् *(g)* are taken from the previous *sūtras.* If a short vowel is followed by a conjunct of consonants, then it becomes long one. For example - ध्र् *(dhr)* is a conjunct consonant, ध्+र् (dh+r).

टिप्पणी- इस सूत्र में पूर्व दो सूत्रों से गृ (लघु) और ग् (गुरु) की अनुवृत्ति होती है, अतः सूत्र का अर्थ हो जाता है- लघु अक्षर भी गुरु (दीर्घ) माना जाता है, यदि उसके बाद कोई संयुक्त व्यंजन हैं तो। जैसे- ध्र (ध्+र्), यह संयुक्त व्यंजन है। आदि शब्द से अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:) का ग्रहण होता है ।

हे ॥ 12 ॥

विशेष- इस सूत्र में भी पूर्व सूत्रों से ग् (गुरु) की अनुवृत्ति की जाती है। अतः सूत्र होता है- हे ग् , अर्थात् हे को गुरु वर्ण (दो मात्रा वाला वर्ण) समझना चाहिए ।

अर्थ- 'हे' को गुरु वर्ण (दो मात्रा वाला वर्ण) समझना चाहिए । इसका अभिप्राय है कि सभी दीर्घ अक्षरों को गुरु वर्ण (दो मात्रा वाला) समझें ।

Meaning. (Here also the word ग् *(g)* is taken from the previous *sūtra*). The word 'हे' is to be treated as long vowel (i.e. a long vowel is to be regarded as equal to two short vowels.)

टिप्पणी- इस सूत्र में पूर्वसूत्र से ग् की अनुवृत्ति की जाती है । अतः 'हे' शब्द को गुरु अर्थात् दो मात्रा वाला समझना चाहिए । इसका अभिप्राय है कि- केवल 'हे' शब्द ही नहीं, अपितु सभी गुरु वर्ण (दीर्घ अक्षर) आ ई ऊ ॠ ए ऐ ओ औ दो मात्रा वाले वर्ण द्विमात्रिक समझने चाहिएं । मात्रिक छन्दों में ह्रस्व

स्वर अ इ उ ऋ की एक मात्रा मानी जाती है और दीर्घ या गुरु स्वर की दो मात्रा गिनी जाती है ।

लौ सः ॥ 13 ॥

विशेष- यहाँ पर 'लौ' शब्द दो लघु अक्षरों का बोधक है और 'सः' शब्द गुरु वर्ण के लिए है ।

अर्थ- दो लघु अक्षर (अर्थात् दो ह्रस्व स्वर) एक गुरु अक्षर के बराबर होते हैं । इसी प्रकार एक गुरु वर्ण दो लघु अक्षर के बराबर होता है । (मात्रिक छन्दों में इस नियम की आवश्यकता पड़ेगी) ।

Meaning. (लौ (*lau*) = 2 short syllables, सः (*saḥ*) is for ग् (*g*) or long vowel). Two short vowels are to be treated as one long vowel. (The rule will apply to मात्रिक छन्दस् (*mātric* metres or moric metres*)*, where short and long vowels are counted).

ग्लौ ॥ 14 ॥

विशेष- ग्लौ का अर्थ है- गुरु और लघु । इसका ग्रन्थ की समाप्ति तक अधिकार है, अर्थात् जहाँ पर किसी विशेष गुरु या लघु का निर्देश न हो, वहाँ पर गुरु या लघु में से कोई भी स्वर रखा जा सकता है ।

अर्थ- ग्लौ अर्थात् गुरु और लघु वर्ण में से कोई भी वर्ण रखा जा सकता है । (छन्दःशास्त्र में प्लुत का प्रयोग नहीं होता है) ।

Meaning. ग्लौ *(glau)* means long (गुरु) and short (लघु) vowels. (This rule will apply in the whole book, where ever the description regarding the arrangement of long and short syllables is not given; provided that the number of syllables (for example 8, 10, 11 or 12 is given.)

अष्टौ वसव इति ॥ 15 ॥

अर्थ- छन्दःशास्त्र में जहाँ 'वसु' शब्द कहा जाएगा, वहाँ उसका अर्थ आठ (8) संख्या समझें, (इसी प्रकार विभिन्न संख्याओं के लिए अन्य शब्द हैं। उनका विवरण सूत्र 1 से पूर्व दिया गया है ।)

Meaning. In this *chandah śāstraṃ*, the word *vasu* (वसु) denotes number 8. (In prosody, mathematics and other Sanskrit works, there is a tradition to use a word instead of a number. A list of such numbers and words is given in the discussion that preceds *Sūtra 1.*)

टिप्पणी - इस छन्दःशास्त्र में यति (अल्पविराम) और अक्षर गणना के प्रसंगों में 2, 4, 5, 8 आदि अंकों के लिए विभिन्न पारिभाषिक शब्द यथास्थान दिए गए हैं। उनको समझने के लिए सूत्र संख्या 1 के विवरण में 'सांकेतिक निर्देश' में 1 से 20 तक संख्याएं और उनके लिए प्रयुक्त सांकेतिक शब्द दिए गए हैं। उन्हें स्मरण कर लें। जैसे- 4 के लिए वेद या समुद्र शब्द, 5 के लिए इन्द्रिय या भूत शब्द, 16 के लिए कला शब्द। इसके साथ ही बड़ी संख्याओं का बोध कराने के लिए एक दूसरी विधि भी अपनाई है। जैसे- 14 के लिए '**द्विःस्वराः**' (सूत्र 4.32) अर्थात् स्वर (7) का दुगुना-7X2 = 14 वर्ण। 16 के लिए '**युग्वसवः**' (सूत्र 4.32) या 'द्विर्वसवः' (सूत्र 4.42), युक् और द्विः का अर्थ है- 2। अतः '**युग्वसवः**' और '**द्विर्वसवः**' का अर्थ है- वसु (8) का दुगुना, 8 X 2 = 16। इसी प्रकार बड़ी संख्याओं के लिए दुगुना या तिगुना करके संख्या-पूर्ति की गई है। यह विवरण सूत्रों के अर्थ में दिया गया है।

***

प्रथमोऽध्यायः समाप्तः।

(This is the end of Chapter I.)

द्वितीयोऽध्यायः
CHAPTER II

छन्दः ॥ 1 ॥

अर्थ- ग्रन्थ की समाप्ति तक छन्द का अधिकार है। इसका अभिप्राय यह है कि इस पूरे ग्रन्थ में जो कुछ कहा गया है, वह छन्दःशास्त्र से संबद्ध है।

Meaning. The word *chandah* or *chandas* (छन्दः or छन्दस्) will continue to the end of the book. It means that whatever is said in the book comes under the heading of Chandas.

गायत्री ॥ 2 ॥

अर्थ- सूत्र 14 से पहले गायत्री छन्द का अधिकार है। अर्थात् सूत्र 13 '**जहयादासुरी**' तक जो कुछ वर्णन है, वह गायत्री छन्द का ही विवेचन है।

Meaning. *Chandaḥ* discussed below up to 13th, viz., *jahyādāsurī* (जहयादासुरी) belong to *gāyatrī* (गायत्री) category.

दैव्येकम् ॥ 3 ॥

शब्दार्थ- **दैवी**- दैवी गायत्री, **एकम्**- एक अक्षर वाली होती है।

अर्थ- दैवी अर्थात् दैवी गायत्री एक अक्षर वाली होती है। जैसे- ओम् शब्द।

Meaning. The *daivī gāyatrī* (दैवी गायत्री) consists of only one syllable, e.g., the word Om (ओम्). It consists of one syllable only.

आसुरी पञ्चदश ॥ 4 ॥

शब्दार्थ- **आसुरी**- आसुरी गायत्री, **पंचदश**- 15 अक्षर वाली होती है। गायत्री पद की अनुवृत्ति है।

अर्थ- आसुरी अर्थात् आसुरी गायत्री में 15 आधार होते हैं, अर्थात् आसुरी गायत्री के एक पाद में 15 अक्षर होते हैं।

Meaning. The word *āsurī* (आसुरी) means *āsurī gāyatrī*. It consists of 15 syllables, that is one *pāda* or part of this stich consists of 15 syllables.

यथा For example-

न पितृयाणं पन्थां जानाति न देवयानम् । अथर्व० 15.12.9

यहाँ 15 अक्षर हैं, अतः यहाँ आसुरी गायत्री है ।

प्राजापत्याऽष्टौ ॥ 5 ॥

शब्दार्थ- प्राजापत्या- प्राजापत्या गायत्री, **अष्टौ**- 8 अक्षर वाली होती है।

अर्थ- (गायत्री पद की अनुवृत्ति होती है) । जिस गायत्री छन्द के एक पाद में आठ अक्षर होते हैं, वह प्राजापत्या गायत्री कहलाती है । गायत्री में तीन पाद होते हैं । अतः जिस गायत्री छन्द में 8 X 3 = 24 अक्षर होते हैं, वह प्राजापत्या गायत्री होती है ।

Meaning. The *prajāpatyā gāyatrī* consists of 8 syllables in each of its three *pādas* or parts. So, in all, it has 8 x 3 = 24 syllables.

यथा For example-

(क) अप नः शोशुचदघम् । यजु० 35.21
(ख) शुक्रस्याधिष्ठानमसि । यजु० 7.13

यजुषां षट् ॥ 6 ॥

शब्दार्थ- यजुषाम्- याजुषी गायत्री, **षट्**- 6 वर्ण वाली होती है ।

अर्थ- (गायत्री पद की अनुवृत्ति होती है) । जहाँ गायत्री के एक पाद में 6 अक्षर होते हैं, उसे याजुषी गायत्री कहते हैं ।

Meaning. The *yājusī gāyatrī* consists of 6 syllables in one *pāda* or a part of the verse.

यथा For example-

(क) अश्विभ्यां पच्यस्व । यजु० 19.1
(ख) सुयामंश्चाक्षुष । अथर्व० 16.7.7

साम्नां द्विः ॥ 7 ॥

शब्दार्थ- साम्नाम्- साम्नी गायत्री, **द्विः षट्** = 2 x 6 = 12 अक्षरों वाली होती है ।

अर्थ- (गायत्री और षट् शब्द की पूर्व सूत्रों से अनुवृत्ति की जाती है) साम्नी नामक गायत्री 2 x 6 = 12 अक्षरों वाली होती है ।

Meaning. The *sāmnī gāyatrī* consists of 2 x 6 = 12 syllables.

यथा For example-

(क) वाचे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व । यजु० 7.27

(ख) निर्दुरर्मण्य ऊर्जा मधुमती वाक् । अथर्व० 16.2.1

ऋचां त्रिः ॥ 8 ॥

शब्दार्थ- ऋचाम्- ऋचा-संबन्धी अर्थात् आर्ची गायत्री, **त्रिः षट्**- 3x6 = 18 अक्षरों वाली होती है ।

अर्थ- (गायत्री और षट् शब्दों की पूर्व सूत्रों से अनुवृत्ति की जाती है ।) आर्ची गायत्री 3 x 6 = 18 वर्णों वाली होती है ।

Meaning. The *ārcī gāyatrī* consists of 6 x 3 = 18 syllables.

यथा For example-

तं सभा च समितिश्च सेना च सुरा चानुव्यचलन्। अथर्व० 15.9.2

द्वौ द्वौ साम्नां वर्धेत ॥ 9 ॥

शब्दार्थ- (सात प्रमुख छन्द हैं- गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् और जगती) । **साम्नाम्**- साम्नी उष्णिक् आदि छन्दों में, **द्वौ द्वौ**- दो-दो अंक, **वर्धेत**- बढ़ाते जाएँ, अर्थात्- साम्नी गायत्री में 12 अक्षर हैं, तो साम्नी उष्णिक् में 12+2=14 अक्षर होंगे । इसी प्रकार आगे के छन्दों में 2-2 अंक की वृद्धि करते जाना चाहिए ।

अर्थ- साम्नी उष्णिक्, साम्नी अनुष्टुप् आदि छन्दों में क्रमशः 2-2 अंक बढ़ाते जावें, अर्थात् साम्नी गायत्री में 12 अक्षर होते हैं । (देखो सूत्र 2.7), तो साम्नी उष्णिक् में 12 + 2 = 14 अक्षर होंगे । साम्नी अनुष्टुप् में 14 + 2 = 16 अक्षर होंगे । इसी प्रकार आगे के छन्दों में 2-2 अंक बढ़ाते जावें ।

Meaning. The seven main metres or chandas found in Vedas are: *gāyatrī, uṣṇik, anuṣṭup, bṛhatī, paṅkti, triṣṭup and jagatī.* These metres, when adjectified with *sāmnī* have respectively syllables 12, 14, 16, 18, 20, 22 and 24; that is *sāmnī gāyatrī* has 12 syllables, *sāmnī uṣṇik* 14 etc.

टिप्पणी- आचार्य पिंगल अति संक्षेप में कहने के अभ्यस्त हैं, अतः उनके सूत्रों का अर्थ बहुत लम्बा हो जाता है । वेदों में मुख्य 7 छन्द हैं । इनके नाम हैं- गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप् , बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् , जगती (देखो सूत्र 2.14) । सूत्र 2.7 में साम्नी गायत्री का लक्षण दिया है-6X2=12 अक्षर वाली। इसमें आगामी उष्णिक् आदि में 2-2 अंक बढ़ाते जाएं, अर्थात् साम्नी गायत्री में 12 अक्षर, साम्नी उष्णिक् में 12+2= 14 साम्नी अनुष्टुप् में 14+2= 16, साम्नी बृहती में 16+2= 18, साम्नी पंक्ति में 18+2= 20, साम्नी त्रिष्टुप् में 20+2= 22 एवं साम्नी जगती में 22+2= 24 अक्षर होते हैं।

यहाँ साम्नी उष्णिक् और साम्नी जगती के उदाहरण दिए जा रहे हैं-

The following examples pertain respectively to *sāmnī uṣṇik* and *sāmnī jagatī.*

(क) साम्नी उष्णिक् (12+2=14 अक्षर)

यः पृथिवीं बृहस्पतिमग्निं ब्रह्म वेद । अथर्व० 15.10.9

(ख) साम्नी जगती (22+2=24 अक्षर)

अनु त्वा माता मन्यतामनु पिताऽनु भ्राता
सगर्भ्योऽनु सखा सयूथ्यः ।। यजु० 4.20

त्रींस्त्रीनृचाम् ॥ 10 ॥

शब्दार्थ- (सूत्र 2.8 में आर्ची गायत्री 6 X 3 = 18 अक्षरों वाली बताई गई है। पूर्व सूत्र के अनुसार यहाँ भी 18 अक्षर में 3-3 बढ़ाने से आर्ची उष्णिक् आदि छन्द बनते हैं । **ऋचाम्**- अर्थात् आर्ची उष्णिक् आदि में, **त्रीन् त्रीन्**- 3-3 की वृद्धि करते जाना है।

अर्थ- आर्ची उष्णिक् आदि छन्दों में आर्ची गायत्री के 18 अक्षरों में 3-3 अंक और बढ़ाते जावें । जैसे- आर्ची उष्णिक् 18 + 3 = 21, आर्ची अनुष्टुप् 21 + 3 = 24 आदि ।

Meaning. (Here गायत्री and वर्धेत are taken from the previous formula. *Ārcī gāyatrī* has 6x3= 18 syllables; and *ārcī uṣṇik, ārcī anuṣṭup, ārcī bṛhatī, ārcī paṅkti, ārcī triṣṭup,* and *ārcī jagatī* have respectively syllables: 18 + 3 = 21, 21 + 3 = 24, ..., and 33 + 3 = 36.

टिप्पणी- सूत्र 2.8 में आर्ची गायत्री 6 X 3 = 18 अक्षरों वाली बताई गई है । इस सूत्र का कथन है कि आर्ची गायत्री में 3-3 अक्षर और जोड़ने से आर्ची उष्णिक् आदि छन्द होते हैं । इस प्रकार आर्ची उष्णिक् आदि की अक्षर संख्या निम्नलिखित होगी -

आर्ची गायत्री, आर्ची उष्णिक्, आर्ची अनुष्टुप्, आर्ची बृहती, आर्ची पंक्ति, आर्ची त्रिष्टुप् एवं आर्ची जगती में क्रमशः 18, 18+3=21, 21+3=24, 24+3=27, 27+3=30, 30+3=33, एवं 33+3= 36 अक्षर होते हैं ।

यहाँ आर्ची उष्णिक् और आर्ची त्रिष्टुप् के उदाहरण दिए जा रहे हैं । The following examples pertain respectively to *ārcī uṣṇik* and *ārcī triṣṭup.*

(क) आर्ची उष्णिक् (18 + 3 = 21 अक्षर)

तदग्निराह, तदु सोम आह,

पूषा मा धात्, सुकृतस्य लोके ।। अथर्व0 16.9.2

(ख) आर्ची त्रिष्टुप् (30 + 3 = 33 अक्षर)

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि, तच्छकेयं तन्मे राध्यताम् ।

इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि ।। यजु० 1.5

चतुरश्चतुरः प्राजापत्याः ॥ 11 ॥

शब्दार्थ- (सूत्र 2.5 में प्राजापत्या गायत्री 8 अक्षरों वाली बताई गई है। पूर्व सूत्र के अनुसार यहाँ भी 4-4 अक्षर बढ़ाते जाने पर प्राजापत्या उष्णिक् आदि छन्द होते हैं । यहाँ पर सूत्र 2.9 से 'वर्धेत' (बढ़ाते जावें) की अनुवृत्ति होगी । इस प्रकार सूत्र का अर्थ होगा- **चतुरः चतुरः वर्धेत**- अर्थात् 4-4 अंक बढ़ाने पर, **प्राजापत्याः**- प्राजापत्या उष्णिक्, प्राजापत्या अनुष्टुप् आदि छन्द होते हैं ।

अर्थ- (इस सूत्र में सूत्र 2.9 से 'वर्धेत' की अनुवृत्ति होगी । सूत्र 2.5 में प्राजापत्या गायत्री आठ अक्षरों वाली बनाई गई है, उसमें क्रमशः 4-4 अक्षर

बढ़ाने पर प्राजापत्या उष्णिक् आदि छन्द बनते हैं ।

Meaning. (Here the words प्राजापत्या and वर्धेत are taken from the previous formulae. According to Formula 2.9, *prajāpatyā gāyatrī* consists of 8 syllables. On adding 4 syllables successively, one gets the number of syllables of *prajāpatyā uṣnik, prajāpatyā anuṣṭup* etc. (See the matrix given at the end of this chapter).

टिप्पणी- सूत्र 2.5 के अनुसार प्राजापत्या गायत्री 8 अक्षरों वाली होती है। उसमें क्रमशः 4-4 संख्या बढ़ाते जाएं तो प्राजापत्या उष्णिक् आदि छन्द होते हैं । इसके लिए इस अध्याय के अन्त में दिए गए आव्यूह का अवलोकन करें।

यहाँ प्राजापत्या अनुष्टुप् और प्राजापत्या त्रिष्टुप् के उदाहरण दिए जा रहे हैं The following examples pertain respectively to *prajāpatyā anuṣṭup* and *prajāpatyā triṣṭup* -

(क) प्राजापत्या अनुष्टुप् (12 + 4 = 16 अक्षर)

स प्रजाभ्यो वि पश्यति यच्च प्राणिति यच्च न। अथर्व० 13.4(1).11

(ख) प्राजापत्या त्रिष्टुप् (24 + 4 = 28 अक्षर)

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वते ।।

एष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते ।। यजु० 7.35

एकैकं शेषे ॥ 12 ॥

शब्दार्थ- (यहाँ पूर्व सूत्रों से 'वर्धेत' की अनुवृत्ति होगी) । **शेषे**- शेष दो अर्थात् दैवी और याजुषी उष्णिक् आदि छन्दों में, **एकैकं वर्धेत**- एक-एक संख्या क्रमशः बढ़ावें ।

अर्थ- (यहाँ पूर्वसूत्रों से 'वर्धेत' की अनुवृत्ति होगी) । शेष दो दैवी और याजुषी उष्णिक् आदि छन्दों में एक-एक संख्या बढ़ती जाएगी । जैसे- दैवी गायत्री-1, दैवी उष्णिक् 1 + 1 = 2, दैवी अनुष्टुप्- 2 + 1 = 3 । याजुषी गायत्री- 6, याजुषी उष्णिक् 6 + 1 = 7, याजुषी अनुष्टुप्- 7+1= 8, आदि।

Meaning. (Here the word 'वर्धेत' is taken from the previous formula. In the remaining two metres, i.e. *daivī and yājusī*, to form *daīvi uṣṇik* etc. and *yājusī uṣṇik* etc.

add one syllable successively to *daivī gāyatrī* (1), *daivī uṣṇik* (1 + 1 = 2), etc., and to *yājusī gāyatrī* (6), *yājusī uṣṇik* (6 + 1 = 7), etc. (For a quick look, see the matrix at the end of this chapter.)

टिप्पणी- दैवी गायत्री और याजुषी गायत्री में उष्णिक् आदि छन्द बनाने में 1-1 संख्या बढ़ती जाती है । जैसे-

(क) **दैवी गायत्री**- 1, **दैवी उष्णिक्** - 1 + 1 = 2,
दैवी अनुष्टुप् - 2 + 1 = 3 **दैवी बृहती** - 3 + 1 = 4
दैवी पंक्ति- 4 + 1 = 5, **दैवी त्रिष्टुप्** - 5 + 1 = 6
दैवी जगती- 6 + 1 = 7

(ख) **याजुषी गायत्री**- 6, **याजुषी उष्णिक्**- 6+ 1 = 7
याजुषी अनुष्टुप् - 7 + 1 = 8, **याजुषी बृहती**- 8 + 1 = 9,
याजुषी पंक्ति- 9 + 1 = 10 **याजुषी त्रिष्टुप्**-10+ 1 = 11,
याजुषी जगती- 11 + 1 = 12

यहाँ दैवी और याजुषी के 3-3 उदाहरण दिए जा रहे हैं- See below two sets of examples, each consisting of three, pertaining to *daivī and yājusī* -

1. (क) दैवी उष्णिक् (1 + 1 = 2)- **भुवः** । यजु0 36.3
(ख) दैवी अनुष्टुप् (2 + 1 = 3)- **भूर्भुवः** । यजु0 36.3
(ग) दैवी जगती- (6 + 1 = 7)
तस्मै ध्रुवाया दिशः । अथर्व० 15.4.13

2. (क) याजुषी उष्णिक् (6 + 1 = 7)
तस्या उदीच्या दिशः । अथर्व० 15.4.10
(ख) याजुषी पंक्ति- (9 + 1 = 10)
हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि । यजु० 1.15
(ग) याजुषी जगती (11 + 1 = 12)
स्वस्ति यजमानस्य गृहान् गच्छतम् । यजु० 4.33

जहयादासुरी ॥ 13 ॥

शब्दार्थ- (यहाँ पूर्व सूत्रों से 'एकैकम्' और 'गायत्री' की अनुवृत्ति होगी ।) **आसुरी गायत्री**- आसुरी गायत्री से आसुरी उष्णिक् आदि छन्द बनाने

में, **एकैकं जह्यात्**- क्रमशः एक-एक संख्या घटाते जावें ।

अर्थ- आसुरी गायत्री से आसुरी उष्णिक्, आसुरी अनुष्टुप् आदि छन्द बनाने में क्रमशः 1-1 संख्या घटाते जावें । जैसे- आसुरी गायत्री- 15 अक्षर, आसुरी उष्णिक् - 15- 1 = 14 अक्षर, आसुरी अनुष्टुप् - 14-1= 13 अक्षर।

Meaning. (Here the words 'गायत्री' and 'एकैकम्' are taken from the previous formulae. In order to find the number of syllables of *āsurī uṣṇik, āsurī anuṣṭup,* etc. from *āsurī gāyatrī,* subtract 1 successively. (See the matrix at the end of this chapter.)

टिप्पणी- आसुरी गायत्री से आसुरी उष्णिक् आदि बनाने के लिए एक-एक संख्या घटाते जाएं। इस प्रकार आसुरी के उष्णिक् आदि भेद बनेंगे।यथा-

आसुरी गायत्री- 15 अक्षर, **आसुरी उष्णिक्** - 15 - 1 = 14
आसुरी अनुष्टुप् - 14 - 1 = 13, **आसुरी बृहती**- 13 - 1 = 12 अक्षर,
आसुरी पंक्ति- 12 - 1 = 11, **आसुरी त्रिष्टुप्** - 11 - 1 = 10 अक्षर,
आसुरी जगती- 10 - 1 = 9

यहाँ आसुरी के अनुष्टुप्, पंक्ति और जगती भेदों के उदाहरण दिए जा रहे हैं । कोष्ठ में छन्द की अक्षर-संख्या दी गई है । The following three examples pertain respectively to *āsurī anuṣṭup, āsurī paṅkti* and *āsurī jagatī.* Numbers in the brackets refer to the number of syllables.

(क) आसुरी अनुष्टुप् (14 - 1 = 13 अक्षर)

ऋचः प्राञ्चस्तन्तवो यजूंषि तिर्यञ्चः । अथर्व० 15.3.6

(ख) आसुरी पंक्ति (12 - 1 = 11 अक्षर)

तस्मै व्रात्यायासन्दीं समभरन् । अथर्व० 15.3.3

(ग) आसुरी जगती (10 - 1 = 9 अक्षर)

तामासन्दीं व्रात्य आरोहत् । अथर्व० 15.3.9

तान्युष्णिगनुष्टुब्-बृहती-पङ्क्ति-त्रिष्टुब्-जगत्यः ॥ 14 ॥

शब्दार्थ- तानि- वे पूर्वोक्त दैवी, आसुरी प्राजापत्या गायत्री आदि छन्दों के, **उष्णिग्**० - उष्णिक् , अनुष्टुप् , बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् और जगती भेद होते

हैं। दैवी, आसुरी और प्राजापत्या आदि गायत्री छन्दों के लक्षण दिखाये गए हैं । उसी प्रकार दैवी उष्णिक्, दैवी अनुष्टुप् आदि भेद होते हैं ।

अर्थ- उन पूर्वोक्त दैवी, आसुरी, प्राजापत्या आदि 6 छन्दों के गायत्री के अतिरिक्त ये 6 भेद और होते हैं- उष्णिक् , अनुष्टुप् , बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् और जगती । इस प्रकार पूर्वोक्त दैवी आदि 6 के गायत्री उष्णिक् आदि 7 भेद होने से 6 x 7 = 42 भेद हो जाते हैं ।

Meaning. Six varieties of metres have been enumerated previously. They are - *daivī, āsuri, prajāpatyā, yājuṣī, sāmnī and ārcī.* Each of them has 7 varieties of metres. They are- *gāyatrī, uṣṇik, anuṣṭup, bṛhatī, pānkti, triṣṭup and jagatī.* So the varieties of metres become 6 x 7 = 42.

टिप्पणी- पूर्वोक्त सूत्रों में गायत्री छन्द को लेकर दैवी आदि 6 भेद दिए गए हैं । इस सूत्र का कथन है कि जो 6 भेद गायत्री छन्द के दिए गए हैं, वे अन्य उष्णिक् आदि छन्दों के भी होते हैं। ये छन्द 7 हैं- इनके नाम हैं- गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप् , बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् और जगती । इस प्रकार 7 छन्दों के 6 भेद होने से इनकी संख्या 7 X 6 = 42 हो जाती है । इन भेदों का संक्षिप्त विवरण पहले दिया जा चुका है ।

तिस्रस्तिस्रः सनाम्न्यः एकैका ब्राह्म्यः ॥ 15 ॥

शब्दार्थ- **तिस्रः तिस्रः**:- याजुषी, साम्नी और आर्ची ये तीन भेद मिलकर, **एकैका**:- प्रत्येक गायत्री आदि छन्द, **सनाम्न्यः**:- एक नाम वाले होकर, **ब्राह्म्यः**:- ब्राह्मी गायत्री आदि नाम वाले हो जाते हैं । अर्थात् याजुषी, साम्नी और आर्ची तीनों भेदों को मिला दें तो एक ब्राह्मी गायत्री, ब्राह्मी उष्णिक्, ब्राह्मी अनुष्टुप् आदि छन्द होते हैं । जैसे- एक ब्राह्मी गायत्री= याजुषी 6+साम्नी 12 + आर्ची 18 = 36 अक्षर की होगी ।

अर्थ- याजुषी, साम्नी और आर्ची ये तीनों भेद मिलकर प्रत्येक गायत्री आदि नाम वाले होकर ब्राह्मी गायत्री, ब्राह्मी उष्णिक् , ब्राह्मी अनुष्टुप् आदि नाम वाले हो जाते हैं । जैसे- ब्राह्मी गायत्री 36 अक्षर वाली होती है । इसमें याजुषी गायत्री 6 + साम्नी गायत्री 12 + आर्ची गायत्री 18 = 36 अक्षर ।

Meaning. The union of the three varieties, viz, *yājuṣī, sāmnī* and *ārcī* is *brāhmī* and the sum of their syllables is that of *Brāhmī*. Consequently, *brāhmī gāyatrī brāhmī uṣṇik*, etc. have respectively the syllables 36 (*yājuṣī gāyatrī* 6 + *sāmnī gāyatrī* 12 + *ārcī gāyatrī* 18), 42 (*yājuṣī uṣṇik* 7 + *sāmnī uṣṇik* 14 + *ārcī uṣṇik* 21), etc. See the matrix at the end of this chapter. (Notice that the 6 varieties of metres are classified in 2 parts, viz., *brāhmī* class and *ārṣī* class.)

टिप्पणी- छन्दों के 6 भेदों को 2 वर्गों में बांटा गया है-

(क) ब्राह्मी वर्ग- याजुषी, साम्नी, आर्ची

(ख) आर्षी वर्ग- दैवी, आसुरी, प्राजापत्या ।

यदि याजुषी, साम्नी और आर्ची 3 भेदों को मिला दिया जाता है तो एक ब्राह्मी बनती है । इनके नाम होंगे- ब्राह्मी गायत्री, ब्राह्मी उष्णिक्, ब्राह्मी अनुष्टुप् आदि । इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है ।

1. **ब्राह्मी गायत्री** = 36 अक्षर । इसमें याजुषी गायत्री 6+साम्नी गायत्री 12+आर्ची गायत्री 18 = 36 अक्षर ।

2. **ब्राह्मी उष्णिक्** = 42 अक्षर । इसमें याजुषी उष्णिक् 7+साम्नी उष्णिग् 14 + आर्ची उष्णिक् 21 = 42 अक्षर ।

3. **ब्राह्मी अनुष्टुप्** = 48 अक्षर । इसमें याजुषी अनुष्टुप् 8+साम्नी अनुष्टुप् 16 + आर्ची अनुष्टुप् 24 = 48 अक्षर ।

4. **ब्राह्मी बृहती** = 54 अक्षर । इसमें याजुषी बृहती 9+साम्नी बृहती 18+आर्ची बृहती 27 = 54 अक्षर ।

5. **ब्राह्मी पंक्ति** = 60 अक्षर । इसमें याजुषी पंक्ति 10 +साम्नी पंक्ति-20+आर्ची पंक्ति 30 = 60 अक्षर ।

6. **ब्राह्मी त्रिष्टुप्** = 66 अक्षर । इसमें याजुषी त्रिष्टुप् 11 अक्षर +साम्नी त्रिष्टुप् 22+आर्ची त्रिष्टुप् 33 अक्षर = 66 अक्षर ।

7. **ब्राह्मी जगती** = 72 अक्षर । इसमें याजुषी जगती 12+साम्नी जगती-24 + आर्ची जगती 36 अक्षर = 72 अक्षर ।

यहाँ ब्राह्मी अनुष्टुप् और ब्राह्मी त्रिष्टुप् के उदाहरण दिए जा रहे हैं । See

below two examples- one each of *brahmī anuṣṭup* and *brahmī triṣṭup* respectively.

(क) ब्राह्मी अनुष्टुप् = (48 अक्षर)-

अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः ।
अव देवैर्देवकृतमेनोऽयासिषम् , अव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं,
पुरुराव्णो देव रिषष्पाहि ।। यजु० 3.48

(ख) ब्राह्मी त्रिष्टुप् - (66 अक्षर)-

गायत्रेण त्वा छन्दसा परिगृह्णामि, त्रैष्टुभेन त्वा
छन्दसा परिगृह्णामि, जागतेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि।
सुक्ष्मा चासि शिवा चासि स्योना चासि
सुषदा चास्यूर्जस्वती चासि पयस्वती च ।। यजु० 1.27

प्राग् यजुषामार्ष्यं इति ॥ 16 ॥

शब्दार्थ- (यहाँ पूर्वसूत्र से 'तिस्रःतिस्रः' की अनुवृत्ति होती है ।) **यजुषां प्राक्**- याजुषी से पहले के तीन भेद, अर्थात् प्राजापत्या, आसुरी और दैवी ये 3 भेद, **तिस्रः तिस्रः**- तीनों मिलकर, **आर्ष्यः** - आर्षी गायत्री, आर्षी उष्णिक् आदि छन्द होते हैं । जैसे- आर्षी गायत्री = 24 अक्षर । इसमें प्राजापत्या गायत्री- 8 अक्षर+आसुरी गायत्री 15अक्षर+दैवी गायत्री 1 = 24 अक्षर । **इति**- इति शब्द अध्याय की समाप्ति का सूचक है ।

अर्थ- याजुषी से पहले के तीन भेद अर्थात् प्राजापत्या, आसुरी और दैवी ये तीनों मिलकर एक आर्षी गायत्री, आर्षी उष्णिक् आदि भेद बनाते हैं ।

Meaning. The words 'तिस्रः तिस्रः' are taken from the previous formula. If all the 3 varieties before the word *yājusī* (i.e. *prajāpatyā, āsurī and daivī*) are combined, then they make one *ārṣī* variety. Similarly, the other varieties *ārṣī uṣṇik, ārṣī anuṣṭup*, etc. are made. For example, *ārṣī gāyatrī* has 24 syllables, which comes out from the sum of *prjāpatyā gāyatrī* (8), *āsurī gāyatrī* (15) and *daivī gāyatrī* (1).

टिप्पणी- इस सूत्र में आर्षी गायत्री, आर्षी उष्णिक् आदि भेदों का विवरण दिया जा रहा है । 7 छन्दों में प्रत्येक में प्राजापत्या, आसुरी और दैवी इन तीनों का योग रहेगा । जैसे-

आर्षी गायत्री- 24 अक्षर की होगी । इसमें प्राजापत्या गायत्री 8, आसुरी 15 और दैवी 1 = 24 अक्षर ।

आर्षी उष्णिक् - 28 अक्षर । इसमें प्राजापत्या 12, आसुरी 14 और दैवी 2 = 28 अक्षर ।

आर्षी अनुष्टुप् - 32 । इसमें प्राजापत्या 16, आसुरी 13 और दैवी 3 = 32 अक्षर ।

आर्षी बृहती- 36 अक्षर । इसमें प्राजापत्या बृहती 20, आसुरी बृहती 12 और दैवी बृहती 4 = 36 अक्षर ।

आर्षी पंक्ति- 40 अक्षर । इसमें प्राजापत्या पंक्ति 24, आसुरी पंक्ति 11 और दैवी पंक्ति 5 = 40 अक्षर ।

आर्षी त्रिष्टुप्- 44 अक्षर । इसमें प्राजापत्या त्रिष्टुप् 28, आसुरी त्रिष्टुप् 10 और दैवी त्रिष्टुप् 6 = 44 अक्षर ।

आर्षी जगती- 48 अक्षर । इसमें प्राजापत्या जगती 32, आसुरी जगती 9 और दैवी जगती 7 = 48 अक्षर ।

यहाँ आर्षी गायत्री, आर्षी अनुष्टुप्, आर्षी पंक्ति और आर्षी जगती के उदाहरण दिए जा रहे हैं । See below examples of *ārṣī gayatrī* (24 syllables), *ārṣī anuṣṭup* (32 syllables) , *ārṣī paṅkti* (40 syllables) and *ārṣī jagatī* (48 syllables) respectively.

(क) आर्षी गायत्री - 24 अक्षर । प्राजापत्या गायत्री 8+आसुरी गायत्री 15+दैवी गायत्री 1=24 अक्षर ।

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ।। यजु० 30.3

(ख) आर्षी अनुष्टुप्- 32 अक्षर । प्राजापत्या अनुष्टुप् 16+आसुरी अनुष्टुप् 13 + दैवी अनुष्टुप् 3 = 32 अक्षर ।

विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम् ।
विश्वो राय इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे स्वाहा।। यजु०4.8

(ग) आर्षी पंक्ति- 40 अक्षर । प्राजापत्या पंक्ति 24 + आसुरी पंक्ति 11 + दैवी पंक्ति 5 = 40 अक्षर ।

गृहा मा बिभीत मा वेपध्वमूर्जं बिभ्रत एमसि ।
ऊर्जं बिभ्रद् वः सुमना सुमेधा गृहानैमि मनसा मोदमानः ।।

यजु0 3.41

(घ) आर्षी जगती - 48 अक्षर । प्राजापत्या जगती 32 + आसुरी जगती 9 + दैवी जगती 7 = 48 अक्षर ।

आप्याययास्मान् सखीन् सन्या मेधया
स्वस्ति ते देव सोम सुत्यामशीय ।
एष्टा रायः प्रेषे भगाय ऋतमृतवादिभ्यो
नमो द्यावापृथिवीभ्याम् ।। यजु० 5.7

विशेष- अब तक दिए गए छन्दों का विवरण आव्यूह के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है । छन्द 7 हैं- गायत्री, उष्णिक् आदि । छन्दों के विशिष्ट वर्ग 8 हैं- आर्षी, दैवी आदि । इस प्रकार 7 X 8 = 56 भेद हो जाते हैं । कुछ छन्दों के विभिन्न वर्गों में कुछ संख्या बढ़ती है । जैसे- याजुषी गायत्री 6, याजुषी उष्णिक् 7 । इसमें 1 संख्या की वृद्धि हुई । कहीं पर कुछ संख्या का ह्रास होता है, अर्थात् कुछ संख्या घटाई जाती है । जैसे- आसुरी गायत्री 15 अक्षर, आसुरी उष्णिक् 14 । इसमें 1 संख्या कम (क्षय) हुई है । इसका भी सारणी में उल्लेख किया गया है ।

(छन्दों का आव्यूह (The matrix of metres) की तालिका आगामी पृष्ठ पर देखें ।)

छन्दों की आव्यूह
The Matrix of Metres

छन्दः Metres	गायत्री *gāyatrī*	उष्णिक् *uṣṇik*	अनुष्टुप् *anuṣṭup*	बृहती *bṛhatī*	पंक्ति *paṅkti*	त्रिष्टुप् *triṣṭup*	जगती *jagatī*	आनुक्रमिक वृद्धि (+)/क्षय (-) Successive Addition (+)/Subtraction(-)
(d) आर्षी (*ārṣī*)	24	28	32	36	40	44	48	+4
(c) दैवी (*daivī*)	1	2	3	4	5	6	7	+1
(b) आसुरी (*āsurī*)	15	14	13	12	11	10	9	-1
(a) प्राजापत्या (*prājāpatyā*)	8	12	16	20	24	28	32	+4
(a) याजुषी (*yājuṣī*)	6	7	8	9	10	11	12	+1
(b) साम्नी (*sāmnī*)	12	14	16	18	20	22	24	+2
(c) आर्ची (*ārcī*)	18	21	24	27	30	33	36	+3
(d) ब्राह्मी (*brāhmī*)	36	42	48	54	60	66	72	+6

ध्यान दें- पंक्ति (d) में उल्लिखित संख्याएं पंक्तियों (a), (b) एवं (c) के योग से प्राप्त होती हैं ।

Notice that the numbers of the row (d) are the sum of rows (a), (b) and (c).

द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ।

(This is the end of Chapter II.)

तृतीयोऽध्यायः
CHAPTER III

पादः ॥ 1 ॥

शब्दार्थ- पादः - छन्द का चतुर्थांश या तृतीयांश पाद या चरण कहा जाता है। अध्याय की समाप्ति तक इसका अधिकार है।

अर्थ- पाद का अधिकार अध्याय की समाप्ति तक है। आगे जो लक्षण दिए गए हैं, उनमें एक पाद (या चरण) में कितने अक्षर होते हैं, इसका निर्देश है। शेष पादों में उतने ही अक्षर होंगे।

Meaning. A metre (in Vedic lore) may contain 2 or 3 or 4 or five *pādas*. Sometimes, it contains only one *pāda*. A part of *mantra* or *śloka* is called *pāda*.

विशेष - वेदों में मंत्रों के 1, 2, 3, 4 या 5 तक पाद (चरण या अंश) होते हैं। सूत्रों में लक्षण केवल एक पाद का बताया जाता है। शेष पादों में वही लक्षण लगेगा। एक पाद वाले छन्द को एकपाद्, दो पाद वाले को द्विपाद्, तीन पाद वाले को त्रिपाद् और चार पाद वाले को चतुष्पाद् कहते हैं। गायत्री आदि कुछ छन्द तीन पाद वाले हैं, अतः वे त्रिपाद् हैं। अन्य छन्द प्रायः- चार पाद वाले होते हैं, अतः वे चतुष्पाद् कहे जाते हैं। कुछ छन्दों में दो, तीन या चार पाद भी होते हैं। वहाँ सूत्र में छन्द के साथ उल्लेख होगा कि अमुक पाद में इतने वर्ण होंगे और अन्य में इतने अक्षर।

इयादिपूरणः ॥ 2 ॥

शब्दार्थ - (पूर्व सूत्र से 'पादः' की अनुवृत्ति होती है।) **पादः** - छन्द का पाद, **इयादिपूरणः** - इय् आदि के द्वारा पूरा कर लिया जाता है। अर्थात् यदि कहीं छन्द के एक पाद में एक अक्षर की कमी है तो वहाँ इय् (इ) या उव् (उ) आदि लगा लिया जाता है, जिससे पाठ में पादपूर्ति हो सके।

उदाहरण-

(क) तत् सवितुर्वरेण्यम् (यजु0 30.2) में गायत्री छन्द है। गायत्री के एक पाद में 8 अक्षर होते हैं। यहाँ पर 7 अक्षर हैं। अतः **वरेण्यम्** में य से पूर्व इ लगाकर '**वरेणियम्**' पाठ करके छन्द पूर्ति की जाती है।

(ख) इसका दूसरा उदाहरण है-

दिवं गच्छ, स्वः पत । यजु० 12.4

यहाँ पर भी गायत्री के 8 अक्षर के स्थान पर 7 अक्षर हैं । अतः पादपूर्ति के लिए स्वः में व से पूर्व उ जोड़कर उसे सुवः कर लेने से- 'दिवं गच्छ, सुवः पत' पाठ होगा और अक्षरपूर्ति हो जाएगी ।

इसी प्रकार अन्य स्थलों पर भी 'य' से पूर्व 'इ' और 'व' से पूर्व 'उ' आदि लगाकर छन्द की पूर्ति की जाती है ।

Meaning. (Here the word *pāda* is taken from the previous formula). If one syllable is less than the required number in a part of the *mantra*, then *ĺ* (इ) or *u* (उ) is added appropriately to complete the part of the *mantra* while reciting. For example:

(A) 'तत् सवितुर्वरेण्यम्' (YV. 30.2). It is a part of the *gāyatrī mantra* containing 7 syllables only. Using the above rule, *i* (इ) is added before य to complete 8 syllables, and the *pāda* becomes 'तत् सवितुर्वरेणियम्'.

(B) The other example is 'दिवं गच्छ, स्वः पत' (YV. 12.4), Here also instead of 8 syllables, there are 7 syllables. To remove the defect we add उ (*u*) before व and स्वः becomes सुवः. By this method the required number of syllables (here 8) is completed and the defect is rectified.

गायत्र्या वसवः ॥ 3 ॥

शब्दार्थ- ('पादः' की अनुवृत्ति होगी) **गायत्र्याः पादः** - गायत्री छन्द के एक पाद में, **वसवः**- 8 अक्षर होते हैं । यहाँ पर 8 अक्षर के लिए 'वसवः' शब्द है ।

अर्थ- गायत्री छन्द के एक पाद में 8 अक्षर (वसु) होते हैं ।

Meaning. (Here the word *pāda* is taken from the previous formula). One part of a *gāyatrī* metre consists of 8 syllables.

टिप्पणी- यहाँ 8 अक्षर के लिए 'वसवः' शब्द है । 8 वसु ये हैं- पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र। आगे पूरे ग्रन्थ में विभिन्न संख्याओं के लिए वसु आदि पारिभाषिक शब्द दिए गए हैं । इनका विवरण अध्याय 1 के सूत्र 1 की टिप्पणी में दिया गया है । तदनुसार ही इन शब्दों का अर्थ समझें ।

गायत्री छन्द का उदाहरण Example of *gāyatrī* metre-

अग्निमीडे पुरोहितं, यज्ञस्य देवमृत्विजम् ।
होतारं रत्नधातमम् ।। ऋग्० 1.1.1

जगत्या आदित्याः ॥ 4 ॥

शब्दार्थ- (यहाँ 'पादः' की पूर्व सूत्र से अनुवृत्ति होती है ।) **जगत्याः पादः** - जगती छन्द के एक पाद में, **आदित्याः** - 12 अक्षर होते हैं । यहाँ 12 अक्षर के लिए 'आदित्याः' शब्द है ।

अर्थ- जगती छन्द के एक पाद में 12 अक्षर होते हैं ।

Meaning. (Here the word *pāda* is taken from the previous formula). The *jagatī* metre consists of 12 syllables in one part of the metre.

टिप्पणी- यहाँ 12 अक्षर के लिए 'आदित्याः' शब्द है । वर्ष के 12 मास के विभिन्न 12 सूर्य माने जाते हैं । अतः 12 सूर्य हो जाते हैं । वर्ष के 12 मास हैं - चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन ।

जगती छन्द का उदाहरण Example of *jagatī* metre-

हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणि-रुभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते ।
अपामीवां बाधते वेति सूर्य-मभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति ।।

ऋग्0 1.35.9

विराजो दिशः ॥ 5 ॥

शब्दार्थ- (यहाँ 'पादः' की पूर्वसूत्र से अनुवृत्ति होती है ।) **विराजः पादः**- विराट् (विराज्) छन्द के एक पाद में, **दिशः** - 10 अक्षर होते हैं । यहाँ पर 10 अक्षर के लिए 'दिशः' शब्द है । विराज् छन्द को पंक्ति छन्द भी कहते हैं।

अर्थ- विराट् (विराज्) छन्द के एक पाद में 10 अक्षर होते हैं ।

Meaning. (Here the word *pāda* is taken as before). The metre *virāja* consists of 10 syllables in one part of the metre.

विराज् छन्द का उदाहरण Example of *virāja* metre-

त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने, त्वां वर्धन्ति मतिभिर्वसिष्ठाः ।

त्वे वसु सुषणनानि सन्तु, यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

सामवेद 1306

त्रिष्टुभो रुद्राः ॥ 6 ॥

शब्दार्थ- (यहाँ 'पादः' की पूर्व सूत्र से अनुवृत्ति होती है ।) **त्रिष्टुभः पादः** - त्रिष्टुप् (त्रिष्टुभ्) छन्द का एक पाद, **रुद्राः** - 11 अक्षरों का होता है । यहाँ पर 11 अक्षर के लिए 'रुद्राः' शब्द का प्रयोग है ।

अर्थ- त्रिष्टुप् (त्रिष्टुभ्) छन्द के एक पाद में 11 अक्षर होते हैं ।

Meaning. (Here the word *pāda* is taken as before). One *pāda* of *triṣtup* metre consists of 11 syllables.

टिप्पणी- रुद्र 11 हैं । ये हैं- 5 प्राण-प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान। 5 उपप्राण- नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनंजय। 11वाँ जीवात्मा है। रुद्र 11 हैं। अतः 11 अक्षर के लिए रुद्र शब्द का प्रयोग हुआ है।

त्रिष्टुप् छन्द का उदाहरण Example of *triṣtup* metre-

तं त्वां वयं पतिमग्ने रयीणां, प्र शंसामो मतिभिर्गोतमासः ।

आशुं न वाजंभरं मर्जयन्तः, प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ।।

ऋग्० 1.60.5

एकद्वित्रिचतुष्पादुक्तपादम् ॥ 7 ॥

शब्दार्थ- **उक्तपादम्** - उपर्युक्त चार छन्द जिनके एक-एक पाद (चरण) का निर्देश किया गया है, **एक-द्वि-त्रि-चतुष्पाद्** - वे कहीं एक पाद वाले, कहीं दो पाद वाले, कहीं तीन पाद वाले और कहीं चार पाद वाले होते हैं।

अर्थ- उपर्युक्त चार छन्दों (गायत्री, जगती, विराज् और त्रिष्टुप्) के एक-एक के अक्षरों का निर्देश किया गया है । वे कहीं एक पाद वाले होते हैं, कहीं दो पाद वाले, कहीं तीन पाद वाले और कहीं चार पाद वाले होते हैं ।

Meaning. The four metres mentioned above, viz, *gāyatrī, jagatī, virāj and triṣṭup* contain sometimes one, sometimes two, sometimes three and sometimes four parts.

आद्यं चतुष्पाद् ऋतुभिः ॥ 8 ॥

शब्दार्थ- **आद्यम्**- प्रथम छन्द अर्थात् गायत्री कहीं-कहीं, **ऋतुभिः** - 6 अक्षरों से युक्त होकर, **चतुष्पाद्**- चार पाद वाली होती है । ऋतु शब्द संख्या 6 के लिए है ।

अर्थ- प्रथम अर्थात् गायत्री छन्द का प्रत्येक पाद कहीं-कहीं 6 अक्षरों वाला होता है और उसमें चार पाद होते हैं ।

Meaning. The first one (i.e. *gāyatrī* metre) sometimes contains six syllables in each part and has four parts.

टिप्पणी- ऋतु शब्द 6 संख्या के लिए । 6 ऋतुएं होती हैं - वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद् , हेमन्त और शिशिर ।

चतुष्पाद् गायत्री का उदाहरण Example of *gāyatrī* with 4 parts- (चारों पाद में 6 वर्ण)

दोषो गाय बृहद्,

गाय द्युमद् धेहि ।

आथर्वण स्तुहि,

देवं सवितारम् ।। अथर्व० 6.1.1

क्वचित् त्रिपाद् ऋषिभिः ॥ 9 ॥

शब्दार्थ- **क्वचित्**- कहीं-कहीं, **ऋषिभिः**- सात-सात अक्षरों से युक्त, **त्रिपाद्**- तीन पादों वाली गायत्री भी मिलती है । ऋषि शब्द सात अक्षर के लिए है ।

अर्थ- कहीं-कहीं गायत्री छन्द सात अक्षरों के युक्त और तीन पाद वाला भी मिलता है ।

Meaning. Sometimes the *gāyatrī* metre contains

7 syllables in each part and has 3 parts. See the example below.

युवाकु हि शचीनां,

युवाकु सुमतीनाम् ।

भूयाम वाजदाव्नाम् ।। ऋग्० १.१७.४

सा पादनिचृत् ॥ 10 ॥

शब्दार्थ- सा- पूर्वोक्त सात अक्षरों वाली त्रिपाद् गायत्री, **पादनिचृत्-** पादनिचृत् कही जाती है ।

अर्थ- पूर्वोक्त सात अक्षरों वाली त्रिपाद् गायत्री को पादनिचृत् गायत्री कहते हैं ।

Meaning. The *gāyatrī* metre containing 7 syllables and having 3 parts is called *pādanicrit* (sometimes also called *pādanivrit) gāyatrī* .

टिप्पणी- निचृत् के स्थान पर 'निवृत्' पाठ भी मिलता है ।

षट्क-सप्तकयोर्मध्येऽष्टावतिपादनिचृत् ॥ 11 ॥

शब्दार्थ- षट्क-सप्तकयोः - जिस गायत्री छन्द में प्रथम पाद में 6 अक्षर और तृतीय पाद में सात अक्षर हों, **मध्ये-** मध्य अर्थात् द्वितीय पाद में, **अष्टौ-** आठ अक्षर हों, **अतिपादनिचृत्-** उसे अतिपादनिचृत् गायत्री कहते हैं।

अर्थ- जिस गायत्री छन्द के प्रथम पाद में 6 अक्षर हों और तृतीय पाद में 7 अक्षर हों और मध्यगत पाद अर्थात् द्वितीय पाद में 8 अक्षर हों, उसे **'अतिपादनिचृत् गायत्री'** कहते हैं ।

Meaning. *Atipādanicrit gāyatrī* contains 6, 7 and 8 syllables respectively in first, third and second parts. See the example below.

अतिपादनिचृत् गायत्री का उदाहरण Example- (6 + 8 + 7 = 21 अक्षर)

प्रेष्ठं वो अतिथिं

स्तुषे मित्रमिव प्रियम् ।

अग्निं रथं न वेद्यम् ।। ऋग्० 8.84.1

द्वौ नवकौ षट्कश्च सा नागी ॥ 12 ॥

शब्दार्थ- द्वौ- जिस गायत्री छन्द के दो अर्थात् प्रथम और द्वितीय पाद, **नवकौ**- 9-9 अक्षरों के हों, **षट्कः च**- और तृतीय पाद 6 अक्षरों का हो, **सा**- वह, **नागी**- नागी गायत्री कही जाती है ।

अर्थ- जिस गायत्री छन्द के प्रथम और द्वितीय पाद में 9-9 अक्षर हों और तृतीय पाद में 6 अक्षर हों, उसे 'नागी गायत्री' कहते हैं ।

Meaning. *Nāgī gāyatrī* contains 9 syllables in its first and second parts, while its third part possesses only 6 syllables. See example below.

नागी गायत्री का उदाहरण- (9 + 9 + 6 = 24 अक्षर)

अग्ने तमद्याऽश्वं न स्तोमैः,

क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम् ।

ऋध्यामा त ओहैः ।। ऋग्० 4.10.1

विपरीता वाराही ॥ 13 ॥

शब्दार्थ- विपरीता- नागी गायत्री का उलटा हो जाए, अर्थात् जिस गायत्री छन्द के प्रथम पाद में 6 अक्षर हों और द्वितीय तथा तृतीय पाद में 9-9 अक्षर हों, उसे **वाराही**- 'वाराही गायत्री' कहते हैं ।

अर्थ- जहाँ पर 'नागी गायत्री' का उलटा हो, अर्थात् प्रथम पाद में 6 अक्षर हों और द्वितीय तथा तृतीय पाद में 9-9 अक्षर हों, उसे 'वाराही गायत्री' कहते हैं ।

Meaning. (As regards the number of its parts), *vārāhī gāyatrī* is the opposite of *nāgī gāyatrī*. Consequently, it contains 6 syllables in the first part, while each of the other two parts has 9 syllables. See example below.

वाराही गायत्री का उदाहरण- (6 + 9 + 9 = 24 अक्षर)

वीतं स्तुके स्तुके,

युवमस्मासु नियच्छतम्।

प्र प्र यज्ञपतिं तिर ।। तैत्ति० आर० 3.11.20

टिप्पणी- 'प्र प्र' को 'पर प्र' पढ़ा जायेगा ।

षट्कसप्तकाष्टकैर्वर्धमाना ॥ 14 ॥

शब्दार्थ- षट्क-सप्तकाष्टकैः- जिस गायत्री के प्रथम पाद में 6 अक्षर, द्वितीय पाद में 7 अक्षर और तृतीय पाद में 8 अक्षर हों, **वर्धमाना**- उसे वर्धमाना गायत्री कहते हैं ।

अर्थ- जिस गायत्री छन्द के प्रथम पाद में 6 अक्षर हों, द्वितीय में 7 अक्षर हों और तृतीय में 8 अक्षर हों, उसे 'वर्धमाना गायत्री' कहते हैं ।

Meaning. The *vardhamānā gāyatri* consists of 3 *pādas* (parts) having 6, 7 and 8 syllables respectively in its first, second and third parts.

वर्धमाना गायत्री का उदाहरण Example (6 + 7 + 8 = 21 अक्षर)

त्वमग्ने यज्ञानां,
होता विश्वेषां हितः ।
देवेभिर्मानुषे जने ।। ऋग्० 6.16.1

विपरीता प्रतिष्ठा ॥ 15 ॥

शब्दार्थ- विपरीता- वर्धमाना गायत्री के विपरीत लक्षण हों तो, अर्थात् जहाँ प्रथम पाद में 8 अक्षर, द्वितीय पाद में 7 अक्षर और तृतीय पाद में 6 अक्षर हों, **प्रतिष्ठा**- वहाँ प्रतिष्ठा नामक गायत्री होती है ।

अर्थ- जहाँ वर्धमाना के विपरीत लक्षण वाली गायत्री हो, अर्थात् प्रथम पाद में 8 अक्षर, द्वितीय पाद में 7 अक्षर और तृतीय पाद में 6 अक्षर हों, वहाँ प्रतिष्ठा नामक गायत्री होती है ।

Meaning. The *pratisthā gāyatrī* is the opposite of *vardhamānā gāyatrī*. Consequently, it has 8, 7 and 6 syllables respectively in its first, second and third parts.

प्रतिष्ठा गायत्री का उदाहरण Example- (8 + 7 + 6 = 21 अक्षर)

आपः पृणीत भेषजं,
वरूथं तन्वे मम ।
ज्योक् च सूर्यं दृशे ।। ऋग्० 1.23.21

तृतीयं द्विपाज्जागत-गायत्राभ्याम् ॥ 16 ॥

शब्दार्थ- जागतगायत्राभ्याम्- जिस छन्द का प्रथम पाद जागत अर्थात् 12 अक्षरों वाला हो, द्वितीय पाद गायत्र अर्थात् 8 अक्षरों वाला हो, वह छन्द, **तृतीयम्**- तीसरे भेद वाला अर्थात् विराज् नामक, **द्विपाद्**- दो पाद वाला गायत्री छन्द होता है । उसे 'द्विपाद् विराट् गायत्री' छन्द कहेंगे ।

अर्थ- जिस छन्द का प्रथम पाद बारह अक्षर वाला हो और द्वितीय पाद आठ अक्षरों वाला हो, उसे 'द्विपाद् विराट् गायत्री' छन्द कहते हैं ।

Meaning. If the first and seond parts of a metre contain respectively 12 and 8 syllables, the metre is called *dvipāda virāṭa gāyatrī*. It consists of only 2 *pādas.)*

टिप्पणी- 1. इस सूत्र में 'तृतीयम्' से अभिप्राय है- तीसरा भेद । देखो सूत्र 5 (विराजो दिशः), इसके अनुसार गायत्री और जगती के बाद तीसरा छन्द का भेद विराट् (विराज्) होता है । अतः 'तृतीयम्' से विराज् लिया जाएगा । 2. द्विपाद् का अर्थ है- इस गायत्री छन्द में 2 ही पाद होते हैं - (1) जागत अर्थात् जगती या 12 अक्षर वाला और (2) गायत्र अर्थात् गायत्री या 8 अक्षर वाला ।

द्विपाद् विराट् गायत्री का उदाहरण Example- (12+8=20 अक्षर)

नृभिर्येमानो हर्यतो विचक्षणो,
राजा देवः समुद्रियः । ऋग्०9.107.16

त्रिपात् त्रैष्टुभैः ॥ 17 ॥

शब्दार्थ- (पूर्व सूत्रों से विराट् और गायत्री की अनुवृत्ति होती है) । **त्रैष्टुभैः**- यदि त्रिष्टुप् छन्द वाले अर्थात् 11-11 अक्षर वाले तीन पाद होते हैं, तो उसे, **त्रिपात्** - अर्थात् 'त्रिपाद् विराट् गायत्री' छन्द कहेंगे ।

अर्थ- यदि 11-11 अक्षर वाले तीन पाद होते हैं तो उसे 'त्रिपाद् विराट् गायत्री' छन्द कहेंगे ।

Meaning. The *tripād virāṭ gāyatrī* contains 11 syllables in each of its three parts.

टिप्पणी- यहाँ पूर्व सूत्रों से विराट् और गायत्री पद की अनुवृत्ति होती है। यह भी गायत्री छन्द का एकभेद है । इसे त्रिष्टुप् छन्द के आधार पर 'त्रिपाद् विराट् गायत्री' छन्द कहते हैं ।

त्रिपाद् विराट् गायत्री का उदाहरण Example- (11+11+11= 33 अक्षर)

दुहीयन् मित्रधितये युवाकु,
राये च नो मिमीतं वाजवत्यै ।
इषे च नो मिमीतं धेनुमत्यै ।। ऋग्० 1.120.9

गायत्री छन्द समाप्त ।

The end of *gāyatrī* metre .

This example of *tripād virāṭ gāyatrī* concludes the discussion on *gāyatrī* metres. Now we shall discuss *uṣṇik* metres.

उष्णिक् छन्द The *uṣṇik* metre

उष्णिग् गायत्रौ जागतश्च ॥ 18 ॥

शब्दार्थ- गायत्रौ- जिस छन्द के दो पादों में गायत्र अर्थात् गायत्री छन्द के तुल्य 8-8 अक्षर होते हैं, **च-** और, अर्थात् तृतीय पाद में, **जागतः-** जगती छन्द के तुल्य 12 अक्षर होते हैं, उसे **उष्णिक्-** उष्णिक् छन्द कहते हैं ।

अर्थ- जिस छन्द के (किन्हीं) दो पादों में 8-8 अक्षर होते हैं तथा तृतीय पाद में 12 अक्षर होते हैं, उसे उष्णिक् छन्द कहते हैं । यह सामान्य नियम है। इसमें कुल 28 अक्षर होते हैं ।

Meaning. If a metre contains 8 syllables in each of its (any) two parts and 12 syllables in its remaining third part, then it is called *uṣṇik* metre. (This is a general definition. Notice that the total number of syllables is 28.)

उष्णिक् छन्द का उदाहरण Example- (8+8+12 = 28 अक्षर)

पवस्व देववीतय,
इन्दो धाराभिरोजसा ।
आ कलश मधुमान् सोम नः सदः ।। साम० 1326

ककुम्मध्ये चेदन्त्यः ॥ 19 ॥

शब्दार्थ- (पूर्वसूत्र से जागतः और उष्णिक् की अनुवृत्ति होगी ।) **चेत्**- यदि, **अन्त्यः जागतः**:- अन्तिम जगती छन्द के तुल्य 12 अक्षरों वाला पाद, **मध्ये**- मध्य में हो, अर्थात् प्रथम और अन्तिम पाद में 8-8 अक्षर हों और बीच में 12 अक्षर वाला पाद हो तो वह, **ककुब् उष्णिक्** - ककुब् (ककुभ्) उष्णिक् छन्द कहा जाता है ।

अर्थ- यदि 12 अक्षरों वाला जगती छन्द का पाद बीच में हो और प्रथम एवं तृतीय पाद में 8-8 अक्षर हों तो वह ककुब् उष्णिक् (उष्णिह्) छन्द कहा जाता है ।

Meaning. *Kakub usṇik* contains 8, 12 and 8 syllables in its first, second and third parts respectively. (The middle part of this metre being swelled or humped, it is called kakud (hump) *usṇik*.

टिप्पणी- ककुब् (ककुभ्) का अर्थ है- कूबड़ । जैसे ऊँट के मध्य भाग में कूबड़ निकला रहता है, उसी प्रकार दो ओर नीचा और बीच में ऊँचा हो तो ककुब् कहेंगे । यहाँ दोनों ओर 8-8 अक्षर वाले पाद हैं, बीच में 12 अक्षर वाला पाद है, अतः इसे ककुब् उष्णिक् कहते हैं ।

ककुब् उष्णिक् छन्द का उदाहरण Example- (8+12+8 = 28 अक्षर)

पवस्व मधुमत्तम,
इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः ।
महि द्युक्षतमो मदः ।। सामवेद 578

पुरउष्णिक् पुरतः ॥ 20 ॥

शब्दार्थ- (पूर्व सूत्र से 'जागतः' और 'चेत्' की अनुवृत्ति होगी) । **चेत् जागतः**:- यदि 12 अक्षरों वाला पाद सर्वप्रथम हो और द्वितीय एवं तृतीय पाद 8-8 अक्षर वाले हों तो उसे 'पुर उष्णिक्' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- यदि 12 अक्षर वाला पाद सर्वप्रथम हो और द्वितीय एवं तृतीय पाद 8-8 अक्षर वाले हों तो उसे 'पुर उष्णिक्' छन्द कहते हैं ।

Meaning. The *pura uṣṇik* contains 12, 8 and 8 syllables in its first, second and third parts respectively.

पुर उष्णिक् छन्द का उदाहरण Example- (12+8+8= 28)

आविर्मर्या आ वाजं वाजिनो अग्मं,

देवस्य सवितुः सवम् ।

स्वर्गां अर्वन्तो जयत ।। सामवेद 435

परोष्णिक् परः ॥ 21 ॥

शब्दार्थ- (पूर्व सूत्र से 'चेत्' और 'जागतः' की अनुवृत्ति होगी ।) **चेत् जागतः**- यदि 12 अक्षर वाला पाद, **परः**- अन्तिम हो या तृतीय पाद हो तो उसे, **परोष्णिक्** - 'परोष्णिक्' छन्द कहते हैं ।

अर्थ - यदि 12 अक्षर वाला पाद अन्तिम हो और प्रथम एवं द्वितीय 8-8 अक्षर वाले हों तो उसे 'परोष्णिक्' छन्द कहते हैं ।

Meaning. The *parosṇik* metre has 12 syllables in the last part, and 8 each in its first and second parts. (This is the recurrence of formula 18 above especially with this name.)

टिप्पणी- सूत्र 3.18 में भी उष्णिक् की व्याख्या में यही कहा गया है, फिर यह दुबारा कथन नियमार्थक है । इसे परोष्णिक् नाम से ही कहा जाएगा ।

परोष्णिक् छन्द का उदाहरण Example- (8+8+12= 28 अक्षर)

अग्ने वाजस्य गोमत,

ईशानः सहसो यहो ।

अस्मे धेहि जातवेदो महि श्रवः ।। ऋग्० 1.79.4

चतुष्पाद् ऋषिभिः ॥ 22 ॥

शब्दार्थ- ('उष्णिक्' की पूर्व सूत्र से अनुवृत्ति होती है) । **ऋषिभिः**- सात-सात अक्षरों वाले, **चतुष्पाद्**- चार पाद हों तो वह, **उष्णिक्**- उष्णिक् छन्द ही कहलाता है ।

अर्थ- यदि छन्द के चारों पादों में सात-सात अक्षर हों तो वह भी उष्णिक् छन्द कहा जाता है ।

Meaning. If each of the 4 parts of a metre contains 7 syllables, then it is still an *uṣṇik*.

सप्ताक्षर उष्णिक् का उदाहरण Example- (7+7+7+7=28 अक्षर)

त्र्यायुषं जमदग्नेः,

कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।

यद् देवेषु त्र्यायुषं,

तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ।। यजु० 3.62

उष्णिक् छन्द समाप्त । **This ends the discussion on *Uṣṇik*.**

Next we consider *anuṣṭup* metres

अथ अनुष्टुप् छन्दः ।

अनुष्टुब् गायत्रैः ।। 23 ।।

शब्दार्थ - (पूर्व सूत्र से 'चतुष्पाद्' की अनुवृत्ति होती है) । **गायत्रैः- चतुष्पाद्** - 8-8 अक्षरों वाले चार पाद हों तो उसे, **अनुष्टुप्** - अनुष्टुप् छन्द कहते हैं । (गायत्र शब्द 8 संख्या के लिए है ।)

अर्थ- आठ- आठ अक्षरों वाले चार पाद हों तो उसे अनुष्टुप् छन्द कहते हैं।

Meaning. In an *anuṣṭup* metre, each of the four parts has 8 syllables. The whole stanza consists of 32 syllables.

अनुष्टुप् का उदाहरण Example- (8+8+8+8= 32 अक्षर)

ततो विराडजायत,

विराजो अधि पूरुषः ।

स जातो अत्यरिच्यत,

पश्चाद् भूमिमथो पुरः ।। यजु० 31.5

Note: *Anustup* is the most widely used metre in literary compositions of Sanskrit language. The greater part of *Rāmāyaṇa*, *Mahābhārata* and *Purāṇas* are composed in this metre. It allows to enjoy considerable freedom in the use of long and short syllables. In *chando mañjarī* (composed during 1300-1500 AD), *Gaṅgā Dāsa* says:

पञ्चमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः ।
षष्ठं गुरु विजानीयात् शेषेष्वनियमो मतः ॥

That is, in its usual form, the 5th syllable of each *pāda* should be short, the 6th long and the 7th alternatively long and short. (The above verse is essentially from *Śrutabodha*, which is popular in the name of *Kālidāsa*.)

त्रिपात् क्वचिज्जागताभ्यां च ॥ 24 ॥

शब्दार्थ- (यहाँ पूर्व सूत्र से अनुष्टुप् और गायत्र की अनुवृत्ति होती है)। **क्वचित्** - कहीं पर यह 32 अक्षरों वाला अनुष्टुप् छन्द, **गायत्र**- प्रथम पाद में 8 अक्षरों वाला, **जागताभ्यां च** - और शेष दो पादों में 12-12 अक्षरों वाला होने पर, **त्रिपात् अनुष्टुप्** - त्रिपाद् अनुष्टुप् कहा जाता है ।

अर्थ- यह 32 अक्षरों वाला अनुष्टुप् छन्द कहीं पर त्रिपात् अनुष्टुप् भी होता है। इसका प्रथम पाद 8 अक्षर वाला और द्वितीय तथा तृतीय पाद 12-12 अक्षर वाले होते हैं। इसका उदाहरण दुर्लभ है ।

Meaning. The *tripād anuṣṭup* metre containing 32 syllables has sometimes 3 parts only. The first of which contains 8 syllables and the rest two contain 12 syllables each. Its examples are rare.

मध्येऽन्ते च ॥ 25 ॥

शब्दार्थ - (यहाँ पर 'अनुष्टुप् ' और जागत की अनुवृत्ति होती है ।) **मध्ये**- यदि प्रथम और तृतीय पाद में 12-12 अक्षर हों और मध्य अर्थात् द्वितीय पाद में 8 अक्षर हों तो वह भी 'त्रिपाद् अनुष्टुप्' होता है । **अन्ते च**- इसी प्रकार यदि प्रथम और द्वितीय पाद में 12-12 अक्षर हों और अन्त में अर्थात् तृतीय पाद में 8 अक्षर हों तो भी उसे 'त्रिपाद् अनुष्टुप्' कहते हैं ।

अर्थ- 'त्रिपाद् अनुष्टुप्' के अन्य दो भेद हैं- (क) यदि प्रथम और तृतीय पाद में 12-12 अक्षर हों और मध्य अर्थात् द्वितीय पाद में 8 अक्षर हों, तो उसे 'त्रिपाद् अनुष्टुप्' कहते हैं । (ख) यदि प्रथम और द्वितीय में 12-12 अक्षर हों, तथा अन्तिम पाद अर्थात् तृतीय पाद में 8 अक्षर हों तो भी उसे 'त्रिपाद् अनुष्टुप्' कहते हैं ।

Meaning. The *tripad anuṣṭup,* containing of three parts, is of two kinds. (a) Its parts have respectively 12, 8 and 12 syllables, while (b) its parts have respectively 12, 12 and 8 syllables. उदाहरण Example-

(*a*) त्रिपाद् अनुष्टुप् (12 + 8 + 12 = 32 अक्षर)

पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये,
परि वृत्राणि सक्षणिः ।
द्विषस्तरध्या ऋणया न ईयसे ।। ऋग्० 9.110.1

(*b*) त्रिपाद् अनुष्टुप् (12 + 12 + 8 = 32 अक्षर)

मा कस्मै धातमभ्यमित्रिणे नो,
माकुत्रा नो गृहेभ्यो धेनवो गुः ।
स्तनाभुजो अशिश्वीः ।। ऋग् 1.120.8

टिप्पणी-पादपूर्ति हेतु उदाहरण (a) में प्रधन्व को प्रधनुव, ध्या को धिया एवं (b) में भ्य को भिय एवं अशिश्वीः को अशिशुवीः पढ़ा जाएगा ।

अनुष्टुप् छन्द का अधिकार समाप्त ।

This ends the jurisdiction of the *Anuṣṭup* metre.

Next we consider *Bṛhatī*

अथ बृहती छन्दः

बृहती जागतस्त्रयश्च गायत्राः ॥ 26 ॥

शब्दार्थ - जागतः:- जिसका प्रथम पाद जागत अर्थात् 12 अक्षरों वाला हो, **च**- और, **त्रयः** -शेष तीन 8 अक्षर वाले हों, **बृहती**- उसे बृहती छन्द कहते हैं। बृहती में 36 अक्षर होते हैं - 12 + 8 + 8 + 8 = 36 अक्षर।

अर्थ - बृहती छन्द में प्रथम पाद 12 अक्षर वाला और शेष तीन अर्थात् द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ पाद 8-8 अक्षर वाले होते हैं । इस प्रकार इस छन्द में 36 अक्षर होते हैं ।

Meaning. The *bṛhatī* metre consists of 12 syllables in the first part, and 8 syllables in each of the rest 3 parts, i.e. the second, third and fourth parts contain 8 syllables each. Thus the *bṛhatī* contains (12 + 8 + 8 +8 =) 36 syllables.

बृहती छन्द का उदाहरण (Example)- (12 + 8 + 8 + 8= 36)

इन्द्रं धनस्य सातये हवामहे,
जेतारमपराजितम् ।
स नः स्वर्षदति द्विषः,
स नः स्वर्षदति द्विषः ।। सामवेद 647

पथ्या पूर्वश्चेत् तृतीयः ॥ 27 ॥

शब्दार्थ - (पूर्वसूत्र से बृहती की अनुवृत्ति होती है) **चेत्** - यदि, **पूर्वः**- प्रथम अर्थात् जागत के 12 अक्षरों वाला पद, **तृतीयः**- तृतीय पाद हो तो, **पथ्या बृहती**- पथ्या बृहती छन्द होता है । यहाँ प्रथम से अन्तर यह है कि यहाँ 12 अक्षर वाला पाद प्रथम न होकर तृतीय पाद है, अर्थात् पथ्या बृहती छन्द– 8 + 8 + 12 + 8 = 36 अक्षर ।

अर्थ- जहाँ तृतीय पाद 12 अक्षर वाला होता है तथा शेष प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ पाद 8-8 अक्षर वाले होते हैं। वहाँ पथ्या बृहती छन्द होता है ।

Meaning. The *pathyā bṛhatī* contains 12 syllables in its third part, while there are 8 syllables in each of the remaining three parts.

पथ्या बृहती छन्द का उदाहरण (Example)- (8+8+12+8= 36)

ऊर्ध्व ऊ ष ण ऊतये,
तिष्ठा देवो न सनिता ।
ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभि-
र्वाघद्भिर्विह्वयामहे।। सामवेद 57

न्यङ्कुसारिणी द्वितीयः ॥ 28 ॥

शब्दार्थ- (पूर्व सूत्रों से 'जागतः' और 'बृहती' की अनुवृत्ति होती है ।) **द्वितीयः जागतः**- जब द्वितीय पाद जागत अर्थात् 12 अक्षर वाला होता है । **न्यङ्कुसारिणी बृहती**- वहाँ न्यङ्कुसारिणी बृहती छन्द होता है ।

अर्थ- जब द्वितीय पाद में 12 अक्षर और शेष प्रथम, तृतीय एवं चतुर्थ पाद में 8-8 अक्षर हों, तब न्यङ्कुसारिणी बृहती छन्द होता है ।

Meaning. The *nyaṅkusārinī bṛhatī* contains 12 syllables in its second part, while there are 8 syllables in

each of the rest three parts.

न्यङ्कुसारिणी बृहती का उदाहरण (Example)- (8+12+8+8=36)

मेधामहं प्रथमां,
ब्रह्मण्वतीं ब्रह्मजूतामृषिष्टुताम् ।
प्रपीतां ब्रह्मचारिभि-
र्देवानामवसे हुवे ।। अथर्व० 6.108.2

स्कन्धोद्ग्रीवी क्रौष्टुकेः ॥ 29 ॥

शब्दार्थ- (पूर्वसूत्रों से 'द्वितीयः' और 'जागतः' की अनुवृत्ति होती है ।) **द्वितीय जागतः**- जब द्वितीय पाद में 12 अक्षर और शेष प्रथम, तृतीय तथा चतुर्थ पाद में 8-8 अक्षर होते हैं, **क्रौष्टुकेः** - तब क्रौष्टुकेः - तब क्रौष्टुकि आचार्य के मत में, **स्कन्धोद्ग्रीवी बृहती**- स्कन्धोद्ग्रीवी बृहती छन्द होता है । आचार्य क्रौष्टुकि न्यङ्कुसारिणी छन्द को ही स्कन्धोद्ग्रीवी नाम देते हैं ।

अर्थ- न्यङ्कुसारिणी बृहती छन्द को आचार्य क्रौष्टुकि स्कन्धोद्ग्रीवी छन्द कहते हैं । उदाहरण पूर्ववत् है ।

Meaning. *Nyaṅkusāriṇī* metre is also called *skandhodgrīvī* by *Ācārya krauṣṭuki.* (The previous example works).

उरोबृहती यास्कस्य ॥ 30 ॥

शब्दार्थ- पूर्वोक्त न्यङ्कुसारिणी छन्द को, **यास्कस्य**- आचार्य यास्क के मत में, **उरोबृहती**- उरोबृहती छन्द कहा जाता है ।

अर्थ- पूर्वोक्त न्यङ्कुसारिणी छन्द को आचार्य यास्क उरोबृहती छन्द कहते हैं । उदाहरण पूर्ववत् है ।

Meaning. The *nyaṅkusāriṇī* is called *urobṛhatī* by *Ācārya Yāska.* (This name is more popular. The previous example works.)

टिप्पणी- न्यङ्कुसारिणी, स्कन्धोद्ग्रीवी और उरोबृहती ये तीन नाम समानार्थक हैं और न्यङ्कुसारिणी के लिए हैं । इन तीनों नामों में से उरोबृहती नाम ही अधिक प्रचलित है ।

उपरिष्टाद् बृहत्यन्ते ॥ 31 ॥

शब्दार्थ- (यहाँ पर 'जागतः' की पूर्व सूत्र से अनुवृत्ति होती है ।) **अन्ते जागतः** - यदि जागत अर्थात् 12 अक्षर वाला पाद अन्त में अर्थात् चतुर्थ पाद होता है, तो उसे, **उपरिष्टाद् बृहती**- उपरिष्टाद् बृहती छन्द कहेंगे ।

अर्थ- यदि चतुर्थ पाद में 12 अक्षर होंगे और शेष प्रथम, द्वितीय और तृतीय में 8-8 अक्षर होंगे, तो उसे 'उपरिष्टाद् बृहती' छन्द कहेंगे ।

Meaning. The *upariṣṭād bṛhatī* contains 12 syllables in its fourth part, while there are 8 syllables in each of the rest three parts.

उपरिष्टाद् बृहती का उदाहरण (Example)- (8+8+8+12=36).

न तमंहो न दुरितं, देवासो अष्ट मर्त्यम् ।
सजोषसो यमर्यमा, मित्रो नयन्ति वरुणो अति द्विषः ।।

ऋग्० 10.126.1

टिप्पणी- इस उदाहरण में **मर्त्यम्** को **मर्तीयम्** पाठ करने से पाद पूर्ति होती है ।

पुरस्ताद् बृहती पुरः ॥ 32 ॥

शब्दार्थ- (यहाँ पूर्वसूत्र से 'जागतः' की अनुवृत्ति होगी ।) **पुरः जागतः**- जिस छन्द का प्रथम पाद जागत अर्थात् 12 अक्षर वाला होगा और शेष 3 पाद (द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ) 8-8 अक्षर वाले होंगे, '**पुरस्ताद् बृहती**' उसे पुरस्ताद् बृहती कहेंगे ।

अर्थ- जिस छन्द के प्रथम पाद में 12 अक्षर होंगे और शेष द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ पाद में 8-8 अक्षर होंगे, उसे 'पुरस्ताद् बृहती' छन्द कहते हैं।

Meaning. The *purastād bṛhatī* contains 12 syllables in its first part, while there are 8 syllables in each of the rest 3 parts. (This rule puts a restriction on the formula 26 (above). Hence forth, this metre (containing 12+8+8+8=36 syllables) will be called by this name.

टिप्पणी- पूर्व सूत्र 3.26 में भी यही बात कही गई है । बृहती का यही लक्षण दिया है । यह सूत्र नियमार्थक है । उसे पुरस्ताद् बृहती ही कहेंगे ।

पुरस्ताद् बृहती का उदाहरण (Example)- (12+8+8+8=36).

इन्द्रं धनस्य सातये हवामहे,
जेतारमपराजितम् ।
स नः स्वर्षदति द्विषः,
स नः स्वर्षदति द्विषः ।। सामवेद 647

क्वचिन्नवकाश्चत्वारः ॥ 33 ॥

शब्दार्थ- (पूर्व सूत्र से 'बृहती' की अनुवृत्ति होती है ।) **बृहती**- बृहती छन्द में, **क्वचित्**- कहीं-कहीं, **चत्वारः** - चारों पाद, **नवकाः** - नौ-नौ अक्षर वाले होते हैं ।

अर्थ- बृहती छन्द में कहीं-कहीं चारों पाद 9-9 अक्षर वाले होते हैं।

Meaning. Sometimes all the four parts of a *bṛhatī* metre contain 9 syllables each.

नवाक्षर बृहती का उदाहरण (Example)- (9+9+9+9= 36)

अग्निं सूनुं सहसो जात-
वेदसं दानाय वार्याणाम् ।
द्विता यो भूदमृतो मर्त्ये-
ष्वा होता मन्द्रतमो विशि ।। सामवेद 1555

वैराजौ गायत्रौ च ॥ 34 ॥

शब्दार्थ - (पूर्व सूत्र से 'बृहती' की अनुवृत्ति होती है ।) **वैराजौ**- जहाँ प्रथम और द्वितीय पाद 10-10 अक्षर वाले हों, **गायत्रौ च**- और तृतीय एवं चतुर्थ पाद गायत्र अर्थात् 8-8 अक्षर वाले हों, **बृहती**- उसको भी बृहती छन्द कहते हैं । वैराज शब्द 10 अक्षर के लिए हैं ।

अर्थ- जहाँ प्रथम और द्वितीय पाद 10-10 अक्षर वाले हों और तृतीय एवं चतुर्थ पाद 8-8 अक्षर वाले हों, वहाँ भी बृहती छन्द होता है । (ध्यान दें इस प्रकार कुल 36 अक्षर हुए ।)

Meaning. A metre containing 10 syllables in each of its first two parts and 8 syllables in each of its last two parts is also called *bṛhatī.* (Notice that the total number of syllables is 36 in this metre.)

बृहती के भेद का उदाहरण (Example)- (10+10+8+8= 36).

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारा-
मार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां,
तामिहोपह्वये श्रियम्।। ऋग्०परिशिष्ट श्रीसूक्त 4

त्रिभिर्जागतैर्महाबृहती ॥ 35 ॥

शब्दार्थ- जागतैः - जागत अर्थात् 12 अक्षर वाले, **त्रिभिः** - तीन पाद हों तो, **महाबृहती**- उसे महाबृहती छन्द कहते हैं।

अर्थ- यदि 12-12 अक्षर वाले तीन पाद हों तो उसे महाबृहती छन्द कहते हैं।

Meaning. A metre containing 12 syllables in each of its three parts is called *mahābṛhatī.* (This mere has only 3 parts.)

महाबृहती का उदाहरण (Example)- (12+12+12= 36 अक्षर)

अजीजनो अमृत मर्त्येष्वाँ,
ऋतस्य धर्मन्नमृतस्य चारुणः ।
सदासरो वाजमच्छा सनिष्यदत् ।। ऋग्० 9.110.4

सतोबृहती ताण्डिनः ॥ 36 ॥

शब्दार्थ- (पूर्व सूत्र से 'महाबृहती' की अनुवृत्ति होती है ।) **महाबृहती**- महाबृहती छन्द को, **ताण्डिनः** - आचार्य ताण्डी के मत के अनुसार, **सतोबृहती**- सतोबृहती छन्द कहा जाता है ।

अर्थ- महाबृहती छन्द को ही आचार्य ताण्डी सतोबृहती छन्द कहते हैं।(उदाहरण पूर्ववत् है ।)

Meaning. *Mahābṛhatī* metre is called *satobṛhatī* by *Ācārya Taṇḍī.* (See the previous example.)

बृहती छन्द का अधिकार समाप्त।

This is the end of *Brihati's* jurisdiction.

अथ पङ्क्तिः छन्दः

पंक्ति छन्द का अधिकार प्रारम्भ होता है।

Now the juridiction of *Pankti* metrs begins

पङ्क्तिर्जागतौ गायत्रौ च ॥ 37 ॥

शब्दार्थ- जागतौ- जिस छन्द के दो पादों में जागत अर्थात् जगती छन्द वाले 12-12 अक्षर हों, **च**- और, **गायत्रौ**- दो पादों में गायत्री छन्द वाले 8-8 अक्षर हों, **पङ्क्तिः** - उसे पंक्ति छन्द कहते हैं। (जागत और गायत्र शब्द जगती और गायत्री छन्द के तुल्य 12 और 8 अक्षरों के बोधक हैं।)

अर्थ- जिस छन्द के दो पादों में 12-12 अक्षर हों तथा शेष दो पादों में 8-8 अक्षर हों, उसे पंक्ति छन्द कहते हैं।

Meaning. The *pankti* metre contains 12 syllables in each of its (any) two parts, while each of the remaining two parts has 8 syllables. (Here *jāgata* and *gāyatra* stand for 12 and 8 respectively.)

पंक्ति छन्द का उदाहरण (Example)-(12+12+8+8= 40 अक्षर)

उपयामगृहीतोऽसि शण्डाय त्वै-
ष ते योनिर्वीरतां पाह्यपमृष्टः,
शण्डो देवस्त्वा शुक्रपाः,
प्र णयन्त्वनाधृष्टाऽसि ।। यजु० 7.12

पूर्वौ चेदयुजौ सतःपङ्क्तिः ॥ 38 ॥

शब्दार्थ- (यहाँ पूर्व सूत्र से '**जागतौ**' और '**गायत्रौ**' की अनुवृत्ति होती है)। **चेत्**- यदि, **पूर्वौ जागतौ**-पूर्वोक्त जागत पाद, **अयुजौ**- विषम संख्या वाले पाद हो जाएं, अर्थात् प्रथम और तृतीय पाद में 12-12 अक्षर हों, और **गायत्रौ**- गायत्री वाले 8-8 अक्षर सम संख्या वाले पदों में हों अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ पाद में 8-8 अक्षर हों तो उसे, **सतः पङ्क्तिः**- सतः पंक्ति छन्द कहते हैं। (अयुज् शब्द विषम संख्या का बोधक है अर्थात् 1, 3 पाद और युज् शब्द सम-संख्या का बोधक है अर्थात् 2, 4 पाद)।

अर्थ- यदि प्रथम और तृतीय पाद में 12-12 अक्षर हों तथा द्वितीय और चतुर्थ पाद में 8-8 अक्षर हों तो उसे 'सतः पंक्ति' छन्द कहते हैं ।

Meaning. If the first and the third parts of a metre contain 12 syllables each, and the second and fourth parts contain 8 syllables each, then the same is called *sataḥ paṅkti.* ('*Ayuj*' and '*yuj*' appearing in this formula stand for odd and even numbers, meaning thereby odd (first and third) and even (second and fourth) parts of the metre.)

टिप्पणी- 1. इस छन्दःशास्त्र में 'अयुज् ' और 'युज्' शब्दों का प्रयोग बहुत हुआ है । अतः इनका अर्थ समझ लें । 'अयुज्' का अर्थ है- विषम संख्या अर्थात् प्रथम और तृतीय पाद । 'युज् ' का अर्थ है- सम संख्या अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ पाद ।

सतः पंक्ति छन्द का उदाहरण (Example)- (12+8+12+8=40)

अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः,
क्षोणी शिशुं न मातरा ।
विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे,
वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि ।। यजु० 33.67

विपरीतौ च ॥ 39 ॥

शब्दार्थ- (पूर्वसूत्र से '**सतःपंक्तिः**' की अनुवृत्ति होती है ।) **विपरीतौ च**- यदि पूर्वसूत्र के विपरीत भी स्थिति होगी तो, **सतः पंक्ति**- सतः पंक्ति छन्द ही होगा, अर्थात् यदि विषम संख्या वाले प्रथम और तृतीय पाद में 8-8 अक्षर होंगे तथा सम संख्या वाले द्वितीय और चतुर्थ पाद में 12-12 अक्षर होंगे, तो भी उसे '**सतः पंक्ति**' छन्द कहेंगे ।

अर्थ - यदि पूर्वसूत्र के विपरीत स्थिति होगी तो भी सतः पंक्ति छन्द ही होगा, अर्थात् यदि प्रथम और तृतीय पाद में 8-8 अक्षर होंगे और द्वितीय एवं चतुर्थ पाद में 12-12 अक्षर होंगे तो भी 'सतः पंक्ति' छन्द ही होगा ।

Meaning. If the first and third parts of a metre consist of 8 syllables each, and the second and fourth parts consist of 12 syllables each, then it is called *sataḥ paṅkti* metre as well.

सतः पंक्ति छन्द के दूसरे भेद का उदाहरण (Example)-(8+12+8+12= 40 अक्षर)

अग्निना तुर्वशं यदुं,
परावत उग्रादेवं हवामहे ।
अग्निर्नयन्नववास्त्वं,
बृहद्रथं तुर्वीतिं दस्यवे सहः ।।

ऋग्० 1.36.18

प्रस्तारपङ्क्तिः पुरतः ॥ 40 ॥

शब्दार्थ- (पूर्वसूत्रों से 'जागतौ' और 'गायत्रौ' की अनुवृत्ति होगी ।) **जागतौ**- यदि 12 अक्षर वाले दो पाद, **पुरतः**- पहले प्रयुक्त हों अर्थात् प्रथम और द्वितीय पाद में 12-12 अक्षर हों । **गायत्रौ**- शेष दो अर्थात् तृतीय और चतुर्थ पाद में 8-8 अक्षर हों तो उसे 'प्रस्तारपंक्ति' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- यदि प्रथम और द्वितीय पाद में 12-12 अक्षर हों तथा तृतीय और चतुर्थ पाद में 8-8 अक्षर हों तो उसे 'प्रस्तार पंक्ति' छन्द कहेंगे ।

Meaning. If the first and the second parts of a metre contain 12 syllables each, and the third and fourth parts contain 8 syllables each, then it is called *prastāra paṅkti* metre.

प्रस्तार पंक्ति छन्द का उदाहरण (Example)- (12+12+8+8=40)

भूरसि भूमिरस्यदितिरसि वि-श्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री ।
पृथिवीं यच्छ पृथिवीं , दृंह पृथिवीं मा हिंसीः ।।

यजु० 13.18

आस्तारपङ्क्तिः परतः ॥ 41 ॥

शब्दार्थ- (पूर्व सूत्रों से 'पूर्वौ' 'जागतौ' और 'गायत्रौ' पदों की अनुवृत्ति होगी ।) **जागतौ**- जगती छन्द वाले अर्थात् 12-12 अक्षर वाले, **पूर्वौ**- प्रथम और द्वितीय पाद, **परतः** - बाद में रखे जाएँ अर्थात् तृतीय और चतुर्थ पाद हों तो, **आस्तारपंक्तिः** - आस्तार पंक्ति छन्द होता है । इस सूत्र का अभिप्राय है कि जब गायत्री अर्थात् 8-8 अक्षर वाले प्रथम और द्वितीय पाद हों तथा 12-12 अक्षर वाले तृतीय और चतुर्थ पाद हों, तब आस्तार पंक्ति छन्द होता है ।

अर्थ- जब प्रथम और द्वितीय पाद में 8-8 अक्षर हों तथा तृतीय और चतुर्थ पाद में 12-12 अक्षर हों तो उसे 'आस्तार पंक्ति' छन्द कहते हैं ।

Meaning. The *āstāra paṅkti* contains 8 syllables in each of its first two parts, while each of its last two parts has 12 syllables.

आस्तारपंक्ति छन्द का उदाहरण (Example)- (8+8+12+12=40)

भद्रं नो अपि वातय,
मनो दक्षमुत क्रतुम् ।
अधा ते सख्ये अन्धसो वि वो मदे,
रणन् गावो न यवसे विवक्षसे।। ऋग्० 10.25.1

विष्टारपङ्क्तिरन्तः ॥ 42 ॥

शब्दार्थ-(यहाँ पूर्वसूत्रों से जागतौ की अनुवृत्ति होती है।) **जागतौ**- जहाँ पर जगती छन्द वाले 12-12 अक्षर, **अन्तः** - अन्दर या बीच में हों, अर्थात् द्वितीय और तृतीय पाद हों, **विष्टारपंक्तिः** - वहाँ विष्टारपंक्ति छन्द होता है। इस सूत्र का अभिप्राय है कि जहाँ प्रथम और चतुर्थ पाद 8-8 अक्षर के हों और द्वितीय और तृतीय पाद 12-12 अक्षर के हों, वहाँ **'विष्टारपंक्ति'** छन्द होता है।

अर्थ - जहाँ प्रथम और चतुर्थ पाद में 8-8 अक्षर हों तथा द्वितीय और तृतीय पाद में 12-12 अक्षर हों, वहाँ पर 'विष्टारपंक्ति' छन्द होता है।

Meaning. The *viṣṭāra paṅkti* contains 8 syllables in each of its first and fourth parts, while each of the remaining (two) parts has 12 syllables.

विष्टारपंक्ति छन्द का उदाहरण (Example)- (8+12+12+8= 40)

अग्ने तव श्रवो वयो,
महि भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो ।
बृहद्भानो शवसा वाजमुक्थ्यॉं,
दधासि दाशुषे कवे ।। सामवेद 1816

संस्तारपङ्क्तिर्बहिः ॥43 ॥

शब्दार्थ- (पूर्वसूत्र से 'जागतौ' की अनुवृत्ति होती है।) **जागतौ**- जागत अर्थात् 12-12 अक्षर वाले, **बहिः** - बाहर हों अर्थात् प्रथम और चतुर्थ पाद हों, **संस्तारपंक्ति**- वहाँ संस्तारपंक्ति छन्द होता है । इस सूत्र का अभिप्राय है कि जहाँ प्रथम और चतुर्थ पाद में 12-12 अक्षर हों तथा शेष द्वितीय और तृतीय पाद में 8-8 अक्षर हों, वहाँ पर '**संस्तारपंक्ति**' छन्द होता है ।

अर्थ- जहाँ प्रथम और चतुर्थ पाद में 12-12 अक्षर हों तथा द्वितीय और तृतीय पाद में 8-8 अक्षर हों, वहाँ 'संस्तारपंक्ति' छन्द होता है ।

Meaning. The *sanstāra pankti* contains 12 syllables in each of its first and fourth parts, while each of the remaining (two) parts has 12 syllables.

संस्तारपंक्ति छन्द का उदाहरण (Example)- (12+8+8+12=40)

अंशो भगो वरुणो मित्रो अर्यमा-
ऽदितिः पान्तु मरुतः ।
अप तस्य द्वेषो गमे-
दभि ह्रुतो यावयच्छत्रुमन्तितम् ।। अ० 6.4.2

अक्षरपङ्क्तिः पञ्चकाश्चत्वारः ॥44 ॥

शब्दार्थ-**पञ्चकाः** - 5-5 अक्षर वाले, **चत्वारः** - चार पाद हों तो, **अक्षरपंक्तिः** - अक्षर पंक्ति नामक छन्द होता है ।

अर्थ- यदि 5-5 अक्षर वाले चार पाद हों तो उसे अक्षर पंक्ति छन्द कहते हैं ।

Meaning. If a metre contains 5 syllables in each of its four parts, then it is called *ākṣara pankti*.

अक्षरपंक्ति छन्द का उदाहरण (Example)- (5x4=20 अक्षर)

रयिर्न चित्रा,
सूरो न संदृग्,
आयुर्न प्राणो,
नित्यो न सूनुः । ऋग्० 1.66.1

द्वावप्यल्पशः ॥ 45 ॥

शब्दार्थ- (पूर्व सूत्र से 'पंचकाः' की अनुवृत्ति होती है।) **पंचकाः** - 5-5 अक्षर वाले, **द्वौ अपि**- दो पाद भी हों तो, **अल्पशः पंक्तिः** - उसे अल्पशः पंक्ति छन्द कहते हैं।

अर्थ - यदि 5-5 अक्षर वाले दो पाद भी हों तो उसे 'अल्पशःपंक्ति' छन्द कहते हैं।

Meaning. If a metre has 2 parts only having 5 syllables each, then it is called *alpaśaḥ paṅkti.*

अल्पशः पंक्ति छन्द का उदाहरण (Example)- (5+5= 10 अक्षर)

अग्निरासीन,
उत्थितोऽश्विना ।। अथर्व० 9.7.19

पदपङ्क्तिः पञ्च ॥ 46 ॥

शब्दार्थ- (पूर्वसूत्र से 'पंचकाः' की अनुवृत्ति होती है।) **पंचकाः**- 5-5 अक्षरों वाले, **पञ्च**- यदि पाँच पाद होते हैं, **पदपङ्क्तिः**- तो उसे पदपंक्ति छन्द कहते हैं।

अर्थ- यदि 5-5 अक्षरों वाले 5 पाद होते हैं, तो उसे 'पदपंक्ति' छन्द कहते हैं।

Meaning. A metre containing five syllables in each of its five parts is called *pada paṅkti.*

पदपंक्ति छन्द का उदाहरण (Example)- (5x5= 25 अक्षर)

एभिर्नो अर्कै-
र्भवा नो अर्वाङ्,
स्वर्ण-ज्योतिः ।
अग्ने विश्वेभिः,
सुमना अनीकैः ।। सामवेद 1779

चतुष्कषट्कौ त्रयश्च ॥ 47 ॥

शब्दार्थ- (यहाँ पूर्वसूत्र से 'पंचकाः' की अनुवृत्ति होती है।) **चतुष्कषट्कौ**- जहाँ प्रथम पाद में चार अक्षर और द्वितीय पाद में 6 अक्षर हों, **त्रयः च पंचकाः**- और शेष तीन पादों में 5-5 अक्षर हों, उसे भी पदपंक्ति छन्द कहेंगे।

अर्थ- जहाँ प्रथम पाद में 4 अक्षर हों, और द्वितीय पाद में 6 अक्षर हों तथा तृतीय, चतुर्थ और पंचम पाद में 5-5 अक्षर हों, उसे भी 'पदपंक्ति' छन्द कहेंगे ।

Meaning. If a metre consists of five parts, the first having 4 syllables, the second 6 syllables and the rest three having 5 syllables each, then this metre is called *pañcapadā padapaṅkti* or simply *padapaṅkti*.

पंचपदा पदपंक्ति का उदाहरण (Example)- (4+6+5+5+5=25).

अधा ह्यग्ने,
क्रतोर्भद्रस्य,
दक्षस्य साधोः ।
रथीर्ऋतस्य,
बृहतो बभूथ ।।

सामवेद 1778

पथ्या पञ्चभिर्गायत्रैः ॥ 48 ॥

शब्दार्थ- गायत्रै :- आठ अक्षरों वाले, **पञ्चभिः** - पांच पादों से युक्त छन्द को, **पथ्या**- पथ्या पंक्ति छन्द कहते हैं । (पूर्व की भाँति आठ के लिए गायत्र शब्द है ।)

अर्थ- आठ अक्षरों वाले पांच पादों से युक्त छन्द को पथ्या पंक्ति छन्द कहते हैं ।

Meaning. A metre containing 5 parts, each having 8 syllables, is called *pathyā paṅkti*.

पथ्या पंक्ति छन्द का उदाहरण (Example)- (8x5 = 40 अक्षर)

यत्र बाणाः संपतन्ति,
कुमारा विशिखा इव ।
तत्र नो ब्रह्मणस्पति-
रदितिः शर्म यच्छतु,
विश्वाहा शर्म यच्छतु ।।

सामवेद 1866

जगती षड्भिः ॥ 49 ॥

शब्दार्थ- (यहाँ पूर्वसूत्र से '**गायत्रैः**' और '**पंक्तिः**' की अनुवृत्ति होती है।) **गायत्रैः** - आठ-आठ अक्षरों वाले, **षड्भिः** - छः पादों से युक्त छन्द को, **जगती पंक्तिः** - '**जगती पंक्ति**' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- आठ-आठ अक्षरों वाले 6 पादों से युक्त छन्द को 'जगती पंक्ति' छन्द कहते हैं ।

Meaning. A metre containing 6 parts, each having 8 syllables, is called *jagatī paṅkti.*

जगती पंक्ति छन्द का उदाहरण (Example)- (8x6= 48 अक्षर)

महि वो महतामवो,
वरुण मित्र दाशुषे ।
यमादित्या अभिद्रुहो,
रक्षथा नेमघं नशद् ।
अनेहसो व ऊतयः,
सुऊतयो व ऊतयः ।। ऋग्०८.४७.१

पंक्ति छन्द का अधिकार समाप्त ।

This ends the jurisdiction of *paṅkti* metres.

अथ त्रिष्टुब् - जगत्यधिकारः

(यहाँ से त्रिष्टुब् - जगती का अधिकार प्रारम्भ होता है ।)

Now the jurisdiction of *triṣṭub-jagati* begins

एकेन त्रिष्टुब् ज्योतिष्मती ॥ 50 ॥

शब्दार्थ - (यहाँ 'त्रैष्टुभ' और 'गायत्र' की अनुवृत्ति होती है ।) **एकेन**- जहाँ पर एक प्रथम पाद, **त्रैष्टुभ**- 11 अक्षर वाला हो, **गायत्र**- शेष 4 पाद आठ-आठ अक्षरों वाले हों, **ज्योतिष्मती त्रिष्टुप्**- उसे 'पंचपाद् ज्योतिष्मती त्रिष्टुप् ' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- जिस छन्द के प्रथम पाद में 11 अक्षर हों और शेष चार पादों में 8-8 अक्षर हों, उसे 'पंचपाद् ज्योतिष्मती त्रिष्टुप्' छन्द कहते हैं । इसका उदाहरण- सूत्र 52 के उदाहरण में देखें ।

Meaning. A metre, containing 11 syllables in its first part and 8 in each of the remaining four parts, is called *pañcapād jyotiṣmatī triṣṭup.* (Its example is given in the metre described in Formula 52 below.)

तथा जगती ॥ 51 ॥

शब्दार्थ- (पूर्वसूत्रों से 'एकेन' 'जागत' गायत्र और ज्योतिष्मती की अनुवृत्ति होगी ।) **तथा**- पूर्ववत् , **एकेन**- जिस छन्द का प्रथम पाद, **जागत**- 12 अक्षरों वाला हो, **गायत्र**- शेष चार पाद आठ-आठ अक्षरों वाले हों, **ज्योतिष्मती जगती**- उसे 'पंचपाद् ज्योतिष्मती जगती' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- जिस छन्द में प्रथम पाद 12 अक्षरों वाला हो और शेष 4 पादों में 8-8 अक्षर हों, उसे 'पंचपाद् ज्योतिष्मती जगती' छन्द कहते हैं ।

Meaning. A metre containing 12 syllables in its first part and 8 in each of the remaining four parts, is called *pañcapād jyotiṣmatī jagatī* .

पंचपाद् ज्योतिष्मती जगती का उदाहरण (Example)- (12+8+8+8+8 = 44)

इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवत-
इन्द्राय त्वाऽऽदित्यवत-
इन्द्राय त्वाऽभिमातिघ्ने ।
श्येनाय त्वा सोमभृते,
ऽग्नये त्वा रायष्पोषदे ।। यजु० 6.32

पुरस्ताज्ज्योतिः प्रथमेन ॥ 52 ॥

शब्दार्थ- (पूर्वसूत्र से 'जगती' की अनुवृत्ति होगी ।) **प्रथमेन**- जहाँ प्रथम पाद त्रैष्टुभ अर्थात् 11 अक्षरों वाला हो और शेष 4 पाद आठ-आठ अक्षरों वाले हों, **पुरस्ताज्ज्योतिः त्रिष्टुप्**- उसे **'पुरस्ताज्ज्योतिः त्रिष्टुप्'** छन्द कहते हैं। यदि प्रथम पाद 12 अक्षर का होगा तो उसे **'पुरस्ताज्ज्योतिः जगती'** छन्द कहेंगे।

अर्थ- जहाँ प्रथम पाद में 11 अक्षर हों और शेष 4 पादों में आठ-आठ अक्षर हों, उसे 'पुरस्ताज्ज्योतिः त्रिष्टुप्' छन्द कहते हैं । जहाँ पर प्रथम पाद में 12

अक्षर होंगे और शेष में 8-8 अक्षर होंगे, उसे 'पुरस्ताज्ज्योतिः जगती' छन्द कहेंगे।

Meaning. A metre, containing 11 (respectively 12) syllables in its first part and 8 in each of the remaining four parts, is called *purastājjyotiḥ triṣṭup* (respectively *purastājjyotiḥ jagatī*).

(क) **पुरस्ताद् ज्योतिः त्रिष्टुप्** का उदाहरण (Example)-
(11+8+8+8+8 = 43 अक्षर)

कृधी नो अह्रयो देव सवितः,
स च स्तुषे मघोनाम् ।
सहो न इन्द्रो वह्निभि-
र्न्येषां चर्षणीनां,
चक्रं रश्मिं न योयुवे ।। ऋग्० 10.93.9

(ख) **'पुरस्ताद् ज्योतिः जगती'** का उदाहरण (Example)-
(12+8+8+8+8 = 44 अक्षर)

नमोवाके प्रस्थिते अध्वरे नरा,
विवक्षणस्य पीतये ।
आ यातमश्विना गत-
मवस्युर्वामहं हुवे,
धत्तं रत्नानि दाशुषे ।। ऋग्० 8.35.23

मध्येज्योतिर्मध्यमेन ॥ 53 ॥

शब्दार्थ - (यहाँ पूर्वसूत्रों से **'त्रिष्टुप्'** और **'जगती'** की अनुवृत्ति होती है, अतः सूत्र के दो अर्थ होते हैं)-

(क) मध्यमेन- यदि छन्द के पांच भागों में से मध्यम अर्थात् तृतीय पाद 11 अक्षर वाला हो और शेष चार पाद आठ-आठ अक्षर वाले हों, **'मध्ये ज्योतिः त्रिष्टुप्'** तो उसे 'मध्ये ज्योतिः त्रिष्टुप्' छन्द कहेंगे ।

(ख) मध्यमेन- यदि छन्द के पांच भागों में से मध्यम अर्थात् तृतीय पाद 12 अक्षर वाला हो और शेष चार पाद आठ-आठ अक्षर वाले हों तो **'मध्ये ज्योतिः जगती'** उसे मध्ये ज्योतिः जगती छन्द कहेंगे ।

अर्थ - यदि छन्द के तृतीय पाद में 11 अक्षर हों और शेष चार पादों में 8-8 अक्षर हों तो उसे 'मध्ये ज्योतिः त्रिष्टुप्' छन्द कहते हैं ।

यदि छन्द के तृतीय पाद में 12 अक्षर हों और शेष चार पादों में आठ-आठ अक्षर हों तो उसे 'मध्ये ज्योतिः जगती' छन्द कहते हैं ।

Meaning. A metre, containing 11 (respectively 12) syllables in its middle part and 8 in each of the remaining four parts, is called *madhye jyotiḥ triṣṭup* (respectively *madhye jyotiḥ jagatī*).

मध्ये ज्योतिः त्रिष्टुप् का उदाहरण (Example of *madhye jyotiḥ triṣṭup*)- (8+8+11+8+8 = 43 अक्षर)

बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः,
शुक्रेण देव शोचिषा ।
भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य,
रेवन्नः शुक्र दीदिहि,
द्युमत् पावक दीदिहि ।। ऋग्० 6.48.7

मध्येज्योतिः जगती का उदाहरण दुर्लभ है ।

ऋग्वेद में **मध्ये ज्योतिः** का यह उदाहरण मिलता है । The example of the other is rare.) However, the following example from *Ṛgveda* (8.10.2) is also termed *madhye jyotiḥ* (12 + 8 + 12 + 12 = 44 अक्षर).

यद्वा यज्ञं मनवे संमिमिक्षथु-
रेवेत् काण्वस्य बोधतम् ।
बृहस्पतिं विश्वान् देवाँ अहं हुवे,
इन्द्राविष्णू अश्विनावाशुहेषसा ।। ऋग्० 8.10.2

उपरिष्टाद् ज्योतिरन्त्येन ॥ 54 ॥

शब्दार्थ - (यहाँ पर पूर्व सूत्रों से 'त्रिष्टुप्' और 'जगती' की अनुवृत्ति होती है, अतः सूत्र के दो अर्थ होते हैं ।)

जिस छन्द के प्रथम चार पाद गायत्र अर्थात् 8-8 अक्षर वाले हों, **अन्त्येन**- और अन्तिम पाद, **त्रैष्टुभ**- त्रैष्टुभ अर्थात् 11 अक्षर वाला हो तो उसे **'उपरिष्टाद् ज्योतिः त्रिष्टुप्'** कहते हैं ।

जिस छन्द के प्रथम चार पाद गायत्र अर्थात् 8-8 अक्षर वाले हों, **अन्त्येन**- और अन्तिम पाद, **जागत**- जागत अर्थात् 12 अक्षर वाला हो तो उसे **'उपरिष्टाद् ज्योतिः जगती'** छन्द कहते हैं।

अर्थ - जिस छन्द के अन्तिम पांचवें पाद में 11 अक्षर हों और शेष चार पादों में 8-8 अक्षर हों, उसे 'उपरिष्टाद् ज्योतिः त्रिष्टुप्' छन्द कहते हैं।

जिस छन्द के अन्तिम पांचवें पाद में 12 अक्षर हों और शेष चार पादों में आठ-आठ अक्षर हों, उसे 'उपरिष्टाद् ज्योतिः जगती' छन्द कहते हैं।

Meaning. A metre, containing 11 (respectively 12) syllables in its fifth part and 8 in each of the first four parts, is called *upariṣṭād jyotiḥ triṣṭup* (respectively *upariṣṭād jyotiḥ jagatī*).

'उपरिष्टाद् ज्योतिः त्रिष्टुप्' का उदाहरण (Example)-
(8+8+8+8+11 = 43 अक्षर)

संवेशिनीं संयमिनीं,
ग्रहनक्षत्रमालिनीम् ।
प्रपन्नोऽहं शिवां रात्रिं,
भद्रे पारमशीमहि,
भद्रे पारमशीमहि-ओं नमः । ऋग्०परि०,रात्रिसूक्त, मंत्र4

'उपरिष्टाद् ज्योतिः जगती' का उदाहरण (Example)-
(8+8+8+8+12 = 44 अक्षर)

यत्रादित्याश्च रुद्राश्च,
वसवश्च समाहिताः ।
भूतं च यत्र भव्यं च,
सर्वे लोकाः प्रतिष्ठिताः,
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः ।। अथर्व० 10.7.22

टिप्पणी- ऋग्वेद आदि में त्रिष्टुप् और जगती छन्द के सैकड़ों मंत्र हैं, परन्तु आचार्य पिंगल ने त्रिष्टुप् और जगती छन्दों का स्पष्ट उल्लेख करते हुए यह निर्देश नहीं दिया है कि- त्रिष्टुप् छन्द के चारों पादों में 11-11 अक्षर होते हैं और यह 44 अक्षर का छन्द होता है । इसी प्रकार जगती छन्द के विषय में भी स्पष्ट

निर्देश नहीं है कि- जगती छन्द में चार पाद 12-12 अक्षर के होते हैं और इसमें 48 अक्षर होते हैं ।

आचार्य पिंगल ने केवल इतना निर्देश किया है कि-

जगत्या आदित्याः (3.4) **और त्रिष्टुभो रुद्राः** (3.6)

इससे एक पाद का लक्षण प्राप्त होता है कि 'जगती' के एक पाद में 12 अक्षर होते हैं और 'त्रिष्टुप्' के एक पाद में 11 अक्षर । इसको ही चारों पादों का लक्षण समझा जाना चाहिए ।

Note. There are several hymns in *Ṛgveda* etc. in *triṣṭup* or *jagatī* metres. However, *Ācārya Piṅgal* never mentioned specifically that the *triṣṭup* metre contains (11X4=) 44 syllables, or, similarly, *jagatī* metre has (12x4=) 48 syllables. What he says (cf. Formulae 4 and 6 above) that one part of *jagatī* (respectively *triṣṭup*) has 12 (respectively 11) syllables.

त्रिष्टुप् छन्द का उदाहरण (Example)- (11 x 4 = 44 अक्षर)

या वो भेषजा मरुतः शुचीनि,
या शंतमा वृषणो या मयोभु ।
यानि मनुरवृणीता पिता नस्-
ता शं च योश्च रुद्रस्य वश्मि ।।

ऋग्॰ 2.33.13

जगती छन्द का उदाहरण (Example)- (12 x 4 = 48 अक्षर)

अमेव नः सुहवा आ हि गन्तन,
नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन ।
अधा मन्दस्व जुजुषाणो अन्धसस्
-त्वष्टर्देवेभिर्जनिभिः सुमद्गणः ।।

ऋग्॰ 2.36.3

त्रिष्टुप् और जगती का प्रकरण समाप्त ।

This ends the discussion on *triṣṭup* and *jagatī* .

विशेष संज्ञा का अधिकार

Discussion of leading rules

एकस्मिन् पञ्चके छन्दः शङ्कुमती ॥ 55 ॥

शब्दार्थ- एकस्मिन् - गायत्री आदि किसी भी छन्द में, **पञ्चके** - यदि कोई पाद पांच अक्षर वाला हो, **छन्दः** - तो उस छन्द को, **शंकुमती** - शंकुमती कहते हैं । जैसे- शंकुमती गायत्री, शंकुमती उष्णिक् आदि ।

अर्थ- गायत्री आदि छन्दों में यदि किसी एक पाद में पाँच अक्षर हों तो उसे 'शंकुमती' छन्द कहते हैं । जैसे- शंकुमती गायत्री, शंकुमती उष्णिक् आदि।

Meaning. If a part of *gayatrī*, etc. metres has 5 syllables, then this is the case of *śaṅkumatī* metre; such as *śaṅkumatī gāyatrī, śaṅkumatī uṣṇik*, etc.

We remark that this definition is indepedent of number of syllables in other parts. Thus, in a *śaṅkumatī* metre, one part definitely contains 5 syllables, and other parts may contain any number of syllables- such as 8, 10, 12, etc. An analogous remark applies to *kakudmatī* and other metres. See below.

टिप्पणी- यदि किसी छन्द में शेष पादों में अपने छन्द के अनुसार 8, 10, 12 आदि अक्षर हैं और केवल एक पाद में 5 अक्षर हैं, तो उसे शंकुमती छन्द कहेंगे । जैसे- शंकुमती गायत्री, शंकुमती अनुष्टुप् आदि ।

शंकुमती गायत्री का उदाहरण (Example) -(8+8+5=21 अक्षर)

युक्तेन मनसा वयं,
देवस्य सवितुः सवे ।
स्वर्ग्याय शक्त्या ।। यजु० 11.2

शंकुमती अनुष्टुप् का उदाहरण (Example)- (8+8+8+5=29)

बृहत्पलाशे सुभगे,
वर्षवृद्ध ऋतावरि ।
मातेव पुत्रेभ्यो मृड,
केशेभ्यः शमि ।। अथर्व० 6.30.3

षट्के ककुद्मती ॥ 56 ॥

शब्दार्थ- (पूर्वसूत्र से 'एकस्मिन्' की अनुवृत्ति होगी ।) **एकस्मिन्**- यदि एक पाद में, **षट्के**- 6 अक्षर हों, **ककुदमती**- तो उस छन्द को ककुदमती छन्द कहेंगे । जैसे- ककुद्मती गायत्री, ककुद्मती अनुष्टुप् आदि ।

अर्थ - गायत्री आदि छन्दों में यदि किसी एक पाद में 6 अक्षर हों तो उसे 'ककुद्मती' छन्द कहते हैं । जैसे- ककुद्मती गायत्री, ककुद्मती अनुष्टुप् आदि।

Meaning. If a part of *gāyatrī*, etc. metres has 6 syllables, then this is the case of *kakudmatī* metre; such as *kakudmatī gāyatrī, kakudmatī anuṣṭup,* etc.

ककुद्मती गायत्री का उदाहरण (Example)-(8+8+6=22 अक्षर)

नि येन मुष्टिहत्यया,
नि वृत्रा रुणधामहै ।
त्वोतासो न्यर्वता ।। ऋग्० 1.8.2

ककुद्मती अनुष्टुप् का उदाहरण (Example)- (6+8+8+8=30)

स पूर्व्यो महानां,
वेनः क्रतुभिरानजे ।
यस्य द्वारा मनुष्पिता,
देवेषु धिय आनजे ।। ऋग्० 8.63.1

त्रिपादणिष्ठमध्या पिपीलिकामध्या ॥ 57 ॥

शब्दार्थ- त्रिपाद्- तीन पाद वाला गायत्री आदि छन्द, **अणिष्ठ-मध्या**- यदि मध्यवाला दूसरा पाद कम अक्षरों वाला हो, **पिपीलिकामध्या**- तो उसे पिपीलिकामध्या कहते हैं । जैसे- पिपीलिकामध्या गायत्री आदि ।

अर्थ - तीन पाद वाले गायत्री आदि छन्दों में यदि द्वितीय पाद कम मात्रा वाला होगा तो उसे 'पिपीलिका मध्या' कहते हैं । जैसे- पिपीलिकामध्या गायत्री आदि।

Meaning. In a metre consisting of three parts, if the number of syllables in the middle part is less than the other two parts, then the same is called *pipīlikā madhyā*, e.g. *pipīlikā madhyā gāyatrī*, etc.

We remark that '*pipīlikā*' means a 'female ant', and '*madhyā*' means 'middle'. So the name '*pipīlikā madhyā*' indicates the middle thin part of a metre as female ant's middle part of her body is thiner than her end parts.

टिप्पणी- पिपीलिका का अर्थ है- चींटी । चींटी का मध्यभाग पतला होता है, इसी प्रकार जिस छन्द का मध्यभाग कम अक्षरों वाला होगा, उसे पिपीलिकामध्या कहेंगे ।

पिपीलिकामध्या गायत्री का उदाहरण (Example)- (8+4+7=19)

नृभिर्येमाणो हर्यतो,
विचक्षणो,
राजा देवः समुद्र्यः ।। साम० 858

विपरीता यवमध्या ॥ 58 ॥

शब्दार्थ - विपरीता- पूर्व सूत्र के विपरीत यदि लक्षण हों, अर्थात् तीन पाद वाले छन्द में यदि बीच का (द्वितीय) पाद अधिक अक्षर वाला हो और प्रथम एवं तृतीय पाद कम अक्षर वाले हों, उसे 'यवमध्या' कहते हैं । जैसे- यवमध्या गायत्री आदि ।

अर्थ- जिस तीन पाद वाले गायत्री आदि छन्द का द्वितीय पाद अधिक अक्षर वाला हो और प्रथम एवं तृतीय पाद कम अक्षर वाले हों, उसे 'यवमध्या' कहते हैं । जैसे- यवमध्या गायत्री आदि ।

Meaning. In *yava madhyā* metres, number of syllables in the middle part is more than the first and the (last) third parts. (Notice that, in *yava* (barley-corn), the middle part is heavier than its ends.)

टिप्पणी- यव का अर्थ है- जौ । जौ बीच में मोटा होता है और दोनों ओर पतला होता है, उसी प्रकार जिस छन्द में मध्यभाग (दूसरा पाद) बड़ा होगा, तथा प्रथम एवं तृतीय पाद कम अक्षर वाले होंगे, उसे 'यवमध्या' कहेंगे ।

यवमध्या गायत्री का उदाहरण (Example)- (8+11+7 = 26)

सुदेवः समहासति,
सुवीरो नरो मरुतः स मर्त्यः ।
यं त्रायध्वे स्याम ते ।। ऋग्० 5.53.15

ऊनाधिकेनैकेन निचृद्भुरिजौ ॥ 59 ॥

शब्दार्थ- एकेन ऊनेन- यदि किसी छन्द में निर्दिष्ट संख्या से एक अक्षर कम हो, **निचृद्**-तो उसे 'निचृद्' कहते हैं। जैसे- निचृद् गायत्री, निचृद् उष्णिक् आदि । **एकेन अधिकेन**- यदि निर्दिष्ट संख्या से किसी छन्द में एक अक्षर अधिक हो, **भुरिज्**- तो उसे 'भुरिज्' कहते हैं। जैसे- भुरिज् गायत्री, भुरिज् उष्णिक् आदि । निचृत् को निवृत् भी कहते हैं ।

अर्थ- यदि किसी छन्द में निर्दिष्ट संख्या से एक अक्षर कम हो तो उसे 'निचृद्' (निवृत्) कहते हैं। जैसे- निचृद् गायत्री आदि । यदि किसी छन्द में निर्दिष्ट संख्या से एक अक्षर अधिक हो तो उसे 'भुरिज्' (भुरिक्) कहते हैं। जैसे- भुरिज् गायत्री आदि ।

Meaning. If a metre has one syllable less (respectively more) than the number of syllables prescribed by the corresponding rule, then the same is called *nicṛd* (respectively *bhurij* or *bhurik*); such as *nicṛd gāyatrī, nicṛd uṣṇik* (or *bhurij gāyatrī, bhurij uṣṇik*), etc.

निचृद् गायत्री का उदाहरण (Example) - (7+8+8 = 23 अक्षर) प्रथम पाद में एक अक्षर कम है अर्थात् 8 अक्षर के स्थान पर 7 अक्षर हैं ।

तत् सवितुर्वरेण्यं,
भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ।। यजु० 3.35

विशेष- इस उदाहरण के प्रथम पाद में एक वर्ण कम है तथा आगामी उदाहरण के अंतिम भाग में एक वर्ण अधिक है ।

भुरिक् (भुरिग्) गायत्री का उदाहरण (Example)- (8+8+9=25)

यहाँ तृतीय पाद में एक अक्षर अधिक है, अर्थात् आठ अक्षर के स्थान पर 9 अक्षर हैं ।

परि द्युक्षः सनद्रयि-
र्भरद्वाजं नो अन्धसा ।
सुवानो अर्ष पवित्र आ ।। ऋग्० 9.52.1

द्वाभ्यां विराट्स्वराजौ ॥ 60 ॥

शब्दार्थ - (पूर्वसूत्र से 'ऊन' और 'अधिक' की अनुवृत्ति होगी ।) **द्वाभ्यां न्यूनाभ्याम्** - यदि दो अक्षर न्यून होंगे, **विराट्** - तो उसे 'विराट्' (विराज्) कहेंगे। **द्वाभ्याम् अधिकाभ्याम्** - यदि दो अक्षर अधिक होंगे, **स्वराट्**- तो उसे 'स्वराट्' (स्वराज्) कहेंगे। जैसे- विराट् गायत्री, स्वराट् गायत्री आदि।

अर्थ - यदि किसी छन्द में निर्दिष्ट संख्या से दो अक्षर न्यून होंगे तो उसे 'विराट्' कहेंगे । इसी प्रकार यदि किसी छन्द में निर्दिष्ट संख्या से दो अक्षर अधिक होंगे तो उसे 'स्वराट्' कहेंगे ।

Meaning. If a metre has two syllables less (respectively more) than the number of syllables prescribed by the corresponding rule, then the same is called *viraṭ* or *virāj* (respectively *svarāṭ* or *svarāj*) as illustrated in the following examples.

विराड् गायत्री का उदाहरण (Example)- (7+8+7 = 22 अक्षर) प्रथम और तृतीय पाद में एक-एक अक्षर कम है, अर्थात् 8 अक्षर के स्थान पर 7-7 अक्षर हैं ।

राजन्तमध्वराणां,
गोपामृतस्य दीदिवम् ।
वर्धमानं स्वे दमे ।। ऋग्० 1.1.8

विशेष- इस उदाहरण के प्रथम एवं तृतीय पादों में एक-एक अक्षर कम है, अर्थात् इस छन्द में कुल दो अक्षर कम हैं । इसी प्रकार आगामी उदाहरण में दो अक्षर अधिक हैं ।

स्वराड् गायत्री का उदाहरण (Example)- (8+9+9 = 26 अक्षर) द्वितीय और तृतीय पाद में 8-8 अक्षर के स्थान पर 9-9 अक्षर हैं, अर्थात् कुल 2 अक्षर अधिक हैं।

जोषा सवितर्यस्य ते,
हरः शतं सवाँ अर्हति ।
पाहि नो दिद्युतः पतन्त्याः ।।

ऋग्० 10.158.2

आदितः सन्दिग्धे ॥ 61 ॥

शब्दार्थ - सन्दिग्धे- यदि किसी पद्य या मंत्र में सन्देह उत्पन्न हो जाए, **आदितः** - तो वहाँ पर मंत्र आदि के प्रथम पाद के आधार पर निर्णय करें ।

अर्थ - यदि किसी मंत्र आदि के छन्द के विषय में कोई सन्देह उत्पन्न हो तो वहाँ पर मंत्र आदि के प्रथम पाद को देखें और उसके आधार पर निर्णय करें कि वह गायत्री है, उष्णिक् है या अनुष्टुप् आदि ।

Meaning. In case of doubt about the metre of a *mantra* or verse or *śloka,* one should decide taking into account the first *pāda* (part) of the metre. (Thus, if the first part of a metre is *gāyatrī* (respectively *anuṣṭup*), then the metre should be taken as *gāyatrī* (respectively *anuṣṭup*).)

This formula intends to clasify doubts (if any) regarding the type of a metre. There are other parameters to clasify doubts which are discussed below.

टिप्पणी- यह सूत्र सन्देह-निवारण के लिए बनाया गया है ।

सन्देह-निवारण के लिए छन्द के प्रथम पाद के अक्षरों की गणना करें। यदि प्रथम पाद में 8 अक्षर हैं और छन्द त्रिपाद् है तो उसे गायत्री समझें । यदि छन्द के प्रथम पाद में 8 अक्षर हैं और वह छन्द चतुष्पाद् है तो उसे अनुष्टुप् समझें। यदि छन्द के प्रथम पाद में 7 अक्षर हैं और वह चतुष्पाद् है तो उसे उष्णिक् समझें ।

दो अक्षर कम होने से विराट् होता है और दो अक्षर अधिक होने से स्वराट् होता है । अनुष्टुप् में 32 अक्षर होते हैं, विराट् अनुष्टुप् में 2 अक्षर कम होने से 30 अक्षर होते हैं । इसी प्रकार उष्णिक् में 28 अक्षर होते हैं । स्वराट् उष्णिक् में 2 अक्षर अधिक होने से 28+2= 30 अक्षर होते हैं । मान लें कि एक छन्द में 30 अक्षर हैं, उसे हम क्या कहेंगे ? विराट् अनुष्टुप् या स्वराट् उष्णिक्? ऐसे स्थलों में सन्देह-निवारण के लिए यह सूत्र है । यदि छन्द के प्रथम पाद में 8 अक्षर हैं और 4 पाद हैं तो उसे विराट् अनुष्टुप् कहेंगे। यदि छन्द के प्रथम पाद में 7 अक्षर हैं और 4 पाद हैं तो उसे स्वराट् उष्णिक् कहेंगे ।

देवतादितश्च ॥ 62 ॥

शब्दार्थ- च- और भी प्रकार है अर्थात् यदि छन्द के विषय में सन्देह है तो उस सन्देह के निवारण का दूसरा उपाय है, **देवतादितः** - देवता या स्वर आदि के द्वारा भी सन्देह-निवारण होगा ।

अर्थ- छन्द में सन्देह वाले स्थल पर देवता और स्वर के आधार पर भी छन्द का निर्णय होता है ।

Meaning. Yet, there are other ways to remove the doubt about the nature of metre of a stanza. The deity and note (*svara*) should be taken into consideration to decide the nature of a stanza.

(There are seven prime Vedic metres such as *gāyatrī, usṇik*, etc. Each of them has a deity. See the next formula.)

टिप्पणी- गायत्री आदि सात मुख्य छन्द हैं । उनके सात देवता हैं । इनके नाम अगले सूत्र में क्रमशः दिए गए हैं ।

अग्निः सविता सोमो बृहस्पतिर्वरुण
इन्द्रो विश्वेदेवा देवताः ॥ 63 ॥

शब्दार्थ- अग्निः सविता0 - गायत्री, उष्णिक् आदि सात छन्दों के क्रमशः ये देवता हैं- अग्नि, सविता, सोम, बृहस्पति, वरुण, इन्द्र और विश्वेदेव।

अर्थ - गायत्री, उष्णिक् आदि सात छन्दों के क्रमशः ये देवता हैं- अग्नि, सविता, सोम, बृहस्पति, वरुण, इन्द्र और विश्वेदेव । (इस अध्याय के अन्त में आव्यूह देखें ।)

Meaning. *Agni, Savitā, Soma, Bṛhaspati, Varuṇa, Indra* and *Viśvedeva* are the deities of *gāyatrī, usṇik*, etc. metres respectively. (See the matrix at the end of this chapter.)

स्वराः षड्जर्षभ-गान्धार-मध्यम-

पञ्चम-धैवत-निषादाः ॥ 64 ॥

शब्दार्थ - **स्वराः षड्ज0**- गायत्री, उष्णिक् आदि छन्दों के क्रमशः ये सात स्वर हैं- षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद ।

अर्थ- गायत्री आदि छन्दों के क्रमशः ये स्वर हैं-गायत्री-षड्ज, उष्णिक् -ऋषभ, अनुष्टुप्- गान्धार, बृहती-मध्यम, पंक्ति-पंचम, त्रिष्टुप्-धैवत, जगती-निषाद । इस अध्याय के अन्त में आव्यूह देखें ।

Meaning. The following are the respective notes of *gāyatri, uṣṇik*, etc. seven metres: *Ṣaḍja, Ṛṣabha, Gāndhāra, Madhyama, Pañcama, Dhaivata* and *Niṣāda.* (See the matrix at the end of this chapter.)

टिप्पणी- याज्ञवल्कीय शिक्षा में स्वरों के विषय में कुछ उपयोगी निर्देश दिए गए हैं । संक्षेप में ये हैं-

गान्धर्ववेदे ये प्रोक्ताः सप्त षड्जादयः स्वराः ।
त एव वेदे विज्ञेयास्त्रय उच्चादयः स्वराः ।।
उच्चौ निषाद-गान्धारौ, नीचावृषभ-धैवतौ ।
शेषास्तु स्वरिते ज्ञेयाः, षड्ज-मध्यम-धैवताः ।।

याज्ञ० शिक्षा

उच्चारण की दृष्टि से सात स्वरों का यह प्रकार है-

गान्धार- उदात्त, **निषाद**- उदात्ततर, ये दोनों कोमल स्वर हैं । (तीव्र) **धैवत**- अनुदात्त, (तीव्र) **ऋषभ**- अनुदात्ततर, ये दोनों कोमल हैं । **मध्यम**-स्वरित, **पंचम**- स्वरितोदात्त, **षड्ज**- एकश्रुति है ।

उदात्त- उच्च ध्वनि है, आरोह है । **अनुदात्त**- निम्न ध्वनि है, अवरोह है। **स्वरित** - मध्यगत ध्वनि है ।

सित-सारङ्ग-पिशङ्ग-कृष्ण-
नील-लोहित-गौरा वर्णाः ॥ 65 ॥

शब्दार्थ- **सित-सारङ्ग0**- गायत्री आदि छन्दों के क्रमशः ये सात, **वर्णाः** - रंग होते हैं । ये हैं- गायत्री-सित (श्वेत, सफेद), उष्णिक् (सारंग, चितकबरा, धब्बेवाला), **पिशंग**- पीला, **बृहती**- कृष्ण (काला), **पंक्ति**- नील (नीला), **त्रिष्टुप्**- लोहित (लाल), जगती- गौर (गोरा, अतिश्वेत) ।

अर्थ- गायत्री आदि स्वरों के क्रमशः ये सात रंग हैं- गायत्री- श्वेत, उष्णिक्- चितकबरा, अनुष्टुप्- पीला, बृहती- काला, पंक्ति- नीला, त्रिष्टुप्- लाल, जगती- गोरा, अतिश्वेत ।

Meaning. The following colours have been allotted to *gāyatrī, uṣṇik*, etc. seven metres: White, dappled or spotted, yellow, black, blue, red, and pure white. (See the matrix at the end of this chapter.)

आग्निवेश्य-काश्यप-गौतमाङ्गिरस-भार्गव-
कौशिक-वासिष्ठानि गोत्राणि ॥ 66 ॥

शब्दार्थ - **आग्निवेश्य0**- गायत्री आदि सात छन्दों के, **गोत्राणि**- ये सात गोत्र हैं । ये हैं- आग्निवेश्य, काश्यप, गौतम, आंगिरस, भार्गव, कौशिक, वासिष्ठ ।

अर्थ- गायत्री आदि छन्दों के सात ऋषि या गोत्र अग्निवेश्य आदि हैं । (सारणी देखें)

Meaning. Each metre has a lineage (*Gotra*); *Āgniveśya,* etc. are seven in number.

छन्दों के देवता, स्वर, वर्ण एवं ऋषि/गोत्र का आव्यूह अगले पृष्ठ पर देखें ।

(Matrix of metres with their deity, notes, colour and lineage (gotra) see on the next page.)

छन्दों के देवता, स्वर, वर्ण एवं ऋषि/गोत्र का आव्यूह
MATRIX OF METRES WITH THEIR DEITY, NOTES, COLOUR AND LINEAGE (*GOTRA*)

छन्द Metre	गायत्री *Gāyatrī*	उष्णिक् *Uṣṇik*	अनुष्टुप् *Anuṣṭup*	बृहती *Bṛhatī*	पंक्ति *Paṅkti*	त्रिष्टुप् *Triṣṭup*	जगती *Jagatī*
देवता Deity	अग्नि *Agni*	सविता *Savitā*	सोम *Soma*	बृहस्पति *Bṛhaspat*	वरुण *Varuṇa*	इन्द्र *Indra*	विश्वेदेव *Viśvedeva*
स्वर Notes	षड्ज *Ṡaḍja*	ऋषभ *Ṛṣabha*	गान्धार *Gāndhāra*	मध्यम *Madhyama*	पंचम *Pañcama*	धैवत *Dhaivata*	निषाद *Nīṣāda*
वर्ण Colour	श्वेत White	चितकबरा Dappled/ spotted	पीला Yellow	काला Black	नीला Blue	लाल Red	गौर Pure white
ऋषि/गोत्र *Ṛṣi/Gotra* (lineage)	आग्निवेश्य *Āgniveśya*	काश्यप *Kāśyapa*	गौतम *Gautama*	आंगिरस *Āṅgirasa*	भार्गव *Bhārgava*	कौशिक *Kauśika*	वासिष्ठ *Vāsiṣṭha*

तृतीयोऽध्यायः समाप्तः ।

(This ends Chapter III.)

चतुर्थोऽध्याय:
CHAPTER IV

चतुःशतमुत्कृतिः ॥ 1 ॥

शब्दार्थ - **उत्कृतिः** - उत्कृति छन्द, **चतुःशतम्** - 104 अक्षरों का होता है । यह नियम वैदिक और लौकिक दोनों प्रकार के छन्दों के लिए है ।

अर्थ- 'उत्कृति' छन्द 104 अक्षरों का होता है ।

Meaning. The *utkṛti* metre consists of 104 syllables in all.

उत्कृति छन्द का उदाहरण (Example)- (104 अक्षर)

इषश्चोर्जश्च शारदावृत् अग्नेरन्तः श्लेषोऽसि कल्पेतां
द्यावापृथिवी कल्पन्ताम् , आप ओषधयः कल्पन्ताम् ,
अग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः ।
ये अग्नयः समनसोऽन्तरा द्यावापृथिवी इमे ।
शारदावृतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा
अभिसंविशन्तु तया देवतयाऽङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम्।।

यजु० 14.16

चतुरश्चतुरस्त्यजेदुत्कृतेः ॥ 2 ॥

शब्दार्थ- **उत्कृतेः** - उत्कृति छन्द में से, **चतुरः चतुरः** - चार-चार अक्षरों को, **त्यजेत्** - छोड़ता जावे । इससे अगले छन्दों का ज्ञान होगा ।

अर्थ - 'उत्कृति' छन्द में से चार-चार अक्षरों को कम करते जाने से अन्य छन्द बनेंगे । यदि छन्द में चार पाद हैं तो प्रत्येक से एक-एक अक्षर कम किया जा सकता है । इस प्रकार प्राप्त छंदों को आगे दिया जा रहा है ।

Meaning. New metres may be formed by successively diminishing 4 syllables from the *utkrti.* (One may diminish one syllable from each part, if it has four parts.)

तान्यभिसंव्याप्रेभ्यः कृतिः ॥ 3 ॥

शब्दार्थ - **तानि**- उन छन्दों के नाम ये हैं, **अभिकृतिः** - अभि+कृति=

अभिकृति (104 - 4 = 100 अक्षर), सम्+कृति = **संकृति** (100 - 4= 96 अक्षर), वि+कृति= **विकृति** । (96 - 4 = 92 अक्षर), आ+कृति=**आकृति** (92 - 4 = 88 अक्षर), प्र+कृति= **प्रकृति** (88 - 4 = 84 अक्षर), ये पांच छन्द हैं ।

अर्थ- चार-चार संख्या घटाने पर ये 5 छन्द बनते हैं- अभिकृति छन्द (100 अक्षर), संकृति छन्द (96 अक्षर), विकृति छन्द (92 अक्षर), आकृति छन्द (88 अक्षर), प्रकृति छन्द (84 अक्षर) ।

Meaning. If you subtract 4 syllables out of *utkṛti's* 104 syllables, the following 5 metres are made: *Abhikṛti* (104 - 4 =100 syllables), *saṅkṛti* (96 syllables), *vikṛti* (92 syllables), *ākṛti* (88 syllables), and *prakṛti* (84 syllables).

अभिकृति छन्द का उदाहरण (Example)- (104-4=100 अक्षर)

अग्निश्च पृथिवी च सन्नते ते मे सं नमन्तामदो, वायुश्चान्तरिक्षं च सन्नते ते मे सं नमन्तामद, आदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सं नमन्तामद, आपश्च वरुणश्च सन्नते ते मे सं नमन्तामदः । सप्त संसदो अष्टमी भूतसाधनी। सकामाँ अध्वनस्कुरु संज्ञानमस्तु मेऽमुना ।। यजु० 26.1

संकृति छन्द का उदाहरण (Example)- (100-4 = 96 अक्षर)

एका च मे, तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे, पञ्च च मे पञ्च च मे, सप्त च मे सप्त च मे, नव च मे नव च म, एकादश च मे एकादश च मे, त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे, पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे, सप्तदश च मे सप्तदश च मे, नवदश च मे नवदश च मे ।। यजु० 18.24

विकृति छन्द का उदाहरण (Example)- (96-4 = 92 अक्षर)

उपयामगृहीतो ऽसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिश्चन्द्रमास्ते महिमा। यस्ते रात्रौ संवत्सरे महिमा सम्बभूव, यस्ते पृथिव्यामग्नौ महिमा सम्बभूव, यस्ते नक्षत्रेषु चन्द्रमसि महिमा सम्बभूव, तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये देवेभ्यः स्वाहा । यजु० 23.4

आकृति छन्द का उदाहरण (Example)- (92-4 = 88 अक्षर)

परमेष्ठी त्वा सादयतु दिवस्पृष्ठे व्यचस्वतीं प्रथस्वतीं, दिवं यच्छ, दिवं दृंह, दिवं मा हिंसीः । विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानायोदानाय प्रतिष्ठायै

चरित्राय । सूर्यस्त्वाभिपातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शन्तमेन तया देवतयाऽङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम् ।। यजु० 15.64

प्रकृति छन्द का उदाहरण (Example)- (88 - 4 = 84 अक्षर)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। पृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वत् खनामि । ज्योतिष्मन्तं त्वामग्ने सुप्रतीकमजस्रेण भानुना दीद्यतम् । शिवं प्रजाभ्योऽहिंसन्तं पृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिस्वत् खनामः।। यजु० 11.28

प्रकृत्या चोपसर्गवर्जितः ॥ 4 ॥

शब्दार्थ -('चतुरः त्यजेत्' की पूर्वसूत्रों से अनुवृत्ति होगी ।) **च**- और, **उपसर्ग-वर्जितः** - उपसर्ग से रहित, प्रकृत्या- अपने शुद्ध स्वभाव में रहेगा । अर्थात् शुद्ध 'कृति' छन्द 84 - 4 = 80 अक्षर चार अक्षर कम करके 80 अक्षरों वाला होगा ।

अर्थ - उपसर्ग-रहित 'कृति' छन्द अपने शुद्ध रूप में अर्थात् 84 - 4= 80 अक्षर वाला होगा ।

Meaning. The *kṛti* metre will consist of only 80 syllables in its pure form.

कृति छन्द का उदाहरण (Example) - (84-4 = 80 अक्षर)

असवे स्वाहा, वसवे स्वाहा, विभुवे स्वाहा, विवस्वते स्वाहा, गणश्रिये स्वाहा, गणपतये स्वाहा- ऽभिभुवे स्वाहा- ऽधिपतये स्वाहा, शूषाय स्वाहा, संसर्पाय स्वाहा, चन्द्राय स्वाहा, ज्योतिषे स्वाहा, मलिम्लुचाय स्वाहा, दिवा पतयते स्वाहा ।। यजु० 22.30

धृत्यष्टि-शक्वरी-जगत्यः ॥ 5 ॥

शब्दार्थ - (पूर्वसूत्र से 'कृति' की अनुवृत्ति होगी ।) कृति छन्द के बाद, धृत्यष्टि0- धृति, अष्टि, शक्वरी और जगती छन्द होते हैं ।

अर्थ - कृति छन्द के बाद धृति, अष्टि, शक्वरी और जगती छन्द होते हैं। ये छन्द क्रमशः 4-4 अक्षर कम होते जाएंगे ।

Meaning. After the *kṛti* metre the following metres

should be taken into consideration obtained by successively diminishing 4 syllables: *Dhṛti, aṣṭi, śakvarī* and *jagatī*.

पृथक् पृथक् पूर्वत एतान्येवैषाम् ॥ 6 ॥

शब्दार्थ - **एषाम्** - उन धृति आदि छन्दों के नामों के, **पूर्वतः**- पहले, **एतानि एव**- ये ही नाम, **पृथक् - पृथक्**- पृथक्-पृथक् और लिख दिए जावें। अर्थात् धृति आदि नामों को दो-दो बार लिख लिया जाय । जैसे- धृति-धृति, अष्टि-अष्टि, शक्वरी-शक्वरी, जगती-जगती ।

अर्थ - 'धृति'आदि शब्दों से पूर्व एक बार और धृति आदि शब्द लिख लें। अर्थात् धृति आदि शब्दों को दो-दो बार लिखा जाए ।

Meaning. The *dhṛti, aṣṭi,* etc. should be preceded by itself, e.g. *dhṛti-dhṛti, aṣṭi-aṣṭi, śakvarī-śakvarī, jagatī-jagatī*.

द्वितीयं द्वितीयमतितः ॥ 7 ॥

शब्दार्थ - **द्वितीयं द्वितीयम्** - धृति आदि से पहले जो एक और धृति आदि शब्द लिखे गए हैं, **अतितः**- उन्हें 'अति' शब्द के बाद लिख लें । अर्थात् धृति आदि छन्द 4 के स्थान पर 8 हो गए। जैसे- **अतिधृति**- धृति, अत्यष्टि-अष्टि, अतिशक्वरी- शक्वरी, अतिजगती- जगती ।

अर्थ - 'धृति' आदि शब्दों में से एक 'धृति' आदि से पहले 'अति' शब्द जोड़ दें । इस प्रकार धृति आदि 4 छन्दों के निम्न 8 भेद हो जाते हैं ।

अतिधृति-	72+4= 76 अक्षर ।	**धृति**- 76-4= 72 अक्षर।
अत्यष्टि-	64+4= 68 अक्षर ।	**अष्टि**- 68-4= 64 अक्षर।
अतिशक्वरी-	56+4= 60 अक्षर ।	**शक्वरी**-60-4=56 अक्षर।
अति जगती-	48+4= 52 अक्षर ।	**जगती**-52-4= 48 अक्षर।

Meaning. (Now) *dhṛti, aṣṭi*, etc. should be prefixed by ***ati*** to form another (new) four metres. So the off-springs are: *atidhṛti, atyaṣṭi, atiśakvarī* and *atijagatī* having syllables respectively 76 (=72+4), 68 (=64+4), 60 (=56+4) and 52 (=48+4). (Notice that *dhṛti, aṣṭi, śakvarī* and *jagatī*

have 72 (=76-4), 64 (=68-4), 56 (=64-4) and 48 (=52-4) syllables respectively in this context.

अतिधृति छन्द का उदाहरण (Example)- (76 अक्षर)

प्रजापतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामी-न्द्राग्निभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि, वायवे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि, विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि, सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि । यो अर्वन्तं जिघांसति तमभ्यमीति वरुणः । परो मर्तः परः श्वा । यजु० 22.5

धृति छन्द का उदाहरण (Example)- (72 अक्षर)

होता यक्षत् तिस्रो देवीर्न भेषजं त्रयस्त्रिधातवोऽपसो रूपमिन्द्रे हिरण्ययमश्विनेडा न भारती वाचा सरस्वती मह इन्द्राय दुह इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज ।। यजु० 21.37

अत्यष्टि छन्द का उदाहरण (Example)- (68 अक्षर)

आयुर्यज्ञेन कल्पतां, प्राणो यज्ञेन कल्पतां, चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां,
श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां, पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां, यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् ।
प्रजापतेः प्रजा अभूम, स्वर्देवा अगन्मा-ऽमृता अभूम ।।

यजु० 9.21

अष्टि छन्द का उदाहरण (Example)- (64 अक्षर)

अद्भ्यः स्वाहा, वार्भ्यः स्वाहो-दकाय स्वाहा, तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा, स्रवन्तीभ्यः स्वाहा, स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा, कूप्याभ्यः स्वाहा, सूद्याभ्यः स्वाहा, धार्याभ्यः स्वाहा-र्णवाय स्वाहा, समुद्राय स्वाहा, सरिराय स्वाहा।।

यजु० 22.25

अतिशक्वरी छन्द का उदाहरण (Example)- (60 अक्षर)

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः । अश्रद्धामनृतेऽ-दधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ।। यजु० 19.77

शक्वरी छन्द का उदाहरण (Example)- (56 अक्षर)

यदापिपेष मातरं पुत्रः प्रमुदितो धयन् । एतत् तदग्ने अनृणो भवाम्यहतौ पितरौ मया । सम्पृच स्थ सं मा भद्रेण पृङ्क्त, विपृच स्थ वि मा पाप्मना पृङ्क्त ।। यजु० 19.11

अतिजगती छन्द का उदाहरण (Example)- (52 अक्षर)

उन्नत ऋषभो वामनस्त ऐन्द्रावैष्णवा उन्नतः शितिबाहुः शितिपृष्ठस्त ऐन्द्राबार्हस्पत्याः शुकरूपा वाजिनाः कल्माषा आग्निमारुताः श्यामाः पौष्णाः।। यजु० 24.7

जगती छन्द का उदाहरण (Example)- (48 अक्षर)

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमूतये,
मारुतं शर्धो अदितिं हवामहे।
रथं न दुर्गाद् वसवः सुदानवो,
विश्वान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ।।

ऋग्० 1.106.1

वैदिक प्रकरण समाप्त ।

This is the end of Vedic section

***

अथ लौकिकम्

General discussion on metres

(लौकिक छन्दों का प्रकरण)

अथ लौकिकम् ॥ 8 ॥

शब्दार्थ- अथ- यहाँ से प्रारम्भ होता है, **लौकिकम्-** लौकिक छन्दों का प्रकरण।

अर्थ- यहाँ से लौकिक छन्दों का प्रकरण प्रारम्भ होता है ।

Meaning. Now the exposition of (popular) Sanskrit metres begins.

(*Sūtras* from 4.14 to 4.52 discuss popular Sanskrit metres, while *sūtras* 5.6-7.32 apply to Sanskrit and Vedic metres both.)

टिप्पणी- यहाँ यह स्मरण रखें कि आर्या आदि (4.14) से लेकर चूलिका (4.52) छन्द तक केवल लौकिक छन्दों का वर्णन है । इसके बाद समानी (5.6) छन्द से लेकर अपवाहक (7.32) छन्द पर्यन्त लौकिक और वैदिक दोनों प्रकार के छन्दों का वर्णन है ।

आत्रैष्टुभाच्च यदार्षम् ॥ 9 ॥

शब्दार्थ- च- और, **यत्-** जो, **आर्षम्-** गायत्री से लेकर, छन्द, **आत्रैष्टुभात्-** त्रिष्टुप् छन्द पर्यन्त जो वैदिक छन्द कहे गए हैं, वे सभी छन्द लौकिक छन्दःप्रकरण में भी उन्हीं लक्षणों से युक्त होते हैं । जैसे- गायत्री- 24 अक्षर। लौकिक छन्दःप्रकरण में इनके नामों में कुछ अन्तर आ गया है । जैसे- अनुष्टुप् (श्लोक)- 32 अक्षर (8x4 = 32 अक्षर) त्रिष्टुप् के स्थान पर इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा और उपजाति- 44 अक्षर (11x4 = 44 अक्षर) आदि।

अर्थ- गायत्री से लेकर त्रिष्टुप् तक जो वैदिक छन्द कहे गए हैं, वे लौकिक छन्दःप्रकरण में उसी प्रकार से होते हैं ।

Meaning. The metres from *gāyatrī* to *tristup*, discussed in Vedic prosody, continue to remain as such in the popular Sanskrit prosody as well.

पादश्चतुर्थभागः ॥ 10 ॥

शब्दार्थ- चतुर्थभागः- छन्द के चतुर्थांश अर्थात् 1/4 भाग को, **पादः** - पाद या चरण कहते हैं । **पाठभेद-** 'चतुर्भागः' है । दोनों का अर्थ एक ही है । यह समवृत्तों के विषय में ही लागू होता है ।

अर्थ- छन्द के चतुर्थ भाग को 'पाद' कहते हैं ।

Meaning. The one fourth part of a metre is called *pāda* (quarter) (generally in even metres). (In a *Samavṛtta* or even metre, all the four quarters have the same scansion and number of syllables.)

यथावृत्तसमाप्तिर्वा ॥ 11 ॥

शब्दार्थ- वा- अथवा, **यथावृत्तसमाप्तिः** - छन्दों के अक्षरों के अनुसार **पाद**-व्यवस्था की जाती है । कुछ छन्दों में प्रत्येक पाद में अक्षरों की संख्या कम या अधिक होती है, वहाँ पर छन्द के लक्षण के अनुसार ही पाद-व्यवस्था की जाती है ।

अर्थ- अथवा छन्द के लक्षण के अनुसार पाद-व्यवस्था की जाती है । विषम वृत्तों में प्रत्येक पाद में अक्षरों की संख्या में अन्तर होता है, अतः वहाँ छन्द के लक्षण के अनुसार पाद की व्यवस्था करें ।

Meaning. In some metres, the number of *pādas* or parts depends on the characteristics of the metre, and the number of syllables in various parts may be different. (This rule applies to metres other than even metres as well.)

We remark that metres are based either on *gaṇas* or on *mātrās* (morae) or syllables. Accordingly, the metres classified on this basis are called (1) *Gaṇa chandas*, (2) *Mātric* (moric) *chandas*, and (3) *Syllabic chandas*. For example, metres from *āryā* (4.14) to *udgīti* (4.30) belong to the category (1); metres from *vaitālīya* (4.32) to *cūlikā* (4.52) belong to the category (2); and metres form *samānī* (5.6) to *utkṛti* (7.32) belong to the category (3). This is supported by two *ślokas* below.

टिप्पणी- पूर्वोक्त नियम (10) समवृत्त के लिए है । इनमें चारों पादों में अक्षर-संख्या समान होती है ।

यह नियम विषम छन्दों के लिए हैं । विषम छन्दों में प्रत्येक पाद में अक्षरों की संख्या पृथक्-पृथक् होती है । अतः विषम छन्दों में छन्द के लक्षण के अनुसार ही पाद की व्यवस्था की जाती है ।

छन्द तीन प्रकार के होते हैं । (1) **गणछन्द**, इनमें अक्षरों या वर्णों की गणना की जाती है । इन्हें वर्णवृत्त भी कहते हैं । आर्या छन्द (4.14) से लेकर उद्‌गीति (4.30) तक गण छन्द हैं ।

(2) **मात्रा छन्द**, इनमें मात्राएं गिनी जाती हैं । इन्हें मात्रिक वृत्त भी कहते हैं । इनका वर्णन वैतालीय छन्द (4.32) से लेकर चूलिका (4.52) तक है ।

(3) **अक्षर छन्द**, इनमें अक्षरों की गणना की जाती है । इनका वर्णन समानी छन्द (5.6) से लेकर उत्कृति (7.32) तक है ।

इस विषय पर ये श्लोक हैं -

आदौ तावद् गणच्छन्दो, मात्राछन्दस्ततः परम् ।
तृतीयमक्षरच्छन्द-श्छन्दस्त्रेधा तु लौकिकम् ॥ 1 ॥

आर्याद्युदगीतिपर्यन्तं, गणच्छन्दः समीरितम् ।
वैतालादि चूलिकान्तं, मात्राछन्दः प्रकीर्तितम् ॥ 2 ॥
समान्याद्युत्कृतिं यावद्, अक्षरच्छन्द एव च ।।

लः समुद्रा गणः ॥ 12 ॥

शब्दार्थ- समुद्राः - चार, समुद्र शब्द चार संख्या के लिए है , **लः** - लघु अक्षर, अर्थात् 4 लघु अक्षरों (। । । ।) का, **गणः** - एक गण होता है। ल् का अर्थ है- एक लघु अक्षर (।) । ल् = लघु अक्षर ।

अर्थ - चार लघु अक्षरों (। । । ।) का भी एक गण होगा जिसे नगणल कहा जा सकता है । नगणल का तात्पर्य है नगण (।।।) के साथ एक और लघु (।) आ गया है ।

Meaning. A *gaṇa* or a metric unit may also consist of four short syllables (I I I I). (It will be called *nagaṇala*, i.e. a *nagaṇa* (I I I) acompanied by a short syllable (I). A unit of metrical quantity is called *mātrā* (mora) or syllabic instant, the time required to pronounce a short vowel.)

गौ गन्तमध्यादिर्लश्च ॥ 13 ॥

शब्दार्थ- गौ- वह गण कभी दो गुरु (ऽऽ) अक्षरों का होता है । **गन्त**- कहीं पर ग् = गुरु अन्त में रहता है, अर्थात् दो लघु+ 1 गुरु = (।।ऽ) । **ग्मध्य**- कहीं पर ग् (गुरु) मध्य में होता है, अर्थात् दो लघु के मध्य में एक गुरु (।ऽ।)। **गादि**- कहीं पर ग् (गुरु) अक्षर आदि में होता है (ऽ।।) । **च**- और कभी, **लः** - चार लघु अक्षरों का समूह होता है (।।।।) ।

इस प्रकार मात्रा छन्दों में 5 गण होते हैं -

गौ- ऽऽ, सगण- ।।ऽ, जगण- ।ऽ।, भगण- ऽ।।, नगणल- ।।।।

पाँचों में प्रत्येक में गुरु-लघु मिलाकर 4 लघु अक्षर होते हैं ।

अर्थ - मात्रा छन्दों के गण चार लघु अक्षरों के बराबर होते हैं । ये 5 हैं। (1) गौ- दो गुरु अक्षर (ऽऽ), (2) गन्त- गुरु अक्षर अन्त में (सगण-।।ऽ), (3) ग्मध्य- 2 लघु अक्षर इधर-उधर और बीच में गुरु अक्षर (जगण-।ऽ।), (4) ग् आदि- प्रारम्भ में गुरु अक्षर और बाद में दो लघु अक्षर (भगण- ऽ।।), (5) लः - चार लघु अक्षरों का समूह (नगणल- ।।।।) ।

Meaning. A *moric* metre is classified on the basis of combining short and long syllables so that a *gaṇa* (syllabic feet) is equivalent to four short syllables. They are: (i) 2 long syllables (ऽऽ), (ii) two short and one long syllables (*sagaṇa*-ııऽ), (iii) one long in the middle of two short syllables (*jagaṇa*-ıऽı), and similarly (iv) *bhagaṇa*-ऽıı, (v) *nagaṇala*-ıııı.

स्वरा अर्धं चार्यार्धम् ॥ 14 ॥

शब्दार्थ- स्वराः- सात गण पूरे, स्वर शब्द सात संख्या के लिए है । **च**- और, **अर्धम्**- आधा, आठवें का आधा, अर्थात् 7+1/2= $7^1/_2$ गण= 30 मात्राएं। **आर्यार्धम्**- आर्या छन्द का आधा भाग हुआ । इतना ही दूसरे आधे भाग में हुआ, इस प्रकार आर्या छन्द में पूरे 15 गण अर्थात् कुल 60 मात्राएं हुईं।

अर्थ - आधे आर्या छन्द में साढ़े सात गण होते हैं । इतने ही उत्तरार्ध में होते हैं । इस प्रकार पूरे आर्या छन्द में 15 गण या 60 मात्राएं होती हैं । इनमें गुरु-लघु इच्छानुसार कहीं भी रख सकते हैं ।

Meaning. The half of the *āryā* metre consists of $7^1/_2$ (seven and half) *gaṇas* (metric units). So the complete *āryā* metre will have 15 *gaṇas* or 60 short syllables.

आर्या छन्द का उदाहरण (Example of an *āryā* metre)-

ऽ ऽ, ऽ ऽ, ऽ । ।, ऽ ऽ, । । । ।,। ऽ ।, ऽ ऽ, ऽ

द्वी पा द न्य स्मा द पि म ध्या द पि ज ल नि धे र्दि शो ऽप्य न्तात् ।

ऽ ऽ, । । । ।, । । । ।, । । । ।, । । । ।, ।, ऽ ऽ,ऽ

आ नी य झ टि ति घ ट य ति वि धि र भि म त म भि मु खी भू तः।

रत्नावली 1.6

अत्रायुङ् न ज् ॥ 15 ॥

शब्दार्थ- अत्र- यहाँ आर्या छन्द के, **अयुक्**- विषम गण में अर्थात् प्रथम, तृतीय, पंचम और सप्तम गणों में, **ज्** - जगण अर्थात् मध्यगुरु (।ऽ।),

न- नहीं रखना चाहिए । शेष गणों का प्रयोग इच्छानुसार कर सकते हैं ।

अर्थ - आर्या छन्द के प्रथम, तृतीय, पंचम और सप्तम गणों में जगण नहीं रखें ।

Meaning. In *āryā* metre, do not let the *jagaṇa* (।ऽ।) come at the first, third, fifth and seventh feet.

षष्ठो ज् ॥ 16 ॥

शब्दार्थ - (पूर्व सूत्र से 'अत्र' की अनुवृत्ति होगी ।) **अत्र**- इस आर्या छन्द में, **षष्ठः** - छठा गण नियम से, **ज्** - जगण अर्थात् मध्यगुरु (।ऽ।) ही रखना चाहिए । यह व्यवस्था दोनों पदों में लागू होगी ।

अर्थ - आर्या छन्द में छठा गण जगण ही रखना चाहिए ।

Meaning. In *āryā* metre, the sixth feet must be *jagaṇa* (।ऽ।).

आर्या छन्द का उदाहरण (Example of an *āryā* metre)- (30 + 30 = 60 मात्राएं)

1 2 3 4 5 6 7

ऽ ।।, । ।ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ । ।ऽ ।ऽ । । । । । ऽ

सा जय ति जग त्यार्या देवी दिवमु त्यतिष्णु रति रुचि रा ।

1 2 3 4 5 6 7

ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ । । ऽ ऽ । ऽ । । ऽ

या दृ श्य तेऽम्ब र त ले कं स व धोत्या त विद्यु दि व ।।

न्लौ वा ॥ 17 ॥

शब्दार्थ - (पूर्व सूत्र से 'ज्' की अनुवृत्ति होगी ।) **ज्** - आर्या छन्द के पूर्वार्ध में पूर्वोक्त जगण (।ऽ।) के स्थान पर, **वा**- विकल्प से, **न्लौ**- नगण (।।।) और एक लघु अर्थात् चार लघु अक्षर (।।।।) का प्रयोग करना चाहिए ।

अर्थ - (यह वैकल्पिक नियम है) । आर्या छन्द के पूर्वार्ध में छठें जगण (।ऽ।) के स्थान पर चार लघु अक्षरों (।।।।) का प्रयोग किया जा सकता है ।

Meaning. According to this (optional) rule, *jagaṇa* (।ऽ।) at the sixth feet may be replaced by four short syllables (।।।।).

1 2 3 4 5 6 7

ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । । । । । । । । ऽ

रूपा ऽन्तरेण देवीं ता मे व स्तौ मि स प दि कि ल म हि षः ।

1 2 3 4 5 6 7

ऽऽ ऽ । । ऽ । । ऽ । । । । ऽ । ऽ ऽ ऽ

पाद स्पर्श सु खा दि व मी लि त न य नो ऽभ व द्य स्याः ।।

न्लौ चेत् पदं द्वितीयादि ॥ 18 ॥

शब्दार्थ - यदि आर्या छन्द के षष्ठ गण जगण (।ऽ।) के स्थान पर, **पदम्**- नया पद, **द्वितीयादि**- द्वितीय लघु अक्षर से प्रारम्भ करें । इसका अभिप्राय यह है क़ि यदि षष्ठगण में चार लघु अक्षर रखे जा रहे हैं तो पद्य में नया पद दूसरे अक्षर से प्रारम्भ करें । जैसे - पूर्वोक्त उदाहरण में पांचवा और षष्ठ गण हैं- 'स्तौमि सपदि' इसमें षष्ठ गण का प्रथम अक्षर मि का संबन्ध 'स्तौमि' से है और नया पद 'सपदि' से प्रारम्भ होता है, यह उस गण का दूसरा अक्षर है । पिछला उदाहरण देखें ।

अर्थ - यदि आर्या छन्द के छठे गण जगण (।ऽ।) के स्थान पर चार लघु अक्षर रखे गए हों तो वहाँ पर नया पद द्वितीय लघु अक्षर से प्रारम्भ होना चाहिए।

Meaning. If the *jagaṇa* (।ऽ।) at the sixth feet of *āryā* metre is replaced by four short syllables (।।।।) then the new word should begin from the second short syllable. (See the preceding example.)

सप्तमः प्रथमादि ॥ 19 ॥

शब्दार्थ - **सप्तमः**- यदि आर्या छन्द के पूर्वार्ध में सातवाँ गण नगण (।।।) और एक लघु हो अर्थात् सप्तम गण में चार लघु अक्षर हों तो, **प्रथमादि**- सप्तम गण के प्रथम अक्षर से नया पद प्रारम्भ होना चाहिए । इसका अभिप्राय यह है कि षष्ठ गण के साथ पद की समाप्ति होनी चाहिए और सप्तम गण से नया पद प्रारम्भ होना चाहिए । यह नियम षष्ठ गण जगण (।ऽ।) या सर्वलघु हो, दोनों स्थिति में लगेगा ।

अर्थ - यदि आर्या छन्द के पूर्वार्ध में सप्तम गण में चार लघु अक्षर हों तो सप्तम गण के प्रथम अक्षर से नया पद प्रारम्भ होना चाहिए । (षष्ठ गण जगण

(।ऽ।) हो या सर्वलघु हो, दोनों स्थिति में यह नियम लगेगा ।)

Meaning. If the seventh feet (*gaṇa*) of the first part of the *ārya* metre consists of four short syllables (।।।।), the same should begin with a new word. (This rule is independent of the fact that whether the sixth feet is a *jagaṅa* (।ऽ।) or all shorts (।।।।).

उदाहरण (Example) -

1 2 3 4 5 6 7

ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ । ऽ । । । । ।

ब्र ह्म क्ष त्र कु ली नः स म स्त सा म न्त च क्र नु त च र णः।

1 2 3 4 5 6 7

। ।। ।। ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । । ऽ

स क ल सु कृ तै क पु ञ्जः श्री मान् मु ञ्ज श्चिरं ज य ति ।।

अन्त्ये पञ्चमः ॥ 20 ॥

शब्दार्थ - अन्त्ये- यदि आर्या छन्द के अन्तिम अर्ध अर्थात् उत्तरार्ध में, **पञ्चमः** - पांचवां गण सर्वलघु (4 लघु ।।।।) हो तो पंचम गण से नया पद प्रारम्भ होना चाहिए ।

अर्थ - यदि आर्या छन्द के उत्तरार्ध में पांचवां गण सर्वलघु (।।।।) हो तो पांचवें गण से नया पद प्रारम्भ होना चाहिए ।

Meaning. If the second part of the *ārya* metre has all shorts (।।।।) at the fifth feet, then the same should begin with a new word.

उदाहरण (Example) -

1 2 3 4 5 6 7

। ।।।ऽ ।।ऽ ऽ ।।ऽ ।।ऽ।ऽ। ऽ। ।ऽ

स ज य ति वाक् प ति रा जः स क लाऽ र्थि म नो र थै क क ल्प त रुः।

1 2 3 4 5 6 7

ऽ ऽ । ऽ । ऽ । । ऽ ऽ । । । । । ऽ । । ऽ

प्र त्य र्थि भू त पा र्थि व ल क्ष्मी ह ठ ह र ण दु र्ल लि तः ।।

षष्ठश्च ल् ॥ 21 ॥

शब्दार्थ - **च**- और आर्या छन्द के उत्तरार्ध में, **षष्ठः** - छठा गण, **ल्**- केवल एक मात्रा वाला लघु (।) अक्षर ही होना चाहिए । यह जगण (।ऽ।) और सर्वलघु (।।।।) का अपवाद नियम है ।

अर्थ - आर्याछन्द के उत्तरार्ध में छठा गण एक मात्रा वाला लघु (।) अक्षर होना चाहिए । इसका उदाहरण अप्राप्य है ।

Meaning. As regards the sixth feet in the second half of the *ārya* metre, there should be only one short syllable. (Its example has not been found.)

त्रिषु गणेषु पादः पथ्याद्ये च ॥ 22 ॥

शब्दार्थ - **आद्ये** - जिस आर्या छन्द के पूर्वार्ध में, **च**- और उत्तरार्ध में, **त्रिषु गणेषु**- प्रारम्भिक तीन गणों पर, **पादः** - पाद समाप्त हो जाता हो, **पथ्या**- उसे पथ्या आर्या छन्द कहते हैं ।

अर्थ - जिस आर्या छन्द के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध में प्रारम्भिक तीन गणों में पाद समाप्त होता हो, उसे 'पथ्या आर्या' छन्द कहते हैं ।

Meaning. The *pathyā āryā* metre has pauses after the first three feet in both the parts of the *ārya* metre.

पथ्या आर्या का उदाहरण (Example) -

1 2 3 4 5 6 7

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ ऽ । । ऽ ऽ ।ऽ।ऽ ऽ ऽ

प थ्या शी व्या या मी स्त्री षु जि ता त्मा न रो न रो गी स्यात् ।

1 2 3 4 5 6 7

। ।।। ऽ। ।ऽ ऽऽ । ।ऽ ऽ ।ऽऽ ऽ

य दि व च सा म न सा वा द्व ह्य ति नि त्यं न भू ते भ्यः ।।

विपुलाऽन्या ॥ 23 ॥

शब्दार्थ - **अन्या**- पथ्या आर्या के लक्षण से भिन्न स्थिति हो । अर्थात् आर्या के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध में तीन गणों के पश्चात् पाद की समाप्ति न हो रही हो, **विपुला**- तो उसे विपुला आर्या छन्द कहेंगे ।

अर्थ- यदि आर्या छन्द के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध में तीन गणों के पश्चात् पाद की समाप्ति न होती हो तो उसे 'विपुला आर्या' छन्द कहेंगे ।

Meaning. If the *āryā* metre has no pauses after the third feet of its first and second parts, then the metre is *vipulā āryā.*

(This is further subdivided into three categories, viz., *ādi vipulā, anta vipulā* and *ubhya vipulā* according as the symptoms of *vipulā* are found in the beginning (*ādi*) only, or the end (*anta*) only, or the beginning & end (*ubhya*) both.)

विपुला आर्या का उदाहरण (Example)-

1 2 3 4 5 6 7

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ । । । । ऽ ऽ ऽ

स्नि ग्ध च्छा या ला व ण्य ले पि नी किं चि द व न त ग्रा णा।

1 2 3 4 5 6 7

। । । । ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ

मु ख वि पु ला सौ भा ग्यं ल भ ते स्त्री त्या ह मा ण्ड व्यः ।।

टिप्पणी - इस विपुला आर्याछन्द के तीन भेद हैं- 1. आदि विपुला, 2. अन्त विपुला, 3. उभय विपुला । यदि प्रारम्भ में विपुला के लक्षण घटते हों अर्थात् 3 गण के पश्चात् पद समाप्ति न होती हो तो आदि विपुला, यदि अन्त में विपुला के लक्षण हों तो अन्त विपुला और दोनों स्थलों पर ऐसी स्थिति हो तो उभयविपुला आर्या छन्द होता है ।

चपला द्वितीयचतुर्थौ गमध्ये जौ ॥ 24 ॥

शब्दार्थ - **द्वितीयचतुर्थौ** - जिस आर्या छन्द के दोनों अर्धों में दूसरे और चौथे गण में, **जौ**- जगण अर्थात् मध्यगुरु (।ऽ।) हों, **गमध्ये जौ**- और इन दोनों जगणों के पहले और बाद में गुरु अक्षर हों, **चपला**- तो उसे चपला आर्या छन्द कहते हैं । **विशेष** - इस प्रकार की व्यवस्था के लिए गणों का क्रम यह रखना पड़ता है- प्रथम गण- सगण (।।ऽ), द्वितीय गण जगण- (।ऽ।), तृतीय गण द्विगुरु (ऽऽ), चतुर्थ गण जगण (।ऽ।), पंचम गण द्विगुरु (ऽऽ) अथवा भगण (ऽ।।) ।

अर्थ- जिस आर्या छन्द के दोनों अर्धों में दूसरे और चौथे गण में जगण (।ऽ।) हो और दोनों जगणों के पहले एवं बाद में गुरु अक्षर हों तो उसे 'चपला आर्या' छन्द कहते हैं ।

Meaning. The *āryā* metre, with a *jagaṇa* (।ऽ।) in second and fourth feet of its both parts, is *capalā āryā* provided that those *jagaṇas* are preceded and followed by a long syllable (ऽ).

उदाहरण आगे दिया गया है । Examples are given below.

पूर्वे मुखपूर्वा ॥ 25 ॥

शब्दार्थ- पूर्वे- यदि चपला का लक्षण पूर्वार्ध में घटित होता है, **मुखपूर्वा**- तो उसे 'मुखचपला आर्या' कहेंगे । मुखपूर्वा का शब्दार्थ है- मुख पहले लगाकर चपला कहेंगे ।

अर्थ- यदि आर्या छन्द के पूर्वार्ध में चपला के लक्षण घटित होते हैं तो उसे 'मुखचपला आर्या' छन्द कहेंगे ।

Meaning. If the first part of an *āryā* metre fulfills the requirements of a *capalā*, then the metre is called *mukha capalā āryā* (or *mouth capalā āryā* metre).

मुखचपला आर्या का उदाहरण (Example)-

1 2 3 4 5 6 7

। । ऽ । ऽ । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ । ऽ । ऽ । । ऽ

अ ति दा रु णा द्वि जि ह्वा प र स्य र न्ध्रा नु चा रि णी कु टि ला ।

1 2 3 4 5 6 7

ऽ ऽ । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ

दू रं प रि ह र णी या ना री ना गी व मु ख च प ला ।।

जघनपूर्वेतरत्र ॥ 26 ॥

शब्दार्थ - इतरत्र- अन्यत्र अर्थात् यदि आर्या के उत्तरार्ध में चपला के लक्षण हों, **जघनपूर्वा**- तो उसे 'जघनचपला आर्या' कहेंगे । जघनपूर्वा का शब्दार्थ है- 'जघन' पहले लगाकर 'चपला' कहें, अर्थात् जघनचपला ।

अर्थ- यदि आर्या छन्द के उत्तरार्ध में 'चपला' के लक्षण हों तो उसे 'जघन-चपला' कहेंगे । 'जघन' का अर्थ है- मध्यभाग, कटिभाग, जांघ ।

Meaning. If the second part of an *āryā* metre fulfills the requirements of a *capalā*, then the metre is called *jaghana capalā āryā* (or *middle capalā āryā*). (*jaghana* literally means 'hip and loin'.)

जघन चपला आर्या का उदाहरण (Example) -

1 2 3 4 5 6 7
ऽ ऽऽ ।।ऽ ऽऽ ।। ।।ऽ ।ऽ। ऽ ऽ ऽ
य त्या द स्य क नि ष्ठा न स्पृ श ति म ही-म ना मि-का वा-पि।

1 2 3 4 5 6 7
ऽ ऽ ।ऽ।ऽ ऽ। ऽ।ऽ ऽ ।।।।। ऽ
सा स-र्व धू र्त-भो ग्या भ वे द-व श्यं ज घ न च प ला ।।

उभयोर्महाचपला ॥ 27 ॥

शब्दार्थ - **उभयोः** - दोनों में अर्थात् यदि आर्या छन्द के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दोनों में 'चपला' के लक्षण मिलते हों, **महाचपला**- तो उसे 'महाचपला आर्या' छन्द कहेंगे ।

अर्थ- यदि आर्या छन्द के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दोनों में 'चपला' के लक्षण मिलते हैं, तो उसे 'महाचपला आर्या' कहेंगे ।

Meaning. If both parts of an *āryā* metre satisfy the requirements of *capalā*, then the same is *mahā capalā*.

महाचपला आर्या का उदाहरण (Example)-

1 2 3 4 5 6 7
।।ऽ।ऽ। ऽऽ ।ऽ।ऽ ऽ। ऽ ।ऽ ऽ ऽ
ह द यं ह र न्ति ना र्यो मु ने र-पि भ्रू-क टा क्ष-वि क्षे-पैः ।

1 2 3 4 5 6 7
ऽ ऽ। ऽ। ऽऽ। ऽ। ऽऽ। ऽ।। ऽ
दो र्मू-ल ना भि-दे शं नि द र्श-य न्त्यो म हा च-प-लाः ।।

आद्यर्धसमा गीतिः ॥ 28 ॥

शब्दार्थ - **आद्यर्धसमा**- यदि पूर्वार्ध के तुल्य उत्तरार्ध में भी छठा गण जगण (।ऽ।) हो या चार लघु (।।।।) हो, **गीतिः** - तो वह 'गीति आर्या' छन्द कहा जाता है ।

अर्थ - यदि पूर्वार्ध के तुल्य उत्तरार्ध में भी छठा गण जगण (।ऽ।) हो या चार लघु (।।।।) हों तो उसे 'गीति आर्या' छन्द कहते हैं ।

Meaning. If both parts of an *āryā* metre have a *jagaṇa* (।ऽ।) or all shorts (।।।।) at its sixth feet, then the metre is *gīti āryā.*

गीति आर्या छन्द का उदाहरण (Example) -

1 2 3 4 5 6 7

।। ऽ ऽ ऽ । । ।ऽ ऽ ।। ।।ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ

मधुरं वीणा-रणितं पञ्चम-सुभग-श्च को कि-ला ला- पः ।

1 2 3 4 5 6 7

ऽ ऽ ऽ ।। ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ ।ऽ । ऽ ।। ऽ

गीतिः पौरव-धूनां सुप्तं कुसुमा-युधं प्र-बोधय-ति ।।

अन्त्येनोपगीतिः ॥ 29 ॥

शब्दार्थ - (पूर्वसूत्र से 'समा' की अनुवृत्ति होती है ।) **अन्त्येन समा**- जिस आर्या छन्द के अन्तिम अर्थात् उत्तरार्ध के तुल्य ही पूर्वार्ध भी हो, **उपगीतिः**- तो उसे 'उपगीति आर्या' छन्द कहते हैं ।

अर्थ - जिस आर्या छन्द के उत्तरार्ध के तुल्य पूर्वार्ध भी हो, उसे 'उपगीति आर्या' छन्द कहते हैं ।

Meaning. If the first half of an *āryā* metre resembles the second half, the metre is called *upagīti āryā.*

उपगीति आर्या छन्द का उदाहरण (Example)-

1 2 3 4 5 6 7

। । ऽ । ऽ । ऽ ऽ । । । । । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ

वि पु लो-प गी ति-झंका-र मु ख रि-ते भ्र म-र-मा ला-नाम्।

1 2 3 4 5 6 7

ऽ।। ऽ।। ऽऽ। ऽ।। ।ऽ। ऽऽ ऽ

रै व त-को प व-ने व-स्तु म स्तु स त तं म-म प्री तिः ।।

(यहाँ पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दोनों में छठा गण एकाक्षर लघु (।) है ।)

उत्क्रमेणोद्गीतिः ॥ 30 ॥

शब्दार्थ - **उत्क्रमेण**- यदि आर्या छन्द में पूर्वोक्त क्रम के विपरीत क्रम हो, **उद्गीतिः** - तो उसे 'उद्गीति आर्या' छन्द कहेंगे । जैसे- पूर्वार्ध में छठा गण एकाक्षर लघु (।) हो और उत्तरार्ध में छठा गण जगण (।ऽ।) हो तो उसे 'उद्गीति आर्या' कहेंगे ।

अर्थ- यदि आर्या छन्द में पूर्वोक्त क्रम के विपरीत क्रम हो तो उसे 'उद्गीति आर्या' छन्द कहेंगे ।

Meaning. If the *āryā* metre has reverse order in its first and second parts, then the metre is called *ūdgīti āryā.* (Thus, if the first part has one short syllable (I) in its sixth feet, and the second part is endowed with a *jagaṇa* (।ऽ।), then the *āryā* metre is called *udgīti āryā.*)

उद्गीति आर्या छन्द का उदाहरण (Example)-

1 2 3 4 5 6 7

ऽऽ ।।।। ऽ ऽ।। ऽऽऽ । ऽ ऽ ऽ

लो को-त्त र च रि-ता नां प्र थ मं ता व-न्म-नः स्व-च्छम् ।

1 2 3 4 5 6 7

ऽऽ ऽ।। ।। ऽ। ऽ ।ऽऽ ।ऽ। ऽ ।। ऽ

प श्चाद् वा ण्य पि स र सा वि भा ति दे ह-श्च त त्य रः प्र थि-तः ।।

(यहाँ पूर्वार्ध में छठा गण एक लघु (।) है और उत्तरार्ध में छठा गण जगण (।ऽ।) है, अतः उद्गीति आर्या है ।)

(Notice that the first part has a short (I) in sixth feet, while the sixth feet of the second part has a *jagaṇa* (।ऽ।).)

अर्धे वसुगण आर्यागीतिः ॥ 31 ॥

शब्दार्थ - **अर्धे** - जिस आर्या छन्द के पूर्वार्ध में, **वसुगणे**- वसु अर्थात् 8 गण हों, **आर्या गीतिः** - उस छन्द को 'आर्या गीति' छन्द कहते हैं । **विशेष**- 1. यहाँ 'वसु' शब्द 8 संख्या के लिए है । 2. यहाँ अर्ध से पूर्वार्ध अर्थ है । उत्तरार्ध भी इसी प्रकार का होगा, अर्थात् उत्तरार्ध में भी 8 गण होंगे । 3. यहाँ तक आर्या छन्द में पूर्वार्ध और उत्तरार्ध में साढ़े सात ($7^1/_2$) गण होते थे । यह पूरे 8 गणों वाला छन्द है, अर्थात् पूर्वार्ध और उत्तरार्ध में अलग-अलग 32-32 मात्राएं होंगी । 4. दोनों अर्ध भाग में छठा गण जगण (।ऽ।) या चार लघु (।।।।) कोई भी हो सकता है ।

अर्थ - जिस आर्या छन्द के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध में 8-8 गण हों, अर्थात् 32-32 मात्राएं हों, उसे 'आर्यागीति' छन्द कहते हैं ।

Meaning. The *āryā* metre, with 8 feet (*gaṇas*) equivalently 32 short syllables in each of its first and second parts, is called *āryā gīti*.

आर्या गीति छन्द का उदाहरण (Example) -

1 2 3 4 5 6 7 8

। । । । । । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ । ।ऽ

अ ज म ज-र म म र-मे कं प्र त्यक् चै त-न्य मी श्व-रं ब्र-ह्म प र म्।

1 2 3 4 5 6 7 8

ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ

आ त्मा-नं भा-व य तो भ व मु-क्तिः स्या दि ती य-मा र्या-गी तिः ।।

आर्या छन्द का अधिकार समाप्त ।

This ends the discussion on *āryā* metres.

मात्रा छन्द का अधिकार प्रारम्भ

Now the jurisdiction of *moric* metres begins

वैतालीयं द्विःस्वरा अयुक्पादे युग्वसवोऽन्ते ल्र्गः ॥ 32 ॥

शब्दार्थ - **अयुक्पादे**- जिस छन्द के विषम अर्थात् प्रथम और तृतीय पाद में, **द्विःस्वराः**- 2x7 = 14 लघु अक्षरों के बराबर अक्षर हों, **अन्ते**- और

चारों पादों के अन्त में र् ल् गः - रगण (ऽ।ऽ) और लघु एवं गुरु अक्षर हों, **वैतालीयम्** - तो उस छन्द को 'वैतालीय' छन्द कहते हैं । **सूचना**- सूत्र में 'अयुक्' शब्द विषम संख्या अर्थात् प्रथम और तृतीय पाद के लिए है । 'युक्' शब्द सम संख्या के लिए है अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ पाद । 'स्वर' शब्द 7 संख्या के लिए है । 'वसु' शब्द 8 संख्या के लिए है । **ल्** - लघु अक्षर के लिए है । **ग्** - गुरु अक्षर के लिए है । 'युक्' शब्द दो बार लिया गया है ।

अर्थ - जिस छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में 14 मात्राएं हों और द्वितीय एवं चतुर्थ पाद में 16 मात्राएं हों तथा चारों पादों के अन्त में यह क्रम हो- रगण, 1 लघु, 1 गुरु, (ऽ।ऽ, ।ऽ) उसको 'वैतालीय' छन्द कहते हैं ।

Meaning. A metre fulfilling the following (i) and (ii) requirements is called *vaitālīya* metre:

(i) It has 14 (respectively 16) short syllables in each of its first and third (respectively second and fourth) parts.

(ii) In each part, *ragaṇa* (ऽ।ऽ) is followed by a short and a long (।ऽ).

वैतालीय छन्द का उदाहरण (Example) -

रगण ल ग (14) रगण ल ग (16)

ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

क्षुत्-क्षी ण श री र सं च या, व्य क्ती भू त शि रा स्थि-पं ज राः ।

रगण ल ग (14) रगण ल ग (16)

ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

के शैः प रु षै स्त वा र यो, वै ता ली य त नुं वि त न्व ते ।।

गौपच्छन्दसकम् ॥ 33 ॥

शब्दार्थ - **ग्** - यदि पूर्वोक्त वैतालीय छन्द में एक गुरु (ऽ) अक्षर और बढ़ा दिया जाय, **औपच्छन्दसकम्** - तो उसे 'औपच्छन्दसक' छन्द कहते हैं । **विशेष**- वैतालीय के प्रथम और तृतीय पाद में 14-14 मात्रा तथा द्वितीय एवं चतुर्थ पाद में 16-16 मात्रा का विधान है । चारों पादों में अन्त में एक-एक गुरु

अक्षर बढ़ा देने से अब पादों में मात्रा की संख्या क्रमशः (14+2 = 16), (16+2 = 18), 16 एवं 18 हो जायेगी । चारों पादों के अन्त में पूर्ववत् र, ल, ग का नियम यहाँ भी लागू रहेगा। अन्त में एक गुरु और बढ़ेगा ।

अर्थ- यदि पूर्वोक्त वैतालीय छन्द के चारों पादों के अन्त में एक-एक गुरु अक्षर और बढ़ा दिया जाए, तो उसे 'औपच्छन्दसक' छन्द कहेंगे ।

Meaning. Increasing the number of syllables in each of its four parts just by one long (ऽ), the *vaitālīya* metre becomes *aupacchandasaka.*

औपच्छन्दसक छन्द का उदाहरण (Example) -

रगण लगग रगण लग ग

ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

वा क्यै र्म धु रैः प्र ता र्य पू र्वं, यः प श्चा द ति सं द धा ति मि त्रम् ।

रगण लग ग रगण लगग

ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

तं दु ष्ट म तिं वि शि ष्ट-गो ष्ठ्या-मौ प च्छ न्द स कं वदन्ति बाह्यम् ।।

आपातलिका भ्गौ ग् ॥ 34 ॥

शब्दार्थ - (सूत्र 32 की यहाँ अनुवृत्ति होगी ।) यदि वैतालीय छन्द के 'र ल ग' रगण (ऽ।ऽ), लघु गुरु (।ऽ) के स्थान पर, **भगौ गः** - भगण (ऽ।।) और दो गुरु (ऽऽ) रख दिए जाएं, **आपातलिका**- तो वह छन्द 'आपातलिका' कहा जाएगा । वैतालीय के शेष लक्षण यहाँ पर भी रहेंगे ।

अर्थ - यदि वैतालीय छन्द के चारों पादों के अन्त में रगण (ऽ।ऽ) और लघु-गुरु (।ऽ) के स्थान पर भगण (ऽ।।) और दो गुरु रख दिए जाएं तो उसे 'आपातलिका' छन्द कहते हैं । आपातलिका का अर्थ है- 'अस्थिर' । मात्राओं की संख्या अपरिवर्तनीय रहती है ।

Meaning. If the *ragaṇa* (ऽ।ऽ) and short-long (।ऽ) stationed at the end of each part of *vaitālīya* metre are replaced by a *bhagaṇa* (ऽ।।) and 2 longs (ऽऽ), then the metre thus obtained is called *āpātalikā* (unstable). (Notice that the number of *moras* remains unchanged, that is,

moras in four parts are 14, 16, 14, 16.)

आपातलिका छन्द का उदाहरण (Example) -

भगण ग ग भगण ग ग

ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ

पिं ग ल के शी क पि ला क्षी, वा चा टा वि क टो न्न त द न्ती ।

भगण ग ग भगण ग ग

ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ । । । । । ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ

आ पा त लि का पु न रे षा, नृ प ति कु ले ऽपि न भा ग्य मु पै ति ।।

शेषे परेण युङ् न साकम् ॥ 35 ॥

शब्दार्थ - यह सूत्र कुछ नियम बताता है, उसका पालन वैतालीय छन्द में आवश्यक है । वैतालीय छन्द में चारों पादों के अन्त में 8 मात्राओं के लिए रगण (ऽ।ऽ) ल-ग (।ऽ) नियम है, अब प्रथम और तृतीय पाद में 6-6 मात्राएं शेष रहीं । इसी प्रकार द्वितीय और चतुर्थ पाद में 8-8 मात्राएं शेष रहीं । इनके लिए नियम है कि- **शेषे**- बची हुई 6-6 और 8-8 मात्राओं में, युक् - सममात्राओं को **परेण**- परवर्ती विषम मात्राओं के, **साकम्** - साथ, **न**- नहीं मिलाना चाहिए। इसका अभिप्राय यह है कि दूसरी मात्रा को तीसरी मात्रा के साथ और चौथी मात्रा को पांचवी मात्रा के साथ न मिलावें । समपादों अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ पाद में छठी को सातवीं से न मिलावें । दूसरी और तीसरी मात्राएं एक गुरु के साथ प्रयोग नहीं करनी चाहिएं अर्थात् दोनों मात्राएं लघु रखें या गुरु रखें। शेष स्थलों पर मिश्रण कर सकते हैं ।

अर्थ - वैतालीय छन्द के चारों पादों में अन्त की 8 मात्राओं के लिए र (ऽ।ऽ) ल ग (।ऽ) नियम है । शेष मात्राओं के लिए नियम है कि सम मात्राओं को परवर्ती विषम मात्रा से न मिलावें अर्थात् केवल लघु या केवल गुरु मात्रा रखें। दोनों का मिश्रण न करें । इसका उदाहरण पूर्व श्लोक ही है ।

Meaning. In case of *vaitālīya* metre, the pair of *ragaṇa* (ऽ।ऽ) and short-long (।ऽ) essentially occupies the last place in all the four parts. For the remaining *moras*, it is further recommended that the second syllable should not be mixed with the third, and the fourth should not be

mixed with the fifth. In even (i.e. second and fourth) parts, the sixth should not be mixed with the seventh. Indeed, they should have either short or long vowels. See the previous example.

षट् चामिश्रा युजि ॥ 36 ॥

शब्दार्थ- च- और वैतालीय छन्द में, **युजि**-समपादों अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ पाद में, **षट्**- प्रारम्भ की 6-6 मात्राएं, **अमिश्राः** - बिना मिली हुई, अर्थात् केवल लघु या केवल गुरु न रखें, अपितु लघु-गुरु के मिश्रण के साथ रखें। अभिप्राय यह है कि प्रथम और तृतीय पाद में अपनी इच्छा के अनुसार लघु-गुरु अक्षर रख सकते हैं ।

अर्थ- वैतालीय छन्द में समपादों अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ पाद में प्रारम्भ की 6-6 मात्राएं केवल लघु या गुरु न रखें, अर्थात् लघु-गुरु को मिलाकर रखें। प्रथम और तृतीय पाद में अपने इच्छानुसार लघु-गुरु रख सकते हैं ।

Meaning. In the even (i.e. second and fourth) parts of the *vaitālīya* metre, the first six *moras* should neither be only shorts nor only longs, but they should be mixed together. (This rule does not put any restrictions on the odd parts.)

वैतालीय छन्द का उदाहरण (Example) -

रगण ल ग रगण ल ग

। । । । । । ऽ । ऽ । ऽ । । । । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

स म र-शिरसि स हृय ते द्वि षां, न व नि शि ता यु ध वृ ष्टि र ग्र तः।

रगण ल ग रगण ल ग

। । । । । । ऽ । ऽ । ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

कु व ल य द ल दी र्घ च क्षु षां, प्र म दा नां न क टा क्ष वी क्षि तम् ।।

पञ्चमेन पूर्वः साकं प्राच्यवृत्तिः ॥ 37 ॥

शब्दार्थ- (यह अपवाद नियम है । पूर्वसूत्र से 'युजि' की अनुवृत्ति होगी।) शेषे परेण0 (सूत्र 35) के द्वारा चौथी और पांचवीं मात्रा का प्रयोग एक गुरु (ऽ) मात्रा के साथ निषिद्ध किया गया है । यह उसका बिधान करता है ।

युजि- जब सम अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ पादों में, **पूर्वः** - पूर्ववर्ती चौथा लघु अक्षर परवर्ती, **पञ्चमेन**- पांचवीं लघु मात्रा के, **साकम्** - साथ- मिल जाता है, **प्राच्यवृत्तिः** - तो उसे 'प्राच्यवृत्ति वैतालीय' छन्द कहते हैं।

अर्थ- (यह नियम सूत्र 35 का अपवाद है ।) जब द्वितीय और चतुर्थ पादों में पूर्ववर्ती लघु अक्षर परवर्ती पंचम लघुमात्रा के साथ मिल जाता है (दो लघु का एक दीर्घ अक्षर हो जाता है), तो उसे 'प्राच्यवृत्ति वैतालीय' छन्द कहते हैं । (चौथी और पांचवीं मात्रा एक दीर्घ स्वर हो ।)

Meaning. (This is an exception to rule 35). If, in the even parts, the fourth short syllable combines wth the next (fifth) short syllable to become a long one, then the *vaitālīya* metre is called *prācyavṛtti vaitālīya.*

प्राच्यवृत्ति वैतालीय छन्द का उदाहरण (Example) -

रगण ल ग रगण ल ग

। । । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । ऽ । ऽ

वि पु ला र्थ-सु वा च का क्ष राः, क स्य ना म न ह र न्ति मा न सम्।

रगण ल ग रगण ल ग

। । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ । ऽ । । । ऽ । ऽ । ऽ

र स भा व वि शे ष पे श लाः, प्रा च्य वृ त्ति-क वि-का व्य-सं प दः।।

(यहाँ द्वितीय पाद में 'नाम' में 'ना' दीर्घ है और चतुर्थ पाद में 'वृत्ति' में 'वृ' दीर्घ है ।)

अयुक् तृतीयेनोदीच्यवृत्तिः ॥ 38 ॥

शब्दार्थ- (पूर्वसूत्र से 'पूर्वः साकम्' की अनुवृत्ति होगी ।) **अयुक्**- यदि विषम अर्थात् प्रथम और तृतीय पाद में लघु मात्रा, **तृतीयेन**- तीसरी लघुमात्रा से मिली हुई हो, अर्थात् तीसरी मात्रा एक गुरु (ऽ) अक्षर के द्वारा व्यक्त की गई हो, **उदीच्यवृत्तिः** - तो वह छन्द 'उदीच्यवृत्ति वैतालीय' छन्द कहा जाता है ।

अर्थ- यदि वैतालीय छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में पूर्ववर्ती लघु मात्रा तीसरी लघु मात्रा से मिली हुई हो, अर्थात् यदि तीसरी मात्रा गुरु (ऽ) अक्षर हो तो उसे 'उदीच्यवृत्ति वैतालीय' छन्द कहते हैं।

Meaning. If, in the odd parts of the *vaitālīya* metre, the second short syllable is combined with next short one to become a long one, then the same is called *udīcyavṛtti* metre. (This merely means that the second syllable is long in the metre.)

उदीच्यवृत्ति वैतालीय छन्द का उदाहरण (Example) -

रगण लग रगण लग

। ऽ । । । ऽ । ऽ । ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ। ऽ । ऽ

जि ते न्द्रि य म ह र्नि शं र तं, नि ज ध र्मे व्य स नै र ना वृ तम्।

रगण लग रगण लग

। ऽ । । । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

प्र मा द र हि तं च स ज्ज नाः, प्रि य भा वै र नु मो द य न्त्य रम्।।

(यहाँ प्रथमपाद में 'जितेन्द्रिय' में द्वितीय अक्षर त+इ= ते दो स्वरों का संयुक्त रूप है । इसी प्रकार तृतीय पाद में 'प्रमाद' में 'मा' दीर्घ अक्षर है ।।)

आभ्यां युगपत् प्रवृत्तकम् ॥ 39 ॥

शब्दार्थ - आभ्याम्- पूर्वोक्त प्राच्यवृत्ति (37) और उदीच्यवृत्ति (38) छन्दों के लक्षण, **युगपत्** - एक साथ वैतालीय छन्द में हों, **प्रवृत्तकम्** - तो उसे 'प्रवृत्तक वैतालीय छन्द' कहेंगे । अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ पाद में चौथी एवं पांचवीं मात्रा का संयुक्तरूप दीर्घ मात्रा हो एवं प्रथम और तृतीय पादों में दूसरी मात्रा दीर्घ हो तो उसे 'प्रवृत्तक' कहेंगे ।

अर्थ- यदि पूर्वोक्त प्राच्यवृत्ति और उदीच्यवृत्ति दोनों के लक्षण वैतालीय छन्द में एक साथ प्राप्त हों तो उसे 'प्रवृत्तक वैतालीय छन्द' कहेंगे ।

Meaning. If all the characteristics of *prācyavṛtti* and *udīcyavṛtti* metres (cf. rules 37 & 38) are found in one metre, then the same is called *pravṛttaka vaitālīya.*

प्रवृत्तक वैतालीय छन्द का उदाहरण (Example) -

रगण लग रगण लग

। ऽ । । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

इ दं भ र त वं श भू भृ तां, श्रू य तां श्रु ति-म नो-र सा य नम् ।

रगण ल ग रगण ल ग

। S । । । S । S । S S । S । । । S । S । S

प वि त्र म धि कं शु भो द यं, व्या स-व क्त्र-क थि तं प्र वृ त्त कम् ।।

अयुक् चारुहासिनी ॥ 40 ॥

शब्दार्थ- अयुक्- अयुक अर्थात् विषम, जिस छन्द के चारों पाद विषम अर्थात् प्रथम और तृतीय पाद के लक्षण से युक्त हों, **चारुहासिनी-** उस छन्द को 'चारुहासिनी वैतालीय' छन्द कहते हैं । इसका अभिप्राय यह है कि सभी चारों पादों में पाद 1, 3 के तुल्य चौदह-चौदह मात्राएं होनी चाहिए । साथ ही दूसरी मात्रा संयुक्त अर्थात् गुरु होनी चाहिए ।

अर्थ- जिस वैतालीय छन्द के चारों पादों में 1 और 3 पाद के तुल्य 14-14 मात्राएं हों, उसे 'चारुहासिनी वैतालीय' छन्द कहते हैं ।

Meaning. If each odd part of *vaitālīya* metre contains 14 *moras*, then the same is called *cāruhāsinī*. (Recall that even parts of *vaitālīya* metre have 16 *moras*. Thus, in the case of *cāruhāsini*, each part has 14 *moras*. (*Cāruhāsinī* means sweet-smiling.)

चारुहासिनी वैतालीय छन्द का उदाहरण (Example) -

ग रगण ल ग ग रगण ल ग

। S । । । S । S । S । S । । । । S । S । S

मनाक् प्रसृत-दन्त-दीधितिः, स्म रो ल्ल सि त-गण्ड-मण्डला।

ग रगण ल ग ग रगण ल ग

। S । । । S । S । S । S । । । S । S । S

कटाक्ष-ललिता तु कामिनी, मनो हरति चारुहासिनी ।।

युगपरान्तिका ॥ 41 ॥

शब्दार्थ - युक् - युक् का अर्थ है- सम अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ पाद। जिस वैतालीय छन्द के चारों पाद द्वितीय और चतुर्थ पाद के लक्षणों से युक्त हों, **अपरान्तिका-** उसे 'अपरान्तिका वैतालीय' छन्द कहते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि चारों पादों में 16-16 मात्राएं हों । साथ ही चौथी और पांचवीं मात्रा

संयुक्त अर्थात् गुरु हों और प्रथम 6 मात्राएं लघु-गुरु-मिश्रित हों । अपरान्तिका शब्द का अर्थ है- परकीया नायिका ।

अर्थ- जिस छन्द के चारों पादों में द्वितीय और चतुर्थ पाद के तुल्य 16-16 मात्राएं हों, उसे 'अपरान्तिका वैतालीय' छन्द कहते हैं ।

Meaning. If each part of a (*vaitālīya*) metre has 16 *moras*, then the same is *aparāntikā vaitālīya.* Further, in each part, the fourth and fifth *moras* are jointly long, and the first six *moras* are mixture of short and long syllables.

अपरान्तिका वैतालीय छन्द का उदाहरण (Example) -

ग रगण ल ग ग रगण ल ग

I I I S I I I S I S I S I I I S I S S I S I S

स्थि र-वि ला स-न त-मौ क्ति का व ली, क म ल-को म ला ङ्गी मृ गे क्ष णा।

ग रगण ल ग ग रगण ल ग

I I I S I I I S I S I S I I I S I I I S I S I S

ह र ति क स्य हृ द यं न का मि नः, सु र त-के लि-कु श ला ऽप रा न्ति का।।

वैतालीय छन्द का अधिकार समाप्त ।

This ends the discussion of *vaitāliya* metres.

मात्रासमक छन्द का अधिकार प्रारम्भ

Discussion on metres regulated by *mātrās*

गन्ता द्विर्वसवो मात्रासमकं ल् नवमः ॥ 42 ॥

शब्दार्थ- ग् अन्ताः - चारों पाद में अन्तिम अक्षर गुरु हो, **द्विः वसवः**- **द्विः** - दुगुना, **वसवः** - आठ अर्थात् 2x8= 16-16 मात्राएं चारों पादों में हों, **ल् नवमः** - नौवीं ल् अर्थात् लघु (।) हो, **मात्रासमकम्** - उस चार पाद वाले छन्द को 'मात्रासमक' कहते हैं ।

अर्थ- जिस छन्द के चारों पादों में अन्तिम अक्षर गुरु हो, 16-16 मात्राएं हों और नौवीं मात्रा लघु अक्षर हो, उसे 'मात्रासमक' छन्द कहते हैं ।

Meaning. A metre with the following three features is called *mātrā samaka:* **(i)** each of the four parts or quarters

has 16 *moras* (syllabic instants), **(ii)** the ninth syllable in each part is short, and **(iii)** the last syllable in each part is long. (*mātrā samaka* means *moric* equivalency in metrical lines.)

मात्रासमक छन्द का उदाहरण (Example) -

ल ग (16) ल ग (16)

S S I I S I I S S S S S S S I I S S S

अ श्म श्रु मु खो वि र लै र्द न्तै-ग म्भी रा क्षो न त ना सा ग्रः ।

ल ग (16) ल ग (16)

S S I I S I I S S S S I I S I I S S S

नि र्मां स-ह नुः स्फु टि तैः के शै-र्मा त्रा स म कं ल भ ते दुः खम् ।।

द्वादशश्च वानवासिका ॥ 43 ॥

शब्दार्थ - (पूर्व सूत्र से 'ल् नवमः' की अनुवृत्ति होगी ।) **ल् नवमः**- जिस छन्द की नवम मात्रा लघु होगी, **च**- और, **द्वादशः** - 12वीं मात्रा भी लघु होगी, **वानवासिका**- उस छन्द को 'वानवासिका मात्रासमक' छन्द कहेंगे ।

अर्थ- जिस छन्द की नौवीं और बारहवीं मात्राएं लघु होंगी, उसे 'वानवासिका मात्रासमक' छन्द कहेंगे ।

Meaning. The *vānavāsīkā mātrā samaka* metre is *mātrā samaka* with a short syllable at 9th and 12th *moras* in all its four quarters.

वानवासिका मात्रासमक छन्द का उदाहरण (Example) -

ल ल (16) ल ल (16)

S I I S S I I I I S S I I I I S I I I I I S S

म न्म थ -चा प-ध्व नि-र म णी यः, सु र त-म हो त्स व-प ट ह-नि ना दः।

ल ल (16) ल ल (16)

I I S S S I I I I S S S I I S S I I I I S S

व न वा स-स्त्री-स्व नि त-वि शे षः, क स्य न चि त्तं र म य ति पुं सः।।

विश्लोकः पञ्चमाष्टमौ ॥ 44 ॥

शब्दार्थ- पञ्चमाष्टमौ- जिस 16 मात्रा वाले छन्द के चारों पादों में अन्तिम अक्षर गुरु हो और पंचम और अष्टम मात्राएं लघु हों, **विश्लोकः** - उसे '**विश्लोक मात्रासमक**' छन्द कहते हैं ।

अर्थ-जिस 16 मात्रा वाले छन्द के चारों पादों में अन्तिम अक्षर गुरु हो तथा पंचम और अष्टम मात्राएं लघु हों, उसे 'विश्लोक मात्रासमक' छन्द कहते हैं।

Meaning. A metre containing 16 *moras* in all its 4 parts is *viśloka mātrā samaka*, provided that (i) the last *mora* in each quarter is long, and (ii) 5th and 8th *moras* in each quarters are short.

विश्लोक मात्रासमक छन्द का उदाहरण (Example) -

ल ल ग (16) ल ल ग (16)
S S I I I I S S S S S I I I I I I S I I S S
भ्रा त गु ण र हि तं वि श्लो कं, दु र्न य-क र ण-क द र्थि त-लो कम्।

ल ल ग (16) ल ल ग (16)
S S I I I I S I I S S S S I I I I S I I S S
जा तं म हि त कु ले ऽप्य वि नी तं, मि त्रं प रि ह र सा धु-वि गी तम्।।

चित्रा नवमश्च ॥ 45 ॥

शब्दार्थ-(पूर्वसूत्र से 'पञ्चमाष्टमौ' की अनुवृत्ति होगी ।) **नवमः** - यदि मात्रासमक छन्द में नवम अक्षर, **ल्**- लघु होगा, **च**- और, **पञ्चमाष्टमौ**- पांचवें-आठवें भी लघु होंगे, **चित्रा**- तो उसे 'चित्रा मात्रासमक' छन्द कहेंगे ।

अर्थ- यदि मात्रासमक छन्द के चारों पादों में पंचम, अष्टम और नवम अक्षर लघु होंगे, तो उसे 'चित्रा मात्रासमक' छन्द कहेंगे ।।

Meaning. If a *mātrā samaka* metre has short vowels at 5th, 8th and 9th *moras* in all the four quarters, then the metre is *citrā mātrā samaka*.

चित्रा मात्रासमक छन्द का उदाहरण (Example) -

ल लल (16) ल लल (16)

। । ऽ । । । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । । । । ऽ ऽ

य दि वा ञ्छ सि प र-प द मा रो ढुं, मै त्रीं प रि ह र स ह व नि ता भिः।

ल लल (16) ल लल (16)

ऽ । । । । । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । । । ऽ ऽ ऽ

मु ह्य ति मु नि र पि वि ष या सङ् गात् , चि त्रा भ व ति हि म न सो वृ त्तिः।।

परयुक्तेनोपचित्रा ॥ 46 ॥

शब्दार्थ- (पूर्वसूत्र से 'नवमः' की अनुवृत्ति होगी ।) **नवमः** - जिस मात्रासमक की नवम लघुमात्रा, **परयुक्तेन**- अगली मात्रा से मिलकर गुरु हो, **उपचित्रा**- उसे 'उपचित्रा मात्रासमक' छन्द कहते हैं । स्मरण रखें कि यहाँ पर भी प्रत्येक पाद में 16 मात्रा होना और प्रत्येक पाद का अन्तिम अक्षर गुरु होना आवश्यक है ।

अर्थ- जिस मात्रासमक छन्द की चारों पादों में दशम मात्रा गुरु (ऽ) हो, प्रत्येक पाद में 16 मात्रा हों और प्रत्येक पाद का अन्तिम अक्षर गुरु हो, उसे 'उपचित्रा मात्रासमक' छन्द कहते हैं ।

Meaning. A *mātrā samaka* metre having a long syllable for its 10th *mora* in all the four quarters is called *upacitrā mātrā samaka.* (The metre must contain 16 syllables in all the four parts, and the last syllable as a long vowel.)

उपचित्रा मात्रासमक छन्द का उदाहरण (Example) -

ग ग (16) ग ग (16)

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ

य च्चि त्तं गु रु स क्त मु दा रं, वि द्या भ्या स-म हा व्य स नं च ।

ग ग (16) ग ग (16)

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ

पृ थ्वी त स्य गु णै रु प चि त्रा, च न्द्र म री चि-नि भै-र्भ व ती यम् ।।

एभिः पादाकुलकम् ॥ 47 ॥

शब्दार्थ- एभिः - मात्रासमक के पांचों भेदों में से यदि किसी पाद में कोई भेद है और दूसरे में दूसरा भेद, **पादाकुलकम्**- तो उस मिश्रित लक्षणवाले छन्द को 'पादाकुलक' छन्द कहेंगे ।

अर्थ- यदि मात्रासमक छन्द के पांचों भेदों का मिश्रित रूप हो तो 'पादाकुलक' छन्द कहेंगे ।

Meaning. A metre having all the characteristics of the previous five types of *mātrā samaka* metres (cf. formulae 42-46 is called *pādākulaka.*

पादाकुलक छन्द का उदाहरण (Example) -

ल ल ल ग (16) ल ल ग ल ग (16)
। । ऽ ऽ । । । । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । ऽ । । ऽऽ
अ लि-वा चा लि त-वि क सि त चू ते, का ले म द न-स मा ग म-दू ते।
ल ल ग (16) ल ग ल ग (16)
ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ ऽ
स्मृ त्वा का न्तां प रि हृ त-सा र्थः, पा दा कु ल कं धा व ति पा न्थः।।

इस श्लोक में मात्रासमक, विश्लोक, वानवासिका और उपचित्रा के लक्षणों का मिश्रण है । यह इन छन्दों का मिश्रित रूप है ।

मात्रासमक का अधिकार समाप्त ।

This ends the discussion of metres regulated by *moras.*

गीति आर्या के भेद प्रारम्भ । Discussion on *gīti āryā.*

गीत्यार्या लः ॥ 48 ॥

शब्दार्थ- लः - जिस छन्द के प्रत्येक पाद में 16 लघु मात्राएं हों, **गीत्यार्या**- उस छन्द को 'गीत्यार्या' (गीति+आर्या) कहते हैं ।

अर्थ- जिस छन्द के चारों पादों में 16 लघु मात्राएं हों, उसे 'गीत्यार्या' छन्द कहते हैं ।

Meaning. A metre containing 16 short vowels in each of its four parts is *gītyāryā* (=*gīti*+*āryā*).

गीत्यार्या छन्द का उदाहरण (Example) -

। । । । । । । । । । । । । । । । (16 ल०)
म द-क ल-ख ग-कु ल-क ल-र व-मु ख रि णि,
। । । । । । । । । । । । । । । । (16 ल०)
वि क सि त-स र सि ज-प रि म ल-सु र भि णि ।
। । । । । । । । । । । । । । । । (16 ल०)
गि रि व र-प रि स र-स र सि म ह ति ख लु,
। । । । । । । । । । । । । । । । (16 ल०)
र ति र ति श य मि ह म म हृ दि वि ल स ति ।।

शिखा विपर्यस्ताऽर्धा ॥ 49 ॥

शब्दार्थ- विपर्यस्ता- विपरीत या उलटी । गीत्यार्या छन्द का जो लक्षण ऊपर दिया गया है, यदि उसके विपरीत, **अर्धा**-आधा भाग केवल गुरु (ऽ) हो, **शिखा-** तो उसे 'शिखा' कहेंगे ।

अर्थ- यदि ऊपर कहे हुए गीत्यार्या छन्द के लक्षण के विपरीत आधे भाग में केवल गुरु (ऽ) अक्षर हों तो उसे 'शिखा' छन्द कहेंगे । इसमें आधे में केवल लघु मात्रा (।) और आधे में केवल गुरु मात्रा (ऽ) रहेंगी ।

Meaning. As described above, all the vowels are short in *gītyāryā* metre. If half the vowels are replaced by equivalent number of long vowels, i.e. 16x2 short syllables are replaced by 8x2 long syllables, then the metre is called *śikhā*. (This literally means top knot.)

लः पूर्वश्चेज्ज्योतिः ॥ 50 ॥

शब्दार्थ- चेत्- यदि, **पूर्वः** - पूर्वार्ध भाग, **लः** - केवल लघु (।) मात्रा वाला होगा, **ज्योतिः** - तो उसे 'शिखा ज्योति' छन्द कहेंगे ।

सूचना- यहाँ 'शिखा' के दो भेद कहे गए हैं । पहला भेद 'शिखा ज्योति' है और दूसरा भेद 'शिखा सौम्या' आगे कहा गया । 'शिखा ज्योति' छन्द में पूर्वार्ध पूरा लघु मात्रा वाला होगा और उत्तरार्ध पूरा गुरु मात्रा (ऽ) होगा ।

अर्थ- यदि 'शिखा' छन्द का पूर्वार्ध पूरा केवल लघु मात्रा (।) होगा और उत्तरार्ध केवल गुरु मात्रा (ऽ) होगा, तो उसे 'शिखा ज्योति' छन्द कहेंगे ।

Meaning. A *śikhā* metre with the first two parts having only short vowels is called *śikhā jyoti.* (Thus its first two parts contain 16x2 short syllables, while the last two have 8x2 long syllables.)

शिखा ज्योति छन्द का उदाहरण (Example) -

। ।। ।। ।।।।।।।।।। । ।। (16 ल०)

य दि सु ख म नु प म म प र म भि ल ष सि,

।। ।।।।।। ।।। ।।।। ।।। (16 ल०)

प रि ह र यु व ति षु र ति म ति श य मि ह ।

ऽ ऽ ऽ ऽऽ ऽ ऽ ऽ (8 गु०)

आ त्म ज्यो ति र्यो गा भ्या साद् ,

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ (8 गु०)

दृ ष्ट्वा दुः ख च्छे दं कु र्याः ।।

गश्चेत् सौम्या ॥ 51 ॥

शब्दार्थ- चेत् - यदि शिखा छन्द का पूर्वार्ध, **गः** - केवल गुरु अक्षर (ऽ) हो और उत्तरार्ध केवल लघु अक्षर (।) हो, **सौम्या**- तो उसे 'शिखा सौम्या' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- यदि शिखा छन्द का पूर्वार्ध पूरा गुरु अक्षर (ऽ) हो और उत्तरार्ध पूरा लघु अक्षर (।) हो तो उसे 'शिखा सौम्या' छन्द कहते हैं ।

Meaning. A *śikhā* metre with the first two parts having only long vowels is called *śikhā saumyā.* (Thus its first two parts contain 8x2 long syllables, while the last two have 16x2 short syllables.)

शिखा सौम्या का उदाहरण (Example) -

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

सौ म्यां दृ ष्टिं दे हि स्ने हाद् ,

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

दे हे ऽस्मा कं मा नं मु क्त्वा ।

। ।।।।। । ।।।।।।।।। ।।।

श श ध र-मु खि ! सु ख मु प न य म म ह दि,

। । । । । । । । । । । । । । । । ।
म न सि ज-रु ज म प ह र ल घु त र मि ह ।।

चूलिकैकोनत्रिंशदेकत्रिंशदन्ते ग् ॥ 52 ॥

शब्दार्थ- एकोनत्रिंशत्- 29 लघुमात्रा, जिस छन्द के पूर्वार्ध में 29 लघु अक्षर हों, **एकत्रिंशत्** - 31 लघुमात्रा, अर्थात् उत्तरार्ध में 31 लघु अक्षर हों, **अन्ते ग्** - पूर्वार्ध और उत्तरार्ध के अन्त में गुरु (ऽ) अक्षर हो, **चूलिका**- उसे चूलिका छन्द कहते हैं ।

अर्थ- जिस छन्द के पूर्वार्ध में 29 लघु अक्षर हों और उत्तरार्ध में 31 लघु अक्षर हों तथा दोनों पादों के अन्त में गुरु (ऽ) अक्षर हो, उसे 'चूलिका' छन्द कहते हैं।

Meaning. A metre containing 29 short syllables in the first half and 31 short syllables in the second half, is called *cūlikā*, provided that the last syllable in each part is long.

चूलिका छन्द का उदाहरण (Example) -
। । । । । । । । । । । । । । । (१५ ल०)
य दि त व गि रि-व न-प रि स र-वि ष य-
। । । । । । । । । । । । । । ऽ (१४ ल०)
सु ख म ति गु ण क र मि ह स म ये ।
। । । । । । । । । । । । । । । । (१६ ल०)
अ नु भ व म पि कु रु बु ध व र ज ग दि द-
। । । । । । । । । । । । । । । ऽ (१५ ल०)
म ति वि क ल मि ति ह दि वि म ल त या ।।

सा ग् येन न समा लां ग्ल इति ॥ 53 ॥

शब्दार्थ-येन- जितने परिमाण में, **ग्लः** - गुरु- लघु- अक्षरों के योग में से, **लां न समाः** - लघु मात्राओं का योग कम है, **सा ग्** - उतने गुरु अक्षर माने जाएंगे । **इति**- इति शब्द अध्याय की समाप्ति का सूचक है ।

अर्थ- गुरु-लघु अक्षरों की संमिलित संख्या अर्थात् कुल मात्राओं की संख्या में से जितना लघु मात्राओं का योग कम है, उतनी गुरु अक्षरों की संख्या समझनी चाहिए ।

Meaning. Subtract the number of short morae from the stipulated number of morae of an *āryā* metre. The outcome will be the number of long syllables.

(Some commentators emphasize on a slightly different version of this *sūtra.)*

टिप्पणी- 1. इस सूत्र के पाठ और अर्थ के विषय में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है । कोई 'येन' को एकपद मानते हैं, कोई 'ये न' करके दो पद मानते हैं।

2. 'येन' का अर्थ है- जितने परिमाण में, जितने अंश में ।

3. सूत्र का अभिप्राय है कि- यदि किसी आर्या छन्द के विषय में जिज्ञासा हो कि इसमें कितने गुरु और कितने लघु अक्षर हैं तो उसको जानने का सरल उपाय यह है-

सबसे पहले आर्या छन्द के चारों पादों की कुल संख्या जोड़ लें । जैसे नीचे के उदाहरण श्लोक में कुल 12+18+12+15= 57 मात्राएं हैं । इसके बाद अक्षरों की संख्या गिन लें । जैसे नीचे के श्लोक में अक्षरों की संख्या 40 है । 57 मात्रा-संख्या में से 40 अक्षर संख्या घटा दें । घटाने से 17 संख्या बचेगी । यह 17 संख्या गुरु अक्षरों की है ।

मात्रा-संख्या-	57	अक्षर-संख्या-	40
अक्षर-संख्या-	-40	गुरु अक्षर -	-17
गुरु-अक्षर-	17	लघु अक्षर -	23

इस प्रकार ज्ञात हुआ कि निम्नलिखित आर्या छन्द में गुरु अक्षर 17 हैं और लघु अक्षर 23 । आर्या छन्द में कुल मात्राओं की संख्या 57 है और गुरु-लघु अक्षरों की संख्या 40 है ।

4. सूत्र के अन्त में 'इति' शब्द अध्याय की समाप्ति का सूचक है । यहाँ चतुर्थ अध्याय समाप्त होता है ।

उदाहरण (Example) - आर्या छन्द, गुरु-लघु वर्णों के ज्ञानार्थ ।

(आर्या छन्द के प्रथम पाद में 12 मात्राएं, द्वितीय पाद में 18 मात्राएं, तृतीय पाद में 12 मात्राएं और चतुर्थ पाद में 15 मात्राएं । मात्राओं का योग 57)

। । । । ऽ ऽ ऽ ऽ (12 मात्राएं)
स्त न यु ग म श्रु स्ना तं,
। ऽ । । । ऽ । । । । ऽ ऽ ऽ (18 मात्राएं)
स मी प त र व र्ति हृ द य-शो का ग्नेः ।
। । । । ऽ ऽ ऽ ऽ (12 मात्राएं)
च र ति वि मु क्ता हा रं
। । । । । । ऽ । ऽ ऽ ऽ (15 मात्राएं)
व्र त मि व भ व तो रि पु-स्त्री णाम् ।। (बाणभट्ट)

***

चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः ।
(This is the end of Chapter IV.)

पञ्चमोऽध्यायः

CHAPTER V

वृत्तम् ॥ 1 ॥

शब्दार्थ- वृत्तम्- यहाँ से 'वृत्त' का अधिकार प्रारम्भ होता है । ग्रन्थ की समाप्ति तक 'वृत्त' का अधिकार चलेगा ।

अर्थ- यहाँ से 'वृत्त' का अधिकार प्रारम्भ है ।

Meaning. Now we discuss *vṛtta* metres. The related definitions, rules etc. will hold good through all that follows in this work.

टिप्पणी- वृत्त का अधिकार ग्रन्थ की समाप्ति तक है । जिनमें पाद की व्यवस्था होती है, उन्हें वृत्त कहते हैं । पाद की व्यवस्था के कारण ही वृत्त को पद्य भी कहते हैं । इसमें लौकिक वर्णवृत्त और वैदिक गायत्री आदि छन्द सभी आते हैं । अतः कहा गया है- पद्य में पदों की व्यवस्था होती है । इसके दो भेद है- वृत्त और जाति । वृत्त को वर्णवृत्त और वर्णिक छन्द भी कहते हैं। जैसे- वैदिक गायत्री आदि छन्द और लौकिक अनुष्टुप् , इन्द्रवज्रा, उपजाति आदि। वृत्तों में वर्णों की संख्या गिनी जाती है, 4 पाद होते हैं और गुरु-लघु के लिए मगण-नगण आदि का प्रयोग होता है । दूसरा भेद-जाति है । इसमें गुरु-लघु मात्राओं की संख्या गिनी जाती है । इन्हें मात्रिक छन्द कहते हैं । जैसे- आर्या, मात्रासमक आदि ।

A metre having four *pādas* or poetic lines or four poetic quarters is *padya*. *Pāda* (पाद) literally means a quarter, a fourth part of a stanza. A *pāda* or (poetic) quarter is regulated by either the number of syllables (*ākṣara*) or the number of syllabic instants (*moras*). A *padya* is of two cotegories: *vṛtta* (वृत्त) and *jāti* (जाति).

A *vṛtta* is also called *varṇa vṛtta* (वर्ण वृत्त) or *varṇika vṛtta* (वर्णिक वृत्त). (Recall that a *varṇa* is a syllable or quantity which may be either short (।), i.e. composed of one instant or long (ऽ) composed of two instants. A *vṛtta* is regulated

by the number and position of *varṇas* in each quarter. Vedic *gāyatrī* etc. and popular *anuṣṭup, indravajrā,* etc. are the examples of *vṛtta.*

A stanza is of *jāti* (जाति) category, if its each quarter is regulated by the number of syllabic instants (*moras*). They are called *moric* metres or *mātric chandas* (मात्रिक छन्द) or *mātric* metres. *Āryā, mātrā samaka* are the examples of *moric* metres.

The following schematic presentation gives a bird view of *jāti* and *vṛtta* metres with their subdivisions.
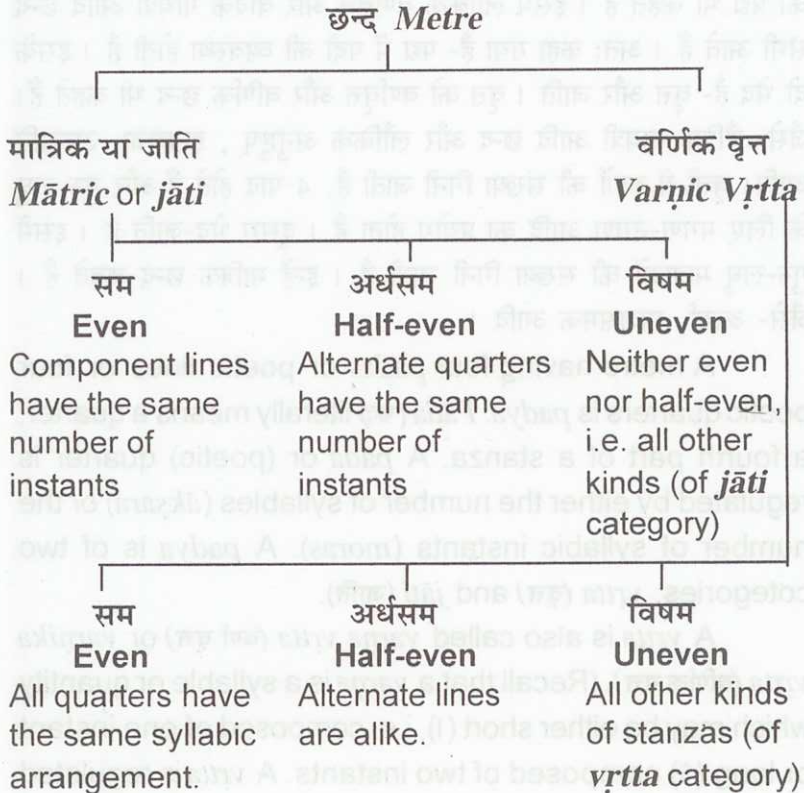
पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा । (का०द०1.11)

सममर्धसमं विषमं च ॥ 2 ॥

शब्दार्थ- 'वृत्त' के तीन भेद होते हैं- **1. समम्** - सम वृत्त । जिसके चारों पादों में अक्षर-संख्या निश्चित होती है । **2. अर्धसमम्** - अर्धसमवृत्त जिसके प्रथम और तृतीय पाद समान होते हैं तथा द्वितीय एवं चतुर्थ पाद समान होते हैं, अर्थात् एक जैसी वर्ण-व्यवस्था होती है । जैसे- द्रुतमध्या (5.33) आदि छन्द । **3. विषमं च**- विषम वृत्त। जिसके चारों पादों में अक्षर संख्या भिन्न होती है । जैसे- पदचतुरूर्ध्व (5.20) आदि छन्द ।

अर्थ- वृत्त के तीन भेद होते हैं - 1. समवृत्त, जिसके चारों पादों में वर्ण समान होते हैं । 2. अर्धसमवृत्त जिसके पाद 1 व 3 और पाद 2 व 4 में समानता हो। 3. विषमवृत्त- जिसके चारों पादों में वर्णों की संख्या भिन्न हो । वस्तुतः शुद्ध अर्धसम वृत्तों में प्रथम एवं द्वितीय पाद के संयोजन भिन्न होते हैं तथा प्रथम व तृतीय पाद समान होते हैं एवं द्वितीय व चतुर्थ पाद समान होते हैं ।

Meaning. *Vṛttas* are of three types-- (i) even, (ii) half-even, and (iii) uneven. Each quarter of an even *vṛtta* has the same syllabic arrangement. Alternate quarters (lines) of a half-even *vṛtta* have the same syllabic arrangements. (In pure half-even *vṛttas*, the two arrangements are different, i.e., the first (resp. third) line is different from the second (resp. fourth), while the first (resp. second) and third (resp. fourth) lines have the same arrangements.) All other kinds of *vṛttas* belong to the uneven category.

समं तावत्कृत्वः कृतमर्धसमम् ॥ 3 ॥

शब्दार्थ- समम्- समवृत्त के जितने भेद हों, **तावत्कृत्वः** - उस संख्या को उसी संख्या से, **कृतम्**- गुणा करने पर जो गुणनफल प्राप्त हो, उसमें से समवृत्त की संख्या कम करने से जो संख्या शेष रहे, **अर्धसमम्**- उतने भेद अर्धसमवृत्त के होते हैं । **सूचना**- इस सूत्र में सूत्र संख्या 5 को भी संमिलित किया जाता है, तब अर्धसमवृत्तों का निश्चित रूप ज्ञात होता है । टिप्पणी में विषय को स्पष्ट किया गया है ।

अर्थ- समवृत्त के जितने भेद हों, उसको उसी संख्या से गुणा कर दें, जो गुणनफल प्राप्त हो, उसमें से मूल राशि को कम कर दें, जो संख्या शेष रहे, उतने भेद (शुद्ध) अर्धसम वृत्त के होते हैं ।

Meaning. (For a given number of *varṇas*, several even and half-even *vṛttas* may be composed. So, the problem is to ascertain their all possible numbers for a given number of *varṇas (n,* say). Notice that, technically speaking, the class of half-even *vṛttas* includes even *vṛttas* as well, since by definition alternate quarters of even *vṛttas* have the same arrangements, any way. This was very well realized by *Piṅgla* and his successors. This aspect is clearly reflected in Formula 5 below as well. Further, it seems that during *Piṅgla's* time, the number of even *vṛttas* was easily known. Perhaps, because of this reason, this formula gives a method to calculate the all possible number of half-evens using the number of evens.)

According to the formula, the total number of half-even *vṛttas* = Th = (number of even *vṛttas*)^2

$$= 2^n \times 2^n = 2^{2n},$$

and the number of pure half-even *vṛttas*

$$= Ph = (\text{number of even } vṛttas)^2 - (\text{number of even } vṛttas)$$

$$= 2^{2n} - 2^n = 2^n (2^n - 1).$$

Note- As regards the proof of these formulae, one may refer any standerd text-book on combinations. Here Ph stands for the number of pure half-even *vṛttas* with the same number (n) of *varṇas* in each *pāda.*

टिप्पणी- यदि प्रत्येक पाद में वर्णों की संख्या n हो तो कुल समवृत्तों की संख्या 2^n होगी तथा अर्द्धसमवृत्तों की संख्या $2^n(2^n - 1)$ होगी । समवृत्त के भेदों से अर्धसमवृत्तों के भेदों को ज्ञात करने हेतु कुछ सरल उदाहरण दिए जा रहे हैं।

(क) समवृत्तों की संख्या को ज्ञात करना- (3 अक्षर का प्रस्तार)

समवृत्त मगण आदि 8 गणों पर निर्भर हैं । प्रत्येक गण में तीन मात्रा होती है । इन तीन के भेद 8 होते हैं । इसको निकालने का प्रकार यह है-

जितनी संख्या के भेद निकालने हों, उतनी बार 2 संख्या को गुणा करें। जैसे- 2 के भेद- 2x2 = 4 । 3 के भेद- 2x2x2 = 8 भेद ।

इस प्रकार तीन अक्षर वाले समवृत्त के भेद 8 होते हैं ।

(ख) अर्धसमवृत्त की संख्या को ज्ञात करना । (3 अक्षर का प्रस्तार) ।

समवृत्त की संख्या- 8, उसको उसी अंक से गुणा करें- 8x8=64। इसमें से सूत्र संख्या 5 के अनुसार मूल राशि घटा दें- 64-8= 56 ।

इस प्रकार शुद्ध अर्धसमवृत्तों की संख्या 56 होती है ।

इसी प्रकार 4, 5, 6, 7, 8 आदि संख्याओं के प्रस्तार का ज्ञान करें। जिस संख्या का प्रस्तार ज्ञात करना हो, उतनी बार 2 को 2 से गुणा करें । इस प्रकार उस संख्या के भेद ज्ञात होंगे । जैसे- 5 अक्षर का प्रस्तार- $2^5 = 32$। अस्तु, 5 अक्षर के प्रस्तार में 32 भेद होंगे ।

विषमं च ॥ 4 ॥

शब्दार्थ- च- और अर्थात् अर्धसमवृत्त की संख्या को अर्धसमवृत्त की संख्या से गुणा कर दें और जो गुणनफल आवे, उसमें से अर्धसमवृत्त की मूल संख्या कम कर दें । **विषमम्** - इस प्रकार जो राशि बचेगी, वह विषमवृत्त की प्रस्तार संख्या होगी ।

अर्थ- विषमवृत्त की संख्या ज्ञात करने की विधि यह है- अर्धसमवृत्त की कुल संख्या को उसी संख्या से गुणा कर दें और जो गुणनफल आवे, उसमें से अर्धसमवृत्त की मूलसंख्या को घटा दें । इस प्रकार विषमबृत्त की प्रस्तार-संख्या ज्ञात होगी ।

Meaning. In order to find the total number of uneven *vṛttas (u),* multiply the total number of half-even *vṛttas* with itself, and subtract the number of (total) half-evens from the product. The outcome is the required number.

Thus $u = (Th)^2 - Th$

$= 2^{4n} - 2^{2n} = 2^{2n}(2^{2n} - 1).$

Example- Given that a quarter of a *vṛtta* consists of 3 *varṇas*, find the number of even, half-even and uneven *vṛttas*.

Number of even *vṛttas* = $2^3 = 8$,
Total number of half-evens = $8^2 = 64$
Number of pure half-evens = $8^2 - 8 = 56$,
Number of uneven *vṛttas* = $64^2 - 64 = 4032$.

टिप्पणी- 3 अक्षर के प्रस्तार में कुल अर्धसमवृत्तों की संख्या 64 है । अब विषम वृत्तों की संख्या ज्ञात करने के लिए 64 को 64 से गुणा करें और गुणनफल में से मूलराशि 64 घटा दें । अस्तु, विषमवृत्तों की संख्या 64 x 64 - 64 = 4032 होगी ।

इस प्रकार 3 अक्षर के प्रस्तार में विषम वृत्तों की संख्या 4032 हुई । इसी प्रकार 4, 5, 6 आदि के प्रस्तार में विषम वृत्तों की संख्या निकालें । 6, 7, 8 आदि के प्रस्तार में विषम वृत्तों की संख्या लाखों में हो जाती है ।

राश्यूनम् ॥ 5 ॥

शब्दार्थ- यह नियम अर्धसमवृत्त की संख्या और विषमवृत्त की संख्या जानने के लिए दोनों स्थानों पर प्रयोग किया जाता है । **राश्यूनम्** - राशि अर्थात् मूल राशि दोनों स्थानों पर गुणनफल में से घटा दी जाती है । जैसे- 3 अक्षर के प्रस्तार में 8x8 = 64 में से मूल राशि 8 घटा दी जाती है- 64 - 8 = 56 अर्ध समवृत्तों की संख्या हुई । इसी प्रकार 3 अक्षर के प्रस्तार में विषम वृत्तों की संख्या- 64 x 64 - 64 = 4032 हुई ।

अर्थ- अर्धसमवृत्तों और विषमवृत्तों की कुल संख्या ज्ञात करने के लिए यह नियम प्रयुक्त होता है । दोनों स्थानों पर गुणनफल में से मूलराशि कम कर दी जाती है । यह शेष संख्या (शुद्ध) अर्धसमवृत्तों और विषम वृत्तों की प्रस्तार संख्या होती है ।

Meaning. In order to find the total variety of (pure) half-even *vṛttas*, multiply the original number with itself, and subtract the original number from the product. The result is the required number of (pure) half-even *vṛttas*. (Here the original number stands for the number of even

vṛttas.) This rule applies to obtain the total variety of uneven *vṛttas,* but then the original number in this case will be the total number of half-evens.

टिप्पणी (Note)- अर्धसमवृत्तों और विषमवृत्तों के प्रस्तार में इस नियम का विवरण दिया जा चुका है । (The rule has already been illustrated.)

अनुष्टुप्-अधिकार (वक्राधिकार) प्रारम्भ
The jurisdiction of *Anuṣṭup (Vakra)* begins

ग्लिति समानी ॥ 6 ॥

शब्दार्थ- (सूत्र 9 'अनुष्टुप्' का अपकर्षण होता है ।) **अनुष्टुप्**- जिस अनुष्टुप् या 8 अक्षर वाले पाद में, **ग्लिति**- एक गुरु और एक लघु का क्रम हो, **समानी**- उसे 'समानी' छन्द कहते हैं । अनुष्टुप् में 4 पाद होते हैं और प्रत्येक पाद में क्रमशः गुरु-लघु रहेंगे, अर्थात् चार गुरु और चार लघु ।

अर्थ- अनुष्टुप् या 8 अक्षर वाले पाद में, जहाँ गुरु और लघु का क्रम रहता है, उसे 'समानी' छन्द कहते हैं ।

Meaning. A *samānī* metre is an *anuṣṭup* with long and short syllables appearing alternately in each quarter. (Recall that an *anuṣṭup* has 8 syllables in each quarter.)

समानी छन्द का उदाहरण (Example) - (8x4 = 32 अक्षर)

ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । (8) ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । (8)
वा स वो ऽपि वि क्र मे ण, यत्-स मा न तां न या ति ।
ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । (8) ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । (8)
त स्य व ल्ल भे श्व र स्य, के न तु ल्य ता क्रि ये त ।।

ल्गिति प्रमाणी ॥ 7 ॥

शब्दार्थ- **ल्गिति**- जिस चतुष्पात् अष्टाक्षर छन्द के प्रत्येक पाद में क्रमशः लघु-गुरु का क्रम हो, **प्रमाणी**- उसे 'प्रमाणी' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- जिस 8 अक्षर वाले चतुष्पात् छन्द के प्रत्येक पाद में लघु-गुरु का क्रम हो, उसे 'प्रमाणी' छन्द कहते हैं । इसको ही परकालीन साहित्य में 'प्रमाणिका' छन्द कहते हैं ।

Meaning. A *pramāṇī* (also called *pramāṇikā*) metre is an *anuṣṭup* with short and long syllables appearing alternately in each quarter.

प्रमाणी छन्द का उदाहरण (Example) - (8x4 = 32 अक्षर)

। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ (8) । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ (8)
स रो ज यो नि र म्ब रे, र सा त ले त था ऽच्यु तः ।
। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ (8) । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ (8)
त व प्र मा ण मी क्षि तुं, क्ष मौ न तौ ब भू व तुः ।।

वितानमन्यत् ॥ 8 ॥

शब्दार्थ- अन्यत् - इससे भिन्न क्रम रखने वाले अर्थात् 2 लघु-2गुरु, 4 लघु-4गुरु या 2 गुरु-2 लघु, 4 गुरु-4 लघु आदि क्रम वालों को, वितानम्- वितान छन्द कहेंगे ।

अर्थ- समानी और प्रमाणी से भिन्न लघु-गुरु का क्रम रखने वाले 8 अक्षर के छन्द को 'वितान' कहते हैं ।

Meaning. If a metre having 8 syllables in each of its quarters is neither *samāṇī* nor *pramāṇī* then the same is called *vitāna.*

वितान छन्द का उदाहरण (Example) - (8x4 = 32 अक्षर)

ऽ ऽ । । ऽ ऽ । । (8) ऽ ऽ । । ऽ ऽ । । (8)
तृ ष्णां त्य ज ध र्मं भ ज, पा पे हृ द यं मा कु रु ।
ऽ ऽ । । ऽ ऽ । । (8) ऽ ऽ । । ऽ ऽ । । (8)
इ ष्टा य दि ल क्ष्मी स्त व, शि ष्टा न नि शं सं श्र य ।।

पादस्याऽनुष्टुब् - वक्रम् ॥ 9 ॥

शब्दार्थ- पादस्य - इसका अधिकार सप्तम अध्याय की समाप्ति तक है। अर्थात् यहाँ से आगे जितने छन्द कहे गये हैं, उनमें पादों की व्यवस्था होगी। **अनुष्टुप् वक्रम्**- पदचतुरूर्ध्व- प्रकरण (सूत्र 5.20) तक सभी छन्द वक्र-जातीय अनुष्टुप् छन्द के अन्तर्गत समझने चाहिए ।

अर्थ- सप्तम अध्याय की समाप्ति तक 'पादस्य' का अधिकार है, अर्थात् यहाँ से आगे जितने छन्द कहे गये हैं, उनमें 'पाद' की व्यवस्था रहेगी ।

'अनुष्टुप्-वक्र' अर्थात् वक्र-जातीय अनुष्टुप् छन्द का अधिकार पदचतुरूर्ध्व-प्रकरण (5.20) तक रहेगा।

Meaning. In all that follows untill the seventh chapter, a metre will *ipso facto* be equipped with the system 4 quarters, i.e. a metre will stand for a metre with four parts or *pādas* or quarters. However an *anuṣṭup vakra,* a variety of an *anuṣṭup* metre will have its jurisdiction up to Formula 5.20 only.

न प्रथमात् स्नौ ॥ 10 ॥

शब्दार्थ- वक्रजाति के अनुष्टुप् छन्दों में, **प्रथमात्** - प्रथम अक्षर के बाद, **स्नौ**- सगण (।।ऽ) और नगण (।।।) का प्रयोग, **न**- नहीं करना चाहिए। यह नियम वक्र अनुष्टुप् के सभी पादों में लागू होता है ।

अर्थ- वक्रजाति के अनुष्टुप् छन्दों में प्रथम अक्षर के बाद सगण (।।ऽ) और नगण (।।।) न रखें ।

Meaning. In an *anuṣṭup vakra,* there should not be a *sagaṇa* (IIऽ) or a *nagaṇa* (III) after the first syllable of each quarter.

द्वितीयचतुर्थयो रश्च ॥ 11 ॥

शब्दार्थ- च- और, **द्वितीय-चतुर्थयोः** - द्वितीय और चतुर्थ पादों में प्रथम अक्षर के बाद, **रः** - रगण (ऽ।ऽ) का भी प्रयोग न करें । इस प्रकार द्वितीय और चतुर्थ पाद में प्रथम अक्षर के बाद सगण, नगण और रगण का प्रयोग निषिद्ध है।

अर्थ- वक्रजाति के अनुष्टुप् छन्दों में द्वितीय और चतुर्थ पादों में प्रथम अक्षर के बाद रगण (ऽ।ऽ)

का भी प्रयोग न करें ।

Meaning. In an *anuṣṭup vakra,* there should not be a *ragaṇa* (ऽIऽ) too after the first syllable of the second and fourth quarters. Thus in the second and fourth quarters, after the first syllable, do not use *Sagaṇa, Nagaṇa* and *Ragaṇa.*

वाऽन्यत् ॥ 12 ॥

शब्दार्थ- वक्र जाति के अनुष्टुप् छन्दों में, **अन्यत्** - अन्य कोई भी गण-प्रथम अक्षर के बाद, **वा**- विकल्प से अर्थात् इच्छानुसार रख सकते हैं ।

अर्थ- वक्रजाति के अनुष्टुप् छन्दों में प्रथम अक्षर के बाद पूर्वोक्त सगण, नगण और रगण के अतिरिक्त, अन्य कोई भी गण, रखा जा सकता है ।

Meaning. In place of the forbidden *gaṇas,* that is in place of forbidden *sagaṇa* (।।ऽ), *nagaṇa* (।।।) and *ragaṇa* (ऽ।ऽ), one may use either of the remaining *gaṇas* after the first syllable in corresponding quarters of *anuṣṭup vakra* metres.

यश्चतुर्थात् ॥ 13 ॥

शब्दार्थ- अनुष्टुप्-जातीय छन्दों में, **चतुर्थात्** - चतुर्थ- अक्षर के बाद, **यः** - यगण (।ऽऽ) का प्रयोग करना चाहिए ।

अर्थ- अनुष्टुप् छन्द में चतुर्थ अक्षर के बाद यगण (।ऽऽ) का प्रयोग करना चाहिए ।

Meaning. One should place *yagaṇa* (।ऽऽ) after the fourth syllable of each quarter of an *anuṣṭup* metre.

अनुष्टुप्-वक्र का उदाहरण (Example) - (8+8+8+8= 32 अक्षर)

यगण **यगण**

। । ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ

न व धा रा ऽम्बु-सं सि क्त-व सु धा-ग न्धि-निः श्वा सम् ।

यगण **यगण**

। । ऽ ऽ । ऽ ऽ ऽ. । ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ

किं चि दु न्न त-घो णा ग्रं, म ही का म य ते व क्रम् ।।

पथ्या युजो ज् ॥ 14 ॥

शब्दार्थ- अनुष्टुप्-वक्र छन्द के, **युजः** - द्वितीय और चतुर्थ पाद में चतुर्थ अक्षर के बाद, **ज्** - जगण (।ऽ।) का प्रयोग होता है, **पथ्या**- तो उसे 'पथ्या' कहते हैं । 'युज्' शब्द द्वितीय और चतुर्थ पाद के लिए है ।

अर्थ- जिस अनुष्टुप् -वक्र छन्द के द्वितीय और चतुर्थ पाद में चतुर्थ अक्षर के बाद जगण (ISI) का प्रयोग होता है, उसे 'पथ्या' कहते हैं ।

Meaning. A *pathyā* metre is an *anuṣṭup vakra* with a *jagaṇa* (ISI) after the fourth syllable in each of its second and fourth quarters.

पथ्या वक्र छन्द का उदाहरण (Example) - (8x4= 32 अक्षर)

S S S I I S S I S S S S I S I I

नि त्यं नी ति-नि ष ण्ण स्य, रा ज्ञो रा ष्ट्रं न सी द ति ।

I I S S I S S S S S S S I S I S

न हि प थ्या शि नः का ये, जा य न्ते व्या धि-वे द नाः ।।

विपरीतैकीयम् ॥ 15 ॥

शब्दार्थ- एकीयम्- एक आचार्य के मत में उपर्युक्त के विपरीत होता है, अर्थात् प्रथम और तृतीय पादों में चतुर्थ अक्षर के बाद 'जगण' होता है और द्वितीय एवं चतुर्थ पादों में 'यगण' होता है, **विपरीता**- उसे 'विपरीता पथ्या' कहते हैं ।

अर्थ- एक आचार्य के मत में उपर्युक्त के विपरीत होता है, अर्थात् प्रथम और तृतीय पाद में चतुर्थ अक्षर के बाद 'जगण' होता है और द्वितीय एवं चतुर्थ पादों में 'यगण' होता है, उसे 'विपरीता पथ्या' छन्द कहते हैं ।

Meaning. According to an expert on prosody, *viparītā pathyā* (opposite of *pathyā*) is defined as an *anuṣṭup vakra* with a *jagaṇa* (ISI) after the fourth syllable in each its first and third quarters provided that the second and fourth quartes have an *yagaṇa* (ISS).

विपरीता पथ्या का उदाहरण (Example) -

ज ग ण य ग ण

S S S S I S I S S S S S I S S S

भ र्तु रा ज्ञा ऽनु व र्ति नी, या स्त्री स्यात् सा गृ हे ल क्ष्मीः ।

ज ग ण य ग ण

S I S S I S I S I I S S I S S S

स्व प्र भु त्वा भि मा नि नी, वि प री ता प रि त्या ज्या ।।

चपलाऽयुजो न् ॥ 16 ॥

शब्दार्थ- अयुजः - विषम, जब किसी वक्रजातीय अनुष्टुप् छन्द के विषम अर्थात् प्रथम और तृतीय पाद में चतुर्थ अक्षर के बाद, **न्** - नगण (।।।) हो और द्वितीय एवं चतुर्थ पाद में चतुर्थ अक्षर के बाद 'यगण' (।ऽऽ) हो, **चपला**- तो उये 'चपला' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- जब किसी अनुष्टुप् छन्द के प्रथम एवं तृतीय पाद में चतुर्थ अक्षर के बाद नगण (।।।) हो और द्वितीय एवं चतुर्थ पाद में चतुर्थ अक्षर के बाद 'यगण' (।ऽऽ) हो तो उसे 'चपला' छन्द कहते हैं ।

Meaning. A *capalā* (fickle or spirituous) metre is an *anuṣṭup* with a *nagaṇa* (।।।) after the fourth syllable in odd quarters and an *yagaṇa.*(।ऽऽ) after the fourth syllable in even quarters.

चपला छन्द का उदाहरण (Example of a *capalā* metre) -

न ग ण   य ग ण

ऽ । ऽ ऽ । ।। ऽ ऽऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ ऽ

क्षी य मा णा ऽग्र-द श ना, व क्र-नि र्मां स-ना सा ग्रा ।

न ग ण   य ग ण

ऽ । ऽ ऽ । ।। ऽ । ।ऽऽ। ऽ ऽ ऽ

क न्य का वा क्य-च प ला, ल भ ते धू र्त-सौ भा ग्यम् ।।

विपुला युग् लः सप्तमः ॥ 17 ॥

शब्दार्थ-युक्- जिस अनुष्टुप् छन्द के सम अर्थात् द्वितीय और चतुर्थ पाद में, **सप्तमः** - सातवां अक्षर, **लः** - लघु होता है, **विपुला**- उसे 'विपुला अनुष्टुप्' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- जिस अनुष्टुप् छन्द के द्वितीय और चतुर्थ पाद में सातवाँ अक्षर लघु हो, उसे 'विपुला अनुष्टुप्' छन्द कहते हैं ।

Meaning. *Vipulā anuṣṭup* is an *anuṣṭup* metre when its seventh syllable is short in even quarters.

विपुला अनुष्टुप् का उदाहरण (Example)- (2,4 पाद में सप्तम लघु)

ल

S S S I I S S S S S S S I S I I

लो के ध र्म प थ स्थ स्य, म न्ये बु द्धि र्न न श्य ति ।

ल

I I S I I S S I I S S I I S I S

य दि वै दि क-का र्ये षु, नि रा ल स्य त या व्र जेत् ।।

(Notice that the second and fourth parts have short syllables at seventh places.)

सर्वतः सैतवस्य ॥ 18 ॥

शब्दार्थ- सैतवस्य- आचार्य सैतव का मत है कि, **सर्वतः -** सभी अर्थात् चारों पादों में सातवाँ अक्षर लघु हो तो भी विपुला छन्द ही होता है ।

अर्थ- आचार्य सैतव का मत है कि यदि चारों पादों में सप्तमवर्ण लघु हो तो भी 'विपुला अनुष्टुप' छन्द होता है ।

Meaning. According to the prosodist *Saitava*, an *anuṣṭup* metre having a short syllable at seventh place in all the four quarters is also called *vipulā anuṣṭup. (Ācārya Saitava* is considered far-far ancient prosodist than *Ācārya Piṅgala.*)

विपुला अनुष्टुप् का उदाहरण (Examples)- (चारों पाद में सप्तम लघु) (Notice the presence of a short syllable at seventh place in all the quarters.)

ल ल

S I S I I S I S S S I I I S I S

सै त वे न प था ऽर्ण वं, ती र्णो द श र था त्म जः ।

ल ल

S S I I I S I S I S S S I S I S

र क्षः-क्ष य- क रीं पु नः, प्र ति ज्ञां स्वे न बा हु ना ।।

भ्रौ न्तौ च ॥ 19 ॥

शब्दार्थ- ('विपुला युग् लः सप्तमः' सूत्र की अनुवृत्ति होगी ।) **भ्रौ**- यदि अनुष्टुप् छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में यगण (।ऽऽ) के स्थान पर भगण (ऽ।।), रगण (ऽ।ऽ) हों, **न्तौ**- अथवा नगण (।।।) या तगण (ऽऽ।) हो, **युग् लः सप्तमः** - तथा द्वितीय और चतुर्थ पाद में सप्तम वर्ण लघु हो, **विपुला**- तो वह भी 'विपुला अनुष्टुप्' छन्द कहा जाएगा ।

अर्थ- यदि वक्र जाति के अनुष्टुप् छन्द में निम्नलिखित नियमों का पालन होता है, तो वह छन्द भी 'विपुला अनुष्टुप्' कहा जाएगाः-

(1) प्रथम और तृतीय पाद में चतुर्थ अक्षर के बाद 'यगण' (।ऽऽ) के स्थान पर इनमें से किसी गण का प्रयोग हो- भगण (ऽ।।), रगण (ऽ।ऽ), नगण (।।।) या तगण (ऽऽ।) ।

(2) द्वितीय और चतुर्थ पाद में सप्तम वर्ण लघु (।) हो ।

Meaning. An *anuṣṭup vakra* is also called *vipulā anuṣṭup* provided that (i) the *yagaṇa* is replaced by any one of the remaining *gaṇas* after the fourth syllable in odd quarters, and (ii) seventh syllable is short in even quarters.

विपुला अनुष्टुप् के विभिन्न उदाहरण (Various examples of *vipulā anuṣṭup*) -

(क) 1-3 पाद में चतुर्थ अक्षर के बाद 'भगण' का प्रयोग-

भ ग ण ल

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ । ऽ

इ यं स खे च न्द्र मु खी, स्मि त-ज्यो त्स्ना च मा नि नी ।

भ ग ण ल

ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ

इ न्दी व रा क्षी हृ द यं, द न्द ही ति त था पि मे ।।

(ख) 1-3 पाद में चतुर्थ अक्षर के बाद 'रगण' का प्रयोग-

र ग ण ल

ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ । ।। ऽ । ऽ

ल क्ष्मी प तिं लो क ना थं, र था ङ्ग ध र म च्यु तम् ।

र ग ण ल

S S । S S । S S । । S । । S । S

य ज्ञे श्व रं शा ङ्र्ग पा णिं, प्र ण मा मि त्र यी त नुम् ।।

(ग) 1-3 पाद में चतुर्थ अक्षर के बाद 'नगण' का प्रयोग-

न ग ण ल

S S । S । । । S S । S S । S । S

य स्या वि भा ति वि पु ला, म न्म थ-स्था न-पि ण्डि का ।

न ग ण ल

। । S S । । । S S S S । । S । S

या च तुः ष ष्टि-च तु रा, सा स्त्री स्यान् -नृ प व ल्ल भा ।।

(घ) 1-3 पाद में चतुर्थ अक्षर के बाद 'तगण' का प्रयोग-

त ग ण ल

S S S S S S । S । S । । । S । S

व न्दे दे वं सो मे श्व रं, ज टा-मु कु ट-म ण्डि तम्।

त ग ण ल

S S । S S । S । S । । । S । S

ख ट्वा ङ्ग-ध रं च न्द्र मः- शि खा म णि- वि भू षि तम् ।।

टिप्पणी (Note) - सभी प्रकार के वक्रजातीय अनुष्टुप् छन्दों का सम्मिलित लक्षण निम्नलिखित श्लोक है- (पद्य शब्द अनुष्टुप् के लिए है।) (The following stanza gives a general criterion for *anuṣṭup vakra* metres. In this stanza, *padya* (पद्य) stands for *anuṣṭup*.)

पञ्चमं लघु सर्वत्र, सप्तमं द्विचतुर्थयोः ।
षष्ठं गुरु विजानीयाद् , एतत् पद्यस्य लक्षणम् ।।

अर्थात् जिस छन्द के सभी पादों में पांचवां वर्ण लघु हो, द्वितीय और चतुर्थ पादों में सातवां वर्ण लघु हो तथा सभी पादों में षष्ठ अक्षर गुरु हो, उसे पद्य या अनुष्टुप् छन्द कहते हैं ।(A metre (with 8 syllables in each quarter) is called *anuṣṭup* provided that (i) the fifth syllable is short in all the quarters, (ii) the seventh syllable is short in even quarters and (iii) the sixth syllable is long in all the quarters.

अनुष्टुप् छन्द का अधिकार समाप्त।

The discussion on *Anuṣṭup* comes to an end .

विषमवृत्त के अन्तर्गत 'पदचतुरूर्ध्वं का अधिकार प्रारम्भ
DISCUSSION ON UNEVEN *VṚTTAS* UNDER INCREASING QUARTERS BY FOUR

प्रतिपादं चतुर्वृद्ध्या पदचतुरूर्ध्वम् ॥ 20 ॥

शब्दार्थ- प्रतिपादम् - प्रत्येक पाद में अर्थात् जिस अनुष्टुप् छन्द के प्रत्येक पाद में क्रमशः, **चतुर्वृद्ध्या**- चार-चार वर्णों की वृद्धि होती जाए, **पदचतुरूर्ध्वम्** - उसे 'पदचतुरूर्ध्वं' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- जिस अनुष्टुप् छन्द के प्रत्येक पाद में क्रमशः चार-चार वर्णों की वृद्धि होती जाए, उसे 'पदचतुरूर्ध्वं' छन्द कहते हैं । इसका अभिप्राय यह है कि-पाद 1 में 8 वर्ण, पाद 2 में 8 + 4 = 12 वर्ण, पाद 3 में 12 + 4 = 16 वर्ण और पाद 4 में 16 + 4 = 20 वर्ण होंगे । इसमें चारों पादों में लघु-गुरु का कोई नियम नहीं है।

Meaning. An *anuṣṭup* metre with successively increasing quarters by four syllables is called *pada-caturūrdhva.* (It means a stanza with increasing quarters by 4.) Accordingly, the first, the second, the third and the fourth quarters have respectively 8, 12, 16 and 20 syllables.

पदचतुरूर्ध्व छन्द का उदाहरण (Example)- (8, 12, 16, 20 अक्षर)

तस्याः कटाक्ष-विक्षेपैः, (8 अक्षर)
कम्पित-तनु-कुटिलैरतिदीर्घैः । (12 अक्षर)
तक्षक-दष्ट-इवेन्द्रिय-शून्यः क्षत-चैतन्यः, (16 अक्षर)
पद-चतुरूर्ध्व न चलति पुरुषः पतति सहसैव ।। (20 अक्षर)

गावन्त आपीडः ॥ 21 ॥

शब्दार्थ- अन्ते गौ- अन्त में दो गुरु अक्षर, यदि पूर्वोक्त छन्द के प्रत्येक पाद में दो गुरु अक्षर अन्त में हों, **आपीडः** - जो उसे 'आपीड' छन्द कहते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि यदि पूर्वोक्त छन्द के चारों पादों के अन्त में दो अक्षर गुरु हों और शेष सभी अक्षर लघु हों तो उसे 'पदचतुरूर्ध्व आपीड' छन्द कहेंगे।

अर्थ- यदि पूर्वोक्त छन्द के चारों पादों में अन्त में दो गुरु अक्षर होंगे और शेष सभी अक्षर लघु होंगे तो उसे 'आपीड' नामक पद-चतुरूर्ध्व छन्द कहेंगे।

Meaning. If the last two syllables in each quarter are long and all the remaining syllables are short, then the previously described *pada-caturūrdhava* metre is *āpīḍa*.

आपीड पद-चतुरूर्ध्व छन्द का उदाहरण (Example) - (8, 12, 16, 20 अक्षर)

। । । । । । । ऽ ऽ (8 अक्षर)

कु सु मि त-स ह का रे,

। । । । । । । । । । ऽ ऽ (12 अक्षर)

ह त-हि म-म हि म-शु चि-श शा ङ्के ।

। । । । । । । । । । । । । । ऽ ऽ (16 अक्षर)

वि क सि त-क म ल-स र सि म धु-स म ये ऽस्मिन् ,

। । । । । । । । । । । । । । । । । । ऽ ऽ (20 अक्षर)

प्र व स सि प थि क-ह त क ! य दि भ व ति त व वि प त्तिः ।।

गावादौ चेत् प्रत्यापीडः ॥ 22 ॥

शब्दार्थ- चेत् - यदि, **गौ आदौ**- पूर्वोक्त पदचतुरूर्ध्व छन्द में दो गुरु अक्षर (ऽऽ) प्रारम्भ में हों, **प्रत्यापीडः** - तो उसे प्रत्यापीड छन्द कहेंगे । इसका अभिप्राय यह है कि यदि पदचतुरूर्ध्व के चारों पादों में प्रथम दो अक्षर गुरु हों और शेष सारे अक्षर लघु हों तो उसे 'प्रत्यापीड पदचतुरूर्ध्व' छन्द कहेंगे ।

अर्थ- यदि पदचतुरूर्ध्व के चारों पादों में प्रथम दो अक्षर गुरु हों और शेष लघु हों तो उसे 'प्रत्यापीड-चतुरूर्ध्व' छन्द कहते हैं ।

Meaning. Let the first two syllables of each of the four quarters of the previously described *pada-caturūrdhva* metre be long and all the remaining syllables be short. then we get *pratyāpīḍa-pada-caturūrdhva* metre.

प्रत्यापीड-चतुरूर्ध्व छन्द का उदाहरण (Example)- (8, 12, 16, 20 अक्षर)

S S । । । । । । (8 अक्षर)

चित्तं म म र म य ति,

S S । । । । । । । । । । । । (12 अक्षर)

का न्तं व न मि द मु प गि रि-न दि ।

S S । । । । । । । । । । । । । । । । (16 अक्षर)

कू जन्-म धु क र-क ल-र व-कृ त-ज न-धु ति,

S S । (20 अक्षर)

पुं स्को कि ल-मु ख रि त-सु र भि-कु सु म-चि त-त रु-त ति ।।

प्रत्यापीडो गावादौ च ॥ 23 ॥

शब्दार्थ- आदौ- यदि पदचतुरूर्ध्व छन्द के आदि में, **च**- और अन्त में, **गौ**- दो-दो अक्षर गुरु हों, **प्रत्यापीडः** - तो उसे भी प्रत्यापीड छन्द कहेंगे। अभिप्राय यह है कि यदि पदचतुरूर्ध्व छन्द के प्रारम्भ के दो अक्षर और अन्त के दो अक्षर गुरु हों, शेष सभी लघु हों तो उसे भी 'प्रत्यापीड पदचतुरूर्ध्व' छन्द कहेंगे ।

अर्थ- यदि पदचतुरूर्ध्व छन्द के चारों पादों में प्रारम्भ और अन्त के दो दो अक्षर गुरु हों (तथा शेष सभी लघु हों) तो उसे भी 'प्रत्यापीड पदचतुरूर्ध्व' छन्द कहेंगे ।

Meaning. Let the first and last two syllables of each of the four quarters of the *pada-caturūrdhva* metre be long (and all the remaining syllables be short), then the resulting metre is also called *pratyāpīḍa-pada-caturūrdhva.*

प्रत्यापीड चतुरूर्ध्व छन्द के उदाहरण (Examples) - (8, 12, 16, 20 अक्षर)

S S । । । । S S (8 अक्षर)

का न्ता-व द न-स रो जं,

S S । । । । । । । । S S (12 अक्षर)

हृ द्यं घ न-सु र भि-म धु-र सा ढ्यम् ।

S S I I I I I I I I I I I I I S S (16 अक्षर)

पा तुं र ह सि स त त म भि ल ष ति म नो मे,

S S I I I I I I I I I I I I I I I I S S (20 अक्षर)

किं चि न्मु कु लि त-न य न म वि र त-म णि त-र म णी यम्।।

इस प्रकार 'प्रत्यापीड चतुरूर्ध्व' दो प्रकार का होता है ।

(Thus we have two types of *pratyāpīḍa-pada-caturūrdhva.*)

प्रथमस्य विपर्यासे मञ्जरी-लवल्यमृतधाराः ॥ 24 ॥

शब्दार्थ- प्रथमस्य- यदि पदचतुरूर्ध्व छन्द में प्रथम पाद का, **विपर्यासे**- उलट-फेर करने पर इस छन्द को क्रमशः, **मञ्जरी0**- मंजरी, लवली और अमृतधारा छन्द कहते हैं । इसका अभिप्राय यह है कि यदि 8 अक्षर वाले प्रथम पाद को द्वितीय पाद के स्थान पर रख देंगे तो उसे 'मंजरी' छन्द कहेंगे । यदि तृतीय पाद के स्थान पर रखेंगे तो उसे 'लवली' छन्द कहेंगे । यदि चतुर्थ पाद के स्थान पर रखेंगे तो उसे 'अमृतधारा' कहेंगे । इन छन्दों में लघु-गुरु का नियम नहीं लगता है ।

अर्थ- यदि पदचतुरूर्ध्व छन्द के आठ अक्षर वाले प्रथम पाद को द्वितीय पाद के स्थान पर रख देंगे तो उसे 'मंजरी' छन्द कहेंगे, यदि तृतीय पाद के स्थान पर आठ अक्षर वाला पाद रख देंगे उसे 'लवली' छन्द कहेंगे और यदि चतुर्थ पाद के स्थान पर रख देंगे तो उसे 'अमृतधारा' छन्द कहेंगे ।

Meaning. Placing the first quarter of *pada-caturūrdhva* metre (8,12, 16, 20 syllables) at its second, third and fourth quarters, one gets respectively *mañjarī* (12,8, 16, 20 syllables), *lavalī* (12, 16, 8, 20 syllables) and *amṛtadhārā* (12, 16, 20, 8 syllables) metres. As regards the uniqueness of the position of numbers indicated in the brackets, only 8 occupies a unique position, and other may interchange their positions. For example, a *lavalī* metre may have respectively 16, 12, 8 and 20 syllables in its four quarters. See examples below. Further, there is no restriction on the occurrence of short and long syllables.

The literal meanings of these metres are:

Mañjarī — blossom, *Lavalī*— a kind of creeper, and *Amṛtadhārā* —flow of nectar.

The rule of short or long syllables is not applicable in these metres.

टिप्पणी- पाद विपर्यास के 3 भेद हैं -

(i) मंजरी छन्द- द्वितीय पाद में 8 अक्षर

(ii) लवली छन्द- तृतीय पाद में 8 अक्षर

(iii) अमृतधारा छन्द- चतुर्थ पाद में 8 अक्षर

अन्य पादों में कोई भी क्रम रख सकते हैं।

(i) **मंजरी** छन्द का उदाहरण (Example)- (12+8+16+20 अक्षर)

जनयति महतीं प्रीतिं हृदये (12 अक्षर)

कामिनां चूत-मञ्जरी । (8 अक्षर)

मिलदलि-चक्र-चञ्चु-परिचुम्बित-केसरा, (16 अक्षर)

कोमल-मलय-वात-परिनर्तित-तरु-शिरसि स्थिता ।। (20अक्षर)

(ii) **लवली** छन्द का उदाहरण (Example)- (16+12+8+20 अक्षर)

विरह-विधुर-हूणकाङ्गना-कपोलोपमं (16 अक्षर)

परिणति-धरं पीत-पाण्डु-च्छवि । (12 अक्षर)

लवली-फलं निदाघे, (8 अक्षर)

भवति जगति हिमकर-शीतलमतिस्वादूष्णहरम् ।।(20 अक्षर)

(iii) **अमृतधारा** छन्द का उदाहरण (Example)- (20+12+16+8 अक्षर)

यदि वाञ्छसि कर्ण-रसायनं सततममृतधाराभिः, (20 अक्षर)

यदि हृदि वा परमानन्द-रसम् । (12 अक्षर)

चेतः ! शृणु धरणी-धर-वाणीममृतमयीं (16 अक्षर)

तत्काव्य-गुण-भूषणम् ।। (8 अक्षर)

पद-चतुरूर्ध्व का अधिकार समाप्त।

This ends the discussion on *Pada-Caturūrdhva*.

विषमवृत्त का अधिकार प्रारम्भ

General discussion on *uneven* metres

विषम वृत्त में उद्‌गता का अधिकार

Discussion on *Udgatā* type *uneven* metres

उद्‌गतामेकतः स्‌जौ स्‌लौ, न्‌सौ ज्‌गौ,
भ्‌नौ ज्‌लौ ग्‌, स्‌जौ स्‌जौ गः ॥ 25 ॥

शब्दार्थ- जिस छन्द के **(क)** प्रथम पाद में **स्‌जौ स्‌लौ**- दस अक्षर इस क्रम से होते हैं- सगण (।।ऽ), जगण (।ऽ।), सगण (।।ऽ) और अन्त में एक लघु। **(ख)** द्वितीय पाद में **न्‌सौ ज्‌गौ**- दस अक्षर इस क्रम से होते हैं- नगण (।।।), सगण (।।ऽ), जगण (।ऽ।) और अन्त में एक गुरु अक्षर । **(ग)** तृतीय पाद में **भ्‌नौ ज्‌लौ ग्‌**- 11 अक्षर इस क्रम से होते हैं- भगण (ऽ।।), नगण (।।।), जगण (।ऽ।) और अन्त में 1 लघु और 1 गुरु अक्षर । **(घ)** चतुर्थ पाद में **स्‌जौ स्‌जौ ग्‌**- 13 अक्षर इस क्रम से होते हैं- सगण (।।ऽ), जगण (।ऽ।), सगण (।।ऽ), जगण (।ऽ।) और अन्त में एक गुरु अक्षर । इस विषम वृत्त को 'उद्‌गता' कहते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि उद्‌गता छन्द के प्रथम और द्वितीय पाद में 10-10 अक्षर होते हैं, तृतीय में 11 अक्षर और चतुर्थ पाद में 13 अक्षर होते हैं । सूत्र में **एकतः**- एक साथ, कहा गया है । इसका अभिप्राय यह है कि प्रथम और द्वितीय पादों को अलग-अलग न पढ़कर एक स्वर में ही एक साथ पढ़ें, विराम न दें ।

अर्थ- उद्‌गता छन्द के चारों पादों में अक्षरों की व्यवस्था इस प्रकार रहती है-

(क) प्रथमपाद- 10 अक्षर, सगण, जगण, सगण और 1 लघु अक्षर।

(ख) द्वितीय पाद- 10 अक्षर, नगण, सगण, जगण और 1 गुरु अक्षर।

(ग) तृतीय पाद- 11 अक्षर, भगण, नगण, जगण, 1 लघु और 1 गुरु अक्षर ।

(घ) चतुर्थ पाद- 13 अक्षर, सगण, जगण, सगण, जगण और 1 गुरु अक्षर।

Meaning. The four quarters of an *udgatā* metre have the following syllabic arrangements:

(i) *sagaṇa* (IIS), *jagaṇa* (ISI), *sagaṇa* and one short (I), (10 syllables); (ii) *nagaṇa* (III), *sagaṇa, jagaṇa* and one long (S), (10 syllables); (iii) *bhagaṇa* (SII), *nagaṇa, jagaṇa* and one short and one long, (11 syllables); (iv) *sagaṇa, jagaṇa, sagaṇa, jagaṇa* and one long (S), (13 syllables).

उद्गता छन्द का उदाहरण (Example) - (10, 10, 11,13 अक्षर)

स गण ज गण स गण ल (10 अक्षर)
I I S I S I I I S I
मृ ग लो च ना श शि मु खी च,
न गण स गण ज गण ग (10 अक्षर)
I I I I I S I S I S
रु चि र-द श ना नि त म्बि नी ।
भ गण न गण ज गण ल ग (11 अक्षर)
S I I I I I I S I I S
हं स-ल लि त-ग म ना ल ल ना,
स ग ण ज गण स ग ण ज गण ग (13 अक्षर)
I I S I S I I I S I S I S
प रि णी य ते य दि भ वेत् कु लो द्ग ता ।।

तृतीयस्य सौरभकं र्नौ भ्गौ ॥ 26 ॥

शब्दार्थ- (पूर्वसूत्र से 'उदगता' की अनुवृत्ति होती है ।) यदि उद्गता छन्द के ही, **तृतीयस्य**- तृतीय पाद में '**भनजलग**' के स्थान पर **र्नौ भ्गौ**- रगण (SIS), नगण (III), भगण (SII) और एक गुरु (S) अक्षर हो जाएँ, **सौरभकम्**- तो उसे 'सौरभक' नामक विषमवृत्त कहेंगे ।

अर्थ- यदि उद्गता छन्द के तृतीय पाद में रगण, नगण, भगण और 1 गुरु अक्षर हो जाएंगे तो उसे 'सौरभक' नामक विषमवृत्त कहेंगे ।

Meaning. The *saurabhaka* is an uneven metre. The same is essentially an *udgatā* with its third quarter replaced by the arrangement: *ragaṇa* (ऽ।ऽ), *nagaṇa* (।।।), *bhagaṇa* (ऽ।।) and one long (ऽ) (10 syllables in all).

सौरभक विषमवृत्त का उदाहरण (Example)-(10,10,10, 13 Syllables).

स गण जगण सगण ल (10 वर्ण)
। ।ऽ ।ऽ । ।।ऽ।
वि नि वा रि तो ऽपि न य ने न,
न ग ण स ग ण ज ग ण ग (10 वर्ण)
। । । । । ऽ ।ऽ । ऽ
त द पि कि मि हा ग तो भ वान् ? ।
र ग ण न ग ण भ ग ण ग (10 वर्ण)
ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ
ए त दे व त व सौ र भ कं,
स ग ण ज ग ण स ग ण ज ग ण ग (13 वर्ण)
। । ऽ । ऽ । । । ऽ । ऽ । ऽ
य दु दी रि ता र्थ म पि ना व बु ध्य ते ।।

ललितं नौ सौ ॥ 27 ॥

शब्दार्थ- (पूर्वसूत्रों से 'उद्गता' और 'तृतीयस्य' की अनुवृत्ति होती है।) यदि उद्गता छन्द के ही तृतीय पाद में, **नौ सौ**- क्रमशः 2 नगण (।।।, ।।।) और 2 सगण (।।ऽ, ।।ऽ) होते हैं, **ललितम्** - तो उसे 'ललित' नामक विषमवृत्त कहेंगे।

अर्थ- यदि उद्गता छन्द के तृतीय पाद में क्रमशः दो नगण और दो सगण होते हैं, तो उसे 'ललित' नामक विषमवृत्त कहेंगे ।

Meaning. *Lalita* is an uneven metre which is indeed the *udgatā* metre with its third quarter replaced by: 2 *nagaṇas* (।।।, ।।।) and 2 *sagaṇas* (।।ऽ, ।।ऽ).

ललित विषमवृत्त का उदाहरण (Example)- 10,10, 12, 13 Syllables.

स गण जगण नगण ल (10 अक्षर)

। ।ऽ ।ऽ। ।।ऽ ।

स ततप्रियंवदमुदा र-

न गण स गण जगण ग (10 अक्षर)

।।।।।ऽ। ऽ।ऽ

म मल-हृदयंगुणोत्तरम् ।

न गण नगण स गण स गण (12 अक्षर)

। । । । । । । ऽ । । ऽ

सुललितमतिकम नीय-तनुं,

स गण ज गण स गण जगण ग (13 अक्षर)

। । ऽ।ऽ । । । ऽ । ऽ । ऽ

पुरुषंत्यजन्ति न तु जातु योषितः ।।

विषमवृत्त में उद्गता का अधिकार समाप्त ।

(This ends the discussion on *Udgatā* and its variants.)

विषमवृत्त में 'उपस्थित प्रचुपित' का अधिकार प्रारम्भ ।
(Upasthita Pracupita metre and its variants.)

उपस्थित-प्रचुपितं पृथगाद्यं म्सौ ज्भौ गौ,
स्नौ ज्रौ ग् , नौ स् , नौ न् ज्यौ ॥ 28 ॥

शब्दार्थ- जिस छन्द के चारों पादों में अक्षरों की व्यवस्था निम्न प्रकार से होती है, **उपस्थित-प्रचुपितम्** - उसे उपस्थित-प्रचुपित विषमवृत्त कहते हैं-

(क) प्रथम पाद - **म्सौ ज्भौ गौ**- क्रमशः मगण (ऽऽऽ), सगण (।।ऽ), जगण (।ऽ।), भगण (ऽ।।) और 2 गुरु (ऽऽ) = 14 अक्षर ।

(ख) द्वितीय पाद- **स्नौ ज्रौ ग्** - क्रमशः सगण (।।ऽ), नगण (।।।), जगण (।ऽ।), रगण (ऽ।ऽ) और 1 गुरु (ऽ) = 13 अक्षर ।

(ग) तृतीय पाद- **नौ स्** - क्रमशः दो नगण (।।।, ।।।) और एक सगण (।।ऽ) = 9 अक्षर ।

(घ) चतुर्थ पाद- **नौ न् ज् यौ**- क्रमशः तीन नगण (।।।, ।।।, ।।।), जगण (।ऽ।), यगण (।ऽऽ) = 15 अक्षर ।

पृथग् आद्यम् - पाठ के समय प्रथम पाद को अलग पढ़ा जाए और शेष तीन पादों को इकट्ठा पढ़ा जाए ।

अर्थ- पूर्ववत् ।

Meaning. The *upasthita pracupita* is an uneven metre. Its four quarters have respectively the following syllabic arrangements: (i) *magaṇa, sagaṇa, jagaṇa. bhagaṇa* and two longs, (14 syllables); (ii) *sagaṇa, nagaṇa, ragaṇa* and one long, (13 syllables), (iii) 2 *nagaṇas, sagaṇa,* (9 syllables); and (iv) 3 *nagaṇas, jagaṇa, yagaṇa,* (15 syllables).

The first quarter should be read differently from the last three quarters which will be read together.

उपस्थित-प्रचुपित का उदाहरण (Example)- (14,13,9,15 अक्षर)

म ग ण स ग ण ज ग ण भ ग ण ग ग (14 अक्षर)

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ । । ऽऽ

रा मा का म-क रे णु का मृ गा य त-ने त्रा,

स ग ण नग ण ज ग ण र ग ण ग (13 अक्षर)

। । ऽ । । । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

हृ द यं ह र ति प यो ध रा ऽव न म्रा ।

न ग ण न ग ण स ग ण (9 अक्षर)

। । । । । । । । ऽ

इ य म ति श य-सु भ गा,

न ग ण न ग ण न ग ण ज ग ण य ग ण (15 अक्षर)

। । । । । । । । । । ऽ । । ऽ ऽ

ब हु वि ध-नि धु व न-कु श ला ल लि ता ङ्गी ।।

वर्धमानं नौ स्नौ न्सौ ॥ 29 ॥

शब्दार्थ- (पूर्वसूत्र 5.26 से 'तृतीयस्य ' की अनुवृत्ति होगी ।) ।

तृतीयस्य- यदि उपस्थित-प्रचुपित छन्द के तृतीय पाद में 'ननस' के स्थान पर,

नौ स्नौ न्सौ- दो नगण (।।।, ।।।), सगण (।।ऽ), दो नगण (।।।, ।।।) और एक सगण (।।ऽ) अर्थात् तीन गण के स्थान 6गण (18 अक्षर) रख दिए जाएं, **वर्धमानम्**- तो उसे 'वर्धमान' छन्द कहेंगे । शेष तीन पाद अर्थात् प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ पाद में 'उपस्थित-प्रचुपित' वाला लक्षण ही रहेगा ।

अर्थ- पूर्ववत् ।

Meaning. The *vardhamāna* metre is an *upasthita pracupita* with its third quarter replaced by the arrangemet: 2 *nagaṇas, sagaṇa,* 2 *nagaṇas, sagaṇa,* (18 syllables in all).

वर्धमान छन्द का उदाहरण (Example) - (14,13,18,15 अक्षर)

म ग ण स ग ण ज ग ण भ ग ण ग ग (14 अक्षर)

ऽ ऽ ऽ ।। ऽ । ऽ । ऽ । । ऽ ऽ

बि म्बो ष्ठी क ठि नो न्न त-स्त ना ऽव न ता ङ्गी,

स ग ण न ग ण ज ग ण र ग ण ग (13 अक्षर)

। । ऽ । । । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

ह रि णी-शि शु-न य ना नि त म्ब-गु र्वी ।

न ग ण न ग ण स ग ण न ग ण न ग ण स ग ण (18 अक्षर)

। । ।। । । । । । ऽ । । । । । । । । ऽ

म द-क ल-क रि-ग म ना प रि ण त-श शि-व द ना,

न ग ण न ग ण न ग ण ज ग ण य ग ण (15 अक्षर)

। । । । । । । । । । ऽ। । ऽ ऽ

ज न य ति म म म न सि मु दं म दि रा क्षी ।।

शुद्ध-विराड्-ऋषभं तजराः ॥ 30 ॥

शब्दार्थ- (यहां भी 'तृतीयस्य' की अनुवृत्ति होगी ।) **तृतीयस्य**- यदि 'उपस्थित-प्रचुपित' छन्द के तृतीय पाद में, **तजराः**- तगण (ऽऽ।), जगण (।ऽ।) और रगण (ऽ।ऽ) अर्थात् 9 अक्षर होंगे, **शुद्ध-विराड् -ऋषभम्** - तो उसे 'शुद्ध-विराड्-ऋषभ' छन्द कहेंगे । शेष तीन पाद 'उपस्थित-प्रचुपित' के तुल्य रहेंगे ।

अर्थ- पूर्ववत् ।

Meaning. The *śuddha-virāḍ-ṛṣabha* (शुद्ध -विराड्-ऋषभ) metre is an *upasthita-pracupita* with its third quarter replaced by the arrangement: *tagaṇa, jagaṇa, ragaṇa* (9 syllables in all).

शुद्ध-विराड्-ऋषभ छन्द का उदाहरण (Example) - (14, 13, 9, 15 अक्षर)

म ग णसगण ज गण भगणग ग (14 अक्षर)

S S S I I S I S I S I I S S

क न्ये यं क न को ज्ज्व ला म नो ह र-दी प्तिः,

स ग ण न ग ण ज ग ण र ग ण ग (13 अक्षर)

I I S I I I I S I S I S S

श शि-नि र्म ल-व द ना वि शा ल-ने त्रा ।

त गण ज गण र ग ण (9 अक्षर)

S S I I S I S I S

पी नो रु-नि त म्ब-शा लि नी,

न गण न गण न गण ज गण य ग ण (15 अक्षर)

I I I I I I I I I S I I S S

सु ख य ति हृ द य म ति श यं त रु णा नाम् ।।

उपस्थित-प्रचुपित का अधिकार समाप्त । (This ends the discussion on *Upasthita Pracupita* type metres.)

अर्ध-सम-वृत्त का अधिकार प्रारम्भ (Discussion on *Half-Even* metres)

अर्धे ॥ 31 ॥

शब्दार्थ- अर्धे- आधे में समानता हो । इसका अभिप्राय यह है कि प्रथम और तृतीय पाद में समान-रूपता होगी और दूसरे एवं चतुर्थ पाद में समानता होगी । इस प्रकार आधे में अर्थात् पूर्वार्ध और उत्तरार्ध में समानता होगी। अतएव इन्हें अर्ध-सम-वृत्त कहते हैं । इस सूत्र का अधिकार पंचम अध्याय की समाप्ति तक है ।

Meaning. *Half-even* metres have the same syllabic arrangemets in alternate quarters, that is, their first and third quarters have the same arrangements, while their second and fourth quarters are alike in syllabic arrangements.

उपचित्रकं सौ स्लौ ग् , भौ भ्गौ ग् ॥ 32 ॥

शब्दार्थ- सौ स्लौ ग्- जिस छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में क्रमशः तीन सगण (।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ), एक लघु और एक गुरु अक्षर हो, **भौ भगौ ग्**- एवं द्वितीय और चतुर्थ पाद में क्रमशः तीन भगण (ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।) और अन्त में 2 गुरु अक्षर हों, **उपचित्रकम्**- उसे 'उपचित्रक' छन्द कहते हैं।

अर्थ- जिस छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में क्रमशः 3 सगण, 1 लघु और 1 गुरु अक्षर हों तथा द्वितीय और चतुर्थ पाद में क्रमशः 3 भगण और 2 गुरु अक्षर हों, उसे 'उपचित्रक' छन्द कहते हैं ।

Meaning. The *upacitraka* is a half-even metre, and first and second quarters have respectively the following syllabic arrangements: (i) 3 *sagaṇas* (IIऽ, IIऽ, IIऽ), one short (I) and one long (s), (11 syllables); and (ii) 3 *bhagaṇas* (ऽII, ऽII, ऽII) and two longs (ऽऽ), (11 syllables). (Recall that the first and third quarters are alike, while the second and fourth are alike in syllabic arrangement.)

उपचित्रक छन्द का उदाहरण (Example)- (11,11,11,11 अक्षर)

स स स ल ग भ भ भ ग ग

। । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ

उ प चि त्र क म त्र वि रा ज ते, चू त-व न कु सु मै र्वि क स द्भिः।
प र पु ष्ट- वि घु ष्ट-म नो ह रं, म न्म थ-के लि-नि के त न मे तत् ।।

द्रुतमध्या भौ भ्गौ ग्, न्जौ ज्यौ ॥ 33 ॥

शब्दार्थ- भौ भ्गौ ग् - जिस छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में क्रमशः तीन भगण- (ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।) और 2 गुरु (ऽऽ) हों, **न्जौ ज्यौ**- तथा द्वितीय और चतुर्थ पाद में क्रमशः नगण (।।।), 2 जगण (।ऽ।, ।ऽ।) और यगण (।ऽऽ) हों, **द्रुतमध्या**- उसे 'द्रुतमध्या' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- द्रुतमध्या छन्द की वर्णयोजना यह है-

(क) प्रथम और तृतीय पाद- 3 भगण और 2 गुरु (11 वर्ण)

(ख) द्वितीय और चतुर्थ पाद- 1 नगण, 2 जगण और 1 यगण (12 वर्ण)

Meaning. The *drutamadhyā* is a half-even metre, and its first and second quarters have respectively the following syllabic arrangements: (i) 3 *bhagaṇas*, 2 longs, and (ii) *nagaṇa*, 2 *jagaṇas*, *yagaṇa*.

द्रुतमध्या छन्द का उदाहरण (Example)- (11,12, 11,12 अक्षर)

भ भ भ ग र्ग न ज ज य

S I I S I I S I I S S I I I I S I I S I I S S

य द्य पि शी घ्र ग ति मृ दु गा मी, ब हु-ध न वा न पि दुः ख मु पै ति।
नातिशय-त्वरिता न च मृद्वी, नृपति-गतिः कथिता द्रुतमध्या ।।

वेगवती सौ स्गौ, भौ भ्गौ ग् ॥ 34 ॥

शब्दार्थ- सौ स्गौ- जिस छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में क्रमशः तीन सगण (IIS, IIS, IIS) और एक गुरु वर्ण (S) होता है, **भौ भ्गौ ग्** - तथा द्वितीय और चतुर्थ पाद में क्रमशः तीन भगण (SII, SII, SII) और दो गुरु वर्ण (SS) होते हैं, **वेगवती**- उसे 'वेगवती' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- 'वेगवती' छन्द में यह योजना होती हैः-

(क) प्रथम एवं तृतीय पाद- तीन सगण, एक गुरु- (10 वर्ण)

(ख) द्वितीय एवं चतुर्थ पाद- तीन भगण, दो गुरु- (11 वर्ण)

Meaning. The *vegvatī* is a half-even metre, and its first and second quarters have respectively the following syllabic arrangements:

(i) 3 *sagaṇas* (IIS, IIS, IIS), one long (S), (10 syllables);

(ii) 3 *bhagaṇas* (SII, SII, SII), two longs (SS), (11 syllables).

वेगवती छन्द का उदाहरण (Example)- (10, 11, 10, 11 अक्षर)

स स स ग भ भ भ ग ग

। । ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ

त व मु ञ्ज न रा धि प से नां, वे ग व तीं स ह ते स म रे षु ।

प्रलयोर्मिमिवाभिमुखीं तां, कः सकल-क्षितिभृन्निवहेषु ? ।।

भद्रविराट् त्जौ र्गौ, म्सौ ज्गौ ग् ॥ 35 ॥

शब्दार्थ- त्जौ र्गौ- जिस छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में क्रमशः तगण (ऽऽ।), जगण (।ऽ।), रगण (ऽ।ऽ) और एक गुरु वर्ण (ऽ) होता है, **म्सौ जगौ ग्**- तथा द्वितीय और चतुर्थ पाद में क्रमशः मगण (ऽऽऽ), सगण (।।ऽ), जगण (।ऽ।) और दो गुरु वर्ण (ऽऽ) होते हैं, **भद्रविराट्**- उसे 'भद्रविराट्' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- 'भद्रविराट्' छन्द में यह योजना होती हैः-

(क) प्रथम एवं तृतीय पाद- तगण, जगण, रगण, 1 गुरु- (10 वर्ण)

(ख) द्वितीय एवं चतुर्थ पाद- मगण, सगण, जगण, 2 गुरु- (11 वर्ण)

Meaning. The *bhadra virāt* is a half-even metre, and its first and second quarters have respectively the following syllabic arrangements:

(i) *tagaṇa* (ऽऽ।), *jagaṇa* (।ऽ।), *ragaṇa* (ऽ।ऽ), one long (ऽ), (10 syllables); (ii) *magaṇa* (ऽऽऽ), *sagaṇa* (।।ऽ), *sagaṇa* (।ऽ।), 2 longs (ऽऽ), (11 syllables).

भद्रविराट् छन्द का उदाहरण (Example)- (10,11,10,11 अक्षर)

त ज र ग म स ज ग ग

ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

य त्या द-त ले च का स्ति च क्रं, ह स्ते वा कु लि शं स रो रु हं वा ।

राजा जगदेक-चक्रवर्ती, स्याच्छं भद्रविराट् समश्नुतेऽसौ ।।

केतुमती स्जौ स्गौ, भ्रौ न्गौ ग् ॥ 36 ॥

शब्दार्थ- स् जौ स् गौ- जिस छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में क्रमशः सगण (।।ऽ), जगण (।ऽ।), सगण (।।ऽ) और 1 गुरु (ऽ) होते हैं, **भ् रौ न् गौ ग्**- तथा द्वितीय और चतुर्थ पाद में क्रमशः भगण (ऽ।।), रगण (ऽ।ऽ), नगण (।।।) और 2 गुरु वर्ण होते हैं, **केतुमती**- उसे 'केतुमती' छन्द कहते हैं।

अर्थ- 'केतुमती' छन्द में यह योजना होती है:-

(क) प्रथम एवं तृतीय पाद- सगण, जगण, सगण, 1 गुरु, (10 वर्ण)

(ख) द्वितीय एवं चतुर्थ पाद- भगण, रगण, नगण, 2 गुरु, (11 वर्ण)

Meaning. The *ketumatī* is a half-even metre, and its first and second quarters have respectively the following syllabic arrangements:

(i) *sagaṇa* (।।ऽ), *jagaṇa* (।ऽ।), *sagaṇa* (।।ऽ), one long (ऽ), (10 syllables); and (ii) *bhagaṇa* (ऽ।।), *ragaṇa* (ऽ।ऽ), *nagaṇa* (।।।), 2 longs, (11syllables).

केतुमती छन्द का उदाहरण (Example)- (10,11,10,11 अक्षर)

स ज स ग भ र न ग ग

। । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ

ह त-भू रि-भू मि प ति-चि ह्नां, यु द्ध-स ह स्र-ल ब्ध-ज य-ल क्ष्मीम्।
सहते न कोऽपि वसुधायां, केतुमतीं नरेन्द्र ! तव सेनाम् ।।

आख्यानकी तौ जगौ ग्, जतौ जगौ ग् ॥ 37 ॥

शब्दार्थ- तौ जगौ ग् - जिस छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में क्रमशः 2 तगण (ऽऽ।, ऽऽ।), 1 जगण (।ऽ।) और 2 गुरु (ऽऽ) होते हैं, **जतौ जगौ ग्** -तथा द्वितीय और चतुर्थ पाद में क्रमशः जगण (।ऽ।), तगण (ऽऽ।), जगण (।ऽ।) और 2 गुरु (ऽऽ) होते हैं, **आख्यानकी**- उस छन्द को 'आख्यानकी' कहते हैं ।

अर्थ- 'आख्यानकी' छन्द में यह योजना होती है:-

(क) प्रथम एवं तृतीय पाद- 2 तगण, 1 जगण और 2 गुरु, (11 वर्ण)

(ख) द्वितीय एवं चतुर्थ पाद- 1 जगण, 1 तगण, 1 जगण और 2 गुरु, (11 वर्ण)

Meaning. The *ākhyānakī* is a half-even metre, and its odd and even quarters have respectively the following syllabic arrangements:

(i) 2 *tagaṇas* (ऽऽ।, ऽऽ।), *jagaṇa* (।ऽ।), 2 longs, (11 syllables); and (ii) *jagaṇa* (।ऽ।), *tagaṇa* (ऽऽ।), *jagaṇa* (।ऽ।), 2 longs, (11syllables).

आख्यानकी छन्द का उदाहरण (Example)- (11x4 अक्षर)

त त ज ग ग ज त ज ग ग
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ
भृ ङ्गा व ली मङ् ग ल-गी त-ना दै-र्ज न स्य चि त्ते मु द मा द धा ति।
आख्यानकीव स्मर-जन्म-वार्ता-महोत्सवस्याम्र-वणे क्वणन्ती ।।

Notice that, in this example of half-even metres, odd and even *pādas* have the same number of syllables with different syllabic arrangements. This remark applies to the following metre as well.

विपरीताख्यानकी ज्तौ जगौ ग्, तौ ज्गौ ग् ॥ 38 ॥

शब्दार्थ- ज्तौ ज्गौ ग्- जिस छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में क्रमशः 1 जगण (।ऽ।), 1 तगण (ऽऽ।), 1 जगण (।ऽ।) और 2 गुरु (ऽऽ) होते हैं, **तौ ज्गौ ग्** - तथा द्वितीय और चतुर्थ पाद में क्रमशः 2 तगण (ऽऽ।, ऽऽ।), 1 जगण (।ऽ।) और 2 गुरु (ऽऽ) होते हैं, **विपरीताख्यानकी**- उसे 'विपरीताख्यानकी' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- वस्तुतः, पूर्व कथित आख्यानकी छंद के विपर्यय से विपरीताख्यानकी छंद प्राप्त होता है तथा इस छन्द की योजना यह होती है :-

(क) प्रथम एवं तृतीय पाद- 1 जगण, 1 तगण, 1 जगण, 2 गुरु, (11 वर्ण)

(ख) द्वितीय एवं चतुर्थ पाद- 2 तगण, 1 जगण, 2 गुरु, (11 वर्ण)

Meaning. The *viparītākhyānakī* (opposite of *ākhyānakī)* metre is obtained by interchanging the quarters of *ākhyānakī*. So, its odd and even quarters will have respectively the following syllabic arrangements:

(i) *jagaṇa, tagaṇa, jagaṇa,* 2 longs, (11syllables) ; and (ii) 2 *tagaṇas, jagaṇa* 2 longs, (11 syllables).

विपरीताख्यानकी छन्द का उदाहरण (Example)- (11, 11, 11, 11 अक्षर)

ज त ज ग ग त त ज ग ग

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

अ लं त वा ली क-व चो भि रे भिः, स्वा र्थ प्रि ये ! सा ध य का र्य म न्यत्।

कथं कथाऽऽकर्णन-कौतुकं स्याद्, आख्यानकी चेद् विपरीत-वृत्तिः ।

हरिणप्लुता सौ स्लौ ग् , न्भौ भ्रौ ॥ 39 ॥

शब्दार्थ- सौ स्लौ ग् - जिस छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में क्रमशः 3 सगण (।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ), 1 लघु (।) और 1 गुरु (ऽ) होते हैं, **न्भौ भ्रौ-** तथा द्वितीय और चतुर्थ पाद में क्रमशः 1 नगण (।।।), 2 भगण (ऽ।।, ऽ।।) और 1 रगण (ऽ।ऽ) होते हैं, **हरिणप्लुता-** उसे 'हरिणप्लुता' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- हरिणप्लुता छन्द की योजना यह होती है:-

(क) विषम पाद- 3 सगण, 1 लघु, 1 गुरु, (11 वर्ण)

(ख) सम पाद- 1 नगण, 2 भगण, 1 रगण (12 वर्ण)

Meaning. Odd and even quarters of the *hariṇaplutā* metre have respectively the following syllabic arrangements:

(i) 3 *sagaṇas* (।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ), one short (I), one long (ऽ), (11 syllables); and

(ii) *nagaṇa* (।।।), 2 *bhagaṇas* (ऽ।।, ऽ।।), *ragaṇa* (ऽ।ऽ), (12 syllables).

हरिणप्लुता छन्द का उदाहरण (Example)- 11,12,11,12 अक्षर)

स स स लग न भ भ र

।। ऽ । । ऽ।। ऽ ।ऽ ।। ।ऽ।। ऽ। ।ऽ। ऽ

तव मुञ्ज नराधिप ! विद्विषां, भय-विवर्जित-केतु-लघीयसाम् ।

रणभूमि-पराङ्मुख-वर्त्मनां, भवति शीघ्रगतिर्हरिणप्लुता ।।

अपरवक्त्रं नौ रलौ ग्, न्जौ ज्रौ ॥ 40 ॥

शब्दार्थ- नौ रलौ ग् - जिस छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में क्रमशः दो नगण (।।।, ।।।), 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 लघु और 1 गुरु होते हैं, **न्जौ जरौ-** तथा द्वितीय और चतुर्थ पाद में 1 नगण (।।।), 2 जगण (।ऽ।, ।ऽ।) और 1 रगण (ऽ।ऽ) होते हैं, **अपरवक्त्रम्** - उसे 'अपरवक्त्र' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- अपरवक्त्र छन्द की योजना यह है-

(क) विषम पाद- 2 नगण, 1 रगण, 1 लघु, 1 गुरु, (11 वर्ण)

(ख) सम पाद- 1 नगण, 2 जगण, 1 रगण, (12 वर्ण)

Meaning. Odd and even quarters of the *aparavaktra* (अपरवक्त्र) metre have respectively the following syllabic arrangements:

(i) 2 *nagaṇas* (।।।, ।।।), *ragaṇa* (ऽ।ऽ), one short (।) one long (ऽ), (11 syllables); and (ii) *nagaṇa* (।।।), 2 *jagaṇas* (।ऽ।, ।ऽ।), *ragaṇa* (ऽ।ऽ), (12 syllables).

अपरवक्त्र छन्द का उदाहरण (Example)- (11,12,11,12अक्षर)

न न र ल ग न ज ज र

। ।।। ।।।ऽ।ऽ। ऽ ।।।। ऽ ।। ऽ ।ऽ।ऽ

स कृ द पि कृ प णे न च क्षु षा, न र व र ! प श्य ति य स्त वा न नम्।
न पुनरपरवक्त्रमीक्षते, स हि सुखितोऽर्थिजनस्तथाविधः ।।

पुष्पिताग्रा नौ र्यौ, न्जौ ज्रौ ग् ॥ 41 ॥

शब्दार्थ- नौ र्यौ- जिस छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में क्रमशः 2 नगण (।।।, ।।।), 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 यगण (।ऽऽ) होते हैं । **न्जौ ज्रौ ग्**- तथा द्वितीय और चतुर्थ पाद में क्रमशः 1 नगण (।।।), 2 जगण (।ऽ।, ।ऽ।), 1 रगण (ऽ।ऽ) और 1 गुरु (ऽ) होते हैं, **पुष्पिताग्रा**- उसे 'पुष्पिताग्रा' छन्द कहते हैं।

अर्थ- पुष्पिताग्रा छन्द की योजना यह हैः-

(क) विषम पाद- 2 नगण, 1 रगण, 1 यगण, (12 वर्ण)

(ख) सम पाद- 1 नगण, 2 जगण, 1 रगण, 1 गुरु, (13 वर्ण)

Meaning. Odd and even quarters of the *puṣpitāgrā* metre have respectively the following syllabic arrangements:

(i) 2 *nagaṇas* (।।।, ।।।), *ragaṇa* (ऽ।ऽ), *yagaṇa* (।ऽऽ), (12 syllables)

(ii) *nagaṇas* (।।।), 2 *jagaṇas* (।ऽ।, ।ऽ।), *ragaṇa* (ऽ।ऽ), one long (ऽ), (13 syllables).

पुष्पिताग्रा छन्द का उदाहरण (Example)-(12,13,12,13 वर्ण)

न न र य न ज ज र ग

। । । । । । । । ऽ । ऽ।ऽ ऽ ।।। ।ऽ । । ऽ। ऽ । ऽ ऽ

सम-सित-दशना मृगायताक्षी, स्मित-सुभगा प्रियवादिनी विदग्धा।
अपहरति नृणां मनांसि रामा, भ्रमर-कुलानि लतेव पुष्पिताग्रा।।

यवमती र्जौ र्जौ, ज्रौ ज्रौ ग् ॥ 42 ॥

शब्दार्थ- र्जौ र्जौ- जिस छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में क्रमशः 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 जगण (।ऽ।), 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 जगण (।ऽ।) होते हैं, **ज्रौ ज्रौ ग्**- तथा द्वितीय और चतुर्थ पाद में क्रमशः 1 जगण (।ऽ।), 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 जगण (।ऽ।), 1 रगण (ऽ।ऽ) और 1 गुरु (ऽ) होते हैं, **यवमती**- उसे 'यवमती' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- यवमती छन्द की योजना यह हैः-

(क) प्रथम एवं तृतीय पाद- 1 रगण, 1 जगण, 1 रगण, 1 जगण, (12 वर्ण)

(ख) द्वितीय एवं चतुर्थ पाद- 1 जगण, 1 रगण, 1 जगण, 1 रगण, 1 गुरु, (13 वर्ण)

Meaning. Odd and even quarters of the *yavamatī* metre have respectively the following syllabic arrangements:

(i) *ragaṇa* (ऽ।ऽ), *jagaṇa* (।ऽ।), *ragaṇa* (ऽ।ऽ), *jagaṇa* (।ऽ।), (12 syllables);

(ii) *jagaṇa* (।ऽ।), *ragaṇa* (ऽ।ऽ), *jagaṇa* (।ऽ।), *ragaṇa* (ऽ।ऽ), one long (ऽ), (13 syllables).

यवमती छन्द का उदाहरण (Example)- (12,13, 12, 13 वर्ण)

र ज र ज ज र ज र ग

ऽ । ऽ । ऽ ।ऽ ।ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ।ऽ । ऽ ऽ

पद् मकं तु कोमले करे विभाति, प्रशस्त-मत्स्य-लाञ्छनं पदे च यस्याः।
सा यवान्विता भवेद् धनाधिका च, समस्त-बन्धु-पूजिता प्रिया च पत्युः।।

शिखैकोनत्रिंशदेकत्रिंशदन्ते ग् ॥ 43 ॥

शब्दार्थ- एकोनत्रिंशत् - जिस छन्द के प्रथम और तृतीय पाद में 29 अक्षर हो, **एकत्रिंशत्** - तथा द्वितीय और चतुर्थ पाद में 31 अक्षर हो, **अन्ते ग्**- तथा चारों पादों में अन्तिम वर्ण गुरु (ऽ) हो, **शिखा**- उसे 'शिखा' छन्द कहते हैं । शेष सभी वर्ण लघु होंगे ।

अर्थ- शिखा छन्द की योजना यह है :-

(क) विषम पाद- 29 अक्षर, अन्तिम अक्षर गुरु, (29 वर्ण)

(ख) सम पाद- 31 अक्षर, अन्तिम अक्षर गुरु, (31 वर्ण)

Meaning. The *śikhā* metre has respectively 29 and 31 syllables in its odd and even quarters with the condition that the last syllables in each case is long. (Since the last syllable in each of the four quarters is long, it is expected that all other syllables will be short.)

शिखा छन्द का उदाहरण (Example)- (29, 31, 29, 31 वर्ण)

अभिमत-बकुल-कुसुम-घन-परिमल-

ग

मिलदलि-मुखरित-हरिति मधौ, (29 वर्ण)

सहचर-मलय-पवन-रय-तरलित-

ग

सरसिज-रजसि. शय-तरणि-वितते । (31 वर्ण)

विकसित-विविध-कुसुम-सुलभ-सुरभि-शर-

ग

मदन-निहत-सकल-जने, (29 वर्ण)

ज्वलयति मम हृदयमविरतमिह सुतनु !

ग

तव विरह-दहन-विषम-शिखा ।। (31 वर्ण)

खञ्जा महत्ययुजीति ॥ 44 ॥

शब्दार्थ- अयुजि- अयुज् अर्थात् विषम पादों (1, 3) में, **महती**- बड़ी संख्या अर्थात् 31 अक्षर हों और युज् अर्थात् सम पादों (2, 4) में छोटी

संख्या 29 अक्षर हों, **खञ्जा**- तो उसे 'खंजा'- छन्द कहते हैं । पूर्ववत् चारों पादों में अन्तिम वर्ण गुरु (ऽ) होगा तथा शेष सभी वर्ण लघु (।) होंगे । **इति**- 'इति' शब्द अध्याय की समाप्ति का सूचक है ।

अर्थ- खंजा छन्द की योजना यह है:-

(क) विषम पाद- 31 वर्ण, अन्तिम वर्ण गुरु ।

(ख) सम पाद- 29 गुरु, अन्तिम वर्ण गुरु ।

Meaning. The *khañja* metre has respectively 31 and 29 syllables in its odd and even quarters with the condition that the last syllable in each quarter is long, (and all other syllables are short).

खंजा छन्द का उदाहरण (Example) - (31, 29, 31, 29 वर्ण)

अपगत-घन-विशद-दश-दिशि हृत-जन-दृशि

ग

परिणत-कण-कपिल-कलभे, (31 अक्षर)

प्रविकसदसम-कुसुम-घन-परिमल-

ग

सुरभित-मरुति शरदि समये । (29 अक्षर)

शुचि-शशि-महसि विवृत-सरसिरुहि

ग

मुदित-मधुलिहि विमलित-धरणि-तले, (31 अक्षर)

किमपरमिह कमलमुखि ! सुखमनुभवति

ग

मम हृदय-कमलमधुना ।। (29 अक्षर)

अर्धसमवृत्त का अधिकार समाप्त ।

(This ends the discussion on Half-even *Vṛttas.*)

***

पञ्चमोऽध्यायः समाप्तः ।

(End of the fifth Chapter.)

षष्ठोऽध्यायः
CHAPTER VI

समवृत्त छन्दों का अधिकार प्रारम्भ
EVEN *VṚTTAS*

यतिर्विच्छेदः ॥ 1 ॥

शब्दार्थ- विच्छेदः - पाठ के समय श्लोक के पाद को आवश्यकतानुसार स्वल्प विश्राम के लिए जो तोड़ा जाता है, **यतिः** - उसे 'यति' कहते हैं । यति स्वल्प विराम या विश्राम है । श्लोकों के पाठ में, विशेषतः लम्बे छन्दों में, बीच-बीच में थोड़ा विश्राम या विराम की आवश्यकता होती है, उसे यति कहते हैं । इसको इंग्लिश् में Pause या Caesura कहते हैं । छन्दों के लक्षणों के साथ इसका निर्देश किया जाता है कि कितने-कितने वर्णों पर यति होती है । पाठ के समय निर्दिष्ट स्थानों पर यति या स्वल्प विराम करना चाहिए । इसके लिए कुछ पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है । जैसे-

4 के लिए समुद्र, 5 के लिए इन्द्रिय, 6 के लिए रस, 7 के लिए ऋषि या मुनि, 8 के लिए वसु आदि ।

यति का अधिकार सप्तम अध्याय की समाप्ति तक है ।

अर्थ- श्लोक आदि के पाठ के समय बीच में जो स्वल्प विराम या विश्राम किया जाता है, उसे 'यति' कहते हैं। आगे लक्षणों के साथ इसका भी निर्देश किया गया है ।

Meaning. Wherever a short rest, pause or stop is needed, while chanting or singing Sanskrit verses, the same is called *yati*. (यति).

The metrical pause is of two types- harmonic and sentencial. The harmonic pause, technically called caesura, occurs after a few particular syllables within the poetical line of a verse. As regards the number of pauses within a *pāda* or poetic line, it depends on its length. *Piṅgala* has given valuable guidelines in this connection.

A sentencial pause occurs at the end of a hemistich, that is at the middle of a verse and again at the end. The pause or rest at the end of the hemistich is marked by a single vertical line (I), and it is called half-pause. The full pause or stop at the end of the verse is indicated by two vertical lines (II). Sometimes, a pause is also indicated by a comma. However, in many cases, pauses are not indicated and one has to decide according to the need of singing and *Piṅgala's* guidelines. Pause at an in-appropriate place is termed as *yati bhaṅga* (break down of pause or improper pause).

टिप्पणी- यति के विषय में कुछ निर्देश ये हैं-

यतिः सर्वत्र पादान्ते, श्लोकार्धे तु विशेषतः ।
समुद्रादि-पदान्ते च, व्यक्ताव्यक्त-विभक्तिके ।।1।।
क्वचित्तु पदमध्येऽपि, समुद्रादौ यतिर्भवेत् ।
यदि पूर्वापरौ भागौ, न स्यातामेकवर्णकौ ।।2।।
पूर्वान्तिवत् स्वरः संधौ, क्वचिदेद परादिवत् ।
द्रष्टव्यो यति-चिन्तायां, यणादेशः परादिवत् ।।3।।
नित्यं प्राक् पदसंबन्धा-श्चादयः प्राक्पदान्तवत् ।
परेण नित्यसंबन्धाः, प्रादयश्च परादिवत् ।।4।।

1. यतिः सर्वत्र पादान्ते- प्रत्येक पाद के अन्त में सर्वत्र 'यति' होती है, अर्थात् पाद की समाप्ति पर स्वल्प विराम करना चाहिए । जैसे-

'विशुद्धज्ञान-देहाय' में पाद के अन्तिम अक्षर य पर विराम है ।

2. श्लोकार्धे तु विशेषतः - श्लोक के आधे भाग पर अर्थात् पूर्वार्ध और उत्तरार्ध पर अवश्य 'यति' (विराम) करें । इसका अभिप्राय यह है कि पूर्वार्ध पर कोई सन्धि-कार्य न करें। पूर्वार्ध और उत्तरार्ध स्वतंत्र रहें। जैसे-

नमस्यामि सदोद्भूतम् -इन्धनीकृत-मन्मथम् ।
ईश्वराख्यं परं ज्योति-रज्ञान-तिमिरापहम् ।।

यहाँ पूर्वार्ध और उत्तरार्ध में यति है । कोई संधि नहीं हुई है ।

3. समुद्रादि-पदान्ते च, व्यक्ताव्यक्त-विभक्तिके- समुद्र का अर्थ है- 4 । 4, 6, 7 आदि अक्षरों पर यति होती है । कहीं पर विभक्तियाँ स्पष्टरूप

से विद्यमान होंगी या वहीं पर समास आदि के कारण विभक्ति लुप्त या अव्यक्त होगी। जैसे-

(क) यक्षश्चक्रे जनक-तनया-स्नान-पुण्योदकेषु ।

यहाँ 'यक्षश्चक्रे' चार अक्षरों के बाद यति है ।

(ख) वशीकृत-जगत्कालं, कण्ठेकालं नमाम्यहम् ।

यहाँ चार अक्षर 'वशीकृत' के बाद यति है और समास के कारण विभक्ति का लोप है ।

4. क्वचित्तु पदमध्येऽपि, समुद्रादौ यतिर्भवेत् ।

कहीं-कहीं पर पद को बीच में तोड़कर 4, 6 आदि अक्षरों पर यति होती है । जैसे- **पर्याप्तं तप्तचामी-कर-कटक-तटे, शिलष्ट-शीतेतरांशौ ।**

यहाँ पर चामीकर शब्द को तोड़कर 'पर्याप्तं तप्तचामी0' चामी पर 7 अक्षर हो जाने के कारण यति है । शब्द के एक अक्षर को तोड़कर यति नहीं करनी चाहिए।

5. पूर्वान्तवत् स्वरः सन्धौ, क्वचिदेव परादिवत्- यदि कहीं पर पूर्व और पर को लेकर एकादेश-संधि है, वह कहीं पर पूर्व के साथ मानी जाती है, कहीं पर बाद वाले के साथ । जैसे- सवर्ण दीर्घ संधि दो अ या आ को मिलाकर होती है । गुण संधि भी दो अक्षरों को मिलाकर होती है। जैसे-

स्यादस्थानो-पगत-यमुना-संगमेवाभिरामा ।

यहाँ पर अस्थान + उपगत = अस्थानोपगत0 में गुणसंधि है । 4 अक्षर पर यति है, अतः अस्थानो0 पर यति है । यह पूर्वान्तवद् भाव का उदाहरण है ।

परादिवद्भाव का उदाहरण है-

स्कन्धं विन्ध्याद्रि-बुद्ध्या,

निकषति महिष-स्याहितोऽसूनहार्षीत् ।।

महिषस्याहितो में दीर्घ सन्धि है । वह 7 अक्षर पर यति के कारण महिष पर यति है और स्या का आगे के साथ संबन्ध है ।

6. यणादेशः परादिवत् ।

जहाँ पर यण् सन्धि है । उसे अगले पद का प्रारम्भिक अक्षर समझें । यति उससे पहले अक्षर पर होगी । जैसे-

वितत-घन-तुषार-क्षोद-शुभ्रांशु-पूर्वा-

स्वविरल-पद-मालां श्यामलामुल्लिखन्तः ।

इसमें पूर्वासु+अविरल में यण् सन्धि है, अतः 'स्व' को अगले पद के साथ पढ़ा जाएगा ।

7. नित्यं प्राक्पद-सम्बन्धाश्चादयः प्राक्पदान्तवत् ।

जहाँ पर च, वा, नु आदि अव्यय हैं, उनका संबन्ध पहले पद के साथ है, अतः 'च' आदि से पहले यति न करें । च के बाद यति होगी । जैसे-

स्वादु स्वच्छं च हिम-सलिलं प्रीतये कस्य न स्यात् ।

यहाँ 'च' से पहले 'स्वच्छं' पर यति नहीं होगी ।

8. परेण-नित्य-सबन्धाः प्रादयश्च परादिवत् ।

प्र परा आदि उपसर्गों का संबन्ध अगले पद के साथ होता है, अतः प्र परा आदि उपसर्गों के बाद यति न करें । जैसे- प्रहरति में प्र के बाद यति नहीं होगी।

दुःखं मे प्र-क्षिपति हृदये दुःसहस्त्वद्वियोगः ।।

यहाँ 'प्रक्षिपति' में प्र के बाद यति नहीं करनी चाहिए ।

छः अक्षर प्रतिपाद वाला गायत्री छन्द

Gāyatrī metres with 6 syllables per quarter

तनुमध्या त्यौ ॥ 2 ॥

शब्दार्थ- त्यौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः तगण (ऽऽ।) और यगण (।ऽऽ) होते हैं, **तनुमध्या**- उसे 'तनुमध्या' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- तनुमध्या छन्द की योजना यह है -

एक से चार पाद- क्रमशः तगण और यगण (6 अक्षर) । पादान्त में यति होगी जैसा कि छः वर्णों के बाद निम्न उदाहरण में कामा (,) या अर्ध विराम (।) या विराम (।।) दिया गया है । किन्तु जहाँ यति के संकेत या निर्देश नहीं दिए गए हैं वहाँ गायक को यति निर्धारण स्वयं करना होता है । ऐसी स्थिति में यति संबंधी पिंगल के निर्देश बहुत उपयोगी हैं । उचित स्थान पर यति न करने से यति भङ्ग होता है ।

छः वर्णों के कुल 64 समवृत्तों में तनुमध्या वृत्त का 13वाँ स्थान है । वस्तुतः पिंगल ने द्विआधारी संख्याओं (binary numbers) के लिए गुरु (ऽ) व लघु (।) का प्रयोग किया है तथा द्विआधारी संख्या पद्धति के आधार पर ही समवृत्तों के स्थान का निर्धारण किया जाता है । यदि गुरु (ऽ) को शून्य (0) लें तथा लघु (।) को एक (1) लें तो पिंगल द्वारा द्विआधारी संख्याओं का क्रम

दाशमिक संख्याओं के अनुसार 0 से आरम्भ होता है । वस्तुतः कम्प्यूटर विज्ञान में प्रचलित द्विआधारी संख्याओं को दाशमिक में बदलने का ही नियम पिंगल ने दिया है, अंतर केवल इतना है कि पिंगल के द्विआधारी संख्याओं की गणना शून्य (0) से आरम्भ होती है जबकि दशमिक प्रणाली में प्रचलित प्राकृतिक संख्याओं की गणना एक (1) से प्रारम्भ होती है । इसके अतिरिक्त पिंगल द्विआधारी संख्याओं एवं कम्प्यूटर विज्ञान में प्रचलित वर्तमान द्विआधारी संख्याओं में एक प्रमुख अंतर यह है कि "**अंकानां वामतो गतिः**" अर्थात् "अंकों की वामगति (reverse process) के नियमानुसार पिंगल द्विआधारी संख्याओं के अंकों का क्रम बदल देने अर्थात् क्रमशः ।ऽऽऽ, ।ऽ।।, ।।ऽ। आदि को ऽऽऽ।, ।।ऽ।, ।ऽ।। आदि कर देने पर वर्तमान द्विआधारी संख्या पद्धति प्राप्त होती है। नीचे पिंगल एवं वर्तमान द्विआधारी पद्धतियों की तुलना दी गई है । उसे देखें । चूँकि इस छन्दशास्त्र में छन्दों के क्रम का निर्धारण पिंगल द्विआधारी पद्धति के अनुसार किया गया है, परम्परा का निर्वाह करते हुए उसी पद्धति का अनुसरण किया गया है ।

तनुमध्या छन्द में छः वर्ण (ऽऽ।।ऽऽ) हैं । छः वर्णों से निर्मित हो सकने वाले कुल 64 समवृत्तों में इस छन्द का, पिंगल क्रमानुसार, 13वाँ स्थान बताया गया है । तनुमध्या के छः वर्णों को द्विआधारी कूट (binary code) के अनुसार दाशमिक प्रणाली में बदलने के लिए 1, 2, 4, आदि निम्न प्रकार से लिखें-

ऽ	ऽ	।	।	ऽ	ऽ
1	2	4	8	16	32

पुनः लघु के नीचे लिखी संख्याओं को जोड़ लें तो 4+8= 12 प्राप्त होता है । इसमें 1 जोड़ें । समवृत्तों के क्रम में तनुमध्या का स्थान (12+1=) 13वाँ हुआ। पिंगलाचार्य का बदलने का यह नियम वर्तमान नियम ही है । अंतर केवल इतना है कि "अंकों की वाम-गति" के नियम के अनुसार 1, 2, 4, 8, 16, 32 (ऊपर देखें) बाएं से दाएं लिखे गए, जबकि द्विआधारी संख्याओं से दाशमिक संख्याओं में बदलने के वर्तमान नियम के अंतर्गत 1, 2, 4, 8, ... दाएं से बाएं लिखे जाते हैं एवं वर्ण-प्रस्तार में इनको **सूची संख्याएँ** कहा जाता है जबकि आधुनिक गणित में binary weights कहा जाता है ।

दाशमिक प्रणाली की संख्याओं को द्विआधारी में बदलने का प्रचलित नियम भी पिंगलाचार्य द्वारा दिया गया है ।

दाशमिक संख्याएं **Decimal Numbers**	पिंगल द्विआधारी संख्याएं ***Piṅgala* Binary Numbers**	वर्तमान द्विआधारी संख्याएं **Modern Binary Numbers**
0	SSSS = 0000	0000
1	ISSS = 1000	0001
2	SISS = 0100	0010
3	IISS = 1100	0011
4	SSIS = 0010	0100
5	ISIS = 1010	0101
6	SIIS = 0110	0110
7	IIIS = 1110	0111
8	SSSI = 0001	1000
9	ISSI = 1001	1001
10	SISI = 0101	1010
11	IISI = 1101	1011
12	SSII = 0011	1100
13	ISII = 1011	1101
14	SIII = 0111	1110
15	IIII = 1111	1111

ध्यान दें पिंगल द्विआधारी संख्याओं के क्रम को उलट देने से आधुनिक द्विआधारी संख्याएं प्राप्त होती हैं। (Notice that the reversed *Piṅgala* binary numbers are the modern binary numbers.)

Meaning. Each quarter of the *tanumadhyā* metre has a *tagaṇa* (SSI) followed by an *yagaṇa* (ISS), (6 *varṇas*). An *yati* (pause) occurs at the end of each quarter. (According to the increasing order of *Piṅgala* binary numbers (starting from zero representation), its place is 13th in the list of 64 even *vṛttas.)*

Piṅgala has used long (ऽ) and short (I) respectively for binary codes 0 and 1. Indeed, the order of even *vṛttas* strictly adheres the ordering of *Piṅgala* binary numbers. For example, with the help of two *varṇas*, one may have four even *vṛttas* whose first quarters will be ऽऽ, Iऽ, ऽI, II or equivalently 00, 10, 01, 11, if one uses zero (0) for long (ऽ) and one (1) for short (I).

The *tanumadhyā* (thin in the middle as the shorts are in the middle) is an even *vṛtta* having six *varṇas* (ऽऽIIऽऽ). To convert it into the decimal number, place 1, 2, 4, etc. beneath these *varṇas* as follows:

ऽ	ऽ	I	I	ऽ	ऽ
1	2	4	8	16	32

Add the numbers beneath the shorts to obtain 4+8=12. Therefore, the *tanumadhyā* enjoys the (12+1=)13th place in the ordered list of 64 even *vṛttas*. The usual rule of conversion from a decimal number to binary has also been given by *Piṅgala*. (See page 160).

The numbers 1, 2, 4, 8, 16, ..., are called **index numbers** in the context of *varṇic* expansion, while they are called binary weights in computer science.

The above table gives the ordering of first 16 *Piṅgala* binary numbers along with the binary numbers in vogue. Notice that the reverse ordering of *Piṅgala* binary code gives the modern binary code. For example, the reverse of I I ऽ ऽ = 1100 for 3 is 0011 which is the modern binary representation for 3. Following the traditional rule IIऽ "**अंकानां वामतो गतिः**" (the digits move in the reverse process), we find that the *Piṅgala* binary codes are essentially the modern binary codes in number systems. The conversion rule given

by *Piṅgala* (or his predecessors), that is the *Piṅgala* rule of converting *Piṅgala* binary numbers into decimal numbers applies well to converting modern binary numbers into decimal numbers with the precaution that, in the modern case, one writes 1, 2, 4, 8,...., beneath the binary digits from the right, while in the case of *Piṅgala* binary numbers, one writes them from the left. Accordingly, as already explained, the *tanumadhyā* metre has 13th place in the *Piṅgala* system of numbers.

तनुमध्या छन्द का उदाहरण (Example of *tanumadhyā* metre)-(6x4 अक्षर)

त य त य

ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ

ध न्या त्रि षु नी चाः, क न्या त नु म ध्या ।
श्रोणी-स्तन-गुर्वी, उर्वी-पति-भोग्या ।।

सात अक्षर प्रतिपाद वाला उष्णिक् छन्द

Uṣṇik metres with seven syllables per quarter

कुमारललिता ज्सौ ग् ॥ 3 ॥

शब्दार्थ- ज्सौ ग् - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः जगण (।ऽ।), सगण (।।ऽ) और एक गुरु (ऽ) होता है, **कुमारललिता**- उसे 'कुमारललिता' छन्द कहते हैं । 7 अक्षरों के इस छन्द में 3, 4 अक्षरों पर यति होगी ।

अर्थ- कुमारललिता छन्द की योजना यह है-(3, 4 वर्णों पर यति)

पाद एक से चार- जगण, सगण, 1 गुरु (7 अक्षर) । अस्तु 2^7 = 128 समवृत्तों में कुमारललिता छन्द का 30वाँ स्थान बनता है । इसे निम्न गणना-व्यवस्था से देखा जा सकता है ।

ज	ग	ण	स	ग	ण	गु
।	ऽ	।	।	।	ऽ	ऽ
1	2	4	8	16	32	64

(1 + 4 + 8 + 16) + 1 = 30

विशेष- ऐसा प्रतीत होता है कि आचार्य पिंगल एवं इनके समकालीन छंद शास्त्रियों को यह बहुत ही सरलतापूर्वक ज्ञात था कि *n* अंकों की कुल (पिंगल) द्विआधारी संख्याएं 2^n होंगी । इसका तात्पर्य यह है कि *n* वर्णों वाले कुल समवृत्तों की संख्या 2^n है ।

Meaning. Each quarter of the *kumāralalitā* metre has a *jagaṇa* (ISI) followed by a *sagaṇa* (IIS) and a guru (S), (7 *varṇas*). Pauses in a quarter occur at 3 and 4 *varṇas*. This metre enjoys 30th place in the list of $2^7 = 128$ even *vṛttas* containing 7 *varṇas*. See the preceding conversion table.

It seems that *Piṅgala* and his contemporary prosodists new very well that the total number of (*Piṅgala*) binary numbers of *n* digits is 2^n. This means that the total number of even metres that are generated by *n* syllables is 2^n.

कुमारललिता छन्द का उदाहरण (Example) - (7x4 अक्षर)

ज स ग ज स ग

I S I I I S S I S I I I S S

य दी य-र ति-भू मौ, वि भा ति ति ल का ङ्कः ।
कुमार-ललिताऽसौ, कुलान्यटति नारी ।।

8 अक्षर प्रतिपाद वाला अनुष्टुप् छन्द

Anuṣṭup metres with 8 syllables per quarter

माणवकाक्रीडितकं भ्तौ ल्गौ ॥ 4 ॥

शब्दार्थ- भ्तौ ल्गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः भगण (SII), तगण (SSI),1 लघु, 1 गुरु होते हैं, **माणवकाक्रीडितकम्**- उसे 'माणवकाक्रीडितक' छन्द कहते हैं । इसमें 4-4 अक्षरों पर यति होती है ।

अर्थ-माणवकाक्रीडितक छन्द की योजना यह है- (4,4 वर्णों पर यति)

पाद एक से चार- भगण, तगण, 1 लघु, 1 गुरु । आठ वर्णों के 256 समवृत्तों में इस छंद का 103वाँ स्थान होता है ।

Meaning. Each quarter of the *māṇavakākrīḍitaka* metre has the syllabic arrangement:

bhagaṇa (ऽ।।), *tagaṇa* (ऽऽ।), one short (I) and one long (ऽ). Its place in *Piṅgala* ordering is 103. There is a pause at the interval of 4 *varṇas.*

माणवकाक्रीडितक छन्द का उदाहरण (Example)- (8x4 अक्षर)

भ त ल ग भ त ल ग

ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ

मा ण व का क्री डि त कं, यः कु रु ते वृ द्ध व याः ।

हास्यमसौ याति जने, भिक्षुरिव स्त्री-चपलः ।।

चित्रपदा भौ गौ ॥ 5 ॥

शब्दार्थ- भौ गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः दो भगण (ऽ।।, ऽ।।) और 2 गुरु (ऽऽ) होते हैं, **चित्रपदा**- उसे 'चित्रपदा' छन्द कहते हैं । पाद के अन्त में यति होती है ।

अर्थ- चित्रपदा छन्द की यह योजना होती है -

पाद 1 से 4- 2 भगण, 2 गुरु । (यति पाद के अन्त में) । 256 समवृत्तों के क्रम में इस छंद का 55वाँ स्थान है ।

Meaning. Each quarter of the *citrapadā* metre has two *bhagaṇas* (ऽ।।. ऽ।।) followed by 2 longs (ऽऽ). A pause occurs at the end of each quarter. It enjoys 55th place in *Piṅgala* ordering of 256 even *vṛttas.*

चित्रपदा छन्द का उदाहरण (Example)- (8x4 अक्षर)

भ भ ग ग भ भ ग ग

ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ

य स्य मु खे प्रि य-वा णी, चे त सि स ज्ज न ता च ।

चित्रपदाऽपि च लक्ष्मी-स्तं पुरुषं न जहाति ।।

विद्युन्माला मौ गौ ॥ 6 ॥

शब्दार्थ- मौ गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 मगण (ऽऽऽ, ऽऽऽ) और 2 गुरु (ऽऽ) होते हैं, **विद्युन्माला**- उसे 'विद्युन्माला' छन्द कहते हैं। 4, 4 पर यति होती है ।

अर्थ- विद्युन्माला छन्द की योजना है-

पाद 1 से 4 - 2 मगण, 2 गुरु । प्रत्येक चार वर्ण पर यति होगी । चूँकि इस समवृत्त के प्रत्येक चरण में सभी 8 वर्ण गुरु (ऽ) हैं, अतः 256 समवृत्तों में यह प्रथम स्थान पर विराजमान है ।

Meaning. Each quarter of the *vidyunmālā* metre has two *magaṇas* (ऽऽऽ, ऽऽऽ) followed by 2 longs (ऽऽ). A pause occurs at every 4 *varṇas.* Evidently, It enjoys the first place in the *Piṅgala* ordering of 256 even metres.

विद्युन्माला छन्द का उदाहरण (Example) - (8x4 अक्षर)

म म ग ग म म ग ग

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

वि द्यु न्मा ला लो लान् भो गान्, मु क्त्वा मु क्तौ य त्नं कु र्यात्।

ध्यानोत्पन्नं निःसामान्यं, सौख्यं भोक्तुं यद्याकाङ्क्षेत् ।।

हंसरुतं म्नौ गौ ॥ 7 ॥

शब्दार्थ- म्नौ गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमंशः मगण (ऽऽऽ), नगण (।।।) और 2 गुरु (ऽऽ) होते हैं, **हंसरुतम्** - उसे 'हंसरुत' छन्द कहते हैं। पाद के अन्त में यति होती है । हंसरुत का अर्थ है- हंस के तुल्य ध्वनि वाला।

अर्थ- हंसरुत छन्द की योजना यह है-

पाद 1 से 4- मगण, नगण, 2 गुरु, (पाद के अन्त में यति) । 256 समवृत्तों के (पिंगल) क्रम में इसका 57वाँ स्थान है ।

Meaning. Each quarter of the *hansaruta* metre has a *magaṇa* (ऽऽऽ) a *nagaṇa* (III) and two longs (ऽऽ). A pause occurs at the end of each quarter. It comes at the 57th place in the *Piṅgala* ordering of 256 even metres.

हंसरुत छन्द का उदाहरण (Example) - (8x4 अक्षर)

म न ग ग म न ग ग

ऽ ऽ ऽ । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । ऽ ऽ

ला व ण्यं व पु षि का न्ते, लो का ती त म ति सौ म्यम् ।

नैष्ठुर्यं मनसि यत् ते, द्वैविध्यं किमिति धत्से ।।

9 अक्षर प्रतिपाद वाला बृहती छन्द

***Bṛhatī* metres with 9 syllables per quarter**

भुजगशिशुसृता नौ म् ॥ 8 ॥

शब्दार्थ- नौ म् - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः दो नगण (।।।, ।।।) और 1 मगण (ऽऽऽ) होते हैं, **भुजगशिशुसृता**- उसे 'भुजगशिशुसृता' छन्द कहते हैं । 7, 2 पर यति । भुजगशिशुसृता का शब्दार्थ है- सांप के बच्चे के तुल्य वक्र गति वाला।

अर्थ- भुजगशिशुसृता छन्द की योजना यह है- प्रत्येक पाद में 2 नगण, 1 मगण (7 व 2 वर्णों पर यति) । समवृत्तों के 512 भेदों में इसका 64वाँ स्थान है ।

Meaning. Each quarter of the the *Bhujagaśiśusṛtā* metre has 2 *nagaṇas* (।।।, ।।।) and one *magaṇa* (ऽऽऽ) with pauses at 7, 2 *varṇas.* It occurs at the 64th place in the list of 512 even metres.

भुजगशिशुसृता छन्द का उदाहरण (Example) - (9x4 अक्षर)

न न म न न म

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । । । । । । ऽ ऽ ऽ

इ य म धि क त रं, र म्या, वि क च-कु व ल या, श्या मा ।

रमयति हृदयं, यूनां, भुजग-शिशु-सृता, नारी ।।

हलमुखी र्नौ स् ॥ 9 ॥

शब्दार्थ- र्नौ स्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः रगण (ऽ।ऽ), नगण (।।।) और सगण (।।ऽ) होते हैं, **हलमुखी**- उसे 'हलमुखी' छन्द कहते हैं । 3, 6 पर यति ।

अर्थ- हलमुखी छन्द की योजना यह है-

पाद 1 से 4 - 1 रगण, 1 नगण, 1 सगण, (3, 6 पर यति) । समवृत्तों के 512 भेदों में इसका स्थान 251 है ।

Meaning. Each quarter of the *halamukhī* metre has one *ragaṇa* (ऽ।ऽ), one *nagaṇa* (।।।) and one *sagaṇa* (।।ऽ) with pauses at 3, 6 *varṇas.* It occurs at the 251st place in the list of 512 even metres.

हलमुखी छन्द का उदाहरण (Example) - (9x4 अक्षर)

र न स र न स

ऽ । ऽ । । । । । ऽ ऽ । ऽ । । । । ऽ

ग ण्ड यो,-र ति श य-कृ शं, य न्मु खं, प्र क ट-द श नम् ।

आयतं, कलह-निरतं, तां स्त्रियं, त्यज हलमुखीम् ।।

10 अक्षर प्रतिपाद वाला पङ्क्ति छन्द

Paṅkti metres with 10 syllables per quarter

शुद्ध-विराड् म्सौ ज्गौ ॥ 10 ॥

शब्दार्थ- म्सौ ज्गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः मगण (ऽऽऽ), सगण (।।ऽ), जगण (।ऽ।) और 1 गुरु (ऽ) होते हैं, **शुद्धविराट्-** उसे 'शुद्ध-विराट्' छन्द कहते हैं । पाद के अन्त में यति ।

अर्थ- शुद्ध-विराट् छन्द की योजना यह है-

पाद 1 से 4 - 1 मगण, 1 सगण, 1 जगण, 1 गुरु, (यति पाद के अन्त में) । समवृत्तों के 1024 भेदों में इसका 345वाँ स्थान है ।

Meaning. Each quarter of the *śuddha virāṭ* (शुद्ध विराट्) metre has a *magaṇa* (ऽऽऽ), a *sagaṇa* (।।ऽ), a *jagaṇa* (।ऽ।) and one long (ऽ) with pauses at the end of each quarter. Its place in the list of 1024 even metres is 251st.

शुद्ध विराट् छन्द का उदाहरण (Example) - (10x4 अक्षर)

म स ज ग म स ज ग

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

वि श्वं ति ष्ठ ति कु क्षि-को ट रे, व क्त्रे य स्य स र स्व ती स दा।

अस्मद्-वंश-पिता महागुरु-र्ब्रह्मा शुद्ध-विराट् पुनातु नः ।।

पणवो म्नौ य्गौ ॥ 11 ॥

शब्दार्थ- म्नौ य्गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः मगण (ऽऽऽ), नगण (।।।), यगण (।ऽऽ) और 1 गुरु (ऽ) होते हैं, **पणवः** - उसे 'पणव' छन्द कहते हैं । इसको 'प्रणव' भी कहते हैं । यति 5, 5 पर ।

अर्थ- पणव छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4 - 1 मगण, 1 नगण, 1 यगण, 1 गुरु, (यति 5, 5 पर)

Meaning. The *paṇava* (also called *praṇava*) metre has the syllabic arrangements: *magaṇa* (ऽऽऽ), *nagaṇa* (।।।), *yagaṇa* (।ऽऽ) and a long (ऽ). Pauses are at 5 *varṇas* each. It has 121st place in the list of 1024 even metres.

पणव छन्द का उदाहरण (Example) - (10x4 अक्षर)

म न य ग म न य ग

ऽ ऽ ऽ । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । ऽ ऽ ऽ

मीमांसा-रस,-ममृतं पीत्वा, शास्त्रोक्तिः कटु-, रितरा भाति ।

एवं संसदि, विदुषां मध्ये, पापात्मा जय,-पण-बन्धत्वात् ।।

रुक्मवती भ्मौ स्गौ ॥ 12 ॥

शब्दार्थ- भ्मौ स्गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः भगण (ऽ।।), मगण (ऽऽऽ), सगण (।।ऽ) और 1 गुरु (ऽ) होते हैं, **रुक्मवती**- उसे 'रुक्मवती' छन्द कहते हैं । यति पाद के अन्त में ।

अर्थ- रुक्मवती छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4 - 1 भगण, 1 मगण, 1 सगण, 1 गुरु । (यति पादान्त में) । समवृत्तों के 1024 भेदों में इसका 199वाँ स्थान है ।

Meaning. The *rukmavatī* metre has the syllabic arrangement: *bhagaṇa* (ऽ।।), *magaṇa* (ऽऽऽ), *sagaṇa* (।।ऽ) and a long (ऽ). Pauses occur at the end of each quarter. Its place is 199th in the list of 1024 even metres.

रुक्मवती छन्द का उदाहरण (Example) - (10x4 अक्षर)

भ म स ग भ म स ग

ऽ । । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ

पा द त ले प द्मो द र गो रे, रा ज ति य स्या ऊ र्ध्व ग-रे खा।

सा भवति स्त्री लक्षण-युक्ता, रुक्मवती सौभाग्यवती च ।।

मयूरसारिणी र्जौ र्गौ ॥ 13 ॥

शब्दार्थ- र्जौ र्गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः रगण (ऽ।ऽ), जगण (।ऽ।), रगण (ऽ।ऽ) और 1 गुरु (ऽ) होते हैं, **मयूरसारिणी**- उसे 'मयूरसारिणी' छन्द कहते हैं । यति पाद के अन्त में ।

अर्थ- मयूरसारिणी छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4 - 1 रगण, 1 जगण, 1 रगण, 1 गुरु, (यति पद के अन्त में) । समवृत्त के 1024 भेदों में इसका 171वाँ स्थान है ।

Meaning. The *mayūrasāriṇī* metre has the syllabic arrangements: *ragaṇa* (ऽ।ऽ), *jagaṇa* (।ऽ।), *ragaṇa* (ऽ।ऽ) and a long (ऽ). Pauses occur at the end of each quarter. Its place is 171st in the list of 1024 even metres.

मयूरसारिणी छन्द का उदाहरण (Example) - (10x4 अक्षर)

र ज र ग र ज र ग

ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

या व ना न्त रा ण्यु पै ति र न्तुं, या भु ज ङ्ग-भो ग-स क्त-चित्ता।
या द्रुतं प्रयाति संनतांसा, तां मयूरसारिणीं विजह्यात् ।।

मत्ता म्भौ स्गौ ॥ 14 ॥

शब्दार्थ- म्भौ स्गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः मगण (ऽऽऽ), भगण (ऽ।।), सगण (।।ऽ) और 1 गुरु (ऽ) होते हैं, **मत्ता**- उसे 'मत्ता' छन्द कहते हैं । यति 4, 6 पर ।

अर्थ- मत्ता छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4 - 1 मगण, 1 भगण, 1 सगण, 1 गुरु, (यति 4, 6 पर) । समवृत्त के 1024 भेदों में इसका 241वाँ स्थान है ।

Meaning. The *mattā* metre has the syllabic arrangement: *magaṇa* (ऽऽऽ), *bhagaṇa* (ऽ।।), *sagaṇa* (।।ऽ) and a long (ऽ). Pauses occur at 4, 6 *varṇas.* It occupies 241st place in the list of 1024 even metres.

मत्ता छन्द का उदाहरण (Example) - (10x4 अक्षर)

म भ स ग म भ स ग

ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । ऽ ऽ

स्वै रो ल्ला पैः, श्रु ति-प टु-पे यैः, गी त-क्री डा, सु र त-वि शे षैः।
वासागारे, कृत-सुरतानां, मत्ता नारी, रमयति चेतः ।।

उपस्थिता त्जौ ज्गौ ॥ 15 ॥

शब्दार्थ- त्जौ ज्गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 तगण (ऽऽ।), 2 जगण (।ऽ।, ।ऽ।), 1 गुरु (ऽ) होते हैं, **उपस्थिता-** उसे 'उपस्थिता' छन्द कहते हैं । यति 2, 8 पर ।

अर्थ- उपस्थिता छन्द की योजना यह है-

पाद 1 से 4 - 1 तगण, 2 जगण, 1 गुरु, (यति 2, 8 पर) । समवृत्त के 1024 भेदों में इसका 365वाँ स्थान है ।

Meaning. The *upasthitā* metre has the following syllabic arrangement: *tagaṇa* (ऽऽ।), 2 *Jagaṇas* (।ऽ।, ।ऽ।) and a long (ऽ). Pauses occur at 2, 8 *varṇas.* It occupies 365th place in the list of 1024 even metres.

उपस्थिता छन्द का उदाहरण (Example) - (10x4 अक्षर)

त ज ज ग त ज ज ग

ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ

ए षा, ज ग दे क-म नो ह रा, क न्या, क न को ज्ज्व ल-दी धि तिः ।
लक्ष्मी, -रवि दानव-सूदनं, पुण्यै, -र्नरनाथमुपस्थिता ।।

11 अक्षरात्मक त्रिष्टुप् (त्रिष्टुभ्) छन्द

Triṣṭup (Triṣṭubh) metres with 11 syllables

इन्द्रवज्रा तौ ज्गौ ग् ॥ 16 ॥

शब्दार्थ- तौ ज्गौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 तगण (ऽऽ।, ऽऽ।), 1 जगण (।ऽ।) और 2 गुरु (ऽऽ) वर्ण होते हैं, **इन्द्रवज्रा-** उसे 'इन्द्रवज्रा' छन्द कहते हैं । पाद के अन्त में यति ।

अर्थ- इन्द्रवज्रा छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4 - 2 तगण, 1 जगण, 2 गुरु, (पादान्त में यति) । समवृत्तों के प्रस्तार (2048) में यह 357वें स्थान पर है ।

Meaning. The *indravajrā* metre has the following syllabic arrangement: 2 *tagaṇas* (ऽऽ।, ऽऽ।), *jagaṇa* (।ऽ।) and 2 longs. Pauses occur at the end of quarters. It occupies 357th place in the list of 2048 even metres.

इन्द्रवज्रा छन्द का उदाहरण (Example) - (11x4)

त त ज ग ग

ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

गो-ब्रा ह्म ण-स्त्री-व्र ति भि र्वि रु द्धं

मोहात् करोत्यल्पमतिर्नृपो यः ।

तस्येन्द्रवज्राऽभिहतस्य पातः,

क्षोणीधरस्येव भवत्यवश्यम् ।।

उपेन्द्रवज्रा ज्तौ ज्गौ ग् ॥ 17 ॥

शब्दार्थ- ज्तौ ज्गौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 जगण (।ऽ।), 1 तगण (ऽऽ।), 1 जगण (।ऽ।) और 2 गुरु (ऽऽ) वर्ण होते हैं, **उपेन्द्रवज्रा**- उसे 'उपेन्द्रवज्रा' छन्द कहते हैं । पाद के अन्त में यति ।

अर्थ- उपेन्द्रवज्रा छन्द की योजना यह है-

पाद 1 से 4- 1 जगण, 1 तगण, 1 जगण, 2 गुरु, (पादान्त में यति) समवृत्तों के 2048 भेदों में इसका 358वाँ स्थान है ।

Meaning. The *upendravajrā* metre has the following syllabic arrangements: a *jagaṇa* (।ऽ।), a *tagaṇa* (ऽऽ।), a *jagaṇa* (।ऽ।) and 2 longs (ऽऽ). Pauses occur at the end of quarters. Its place is 358 in the list of 2048 even metres.

उपेन्द्रवज्रा छन्द का उदाहरण (Example) - (11x4 वर्ण)

ज त ज ग ग

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

त्व मे व मा ता च पि ता त्व मे व,

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,

त्वमेव सर्वं मम देवदेव ! ।।

आद्यन्तावुपजातयः ॥ 18 ॥

शब्दार्थ- आद्यन्तौ- यदि पूर्वोक्त इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा छन्दों के पाद इच्छानुसार बदल दिए जाते हैं, **उपजातयः** - तो उन्हें 'उपजाति' छन्द कहते हैं । पादान्त में यति ।

अर्थ- उपजाति छन्द का लक्षण हैः-

पाद 1 से 4 - इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा छन्दों के पादों का मिश्रण, (पादान्त में यति)

Meaning. If four quarters of a metre are formed as a mixture of quarters from *indravajrā (iv).* and *upendravajrā (uv)* metres, then the same is called an *upajāti.*

Therefore, an *upajāti* is a combination of quarters of *iv* and *uv*. For example, the first quarter of an *upajāti* may consist of *iv* and the remaining may be from *uv*. Evidently, the total number of different varieties of metres belonging to the *upajāti* class is 14. They are listed below.

1. Kīrti (कीर्ति), 2. Vānī (वाणी), 3. Mālā (माला), 4. śālā (शाला), 5. Hansī (हँसी), 6. Māya (माया), 7. Jāyā (जाया), 8. Bālā (बाला), 9. Ārdrā (आर्द्रा), 10. Bhadrā (भद्रा), 11. Premā (प्रेमा), 12. Rāmā (रामा), 13. Ṛddhi (ऋद्धि), 14. Buddhi (बुद्धि).

टिप्पणी- इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा छन्दों के पादों के मिश्रण से उपजाति छन्द बनता है । किन्हीं 1, 2, 3 पादों में इन्द्रवज्रा हो सकती है और किन्हीं 1, 2, 3 पादों में उपेन्द्रवज्रा हो सकती है । 2 पाद इन्द्रवज्रा+2 पाद उपेन्द्रवज्रा, 3 पाद इन्द्रवज्रा+1 पाद उपेन्द्रवज्रा आदि । इसी प्रकार किन्हीं अन्य 2 छन्दों के मिश्रण को भी उपजाति छन्द कहते हैं ।

इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के पादों के विभिन्न मिश्रणों से 14 भेद हो जाते हैं, जिनकी सूची ऊपर अंग्रेजी अनुवाद के साथ दी गई है । जैसे- कीर्ति- 1 पाद उपेन्द्र0+3 पाद इन्द्रवज्रा । वाणी-2 पाद इन्द्रवज्रा+2 पाद उपेन्द्र0। माला- पाद 1, 2 उपेन्द्र0+पाद 3, 4 इन्द्रवज्रा आदि।

वाणी उपजाति छन्द का उदाहरण (Example of *vānī upajāti*)- (11x4 वर्ण)

त त ज ग ग

S S I S S I I S I S S

इन्द्रवज्रा *(iv)* - अ त्रो प जा ति र्वि वि धा वि द ग्धैः,

त त ज ग ग

ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

इन्द्रवज्रा *(iv)*- सं यो ज्य ते तु व्य व हा र- का ले ।

ज त ज ग ग

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

उपेन्द्रवज्रा*(uv)*- अ तः प्र य त्नः प्र थ मं वि धे यो,

ज त ज ग ग

। ऽ । ऽऽ । । ऽ । ऽ ऽ

उपेन्द्रवज्रा*(uv)*- नृ पे ण पुं र त्न-प री क्ष णा य ।।

इस श्लोक के पाद 1, 2 में इन्द्रवज्रा छन्द है और पाद 3, 4 में उपेन्द्रवज्रा छन्द है, अतः इस मिश्रण के कारण इसे उपजाति छन्द कहते हैं ।

दोधकं भौ भ्गौ ग् ।। 19 ।।

शब्दार्थ- भौ भ्गौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 3 भगण (ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।) और दो गुरु (ऽऽ) वर्ण हों, **दोधकम्**- उसे 'दोधक' छन्द कहते हैं । दोधक का अर्थ है- दुहने वाला, राजा को दुहने या धोखा देने वाला। पाद के अन्त में यति ।

अर्थ- दोधक छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4 - 3 भगण, 2 गुरु । पाद के अन्त में यति । समवृत्तों के 2048 भेदों में इसका 439वाँ स्थान है ।

Meaning. The *dodhaka* metre has the following syllabic arrangement: 3 *bhagaṇa* (ऽ।।, ऽ।।, ऽ।।) and 2 longs (ऽऽ). Pauses occur at the end of quarters. Its place is 439 in the list of 2048 even metres.

दोधक छन्द का उदाहरण (Example) - (11x4 वर्ण)

भ भ भ ग ग

ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ

दो ध क म र्थ-नि रो ध क मु ग्रं,

स्त्री-चपलं युधि कातर-चित्तम् ।

स्वार्थपरं मति-हीनममात्यं

मुञ्चति यो नृपतिः स सुखी स्यात् ।।

शालिनी म्तौ त्गौ ग् समुद्र-ऋषयः ॥ 20 ॥

शब्दार्थ- म्तौ त्गौ ग् - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः मगण (ऽऽऽ), 2 तगण (ऽऽ।, ऽऽ।) और 2 गुरु होते हैं, **शालिनी**- उसे 'शालिनी' छन्द कहते हैं । **समुद्र-ऋषयः** - समुद्र- 4, ऋषि 7 । यति 4, 7 पर होती है।

अर्थ- शालिनी छन्द की योजना यह है :-

पाद 1 से 4 - 1 मगण, 2 तगण, 2 गुरु, (4, 7 पर यति) । समवृत्तों के 2048 भेदों में इसका 289वाँ स्थान है ।

Meaning. The *śālinī* metre has the following syllabic arrangement: a *magaṇa* (ऽऽऽ), 2 *tagaṇas* (ऽऽ।, ऽऽ।) and 2 longs (ऽऽ). Pauses occur at 4, 7 *varṇas.* Its place is 289 in the list of 2048 even metres.

शालिनी छन्द का उदाहरण (Example) - (11x4 वर्ण)

म त त ग ग

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

श स्त्र-श्या मा, स्नि ग्ध-मु ग्धा य ता क्षी,

पीनश्रोणि, -र्दक्षिणावर्त-नाभिः ।

मध्ये क्षामा, पीवरोरु-स्तनी या,

श्लाध्या भर्तुः, शालिनी कामिनी स्यात् ।।

वातोर्मी म्भौ त्गौ ग् च ॥ 21 ॥

शब्दार्थ- म्भौ त्गौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 मगण (ऽऽऽ), 1 भगण (ऽ।।), 1 तगण (ऽऽ।) और 2 गुरु (ऽऽ) वर्ण होते हैं। **वातोर्मी**- उसे 'वातोर्मी' छन्द कहते हैं। **च**- और पूर्ववत् 4,7 पर यति होती है।

अर्थ- वातोर्मी छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4 - 1 मगण, 1 भगण, 1 तगण, 2 गुरु, (4, 7 पर यति) 2048 समवृत्तों के क्रम में इसका 305वाँ स्थान है ।

Meaning. The *vātormī* metre has the following syllabic arrangement: a *magaṇa* (ऽऽऽ), a *bhagaṇa* (ऽ।।),

a *tagaṇa* (ऽऽ।) and 2 longs (ऽऽ). Pauses occur at 4, 7 *varṇas.* Its place is 305 in the list of 2048 even metres.

वातोर्मी छन्द का उदाहरण (Example) - (11x4 वर्ण)

म भ त ग ग

ऽ ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ । ऽ ऽ

या त्यु त्से कं, स प दि प्रा प्य किं चित्,
स्याद् वा यस्या,-श्चपला चित्तवृत्तिः ।
या दीर्घाङ्गी, स्फुट-शब्दाट्टहासा,
त्याज्या सा स्त्री, द्रुत-वातोर्मि-माला ।।

भ्रमरविलसितं म्भौ न्लौ ग् ॥ 22 ॥

शब्दार्थ- म्भौ न्लौ ग् - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 मगण, (ऽऽऽ), 1 भगण (ऽ।।), 1 नगण (।।।), 1 लघु और 1 गुरु वर्ण होते हैं, **भ्रमरविलसितम्**- उसे 'भ्रमरविलसित' छन्द कहते हैं । यति 4, 7 पर ।

अर्थ- भ्रमरविलसित छन्द की यह योजना हैः-

पाद 1 से 4- 1 मगण, 1 भगण, 1 नगण, 1 लघु, 1 गुरु, (यति 4, 7 पर) । 2048 समवृत्तों के क्रम में इसका 1009वाँ स्थान है । इस छन्द को भ्रमरविलसिता भी कहा जाता है ।

Meaning. The *bhramara vilasita* (also called *bhramara vilasitā*) metre has the following syllabic arrangement: a *magaṇa* (ऽऽऽ), a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *nagaṇa* (।।।), a short (।) and a long (ऽ). Pauses occur at 4, 7 *varṇas.* Its place is 1009th in the list of 2048 even metres.

भ्रमरविलसित छन्द का उदाहरण (Example) - (11x4 वर्ण)

म भ न ल ग

ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । । ऽ

किं ते व क्त्रं, च ल-द ल क-चि तं ?
किं वा पद्मं, भ्रमर-विलसितम् ?
इत्येवं मे, जनयति मनसि,
भ्रान्तिं कान्ते, परिसर-सरसि ।।

रथोद्धता र्नौ र्लौ ग् ॥ 23 ॥

शब्दार्थ- र्नौ र्लौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 नगण (।।।), 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 लघु और 1 गुरु वर्ण होते हैं, **रथोद्धता-** उसे 'रथोद्धता' छन्द कहते हैं, यति पाद के अन्त में ।

अर्थ- रथोद्धता छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4- 1 रगण, 1 नगण, 1 रगण, 1 लघु, 1 गुरु, (पादान्त में यति) । 2048 समवृत्तों के क्रम में इसका 699वाँ स्थान है ।

Meaning. The *rathoddhatā* metre has the following syllabic arrangement: a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), a *nagaṇa* (।।।), a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), a short (।) and a long (ऽ). The pauses are at the end of quarters. Its place is 699th in the list of 2048 even metres.

रथोद्धता छन्द का उदाहरण (Example) - (11x4 वर्ण)

र न र ल ग

ऽ । ऽ । । । ऽ । ऽ । ऽ

या क रो ति वि वि धै र्वि टैः स मं,
संगतिं परगृहे रता च या ।
म्लानयत्युभयतोऽपि बान्धवान् ,
मार्गधूलिरिव सा रथोद्धता ।।

स्वागता र्नौ भ्गौ ग् ॥ 24 ॥

शब्दार्थ- र्नौ भ्गौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 नगण (।।।), 1 भगण (ऽ।।) और 2 गुरु (ऽऽ) वर्ण होते हैं, **स्वागता-** उसे 'स्वागता' छन्द कहते हैं । पादान्त में यति ।

अर्थ- स्वागता छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4 - 1 रगण, 1 नगण, 1 भगण, 2 गुरु, (पादान्त में यति)। 2048 समवृत्तों के क्रम में इसका 443वाँ स्थान है ।

Meaning. The *svāgatā* metre has the following syllabic arrangement: a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), a *nagaṇa* (।।।), a *bhagaṇa* (ऽ।।) and 2 longs (ऽऽ). Pauses are at the end of

quarters. Its place is 443rd in the list of 2048 even metres.

स्वागता छन्द का उदाहरण (Example) - (11x4 वर्ण)

र न भ ग ग

ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ ऽ

आ ह वं प्र वि श तो य दि रा हुः,

पृष्ठतश्चरति वायु-समेतः ।

प्राणवृत्तिरपि यस्य शरीरे,

स्वागता भवति तस्य जयश्रीः ।।

वृन्ता नौ स्गौ ग् ॥ 25 ॥

शब्दार्थ- नौ स्गौ ग् - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 नगण (।।।, ।।।), 1 सगण (।।ऽ) और 2 गुरु (ऽऽ) वर्ण होते हैं, **वृन्ता**- उसे 'वृन्ता' छन्द कहते हैं । यति 4, 7 पर ।

अर्थ- वृन्ता छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4 - 2 नगण, 1 सगण, 2 गुरु, (4, 7 पर यति) । 2048 समवृत्तों के क्रम में इसका 256वाँ स्थान है ।

Meaning. The *vṛntā* metre has the following syllabic arrangement: 2 *nagaṇas* (।।।, ।।।), a *sagaṇa* (।।ऽ), and 2 longs (ऽऽ). Pauses are at 4, 7 *varṇas*. Its place is 256th in the list of 2048 even metres.

वृन्ता छन्द का उदाहरण (Example) - (11x4 वर्ण)

न न स ग ग

। । । । । । । । ऽ ऽ ऽ

द्वि ज-गु रु,-प रि भ व-का री यो,

नरपति,-रति-धन-लुब्धाऽऽत्मा ।

ध्रुवमिह, निपतति पापोऽसौ,

फलमिव, पवन-हतं वृन्तात् ।।

श्येनी र्जौ र्लौ ग् ॥ 26 ॥

शब्दार्थ- र्जौ र्लौ ग् - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 जगण (।ऽ।), 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 लघु और 1 गुरु वर्ण होते हैं,

श्येनी- उसे 'श्येनी' छन्द कहते हैं । पादान्त में यति ।

अर्थ- श्येनी छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 1 रगण, 1 जगण, 1 रगण, 1 लघु, 1 गुरु, (पादान्त में यति)। 2048 समवृत्तों के क्रम में इसका 683वाँ स्थान है ।

Meaning. The *śyenī* metre has the following syllabic arrangement: a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), a *jagaṇa* (।ऽ।), a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), a short (।) and a long (ऽ). Pauses are at the end of quarters. Its place is 683rd in the list of 2048 even metres.

श्येनी छन्द का उदाहरण (Example) - (11x4 वर्ण)

र ज र ल ग

ऽ ।ऽ। ऽ ।ऽ ।ऽ। ऽ

क्रू र-दृ ष्टि-रा य ता ग्र-ना सि का,

चञ्चला कठोर-तीक्ष्ण-नादिनी ।

युद्ध-काङ्क्षिणी सदाऽऽमिष-प्रिया,

श्येनिकेव सा विगर्हिताऽङ्गना ।।

विलासिनी ज्रौ ज्गौ ग् ॥ 27 ॥

शब्दार्थ- ज्रौ ज्गौ ग् - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 जगण (।ऽ।), 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 जगण (।ऽ।), 2 गुरु (ऽऽ) वर्ण होते हैं, **विलासिनी**- उसे 'विलासिनी' छन्द कहते हैं । पादान्त में यति ।

अर्थ- विलासिनी छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 1 जगण, 1 रगण, 1 जगण, 2 गुरु, (पादान्त में यति)। 2048 समवृत्तों के क्रम में इसका 342वाँ स्थान है ।

Meaning. The *vilāsinī* metre has the following syllabic arrangement: a *jagaṇa* (।ऽ।), a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), a *jagaṇa* (।ऽ।) and 2 longs (ऽऽ). Pauses are at the end of quarters. Its place is 342nd in the list of 2048 even metres.

विलासिनी छन्द का उदाहरण (Example) - (11x4 वर्ण)

ज र ज ग ग

। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

वि ला सि नी वि लो कि तैः स का मं

दधाति काम-सत्त्व-चेष्टितं या ।

करोति चञ्चलाऽक्षि-दृष्टि-पातै-

र्यतात्मनश्च योगिनोऽपि मत्तान् ।।

12 अक्षरात्मक जगती छन्द प्रारम्भ

Jagatī metres with 12 syllables

जगती ॥ 28 ॥

अर्थ- अध्याय की समाप्ति तक 'जगती' छन्द का अधिकार है ।

Meaning. The discussion on *jagatī* metre will continue upto the end of the present chapter.

वंशस्था ज्तौ ज्रौ ॥ 29 ॥

शब्दार्थ- ज्तौ ज्रौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 जगण (।ऽ।), 1 तगण (ऽऽ।), 1 जगण (।ऽ।), 1 रगण (ऽ।ऽ) होते हैं, **वंशस्था-** उसे 'वंशस्था' छन्द कहते हैं । इसे ही 'वंशस्थ' भी कहते हैं । पादान्त में यति।

अर्थ- वंशस्था छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4- 1 जगण, 1तगण, 1 जगण, 1 रगण, (पादान्त में यति) 4096 समवृत्तों के क्रम में इसका 1382वाँ स्थान है ।

Meaning. The *vanśasthā* (also called *vanśastha*) metre has the following syllabic arrangement: a *jagaṇa* (।ऽ।), a *tagaṇa* (ऽऽ।), a *jagaṇa* (।ऽ।) and a *ragaṇa* (ऽ।ऽ). Pauses are at the end of quarters. Its place is 1382nd in the list of 4096 even metres.

वंशस्था छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

ज त ज र

। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

वि शु द्ध-वं शस्थ-मु दा र-चे ष्टि तं

गुणप्रियं मित्रमुपास्स्व सज्जनम् ।
विपत्ति-मग्नस्य कराऽवलम्बनं
करोति यत् प्राण-परिक्रयेण सः ।।

इन्द्रवंशा तौ ज्रौ ॥ 30 ॥

शब्दार्थ- **तौ ज्रौ**- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 तगण (ऽऽ।, ऽऽ।), 1 जगण (।ऽ।), 1 रगण (ऽ।ऽ) होते हैं, **इन्द्रवंशा**-उसे 'इन्द्रवंशा' छन्द कहते हैं । यति पादान्त में ।

अर्थ- इन्द्रवंशा छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 2 तगण, 1 जगण, 1 रगण, (पादान्त में यति) । 4096 समवृत्तों के क्रम में इसका 1381वाँ स्थान है ।

Meaning. The *indravanśā* metre has the following syllabic arrangement in each of its quarters: 2 *tagaṇas* (ऽऽ।, ऽऽ।), a *jagaṇa* (।ऽ।) and a *ragaṇa* (ऽ।ऽ). Pauses are at the end of quarters. Its place is 1381st in the list of 4096 even metres.

इन्द्रवंशा छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

त त ज र
ऽ ऽ । ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ
कु र्वी त यो दे व-गु रु-द्वि ज न्म ना-
मुर्वीपतिः पातनमर्थ-लिप्सया ।
तस्येन्द्र-वंशेऽपि गृहीत-जन्मनः
संजायते श्रीः प्रतिकूल-वर्तिनी ।।

द्रुतविलम्बितं न्भौ भ्रौ ॥ 31 ॥

शब्दार्थ- **न्भौ भ्रौ**- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 नगण (।।।), 2 भगण (ऽ।।, ऽ।।), 1 रगण (ऽ।ऽ) होते हैं, **द्रुतविलम्बितम्**- उसे 'द्रुतविलम्बित' छन्द कहते हैं । यति पादान्त में ।

अर्थ- द्रुतविलम्बित छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4-1 नगण, 2 भगण, 1 रगण, (यति पादान्त में) । 4096 समवृत्तों के क्रम में इसका 1464वाँ स्थान है ।

Meaning. The *drutavilambita* metre has the following syllabic arrangement in each of its quarters: a *nagaṇa* (।।।), 2 *bhagaṇas* (ऽ।।, ऽ।।), and a *ragaṇa* (ऽ।ऽ). Pauses are at the end of quarters. Its place is 1464th in the list of 4096 even metres.

द्रुतविलम्बित छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

न भ भ र

। । । ऽ । । ऽ । । ऽ । ऽ

द्रु त ग तिः पु रु षो ध न-भा ज नं,
भवति मन्दगतिश्च सुखोचितः ।
द्रुत-वितम्बित-खेल-गतिर्नृपः,
सकल-राज्य-सुखं प्रियमश्नुते ।।

तोटकं सः ॥ 32 ॥

शब्दार्थ- सः - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 4 सगण (।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ) होते हैं, **तोटकम्**- उसे 'तोटक' छन्द कहते हैं। यति पादान्त में।

अर्थ- तोटक छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4- 4 सगण, (यति पादान्त में) । 4096 समवृत्तों की सूची में इसका 1756वाँ स्थान है।

Meaning. The *toṭaka* metre has 4 *sagaṇas* (।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ, ।।ऽ) in each of its (four) quarters. Pauses are at the end of quarters. It occupies 1756th place in the list of 4096 even metres.

तोटक छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

स स स स

। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ

त्य ज तो ट क म र्थ-नि यो ग-क रं,
प्रमदाऽधिकृतं व्यसनोपहतम् ।
उपधाभिरशुद्ध-मतिं सचिवं,

नर-नायक ! भीरुकमायुधिकम् ।।

पुटो नौ म्यौ वसु-समुद्राः ॥ 33 ॥

शब्दार्थ- नौ म्यौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 नगण (।।।, ।।।), 1 मगण (ऽऽऽ), 1 यगण (।ऽऽ) होते हैं । **पुटः** - उसे 'पुट' नामक छन्द कहते हैं । **वसु-समुद्राः** - वसु-8, समुद्र-4 अर्थात् 8 और 4 वर्णों पर यति होती है ।

अर्थ- पुट छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 2 नगण, 1 मगण, 1 यगण, (यति 8, 4 पर) । 4096 समवृत्तों की सूची में इसका 576वाँ स्थान है ।

Meaning. The syllabic arrangement of the *puṭa* metre is the following: 2 *naganas* (।।।, ।।।), a *magaṇa* (ऽऽऽ), and an *yagaṇa* (।ऽऽ). The scheduled pauses are at 8, 4 *varṇas*. It occupies 576th place in the list of 4096 even metres.

पुट छन्द का उदाहरण (Example)- (12x4 वर्ण)

न न म य

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ

न वि च ल ति क थं चिन्-, न्या य मा गाद् ,
वसुनि शिथिल-मुष्टिः, पार्थिवो यः ।
अमृत-पुट इवासौ, पुण्यकर्मा,
भवति जगति सेव्यः, सर्वलोकैः ।।

जलोद्धत-गतिर्ज्सौ ज्सौ रसर्तवः ॥ 34 ॥

शब्दार्थ- ज्सौ ज्सौ- जिस छन्द से चारों पादों में क्रमशः 1 जगण (।ऽ।), 1 सगण (।।ऽ), 1 जगण (।ऽ।), 1 सगण (।।ऽ) होते हैं, **जलोद्धत-गतिः** -उसे 'जलोद्धत-गति' छन्द कहते हैं । **रसर्तवः** - रस- 6, ऋतु-6 अर्थात् 6, 6 पर यति होती है ।

अर्थ- जलोद्धत-गति छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 1 जगण, 1 सगण, 1 जगण, 1 सगण, (यति 6, 6 पर) । 4056 समवृत्तों के क्रम में इसका 1886वाँ स्थान है ।

Meaning. The syllabic arrangement of *jaloddhata-gati* metre is the following: a *jagaṇa* (ISI), a *sagaṇa* (IIS), a *jagaṇa* (ISI) and a *sagaṇa* (IIS). Pauses are at the interval of 6 *varṇas.* Its place is 1886 in the list of 4096 even metres.

जलोद्धत-गति छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

ज स ज स

I S I I I S I S I I I S

भ न क्ति स म रे, ब हू न पि रि पून्,

हरिः प्रभुरसौ, भुजोर्जित-बलः ।-

जलोद्धत-गति-, र्यथैव मकरस्,

तरङ्ग-निकरं, करेण परितः ।।

ततं नौ म्रौ ॥ 35 ॥

शब्दार्थ- नौ म्रौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 नगण (III, III), 1 मगण (SSS), 1 रगण (SIS) होते हैं, **ततम्**- उसे 'तत' नामक छन्द कहते हैं । पादान्त में यति ।

अर्थ- तत छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4- 2 नगण, 1 मगण, 1 रगण, (यति पादान्त में) । 4056 समवृत्तों के क्रम में इसका 1088वाँ स्थान है ।

Meaning. The syllabic arrangement of *tata* metre is the following: 2 *nagaṇas* (III, III), a *magaṇa* (SSS), and a *ragaṇa* (SIS). Pauses are at the end of quarters. Its place is 1088 in the list of 4096 even metres.

तत छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

न न म र

I I I I I I S S S S I S

कु रु क रु ण मि यं गा ढो त्क ण्ठि का,

यदु-तनय ! चकोरीभा राधिका ।

विरह-दहन-सङ्गादङ्गैः कृशा,

पिबतु तव मुखेन्दोर्बिम्बं दृशा ।।

कुसुमविचित्रा न्यौ न्यौ ॥ 36 ॥

शब्दार्थ- न्यौ न्यौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 नगण (।।।), 1 यगण (।ऽऽ), 1 नगण (।।।), 1 यगण (।ऽऽ) होते हैं, **कुसुमविचित्रा-** उसे 'कुसुमविचित्रा' छन्द कहते हैं । 6, 6 पर यति ।

अर्थ- कुसुमविचित्रा छन्द की योजना यह हुई हैः-

पाद 1 से 4 - 1 नगण, 1 यगण, 1 नगण, 1 यगण, (6, 6 पर यति) । 4096 समवृत्तों के क्रम में इसका 976वाँ स्थान है ।

Meaning. The syllabic arrangement of the *kusuma vicitrā* metre is the following: a *nagaṇa* (।।।), an *yagaṇa* (।ऽऽ), a *nagaṇa* (।।।) and an *yagaṇa* (।ऽऽ). Pauses are at the interval of 6 *varṇas.* Its place is 976 in the list of 4096 even metres.

कुसुमविचित्रा छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

न य न य
। । । । ऽ ऽ । । । । ऽ ऽ

वि ग लि त-हा रा, स-कु सु म-मा ला,
सचरण-लाक्षा, वलय-सुलक्षा ।
विरचित-वेषं, सुरत-विशेषं,
कथयति शय्या, कुसुम-विचित्रा ।।

चञ्चलाक्षिका नौ रौ ॥ 37 ॥

शब्दार्थ- नौ रौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 नगण (।।।, ।।।), 2 रगण (ऽ।ऽ, ऽ।ऽ), होते हैं, **चञ्चलाक्षिका-** उसे 'चंचलाक्षिका' छन्द कहते हैं । पादान्त में यति ।

अर्थ- चंचलाक्षिका छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4- 2 नगण, 2 रगण, (यति पादान्त में) । 4096 समवृत्तों की सूची में इसका 1216वाँ स्थान है ।

Meaning. Each quarter of the *cañcalākṣikā* metre has two *nagaṇas* (।।।, ।।।) followed by two *ragaṇas* (ऽ।ऽ, ऽ।ऽ). Pauses occur at the end of quarters. Its place is

1216 in the list of 4096 even metres.

चंचलाक्षिका छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

न न र र

। । । । । । । ऽ । ऽ ऽ । ऽ

अ ति सु र भि र भा जि पु ष्प श्रि याम् ,

अतनुतरतयेव संतानकः ।

तरुण-परभृतः स्वनं रागिणाम् ,

अतनुत रतये वसन्तानकः ।। (शिशुपाल० 6.67)

भुजङ्गप्रयातं यः ॥ 38 ॥

शब्दार्थ- यः - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 4 यगण (।ऽऽ, ।ऽऽ, ।ऽऽ, ।ऽऽ) होते हैं, **भुजङ्गप्रयातम्** - उसे 'भुजंगप्रयात' छन्द कहते हैं। पादान्त में यति ।

अर्थ- भुजंग-प्रयात छन्द के प्रत्येक पाद में 4 यगण होते हैं । प्रत्येक पाद के अन्त में यति होती है । 4056 समवृत्तों की सूची में इसका 586वाँ स्थान है ।

Meaning. Each quarter of the *bhujanga-prayāta* metre has 4 *yagaṇas* (।ऽऽ, ।ऽऽ, ।ऽऽ, ।ऽऽ). Pauses are at the end of quarters. Its place is 586 in the list of 4096 even metres.

भुजंगप्रयात छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

य य य य

। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

पु रः सा धु वद् व क्ति मि थ्या-वि नी तः,

परोक्षे करोत्यर्थ-नाशं हताशः ।

भुजङ्ग-प्रयातोपमं यस्य चित्तं

त्यजेत् तादृशं दुश्चरित्रं कुमित्रम् ।।

स्रग्विणी रः ॥ 39 ॥

शब्दार्थ- रः - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 4 रगण (ऽ।ऽ, ऽ।ऽ, ऽ।ऽ, ऽ।ऽ) होते हैं, **स्रग्विणी**- उसे 'स्रग्विणी' छन्द कहते हैं । पादान्त में यति।

अर्थ- स्रग्विणी छन्द के प्रत्येक पाद में 4 रगण होते हैं (यति पादान्त में) । 4096 समवृत्तों की सूची में इसका 1171वाँ स्थान है ।

Meaning. Each quarter of the *sragviṇī* metre has 4 *ragaṇas* (ऽ।ऽ, ऽ।ऽ, ऽ।ऽ, ऽ।ऽ). Pauses are at the end of quarters. Its place is 1171 in the list of 4096 even metres.

स्रग्विणी छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

र र र र

ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ

यो र णे यु ध्य ते नि र्भ रं नि र्भ यः,

त्यागिता यस्य सर्वस्व-दानावधिः ।

तं नरं वीर-लक्ष्मीर्यशः-स्रग्विणी

नूनमभ्येति सत्कीर्ति-शुक्लांशुका ।।

प्रमिताक्षरा सजौ सौ ॥ 40 ॥

शब्दार्थ- सजौ सौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 सगण (।।ऽ), 1 जगण (।ऽ।), 2 सगण (।।ऽ, ।।ऽ) होते हैं, **प्रमिताक्षरा-** उसे 'प्रमिताक्षरा' छन्द कहते हैं। यति पादान्त में ।

अर्थ- प्रमिताक्षरा छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 1 सगण, 1 जगण, 2 सगण, (यति पादान्त में) । 4096 समवृत्तों की सूची में इसका 1772वाँ स्थान है ।

Meaning. The *pramitākṣarā* metre has the following syllabic arrangement: a *sagaṇa* (।।ऽ), a *jagaṇa* (।ऽ।) and two *sagaṇas* (।।ऽ, ।।ऽ). Pauses occur at the end of quarters. Its place is 1772 in the list of 4096 even metres.

प्रमिताक्षरा छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

स ज स स

। । ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ

प रि शु द्ध-वा क्य-र च नाऽ ति श यं,

परिषिञ्चती श्रवणयोरमृतम् ।

प्रमिताक्षराऽपि विपुलाऽर्थवती,

तव भारती हरति मे हृदयम् ।।

कान्तोत्पीडा भ्मौ स्मौ ॥ 41 ॥

शब्दार्थ- भ्मौ स्मौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 भगण (ऽ।।), 1 मगण (ऽऽऽ), 1 सगण (।।ऽ), 1 मगण (ऽऽऽ) होते हैं, **कान्तोत्पीडा**- उसे 'कान्तोत्पीडा' छन्द कहते हैं । पादान्त में यति ।

अर्थ- कान्तोत्पीडा छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4 - 1 भगण, 1 मगण, 1 सगण, 1 मगण, (पादान्त में यति)। 4096 समवृत्तों की सूची में इसका 199वाँ स्थान है ।

Meaning. The *kāntotpīdā* metre has the following syllabic arrangement: a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *magaṇa* (ऽऽऽ), a *sagaṇa* (।।ऽ), and a *magaṇa* (ऽऽऽ). Pauses occur at the end of quarters. Its place is 199th in the list of 4096 even metres.

कान्तोत्पीडा छन्द का उदाहरण- (Example) - (12x4 वर्ण)

भ म स म

ऽ । । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ

का म-श रै-र्व्या प्ता ख लु का न्तो त्पी डाम्,

आप्तवती दुःखैः परिमुह्यन्ती या ।

सा लभते चेत् कामुक-योगं गाढं,

दुःख-विमुक्ता स्यात् परमानन्दाप्ता ।।

वैश्वदेवी मौ याविन्द्रिय-ऋषयः ॥ 42 ॥

शब्दार्थ- मौ यौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 मगण (ऽऽऽ, ऽऽऽ), 2 यगण (।ऽऽ, ।ऽऽ) हों, **वैश्वदेवी**- उसे 'वैश्वदेवी' छन्द कहते हैं । **इन्द्रिय-ऋषयः**:- इन्द्रिय- 5, ऋषि-7, अर्थात् 5, 7 पर यति होती है ।

अर्थ- वैश्वदेवी छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4- 2 मगण, 2 यगण, 5, 7 पर यति । 4096 समवृत्तों की सूची में इसका 577वाँ स्थान है ।

Meaning. The *vaiśvadevī* metre has the following syllabic arrangement: 2 *magaṇas* (ऽऽऽ, ऽऽऽ), 2 *yagaṇas*

(।ऽऽ, ।ऽऽ). Pauses occur at 5, 7 *varṇas.* Its place is 577 in the list of 4096 even metres.

वैश्वदेवी छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

म म य य

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

ध न्यः पु ण्या त्मा, जा य ते क्वा पि वं शे,

तादृक् पुत्रोऽसौ, येन गोत्रं पवित्रम् ।

गो-विप्र-ज्ञाति-, स्वामि-कार्ये प्रवृत्तः,

शुद्धः श्राद्धादौ, वैश्वदेवी भवेद् यः ।।

वाहिनी त्यौ म्यावृषि-कामशराः ॥ 43 ॥

शब्दार्थ- त्यौ म्यौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 तगण (ऽऽ।), 1 यगण (।ऽऽ), मगण (ऽऽऽ), 1 यगण (।ऽऽ) होते हैं, **वाहिनी-** उसे 'वाहिनी' छन्द कहते हैं। **ऋषि-कामशराः** - ऋषि-7, कामशर- 5, अर्थात् 7, 5 पर यति होती है ।

अर्थ- वाहिनी छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4 -1 तगण, 1 यगण, 1 मगण, 1 यगण, (यति 7, 5 पर) । 4096 समवृत्तों की सूची में इसका 525वाँ स्थान है ।

Meaning. The *vāhinī* metre has the following syllabic arrangement: a *tagaṇa* (ऽऽ।), an *yagaṇa* (।ऽऽ), a *magaṇa* (ऽऽऽ), and an *yagaṇa* (।ऽऽ). Pauses are at 7, 5 *varṇas.* Its place is 525 in the list of 4096 even metres.

वाहिनी छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

त य म य

ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ

श क्ता ज ग तीं कृ त्स्नां, जे तुं सु यो धा,

हस्त्यश्व-रथोदारा, सा वाहिनी ते ।

छन्ने रजसा भानौ, यस्याः प्रयाणे,

घस्रेऽपि निशा-भ्रान्तिं, धत्ते नृलोकः ।।

नवमालिनी न्जौ भ्याविति ॥ 44 ॥

शब्दार्थ- न्जौ भ्यौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः- 1 नगण (।।।), 1 जगण (।ऽ।), 1 भगण (ऽ।।), 1 यगण (।ऽऽ) होते हैं, **नवमालिनी-** उसे 'नवमालिनी' छन्द कहते हैं । यति 8, 4 पर । **इति-** अध्याय-समाप्ति का सूचक है ।

अर्थ- नवमालिनी छन्द की योजना यह है-

पाद 1 से 4 - 1 नगण, 1 जगण, 1 भगण, 1 यगण, (यति 8, 4 पर) । 4096 समवृत्तों की सूची में इसका 944वाँ स्थान है ।

Meaning. The *navamālinī* metre has the following syllabic arrangement: a *nagaṇa* (।।।), a *jagaṇa* (।ऽ।), a *bhagaṇa* (ऽ।।), and an *yagaṇa* (।ऽऽ). Pauses are at 8, 4 *varṇas.* Its place is 944 in the list of 4096 even metres.

नवमालिनी छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

न ज भ य

। । । । ऽ । ऽ । । । ऽ ऽ

ध व ल-य शों ऽशु के न, प रि वी ता,
सकल-जनानुराग-, गुण-रक्ता ।
दृढ-गुण-बद्ध-कीर्ति-, कुसुमौघैः,
तव नवमालिनीव, नृप-लक्ष्मीः ।।

***

षष्ठोऽध्यायः समाप्तः ।

(This is the end of Chapter VI.)

सप्तमोऽध्यायः
CHAPTER VII
13 अक्षरात्मक अतिजगती छन्द
Atijagati metres with 13 *varṇas*

प्रहर्षिणी म्नौ ज्रौ ग् त्रिक-दशकौ ॥ 1 ॥

शब्दार्थ- म्नौ ज्रौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 मगण (ऽऽऽ), 1 नगण (।।।), 1 जगण (।ऽ।), 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 गुरु होते हैं, **प्रहर्षिणी-** उसे 'प्रहर्षिणी' छन्द कहते हैं । **त्रिक-दशकौ=** 3, 10 पर यति होती है ।

अर्थ- प्रहर्षिणी छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4 - 1 मगण, 1 नगण, 1 जगण, 1 रगण, 1 गुरु, (यति 3, 10 पर) । 8192 समवृत्तों की सूची में इसका 1401वाँ स्थान है ।

Meaning. The *praharṣiṇi* metre has the following syllabic arrangement: a *magaṇa* (ऽऽऽ), a *nagaṇa* (।।।), a *jagaṇa* (।ऽ।), a *ragaṇas* (ऽ।ऽ) and a long (ऽ). Pauses occur at 3, 10 *varṇas.* It enjoys 1401st place in the *Piṅgala* ordering (or, equivalently speaking, in the list) of 8192 even metres.

प्रहर्षिणी छन्द का उदाहरण- (Example) - (13x4 वर्ण)

म न ज र ग

ऽ ऽ ऽ । । । । ऽ । ऽ । ऽ ऽ

उ त्तु ङ्ग,-स्त न-क ल श-द्व यो न्न ता ङ्गी,
लोलाक्षी, विपुल-नितम्ब-शालिनी च ।
बिम्बोष्ठी, नर-वर ! मुष्टि-मेय-मध्या,
सा नारी, भवतु मनः-प्रहर्षिणी ते ।।

रुचिरा ज्भौ स्जौ ग् चतुर्नवकौ ॥ 2 ॥

शब्दार्थ- ज्भौ स्जौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः जगण (।ऽ।), भगण (ऽ।।), सगण (।।ऽ), जगण (।ऽ।), 1 गुरु हों, **रुचिरा-** उसे

रुचिरा छन्द कहते हैं । **चतुर्नवकौ-** यति 4, 9 पर ।

अर्थ- रुचिरा छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4 - 1 जगण, 1 भगण, 1 सगण, 1 जगण, 1 गुरु, (यति 4, 9 पर) । 13 वर्ण वाले 8192 समवृत्तों की सूची में इसका 2806वाँ स्थान है ।

Meaning. The *rucirā* metre has the following syllabic arrangement, i.e., each quarter has the following order of *gaṇas*: a *jagaṇa* (ISI), a *bhagaṇa* (SII), a *sagaṇa* (IIS), a *jagaṇa* (ISI) and a long (S). Pauses are at 4, 9 *varṇas*. Its place is 2806 in the list of 8192 even metres with 13 *varṇas.*

रुचिरा छन्द का उदाहरण- (Example) - (13x4 वर्ण)

ज भ स ज ग

I S I S I I I I S I S I S

मृ ग त्व चा, रु चि र-त रा ऽम्ब र-क्रि यः,

कपालभृत् , कपिल-जटाऽग्र-पल्लवः ।

ललाट-दृक् -दहन-तृणीकृत-स्मरः,

पुनातु वः, शिशु-शशि-शेखरः शिवः ।।

मत्तमयूरं म्तौ य्सौ ग् समुद्र-नवकौ ॥ 3 ॥

शब्दार्थ- म्तौ य्सौ ग् - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 मगण (SSS), 1 तगण (SSI), 1 यगण (ISS), 1 सगण (IIS) और 1 गुरु होते हैं। **मत्तमयूरम्-** उसे 'मत्तमयूर' छन्द कहते हैं । **समुद्र-नवकौ-** यति 4, 9 पर।

अर्थ- मत्तमयूर छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4 - 1 मगण, 1 तगण, 1 यगण, 1 सगण, 1 गुरु, (यति 4, 9 पर) । 13 वर्ण के समवृत्तों की सूची में इसका 1633वाँ स्थान है ।

Meaning. The *matta-mayura* metre has the following syllabic arrangement, i.e., each quarter has the following order of *gaṇas*: a *magaṇa* (SSS), a *tagaṇa*

(ऽऽ।), an *yagaṇa* (।ऽऽ), a *sagaṇa* (।।ऽ) and a long (ऽ). Pauses are at 4, 9 *varṇas.* Its place is 1633 in the list of even metres with 13 *varṇas.*

मत्तमयूर छन्द का उदाहरण (Example) - (13x4 वर्ण)

म त य स ग

ऽ ऽऽ ऽ ऽ।। ऽ ऽ । ।ऽ ऽ

व्यू ढो र स्कः, सिं ह-स मा नाऽऽ न त-म ध्यः,

पीन-स्कन्धः, सिन्धुर-हस्ताऽऽयत-बाहुः ।

कम्बुग्रीवः, स्निग्ध-शरीरस्तनु-लोमा,

भुङ्क्ते राज्यं, मत्त-मयूराकृति-नेत्रः ।।

गौरी नौ न्सौ ग् ॥ 4 ॥

शब्दार्थ- नौ न्सौ ग् - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 3 नगण (।।।, ।।।, ।।।), 1 सगण (।।ऽ), 1 गुरु हों, **गौरी**- उसे 'गौरी' छन्द कहते हैं। पादान्त में यति।

अर्थ- गौरी छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 3 नगण, 1 सगण, 1 गुरु, (पादान्त में यति) । 13 वर्ण के समवृत्तों की सूची में इसका 2048वाँ स्थान है ।

Meaning. The *gaurī* metre has the following syllabic arrangement: 3 *nagaṇas* (।।।, ।।।, ।।।), a *sagaṇa* (।।ऽ) and a *guru* (ऽ). It has pauses at the end of quarters. Its place is 2048 in the list of even metres with 13 *varṇas.*

गौरी छन्द का उदाहरण (Example) - (13x4 वर्ण)

न न न स ग

। । । । । । । । । । । ऽ ऽ

स क ल-भु व न-ज ग ण-न त-पा दा,

निज-पद-भंजन-शमित-विषादा ।

विजित-सरसिरुह-नयन-पद्मा,

भरतु सकलमिह जगति गौरी ।।

14 अक्षरात्मक शक्वरी छन्द
Śakvarī metres with 14 *varṇas*

असंबाधा म्तौ न्सौ गाविन्द्रिय-नवकौ ॥ 5 ॥

शब्दार्थ- म्तौ न्सौ गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 मगण (ऽऽऽ), 1 तगण (ऽऽ।), 1 नगण (।।।), 1 सगण (।।ऽ), 2 गुरु (ऽऽ) वर्ण हों, **असंबाधा**- उसे 'असंबाधा' छन्द कहते हैं । **इन्द्रिय-नवकौ**- यति 5, 9 पर।

अर्थ- असंबाधा छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 1 मगण, 1 तगण, 1 नगण, 1 सगण, 2 गुरु, (यति 5, 9 पर) । 14 वर्णों के समवृत्तों अर्थात् 16384 समवृत्तों की सूची में इसका 2017वाँ स्थान है ।

Meaning. The *asambādhā* metre has the following syllabic arrangement: a *magaṇa* (ऽऽऽ), a *tagaṇa* (ऽऽ।), a *nagaṇa* (।।।), a *sagaṇa* (।।ऽ) and two longs (ऽऽ). It has pauses at 5, 9 *varṇas*. Its place is 2017th in the list of 16384 even metres with 14 *varṇas*.

असंबाधा छन्द का उदाहरण- (Example) - (14x4 वर्ण)

म त न स ग ग
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । । ऽ ऽ ऽ

भ ङ्क्त्वा दु र्गा णि, द्रु म-व न म खि लं छि त्त्वा,
हत्वा तत्-सैन्यं, करि-तुरग-बलं हत्वा ।
येनाऽसंबाधा, स्थितिरजनि विपक्षाणां,
सर्वोर्वी-नाथः-, स जयति नृपति-मुञ्जः ।।

अपराजिता नौ र्सौ ल्गौ स्वर-ऋषयः ॥ 6 ॥

शब्दार्थ- नौ र्सौ ल्गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 नगण (।।।, ।।।), 1 रगण (ऽ।ऽ), सगण (।।ऽ), 1 लघु, 1 गुरु होते हैं, **अपराजिता**- उसे 'उपराजिता' छन्द कहते हैं । **स्वर-ऋषयः** - स्वर-7 = ऋषि-7, यति 7, 7 पर ।

अर्थ- अपराजिता छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4 - 2 नगण, 1 रगण, 1 सगण, 1 लघु, 1 गुरु, (यति 7, 7 पर) । 16384 समवृत्तों की सूची में इसका 5824वाँ स्थान है ।

Meaning. The *aparājitā* metre has the following syllabic arrangement: 2 *nagaṇas* (III, III), a *ragaṇa* (ऽIऽ), a *sagaṇa* (IIऽ), a short (I) and a long (ऽ). It has pauses at 7, 7 *varṇas.* Its place in the list of 16384 even metres is 5824.

अपराजिता छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

न न र स ल ग

I I I I I I ऽ I ऽ I I ऽ I ऽ

फ णि प ति-व ल यं, ज टा-मु कु टो ज्ज्व लं,
मनसिज-मथनं, त्रिशूल-विभूषितम् ।
स्मरसि यदि सखे, शिवं शशि-शेखरं,
भवति तव तनुः, परैरपराजिता ।।

प्रहरणकलिता नौ भ्नौ ल्गौ च ॥ 7 ॥

शब्दार्थ- नौ भ्नौ ल्गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 नगण (III, III), 1 भगण (ऽII), 1 नगण (III), 1 लघु, 1 गुरु होते हैं, **प्रहरण- कलिता-** उसे 'प्रहरणकलिता' छन्द कहते हैं । **च-** और पूर्ववत् 7, 7 पर यति।

अर्थ- प्रहरण-कलिता छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 2नगण, 1भगण, 1नगण, 1 लघु, 1 गुरु, (यति 7, 7 पर) । 16384 समवृत्तों की सूची में इसका 8128वाँ स्थान है ।

Meaning. The *praharaṇa-kalitā* metre has the following syllabic arrangement: 2 *nagaṇas* (III, III), a *bhagaṇa* (ऽII), a *nagaṇa* (III), a short (I) and a long (ऽ). Pauses occur at the interval of 7 *varṇas.* Its place in the list of 16384 even metres is 8128.

प्रहरणकलिता छन्द का उदाहरण (Example) - (14x4 वर्ण)

न न भ न ल ग

। ।।। ।।ऽ ।।। ।।ऽ

सु र-मु नि-म नु जै, -रु प चि त-च र णां,

रिपु-भय-चकित,-त्रिभुवन-शरणाम् ।

प्रणमत महिषा,-सुर-वध-कुपितां,

प्रहरण-कलितां, पशुपति-दयिताम् ।।

वसन्ततिलका त्भौ जौ गौ ॥ 8 ॥

शब्दार्थ- त्भौ जौ गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 तगण (ऽऽ।), 1 भगण (ऽ।।), 2 जगण (।ऽ।, ।ऽ।), 2 गुरु (ऽऽ) होते हैं । **वसन्ततिलका**- उसे 'वसन्ततिलका' छन्द कहते हैं । यति पादान्त में ।

अर्थ- वसन्ततिलका छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 1 तगण, 1 भगण, 2 जगण, 2 गुरु, (यति पादान्त में)। 16384 समवृत्तों की सूची में इसका 2934वाँ स्थान है ।

Meaning. The *vasanta-tilakā* metre has the following syllabic arrangement: a *tagaṇa* (ऽऽ।), a *bhagaṇa* (ऽ।।), 2 *jagaṇas* (।ऽ।, ।ऽ।), and 2 longs (ऽऽ). It has pauses at the end of quarters. Its place in the list of 16384 even metres is 2934.

वसन्ततिलका छन्द का उदाहरण (Example) - (12x4 वर्ण)

त भ ज ज ग ग

। ऽ । ऽ ।।। ऽ ।। ऽ । ऽ ऽ

उ द्ध र्षि णी ज न-दृ शां स्त न-भा र-गु र्वी

नीलोत्पल-द्युति-मलिम्लुच-लोचना च ।

सिंहोन्नत-त्रिक-तटी कुटिलालकान्ता,

कान्ता वसन्त-तिलका नृप-वल्लभाऽसौ ।।

सिंहोन्नता काश्यपस्य ॥ 9 ॥

शब्दार्थ- काश्यपस्य- आचार्य काश्यप के मतानुसार, **सिंहोन्नता**- वसन्ततिलका छन्द को 'सिंहोन्नता' छन्द कहते हैं ।

Meaning. The *vasanta-tilakā* is also called *sinhonnatā* by *Ācārya Kāśyapa,* an authority on prosody, who lived much before *Piṅgala.*

उद्धर्षिणी सैतवस्य ॥ 10 ॥

शब्दार्थ- सैतवस्य- आचार्य सैतव के मतानुसार, **उद्धर्षिणी**- वसन्ततिलका छन्द को 'उद्धर्षिणी' छन्द कहते हैं ।

Meaning. The *vasanta-tilakā* is also called *uddharṣiṇī* by *Ācārya Saitava,* an authority on prosody, who lived much before *Kāśyapa.*

विशेष- कुछ ग्रन्थों में ये पाठ और मिलते हैं -

(क) मधुमाधवी शाकल्यस्य ।

(ख) चेतोहिता रामकीर्तेः ।।

(क) आचार्य शाकल्य वसन्ततिलका छन्द को 'मधुमाधवी' छन्द कहते हैं।
(ख) आचार्य रामकीर्ति वसन्ततिलका छन्द को 'चेतोहिता' छन्द कहते हैं।

There are some other alternative names of *vasanta-tilakā.* For example, the same is called (i) *madhumādhavī* by *Ācārya Śakalya,* and (ii) *Cetohitā by Ācārya Rāmakīrti.*

15 अक्षरात्मक अतिशक्वरी छन्द ।
Atiśakvarī metres with 15 *varṅas*

चन्द्रावर्ता नौ नौ स् ॥ 11 ॥

शब्दार्थ- नौ नौ स् - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 4 नगण (।।।, ।।।, ।।।, ।।।), 1 सगण (।।ऽ) होते हैं । **चन्द्रावर्ता**- उसे 'चन्द्रावर्ता' छन्द कहते हैं । यति 7, 8 पर ।

अर्थ- चन्द्रावर्ता छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4- 4 नगण, 1 सगण, (यति 7, 8 पर) । 2^{15} = 32768 समवृत्तों की सूची में इसका 16384वाँ स्थान है ।

Meaning. Each quarter of the *candrā vartā* metre has 4 *nagaṇas* (।।।, ।।।, ।।।, ।।।) followed by a *sagaṇa* (।।ऽ).

It has pauses at 7, 8 *varṇas*. Its place is 16384 in the list of 2^{15} (= 32768) even metres, each metre containing 15x4 *varṇas*.

चन्द्रावर्ता छन्द का उदाहरण (Example) - (15 x 4 वर्ण)

न न न न स

। । । । । । । । । । । । । । ऽ

प टु-ज व-प व न,-च लि त-ज ल-ल ह री,

तरलित-विहग,-निवह-रव-मुखरम् ।

विकसित-कमल,-सुरभि-शुचि सलिलं,

विचरति पथिक,-मनसि शरदि सरः ।।

मालर्तु-नवकौ चेत् ॥ 12 ॥

शब्दार्थ- **चेत्**- यदि, **ऋतु-नवकौ**-ऋतु-6, नवक-9, यदि यति 6, 9 पर होगी, **माला**-तो चन्द्रावर्ता छन्द को 'माला' छन्द कहते हैं ।

अर्थ- चन्द्रावर्ता छन्द को ही 'माला' छन्द कहेंगे, यदि यति 6, 9 पर होगी ।

Meaning. The *candrā vartā* metre is called *māla* metre provided that the pauses of *candrā vartā* occur at 6, 9 *varṇas*.

माला छन्द का उदाहरण (Example)- (15x4 वर्ण)

न न न न स

। । । । । । । । । । । । । । ऽ

न व-वि क सि त,-कु व ल य-द ल-न य ने

निशमय नव,-जलधरमिह गगने ।

अपनय रुष, -मुपसर मम सविधं,

यदि रति-सुख,-मभिलषसि बहुविधम् ।।

मणि-गुण-निकरो वस्वृषयः ॥ 13 ॥

शब्दार्थ- **वस्वृषयः** - वसु-8, ऋषि-7, यदि यति 8, 7 पर होगी, **मणिगुणनिकरः** - तो चन्द्रावर्ता छन्द को ही 'मणिगुणनिकर' छन्द कहेंगे ।

अर्थ- चन्द्रावर्ता छन्द को ही 'मणिगुणनिकर' छन्द कहेंगे, यदि यति 8, 7 पर होगी।

Meaning. The *candrā vartā* is called *maṇiguṇa-nikara* provided that the pauses of *candrā vartā* occur at 8, 7 *varṇas.*

मणिगुणनिकर छन्द का उदाहरण (Example)- (15x4 वर्ण)

न न न न स

। । । । । । । । । । । । । । ऽ

क थ म पि नि प ति त, म ति-म ह ति प दे,

नरमनुसरति न, फलमनुपचितम् ।

अपि वर-युवतिषु, कुच-तट-निहितः,

स्पृशति न वपुरिह, मणि-गुण-निकरः ।।

मालिनी नौ म्यौ य् ॥ 14 ॥

शब्दार्थ- नौ म्यौ य्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 नगण (।।।, ।।।), 1 मगण (ऽऽऽ), 2 यगण (।ऽऽ, ।ऽऽ) होते हैं, **मालिनी**- उसे 'मालिनी' छन्द कहते हैं। यति पूर्ववत् 8, 7 पर ।

अर्थ- मालिनी छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4- 2 नगण, 1 मगण, 2 यगण, (यति 8, 7 पर)। 15x4 वर्णीय समवृत्तों में इसका 4672वाँ स्थान है।

Meaning. The *mālinī* metre has the following syllabic arrangement: 2 *nagaṇas* (।।।, ।।।), a *magaṇa* (ऽऽऽ), and 2 *yagaṇas* (।ऽऽ, ।ऽऽ). Its pauses are at 8, 7 *varṇas.* Its place is 4672 in the list of even metres containing 15x4 *varṇas.*

मालिनी छन्द का उदाहरण (Example)- (15x4 वर्ण)

न न म य य

। । । । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

अ ति-वि पु ल-ल ला टं, पी व रो रः-क पा टं,

सुघटित-दशनोष्ठं, व्याघ्र-तुल्य-प्रकोष्ठम् ।

पुरुषमशनि-लेखा, - लक्षणं वीर-लक्ष्मी-
रति-सुरभि-यशोभि, -र्मालिनीवाभ्युपैति ।।

16 अक्षरात्मक अष्टि छन्द
Aṣṭi metres with 16 *varṇas*

ऋषभ-गज-विलसितं भ्रौ नौ न्गौ स्वर-नवकौ ॥ 15 ॥

शब्दार्थ- भ्रौ नौ न्गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 भगण (ऽ।।), 1 रगण (ऽ।ऽ), 3 नगण (।।।, ।।।, ।।।), 1 गुरु (ऽ) होते हैं, **ऋषभ-गज-विलसितम्** - उसे 'ऋषभ-गज-विलसित' छन्द कहते हैं । **स्वर-नवकौ**- स्वर-7, नवक-9 । 7, 9 पर यति होगी ।

अर्थ- ऋषभ-गज-विलसित छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 1 भगण, 1 रगण, 3 नगण, 1 गुरु, (यति 7, 9 पर)। 16x4 वर्णीय (2^{16} = 65536) समवृत्तों में इसका स्थान 32727वाँ है ।

Meaning. The *ṛsabha-gaja-vilasita* metre has the following syllabic arrangement: a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), 3 *nagaṇas* (।।।, ।।।, ।।।) and a long (ऽ). Its pauses occur at 7, 9 *varṇas.* Its place is 32727 in the list of 2^{16} even metres with a total of 16 x 4 *varṇas.*

ऋषभ-गज-विलसित छन्द का उदाहरण (Example)- (16x4 वर्ण)

भ र न न न ग
ऽ । । ऽ । ऽ । । । । । । । । । ऽ
आ य त-बा हु द ण्ड, -मु प चि त-पृ थु-हृ द यं,
पीन-कटि-प्रदेश, -मृषभ-गज-विलसितम् ।
वीरमुदार-सत्त्व, मतिशय-गुण-रसिकं,
श्रीरति-चञ्चलाऽपि, न परिहरति पुरुषम् ।।

17 अक्षरात्मक अत्यष्टि छन्द
Atyaṣṭi metres with 17 *varṇas*

हरिणी न्सौ म्रौ स्लौ ग्- ऋतु-समुद्र-ऋषयः ॥ 16 ॥

शब्दार्थ- न्सौ म्रौ स्लौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1

नगण (।।।), 1 सगण (।।ऽ), 1 मगण (ऽऽऽ), 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 सगण (।।ऽ), 1 लघु, 1 गुरु होते हैं, **हरिणी**- उसे 'हरिणी' छन्द कहते हैं । **ऋतु-समुद्र-ऋषयः** -ऋतु-6, समुद्र-4, ऋषि-7, अर्थात् यति 6, 4, 7 पर ।

अर्थ- हरिणी छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4 - 1 नगण, 1 सगण, 1 मगण, 1 रगण, 1 सगण, 1लघु, 1 गुरु, (यति 6, 4, 7 पर) । 17×4 वर्णीय 2^{17} समवृत्तों की सूची में इसका 46112वाँ स्थान है ।

Meaning. The *hariṇī* metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): a *nagaṇa* (।।।), a *sagaṇa* (।।ऽ), a *magaṇa* (ऽऽऽ), a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), a *sagaṇa* (।।ऽ), a short (।) and a long (ऽ). It has pauses at 6, 4 and 7 *varṇas* in each of its quarters. Its place is 46112 in the list of 2^{17} even metres.

हरिणी छन्द का उदाहरण (Example)- (17x4 वर्ण)

न स म र स ल ग

। । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ

कु व ल य-द ल,-श्या मा पी नो,-न्न त-स्त न-शा लि नी,
चकित-हरिणी,-नेत्रच्छाया, मदालस-लोचना ।
मनसिज-धनु-र्भा-निर्घोषै,-रिव श्रुति-पेशलैः,
मनसि ललना, लीलालापैः, करोति ममोत्सवम् ।।

पृथ्वी ज्सौ ज्सौ य्लौ ग् वसु-नवकौ ॥ 17 ॥

शब्दार्थ- ज्सौ ज्सौ य्लौ ग् - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 जगण (।ऽ।), 1 सगण (।।ऽ), 1 जगण (।ऽ।), 1 सगण (।।ऽ), 1 यगण (।ऽऽ), 1 लघु 1 गुरु होते हैं, **पृथ्वी**- उसे 'पृथ्वी' छन्द कहते हैं । **वसु-नवकौ**-वसु-8, नवक-9, अर्थात् यति 8, 9 पर ।

अर्थ- पृथ्वी छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4 - 1 जगण, 1 सगण, 1 जगण, 1 सगण, 1 यगण, 1 लघु, 1 गुरु, (यति 8, 9 पर) । 17x4 वर्णीय 2^{17} समवृत्तों की सूची में इसका 38750वाँ स्थान है ।

Meaning. The *pṛthvī* metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): a *jagaṇa* (ISI), a *sagaṇa* (IIS), a *jagaṇa* (ISI), a *sagaṇa* (IIS), an *yagaṇa* (ISS), a short (I) and a long (S). It has pauses at 8, 9 *varṇas.* Its place is 38750 in the list of 2^{17} even metres. (The *pṛthvī* means the earth.)

पृथ्वी छन्द का उदाहरण (Example)- (17x4 वर्ण)

ज स ज स य लग

I S I I I S I S I I I S I S S I S

ह ताः स मि ति श त्र व,-स्त्रि भु व ने वि की र्ण य शः,

कृतश्च गुणिनां गृहे, निरवधिर्महानुत्सवः ।

त्वया कृत-परिग्रहे, क्षितिप ! वीर ! सिंहासने,

नितान्त-निरवग्रहा, फलवती च पृथ्वी कृता ।।

वंश-पत्र-पतितं भ्रौ न्भौ न्लौ ग् दिग्-ऋषयः ॥ 18 ॥

शब्दार्थ- भ्रौ न्भौ न्लौ ग् - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 भगण (SII), 1 रगण (SIS), 1 नगण (III), 1 भगण (SII), 1 नगण (III), 1 लघु, 1गुरु हों, **वंशपत्रपतितम्** - उसे 'वंश पत्र-पतित' छन्द कहते हैं। **दिग्-ऋषयः** - दिग् -10, ऋषि-7, अर्थात् 10, 7 पर यति होती है ।

अर्थ- वंशपत्रपतित छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4 - 1 भगण, 1 रगण, 1 नगण, 1 भगण, 1 नगण, 1 लघु, 1 गुरु, (यति 10, 7 पर) । 2^{17} समवृत्तों की सूची में इसका 64983 स्थान है ।

Meaning. The *vanśa-patra-patita* metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): a *bhagaṇa* (SII), a *ragaṇa* (SIS), a *nagaṇa* (III), a *bhagaṇa* (SII), a *nagaṇa* (III), a short (I) and a long (S). It has pauses at 10, 7 *varṇas* in each of its quarters. Its place is 64983 in the list of 2^{17} even metres.

वंशपत्रपतित छन्द का उदाहरण (Example)- (17x4 वर्ण)

भ र न भ न ल ग

S I I S I S I I I S I I I I I I S

अ द्य कु रु ष्व क र्म सु कृ तं, य द प र-दि व से,

मित्र ! विधेयमस्ति भवतः, किमु चिरयसि तत्?

जीवितमल्प-काल-कलना, लघुतर-तरलं,

नश्यति वंश-पत्र-पतितं, हिम-सलिलमिव ।।

मन्दाक्रान्ता म्भौ न्तौ त्गौ ग् समुद्रर्तु-स्वराः ॥ 19 ॥

शब्दार्थ- म्भौ न्तौ तगौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 मगण (SSS), 1 भगण (SII), 1 नगण (III), 2 तगण (SSI, SSI), 2 गुरु होते हैं, **मन्दाक्रान्ता-** उसे 'मन्दाक्रान्ता' छन्द कहते हैं । **समुद्रर्तु-स्वराः** - समुद्र-4, ऋतु- 6, स्वर-7, अर्थात् 4, 6, 7 पर यति होती है ।

अर्थ- मन्दाक्रान्ता छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 1 मगण, 1 भगण, 1 नगण, 2 तगण, 2 गुरु, (यति 4, 6, 7 पर) । 2^{17} समवृत्तों के क्रम में इसका 18929वाँ स्थान है ।

Meaning. The *mandākrāntā* metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): a *magaṇa* (SSS), a *bhagaṇa* (SII), a *nagaṇa* (III), 2 *tagaṇas* (SSI, SSI) and 2 longs (SS). It has pauses at 4, 6 and 7 *varṇas* in each quarter. Its place is 18929 in the list of 2^{17} even metres.

मन्दाक्रान्ता छन्द का उदाहरण (Example)- (17x4 वर्ण)

म भ न त त ग ग

S S S S I I I I I S S I S S I S S

प्र त्या दि ष्टं, स म र-शि र सः, का न्दि शी भू य न ष्टं,

त्वं निःशेषं कुरु रिपु-वधं, मार्गमासाद्य सद्यः ।

किं नाश्रौषीः, परिणत-धियां, नीति-मार्गोपदेशं ?

मन्दाक्रान्ता, भवति फलिनी, वारि-लक्ष्मीः क्षयाय ।।

शिखरिणी य्मौ न्सौ भ्लौ ग् ऋतु-रुद्राः ॥ 20 ॥

शब्दार्थ- य्मौ न्सौ भ्लौ ग् - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः

1 यगण (।ऽऽ), 1 मगण (ऽऽऽ), 1 नगण (।।।), 1 सगण (।।ऽ), 1 भगण (ऽ।।), 1 लघु, 1 गुरु होते हैं, **शिखरिणी**- उसे 'शिखरिणी' छन्द कहते हैं । **ऋतु-रुद्राः** - ऋतु-6, रुद्र-11, अर्थात् 6, 11 पर यति होती है ।

अर्थ- शिखरिणी छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 1 यगण, 1 मगण, 1 नगण, 1 सगण, 1 भगण, 1 लघु, 1 गुरु, (6, 11 पर यति) । 2^{17} समवृत्तों के क्रम में इसका 59330वाँ स्थान है ।

Meaning. The *śikhariṇī* metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): an *yagaṇa* (ISS), a *magaṇa* (SSS), a *nagaṇa* (III), a *sagaṇa* (IIS), a *bhagaṇa* (SII), a short and a long (S). It has pauses at 6, 11 *varṇas* in each quarter. Its place is 59330 in the list of 2^{17} even metres.

शिखरिणी छन्द का उदाहरण (Example)- (17 x 4 वर्ण)

य म न स भ ल ग

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । । । ऽ

य शः शे षी- भू ते, ज ग ति व र- ना थे गु ण नि धौ,

प्रवृत्ते वैराग्ये, विषय-रस-निष्-क्रान्त-मनसाम् ।

इदानीमस्माकं, घन-तरु-लता-निर्झरवतीं,

तपस्तप्तुं चेतो, भवति गिरि-मालां शिखरिणीम् ।।

18 अक्षरात्मक धृति छन्द

Dhṛti metres with 18 varṇas

कुसुमित-लता-वेल्लिता म्तौ न्यौ याविन्द्रियर्तु-स्वराः ॥ 21 ॥

शब्दार्थ- म्तौ न्यौ यौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 मगण (ऽऽऽ), 1 तगण (ऽऽ।), 1 नगण (।।।), 3 यगण (।ऽऽ, ।ऽऽ, ।ऽऽ) होते हैं, **कुसुमित0**- उसे 'कुसुमित-लता-वेल्लिता' छन्द कहते हैं । **इन्द्रिय-ऋतु-स्वराः** - इन्द्रिय-5, ऋतु-6, स्वर-7, अर्थात् 5, 6, 7 पर यति होती है ।

अर्थ- कुसुमित-लता-वेल्लिता छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4 - 1 मगण, 1 तगण, 1 नगण, 3 यगण, (5, 6, 7 पर यति) । 2^{18} समवृत्तों के क्रम में इसका 37857वाँ स्थान है ।

Meaning. The *kusumita-latā-vellitā* metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): a *magaṇa* (ऽऽऽ), a *tagaṇa* (ऽऽ।), a *nagaṇa* (।।।) and 3 *yagaṇas* (।ऽऽ, ।ऽऽ, ।ऽऽ). It has pauses at 5, 6 and 7 *varṇas* in each of its quarters. Its place is 37857 in the list of 2^{18} even metres.

कुसुमित-लता-वेल्लिता छन्द का उदाहरण (Example)-(18x4 वर्ण)

म त न य य य

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

ध न्या ना मे ताः, कु सु मि त-ल ता-, वे ल्लि तो त्फु ल्ल-वृ क्षाः,

सोत्कण्ठं कूजत्,- परभृत-कलाऽऽ,-लाप-कोलाहलिन्यः ।

मध्वादौ माद्यन्,-मधुकर-कलो,-द्गीत-झंकार-रम्याः,

ग्रामान्तः-स्रोतः,-परिसर-भुवः, प्रीतिमुत्पादयन्ति ।।

19 अक्षरात्मक अतिधृति छन्द
Atidhṛti metres with 19 varṇas

शार्दूल-विक्रीडितं म्सौ ज्सौ तौ ग्-आदित्य-ऋषयः॥ 22 ॥

शब्दार्थ- म्सौ ज्सौ तौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 मगण (ऽऽऽ), 1 सगण (।।ऽ), 1 जगण (।ऽ।), 1 सगण (।।ऽ), 2 तगण (ऽऽ।, ऽऽ।) 1 गुरु होते हैं, **शार्दूल-विक्रीडितम्**- उसे 'शार्दूल-विक्रीडित' छन्द कहते हैं । **आदित्य-ऋषयः** - आदित्य-12, ऋषि- 7, अर्थात् यति 12, 7 पर ।

अर्थ- शार्दूल-विक्रीडित छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 1 मगण, 1 सगण, 1 जगण, 1 सगण, 2 तगण, 1 गुरु (यति 12, 7 पर) । 2^{19} समवृत्तों की सूची में इसका 149337वाँ स्थान है ।

Meaning. The *śārdūla-vikrīḍita* metre has the

following syllabic arrangement (in each of its quarters): a *magaṇa* (ऽऽऽ), a *sagaṇa* (।।ऽ), a *jagaṇa* (।ऽ।), a *sagaṇa* (।।ऽ), 2 *tagaṇas* (ऽऽ।, ऽऽ।) and a long (ऽ). It has pauses at 12, 7 *varṇas* in each of its quarters. Its place is 149337 in the list of 2^{19} even metres.

शार्दूल-विक्रीडित छन्द का उदाहरण (Example)- (19x4 वर्ण)

म स ज स त त ग

ऽ ऽ ऽ । । ऽ । ऽ । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ

क म्बु ग्री व मु द ग्र-बा हु-शि ख रं, र क्ता न्त-दी र्घे क्ष णं,

शाल-प्रांशु-शरीरमायत-भुजं, विस्तीर्ण-वक्षःस्थलम् ।

कील-स्कन्धमनुद्धतं परिजने, गम्भीर-सत्य-स्वरं,

राज्यश्रीः समुपैति वीरपुरुषं, शार्दूल-विक्रीडितम् ।।

20 अक्षरात्मक कृति- छन्द

Kṛti metres with 20 *varṇas*

सुवदना म्रौ भ्नौ य्भौ ल्गौ-ऋषि-स्वरर्तवः ॥ 23 ॥

शब्दार्थ- म्रौ भ्नौ य्भौ ल्गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 मगण (ऽऽऽ), 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 भगण (ऽ।।), 1 नगण (।।।), 1 यगण (।ऽऽ), 1 भगण (ऽ।।), 1 लघु, 1 गुरु होते हैं, **सुवदना**- उसे 'सुवदना' छन्द कहते हैं । **ऋषि-स्वर-ऋतवः** - ऋषि- 7, स्वर-7, ऋतु- 6, अर्थात् 7, 7, 6 पर यति ।

अर्थ- सुवदना छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 1 मगण, 1 रगण, 1 भगण, 1 नगण, 1 यगण, 1 भगण, 1 लघु, 1 गुरु, (यति 7, 7, 6 पर) । 2^{20} समवृत्तों की सूची में इसका 466833वाँ स्थान है ।

Meaning. The *suvadanā* metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): a *magaṇa* (ऽऽऽ), a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *nagaṇa* (।।।), an *yagaṇa* (।ऽऽ), a *bhagaṇa* (ऽ।।), a short (।) and a long (ऽ). It has pauses at 7, 7 and 6 *varṇas* in each of its quarters. Its

place is 466833 in the list of 2^{20} even metres.

सुवदना छन्द का उदाहरण (Example)- (20x4 वर्ण)

म र भ न य भ ल ग

ऽ ऽ ऽ ऽ। ऽ ऽ।। ।।।। ऽ ऽ ऽ ।। । ऽ

या पीनोद्गाढ-तुङ्ग,-स्तन-जघन-घना, भोगाऽऽलस-गतिर्,
यस्याः कर्णावतंसो-, त्पल-रुचि-जयिनी, दीर्घे च नयने।
श्यामा सीमन्तिनीनां, तिलकमिव मुखे, या च त्रिभुवने,
संप्राप्ता सांप्रतं मे, नयन-पथमसौ, दैवात् सुवदना ।।

ग्लिति वृत्तम् ॥ 24 ॥

शब्दार्थ- ग्ल् इति- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 गुरु, 1 लघु के क्रम से 20 वर्ण हों, **वृत्तम्**- उसे 'वृत्त' छन्द कहते हैं । यति पादान्त में ।

अर्थ- वृत्त छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4 - 1 गुरु, 1 लघु के क्रम से 20 वर्ण, (यति पादान्त में)। 2^{20} समवृत्तों की सूची में इसका 699051वाँ स्थान है ।

Meaning. Each quarter of the *vṛtta* metre has 20 *varṇas*, wherein long and short *varṇas* are arranged alternately. It has pauses at the end of quarters. Its place is 699051 in the list of 2^{20} even metres.

वृत्त छन्द का उदाहरण (Example)- (20x4 वर्ण)

ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ ।

ज न्तु-मा त्र-दुः ख-का रि क र्म-नि र्मि तं भ व त्य न र्थ-हे तु,
तेन सर्वमात्म-तुल्यमीक्षमाण-उत्तमं सुखं लभस्व ।
विद्धि बुद्धि-पूर्वकं ममोपदेश-वाक्यमेतदादरेण,
वृत्तमेतदुत्तमं महाकुल-प्रसूत-जन्मनां हिताय ।।

21 अक्षरात्मक प्रकृति छन्द

Prakriti metres with 21 *varṇas*

स्रग्धरा म्रौ भ्नौ यौ य् त्रिःसप्तकाः ॥ 25 ॥

शब्दार्थ- म्रौ भ्नौ यौ य्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 मगण (ऽऽऽ), 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 भगण (ऽ।।), 1 नगण (।।।), 3 यगण

(।ऽऽ, ।ऽऽ, ।ऽऽ) होते हैं, **स्रग्धरा**- उसे स्रग्धरा छन्द कहते हैं । **त्रिसप्तकाः**- यति तीन सप्तक पर, अर्थात् 7, 7, 7 पर यति ।

अर्थ- स्रग्धरा छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4 - 1 मगण, 1 रगण, 1 भगण, 1 नगण, 3 यगण, (यति 7, 7, 7 पर) । 2^{21} समवृत्तों की सूची में इसका 302993वाँ स्थान है।

Meaning. The *sragdharā* metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): a *magaṇa* (ऽऽऽ), a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *nagaṇa* (।।।) and 3 *yagaṇas* (।ऽऽ, ।ऽऽ, ।ऽऽ). It has pauses at the interval of 7 *varṇas*. Its place is 302993 in the list of 2^{21} even metres.

स्रग्धरा छन्द का उदाहरण (Example)- (21 x 4 वर्ण)

म र भ न य य य

ऽ ऽ ऽ ऽ। ऽऽ ।। ।।। ।ऽ ऽ।ऽ ऽ।ऽ ऽ

रेखा-भ्रूः शुभ्र-दन्त,-द्युति-हसित-शर,-च्चन्द्रिका-चारु-मूर्तिः,
माद्यन्-मातङ्ग-लीला,-गतिरतिविपुला, भोग-तुङ्ग-स्तनी या।
रम्भा-स्तम्भोपमोरू,-रलि-मलिन-घन,-स्निग्ध-धम्मिल्ल-हस्ता,
बिम्बोष्ठी रक्त-कण्ठी, दिशतु रति-सुखं, स्रग्धरा सुन्दरीयम्।।

22 अक्षरात्मक आकृति छन्द
Ākṛti metres with 22 *varṇas*

भद्रकं भ्रौ न्रौ न्रौ न्गौ दिगादित्याः ॥ 26 ॥

शब्दार्थ- भ्रौ न्रौ नरौ न्गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 भगण, 1 रगण, 1 नगण, 1 रगण, 1 नगण, 1 रगण, 1 नगण, 1 गुरु होते हैं, **भद्रकम्**- उसे 'भद्रक' छन्द कहते हैं। इसको ही 'मद्रक' भी कहते हैं । **दिगादित्याः** - दिग् -10, आदित्य-12, अर्थात् 10, 12 पर यति होगी ।

अर्थ- भद्रक छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4- 1 भगण, 1रगण, 1 नगण, 1 रगण, 1 नगण, 1 रगण, 1 नगण, 1 गुरु, (यति 10, 12 पर) । 2^{22} समवृत्तों की सूची में इसका 1930711वाँ स्थान है।

Meaning. The *bhadraka* (also called *madraka*) metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), a *nagaṇa* (।।।), a *ragaṇa* (ऽ।ऽ) a *nagaṇa* (।।।), a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), a *nagaṇa* (।।।) and a long (ऽ). Pauses in each quarter occur at 10 and 12 *varṇas*. Its place is 1930711 in the list of 2^{22} even metres.

भद्रक (मद्रक) छन्द का उदाहरण (Example)- (22 x 4 वर्ण)

भ र न र न र न ग

ऽ ।। ऽ। ऽ ।। ।ऽ ।ऽ ।।। ऽ । ऽ।। ।ऽ

भद्रक-गीतिभिः सकृदपि, स्तुवन्ति भव ! ये भवन्तमभवं,
भक्ति-भराऽवनम्र-शिरसः, प्रणम्य तव पादयोः सुकृतिनः ।
ते परमेश्वरस्य पदवी,-मवाप्य सुखमाप्नुवन्ति विपुलं,
मर्त्य-भुवं स्पृशन्ति न पुन,-र्मनोहर-सुराङ्गना-परिवृताः ।।

23 अक्षरात्मक विकृति छन्द

Vikṛti metres with 23 *varṇas*

अश्वललितं न्जौ भ्जौ भ्जौ भ्लौ ग् रुद्रादित्याः ॥ 27 ॥

शब्दार्थ- न्जौ भ्जौ भ्जौ भ्लौ ग् - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 नगण, 1 जगण, 1 भगण, 1 जगण, 1 भगण, 1 जगण, 1 भगण, 1 लघु, 1 गुरु होते हैं, **अश्वललितम्**- उसे 'अश्वललित' छन्द कहते हैं । **रुद्रादित्याः** - रुद्र-11, आदित्य-12, अर्थात् 11, 12 पर यति ।

अर्थ- अश्वललित छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 1 नगण, 1 जगण, 1 भगण, 1 जगण, 1 भगण, 1 जगण, 1 भगण, 1 लघु, 1 गुरु, (यति 11, 12 पर) । 2^{23} समवृत्तों की सूची में इसका 3861424वाँ स्थान है ।

Meaning. The *aśvalalita* metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): a *nagaṇa* (।।।), a *jagaṇa* (।ऽ।), a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *jagaṇa* (।ऽ।) a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *jagaṇa* (।ऽ।), a *bhagaṇa* (ऽ।।), a short (।)

and a long (ऽ). It has pauses at 11, 12 *varṇas*. Its place is 3861424 in the list of 2^{23} even metres.

अश्वललित छन्द का उदाहरण (Example)- (23 x 4 वर्ण)

न ज भ ज भ ज भ ल ग

। । । । ऽ । ऽ । । । । ऽ । ऽ । । । ऽ । ऽ । । । ऽ

पवन-विधूत-वीचि-चपलं, विलोकयति जीवितं तनुभृतां,
वपुरपि हीयमानमनिशं, जरा-वनितया वशीकृतमिदम्।
सपदि निपीडन-व्यतिकरं, यमादिव नराधिपान् -नरपशुः,
पर-वनितामवेक्ष्य कुरुते, तथापि हतबुद्धिरश्व-ललितम्।।

मत्ताक्रीडा मौ त्नौ नौ न्लौ ग् वसु-पञ्चदशकौ ॥ 28 ॥

शब्दार्थ- मौ त्नौ नौ न्लौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 मगण (ऽऽऽ, ऽऽऽ), 1 तगण (ऽऽ।), 4 नगण (।।।, ।।।, ।।।, ।।।), 1 लघु, 1 गुरु होते हैं, **मत्ताक्रीडा**- उसे मत्ताक्रीडा छन्द कहते हैं । **वसु-पञ्चदशकौ**- वसु-8, पञ्चदश-15, अर्थात् 8, 15 पर यति ।

अर्थ- मत्ताक्रीडा छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4- 2 मगण, 1 तगण, 4 नगण, 1 लघु, 1 गुरु, (यति 8, 15 पर) । 2^{23} समवृत्तों की सूची में इसका 4194049वाँ स्थान है।

Meaning. The *mattākrīḍā* metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): 2 *magaṇas* (ऽऽऽ, ऽऽऽ), a *tagaṇa* (ऽऽ।), 4 *nagaṇas* (।।।, ।।।, ।।।, ।।।), a short (।) and a long (ऽ). It has pauses at 8, 15 *varṇas* in each quarter. Its place is 4194049 in the list of 2^{23} even metres.

मत्ताक्रीडा छन्द का उदाहरण (Example)- (23 x 4 वर्ण)

म म त न न न न ल ग

ऽ ऽ ऽऽ ऽ ऽ ऽऽ । । । । । । । । । । । । । । ऽ

हृद्यं मद्यं पीत्वा नारी, स्खलित-गति-रतिशय-रसिक-हृदया,
मत्ताक्रीडा लोलैरङ्गै-र्मुदमखिल-विट-जन-मनसि कुरुते ।
वीतव्रीडाऽश्लीलाऽलापैः, श्रवण-सुख-सुभग-सुललित-वचना,
नृत्यैर्गीतैर्भ्रू-विक्षेपैः, कल-मणित-विविध-विहग-कुल-रुतैः ।।

24 अक्षरात्मक संकृति छन्द

Sankṛti metres with 24 *varṇas*

तन्वी भ्तौ न्सौ भौ न्यौ-इन्द्रिय-स्वर-मासाः ॥ 29 ॥

शब्दार्थ- भ्तौ न्सौ भौ न्यौ - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 भगण (ऽ।।), 1 तगण (ऽऽ।), 1 नगण (।।।), 1 सगण (।।ऽ), 2 भगण (ऽ।।, ऽ।।), 1 नगण (।।।), 1 यगण (।ऽऽ), होते हैं, **तन्वी**- उसे 'तन्वी' छन्द कहते हैं । **इन्द्रिय-स्वर-मासाः** - इन्द्रिय-5, स्वर-7, मास- 12, अर्थात् यति 5, 7, 12 पर ।

अर्थ- तन्वी छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4 - 1 भगण, 1 तगण, 1 नगण, 1 सगण, 2 भगण, 1 नगण, 1 यगण, (यति 5, 7 , 12 पर) । 2^{24} समवृत्तों की सूची में इसका 4155367वाँ स्थान है।

Meaning. The *tanvī* metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *tagaṇa* (ऽऽ।), a *nagaṇa* (।।।), a *sagaṇa* (।।ऽ), 2 *bhagaṇas* (ऽ।।, ऽ।।), a *nagaṇa* (।।।) and an *yagaṇa* (।ऽऽ). Its pauses are at 5, 7 and 12 *varṇas* in each of its quarters. Its place is 4155367 in the list of 2^{24} even metres.

तन्वी छन्द का उदाहरण (Example)- (24 x 4 वर्ण)

भ त न स भ भ न य

ऽ ।। ऽ ऽ ।। ।। । ।ऽ ऽ । ।ऽ । । ।। ।।ऽ ऽ

चन्द्रमुखी सु,-न्दर-घन-जघना, कुन्द-समान-शिखर-दशनाग्रा,
निष्कल-वीणा,-श्रुति-सुख-वचना, त्रस्त-कुरङ्ग-तरल-नयनान्ता।
निर्मुख-पीनो,न्नत-कुच-कलशा, मत्त-गजेन्द्र-ललित-गमना च,
निर्भर-लीला,-निधुवन-विधये, मुञ्ज नरेन्द्र ! भवतु तव तन्वी।।

25 अक्षरात्मक अभिकृति छन्द

Abhikṛti metres with 25 *varṇas*

क्रौञ्चपदा भ्मौ स्भौ नौ नौ ग् भूतेन्द्रिय-वस्वृषयः ॥ 30 ॥

शब्दार्थ- भ्मौ स्भौ नौ नौ ग् - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 भगण (ऽ।।), 1 मगण (ऽऽऽ), 1 सगण (।।ऽ), 1 भगण (ऽ।।), 4 नगण (।।।, ।।।, ।।।, ।।।), 1 गुरु हों, **क्रौञ्चपदा**- उसे 'क्रौञ्चपदा' छन्द कहते हैं। **भूतेन्द्रिय-वस्वृषयः** - भूत-5, इन्द्रिय-5, वसु-8, ऋषि-7, अर्थात् 5, 5, 8, 7 पर यति होती है ।

अर्थ- क्रौंचपदा छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4 - 1 भगण, 1 मगण, 1 सगण, 1 भगण, 4 नगण, 1 गुरु । (यति 5, 5, 8, 7 पर) । 2^{25} समवृत्तों की सूची में इसका 16776391वाँ स्थान है।

Meaning. The *krauñcapadā* metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *magaṇa* (ऽऽऽ), a *sagaṇa* (।।ऽ), a *bhagaṇa* (ऽ।।), 4 *nagaṇas* (।।।, ।।।, ।।।, ।।।) and a long (ऽ). It has pauses at 5, 5, 8 and 7 *varṇas* in each of its quarters. Its place is 16776391 in the list of 2^{25} even metres.

क्रौंचपदा छन्द का उदाहरण (Example)- (25 x 4 वर्ण)

भ म स
ऽ । । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ
या क पि ला क्षी, पि ङ्ग ल-के शी,
भ न न न न ग
। । । । । । । । । । । । । । ऽ
क लि रु चि-र नु दि न,-म नु न य-क ठि ना,

दीर्घतराभिः, स्थूल-शिराभिः,
परिवृतवपुरति,-शय-कुटिल-गतिः ।
आयत-जङ्घा, निम्न-कपोला,
लघुतर-कुचयुग,-परिचित-हृदया,
सा परिहार्या, क्रौंचपदा स्त्री,
ध्रुवमिह निरवधि, सुखमभिलषता ।।

26 अक्षरात्मक उत्कृति छन्द
Utkṛti metres with 26 *varṇas*

भुजङ्ग-विजृम्भितं मौ त्नौ नौ र्सौ
ल्गौ वसु-रुद्र-ऋषयः ॥ 31 ॥

शब्दार्थ- मौ त्नौ नौ र्सौ ल्गौ - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 मगण (ऽऽऽ, ऽऽऽ), 1 तगण (ऽऽ।), 3 नगण (।।।, ।।।, ।।।), 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 सगण (।।ऽ), 1 लघु (।), 1 गुरु (ऽ) होते हैं, **भुजंग-विजृम्भितम्**- उसे 'भुजंग-विजृम्भित' छन्द कहते हैं । **वसु-रुद्र-ऋषयः** - वसु-8, रुद्र-11, ऋषि-7, अर्थात् - 8, 11, 7 पर यति होती है ।

अर्थ- भुजंग-विजृम्भित छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4 - 2 मगण, 1 तगण, 3 नगण, 1 रगण, 1 सगण, 1 लघु, 1 गुरु, (यति 8, 11, 7 पर) । 2^{26} समवृत्तों की सूची में इसका 23854849वाँ स्थान है ।

Meaning. The *bhujaṅga-vijṛmbhita* metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): 2 *magaṇas* (ऽऽऽ, ऽऽऽ), a *tagaṇa* (ऽऽ।), 3 *nagaṇas* (।।।, ।।।, ।।।), a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), a *sagaṇa* (।।ऽ) a short (।) and a long (ऽ). It has pauses at 8, 11 and 7 *varṇas* in each of its quarters. Its place is 23854849 in the list of 2^{26} even metres.

भुजंग-विजृम्भित छन्द का उदाहरण (Example)- (26 x 4 वर्ण)

म म त न न न
ऽ ऽऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ। ।।।। ।। ।। ।ऽ
ये सं न द्धा ने काऽ नी कै-र्न र-तु र ग-क रि-प रि वृ तैः,
र स ल ग
।ऽ। ।ऽ। ऽ
स मं त व श त्र वो,

युद्ध-श्रद्धा-लुब्धात्मान,-स्त्वदभिमुखमपगत-भियः,
पतन्ति धृताऽऽयुधाः ।

ते त्वां दृष्ट्वा संग्रामाग्रे, नृपति-वर ! कृपण-मनस,-
श्चलन्ति दिगन्तरे,
किं वा सोढुं शक्यं भेकै,-र्बहुभिरपि सविष-विषमं,
भुजङ्ग-विजृम्भितम् ।।

अपवाहको म्नौ नौ नौ न्सौ गौ नवर्तु-रसेन्द्रियाणि ॥ 32 ॥

शब्दार्थ- म्नौ नौ नौ न्सौ गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 मगण (ऽऽऽ), 6 नगण (।।।, ।।।, ।।।, ।।।, ।।।, ।।।), 1 सगण (।।ऽ), 2 गुरु (ऽऽ) होते हैं, **अपवाहकः** - उसे 'अपवाहक' छन्द कहते हैं । **नवर्तु-रसेन्द्रियाणि-** नव-9, ऋतु-6, रस-6, इन्द्रिय- 5, अर्थात् 9, 6, 6, 5 पर यति होती है ।

अर्थ- अपवाहक छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 1 मगण, 6 नगण, 1 सगण, 2 गुरु, (यति 9, 6, 6,5 पर) । 2^{26} समवृत्तों की सूची में इसका 8388601वाँ स्थान है।

Meaning. The *apavāhaka* metre has the following syllabic arrangement in each of its quarters: a *magaṇa* (ऽऽऽ), 6 *nagaṇas* (।।।, ।।।, ।।।, ।।।, ।।।, ।।।), a *sagaṇa* (।।ऽ) and 2 longs (ऽऽ). It has pauses at 9, 6, 6 and 5 *varṇas* in each of its quarters. Its place is 8388601 in the list of 2^{26} even metres.

अपवाहक छन्द का उदाहरण (Example)- (26 x 4 वर्ण)

म न न न न
ऽ ऽ ऽ । । । । । । । । । । । । ।
श्री क ण्ठं त्रि पु र-द ह न,-म मृ त-कि र ण,-
न न स ग ग
। । । । । । । । ऽ ऽ ऽ
श क ल-ल लि त,-शि र सं रु द्रम् ,

भूतेशं हत-मुनि-मख,-मखिल-भुवन,-
नमित-चरण,-युगमीशानम् ।
सर्वज्ञं वृषभ-गमन,-महि-पति-कृत,-

वलय-रुचिर,-करमाराध्यं,
तं वन्दे भव-भय-भिद,-मभिमत-फल,-
वितरण-गुरु,-मुमया युक्तम् ।।

27 अक्षरात्मक दण्डक छन्द
Daṇḍaka metres with 27 *varṇas*

दण्डको नौ रः ॥ 33 ॥

शब्दार्थ- नौ रः - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 नगण (।।।, ।।।) और 7 रगण (ऽ।ऽ, ऽ।ऽ, ऽ।ऽ, ऽ।ऽ, ऽ।ऽ, ऽ।ऽ, ऽ।ऽ) होते हैं, **दण्डकः** - उसे 'दण्डक' छन्द कहते हैं । यति पादान्त में ।

विशेष- (1) इससे पूर्व 26 अक्षरात्मक आकृति छन्द का विधान किया गया है, एक-एक अक्षर की वृद्धि से 26+1= 27 अक्षर का दण्डक छन्द ज्ञात होता है । सूत्र में 'रः' रगणों की संख्या का निर्देश नहीं है । 2 नगण का उल्लेख है, अतः 27 अक्षर के लिए शेष 7 रगण की कल्पना की गई है ।

(2) सूत्र में 'रः' रगण कहा गया है, अतः आगे दण्डक के भेदों में एक अक्षर की वृद्धि के स्थान पर 1 रगण (ऽ।ऽ) अर्थात् तीन-तीन अक्षरों की वृद्धि होगी । जैसे 27+3 = 30 अक्षर, 33 अक्षर, 36 अक्षर आदि वाले छन्द ।

अर्थ- दण्डक छन्द की योजना यह है:-

पाद 1 से 4- 2 नगण, 7 रगण, (यति पादान्त में) ।

Meaning. If each quarter of an even metre consists of 2 *nagaṇas* followed by 7 (or more) *ragaṇas,* then the metre is called *daṇḍaka.* Pauses occur at the end of quarters. A *daṇḍaka* metre with 2 *nagaṇas* followed by 7 *ragaṇas* is called *caṇḍa-vṛṣṭi-prapāta* (CVP); cf. the succeeding formula by increasing 3 *varṇas* in CVP, one obtains different varieties of *daṇḍaka* metres.

दण्डक छन्द का उदाहरण (Example)- (27 x 4 वर्ण)

न न र र र
। । । । । । । ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
इ ह हि भ व ति द ण्ड का ऽ र ण्य-दे शे स्थि तिः,

र र र र

ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ

पु ण्य भा जां मु नी नां म नो हा रि णी,
त्रिदश-विजयि-वीर्य-दृप्यद्-दशग्रीव-
लक्ष्मी-विरामेण रामेण संसेविते ।
देव-यजन-भूमि-संभूत-सीमन्तिनी-
सोम-सीता-पद-स्पर्श-पूताश्रमे,
भुवन-नमित-पाद-पद् माऽभिधानाऽम्बिका
तीर्थयात्राऽऽगताऽनेक-सिद्धाकुले ।।

प्रथमश्चण्ड-वृष्टि-प्रपातः ॥ 34 ॥

शब्दार्थ- प्रथमः - दण्डक छन्द का प्रथम भेद, **चण्ड-वृष्टि-प्रपातः**- चण्ड-वृष्टि-प्रपात छन्द है । पादान्त में यति ।

चन्डवृष्टि-प्रपात छन्द का उदाहरण- पूर्व श्लोक है ।

Meaning. The first variety of *daṇḍaka* metre is *caṇda-vrṣti-prapāta.* (The syllabic arrangement is already described. Pauses occur at the end. Its example is the preceding *śloka.*)

अन्यत्र रात-माण्डव्याभ्याम् ॥ 35 ॥

शब्दार्थ- रात-माण्डव्याभ्याम् - आचार्य रात और माण्डव्य, **अन्यत्र**- दण्डक के इस 'चण्डवृष्टि प्रपात' भेद को उचित नहीं मानते हैं । अन्य आचार्य इस भेद को ठीक मानते हैं । आचार्य रात और माण्डव्य ने दण्डक के अर्ण, अर्णव, व्याल आदि अनेक भेद किए हैं । इनका उल्लेख आगे किया गया है ।

अर्थ- आचार्य रात और माण्डव्य दण्डक का भेद 'चण्डवृष्टि-प्रपात' उचित नहीं मानते हैं । उन्होंने दण्डक के अन्य भेद किए हैं ।

Meaning. Some (ancient) prosodists-- such as *Ācārya Rāta* and *Ācārya Māṇḍavya*- have different opinion regarding the nomenclature of *caṇḍa-vṛṣṭi-prapāta.* According to them, *arṇa, arṇava, vyāla,* etc. are referred to as *daṇḍaka* metres. (See below.)

शेषः प्रचित इति ॥ 36 ॥

शब्दार्थ- शेषः - 'चण्डवृष्टि-प्रपात' के अतिरिक्त दण्डक के अन्य सभी भेदों को, **प्रचित**- प्रचित छन्द कहेंगे । **विशेष**- अब तक छन्दों के वर्णन में एक-एक अक्षर की वृद्धि का विस्तार करके नए छन्द दिए गए हैं, किन्तु प्रचित में 'दण्डको रः' (सूत्र 33) में 'रगण' (ऽ।ऽ) का निर्देश है, रगण के 3 अक्षर बढ़ेंगे। दण्डक के प्रत्येक नए छन्द में इसी प्रकार 'रगण' (3 अक्षर) की वृद्धि होती जाएगी । **इति**- अध्याय की समाप्ति का सूचक है ।

अर्थ- वस्तुतः दण्डक छन्द के अन्य सभी भेदों को प्रचित छन्द कहेंगे।

Meaning. *Daṇḍakas* other than *caṇḍa-vṛṣṭi-prapāta* are called *pracita* metres.

Note: *Ācārya Piṅgala* has not discussed much about *daṇḍaka* metres. Following other eminent prosodists (inclusive of his successors), the following varieties of *daṇḍakas* are worth mentioning.

Arṇa (अर्ण), *arṇava* (अर्णव), *vyāla* (व्याल), *jimūta* (जीमूत), *līlākāra* (लीलाकार), *uddāma* (उद्दाम), *śaṅkha* (शंख), *ārāma* (आराम), *saṅgrāma* (संग्राम), *surāma* (सुराम), *vaikuṇṭha* (वैकुण्ठ), *sāra* (सार), *kāsāra* (कासार), *visāra* (विसार), *saṁhara* (संहार), *nīhāra* (नीहार), *mandāra* (मन्दार), *kedāra* (केदार), *āsāra* (आसार), *satkāra* (सत्कार), *mākanda* (माकन्द), *govinda* (गोविन्द), *sānanda* (सानन्द), *sandoha* (सन्दोह), *ānanda* (आनन्द), *siṁha* (सिंह), *samudra* (समुद्र), *bhujaṅga* (भुजंग), *manoja śekhara* (मनोज शेखर), *aśoka-puṣpa mañjarī* (अशोक पुष्प मंजरी), *śālūra* (शालूर), *ghanākṣarī* (घनाक्षरी) and *rūpa-ghanākṣarī* (रूप घनाक्षरी). The last five *daṇḍakas*, as discussed in the book *Vṛtta-Candrikā*, contain respectively 28, 28, 29, 31 and 32 syllables in each of their quarters. As a general rule, each quarter of *daṇḍakas* consisting of 30, 33, 36, 39, 42 & c. syllables contains 2 *nagaṇas* (III, III) and the rest are *ragaṇas*.

प्रचित छन्द का उदाहरण- (30 x 4 वर्ण) पादान्त में यति । (Example of a *pracita* metre (30 x 4 *varnas);* pauses are at the end of quarters.)

न न र र र
। । । । । । । ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
प्र थ म-क थि त-द ण्ड क श्च ण्ड-वृ ष्टि-प्र पा ताऽ-
र र र र र
। ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ
भि धा नो मु नेः पिङ् ग ला चा र्य ना म्नो म तः,

प्रचित इति ततः परं दण्डकानामियं
जातिरेकैक-रेफाभिवृद्ध्या यथेष्टं भवेत् ।
स्वरुचि-रचित-संज्ञया तद्-विशेषैरशेषैः
पुनः काव्यमन्येऽपि कुर्वन्तु वागीश्वराः,
भवति यदि समान-संख्याक्षरैर्यत्र पाद-
व्यवस्था ततो दण्डकः पूज्यतेऽसौ जनैः ।।

दण्डक समाप्त । End of *Daṇḍakas.*

विशेष- 1. आचार्य रात और माण्डव्य ने दण्डक के अनेक भेदों का उल्लेख किया है । आचार्य पिंगल ने केवल एक 'चण्ड-वृष्टि-प्रपात' भेद किया है । शेष भेदों के लिए 'प्रचित' नाम दिया है । अतएव रात और माण्डव्य आचार्यों की अस्वीकृति नोट की गयी है ।

2. दण्डक के अन्य भेदों का उल्लेख रत्नाकर (3.12) आदि ग्रन्थों में किया गया है । रत्नाकर का कथन है -

प्रतिचरण-विवृद्धरेफाः स्यु-
रर्णार्णव-व्याल-जीमूत-
लीलाकरोद्दाम-शंखादयः ।।

अर्थात् अर्ण, अर्णव, व्याल आदि छन्दों में प्रतिपाद एक रगण की वृद्धि होती जाती है ।

अग्निपुराण (334.30) में भी इस नियम का उल्लेख है -

'रेफ-वृद्ध्यार्णार्णवा स्यु-र्व्याल-जीमूत-मुख्यकाः ।।'

अर्थात् अर्ण, अर्णव, व्याल आदि छन्दों में एक रगण की वृद्धि होती है ।

3. प्रत्येक नए छन्द में प्रारम्भ में दो नगण रहेंगे और उसके बाद क्रमशः 8, 9, 10 आदि रगण रहेंगे, इस प्रकार 30, 33, 36, 39, 42 आदि अक्षरात्मक पाद वाले नए छन्द बनते जाएंगे । इच्छानुसार रगण बढ़ाते जाएं और नए छन्द तैयार कर लें, उनके नाम ये होंगे ।

4. दण्डक के अन्य नए छन्दों के नाम ये हैं:-

अर्ण, अर्णव, व्याल, जीमूत, लीलाकर, उद्दाम, शंख, आराम, संग्राम, सुराम, वैकुण्ठ, सार, कासार, विसार, संहार, नीहार, मन्दार, केदार, आसार, सत्कार, माकन्द, गोविन्द, सानन्द, सन्दोह, आनन्द, सिंह, समुद्र, भुजंग आदि ।

5. '**वृत्तचन्द्रिका**' ग्रन्थ में 28 से 32 अक्षर प्रतिपाद वाले कुछ छन्दों के ये नाम दिए गए हैं:-

(क) **मनोजशेखर** (28 वर्ण), (ख) **अशोकपुष्प-मंजरी** (28 वर्ण), (ग) **शालूर छन्द** (29 वर्ण), (घ) **घनाक्षरी छन्द** (31 वर्ण), (ङ) **रूपघनाक्षरी छन्द** (32 वर्ण)

6. '**शेषः प्रचितः**' (7.36) में शेष शब्द से रगण के स्थान यगण, भगण, मगण आदि रखकर भी अनेक छन्द बनाए जा सकते हैं । यह कविगण की प्रतिभा पर निर्भर है ।

***

सप्तमोऽध्यायः समाप्तः ।

(This is the end of seventh chapter.)

अष्टमोऽध्यायः

CHAPTER VIII

अत्रानुक्तं गाथा ॥ 1 ॥

शब्दार्थ- अत्र- इस छन्दःशास्त्र में, **अनुक्तम्** - जिन छन्दों का उल्लेख नहीं किया गया है, **गाथा**- उन्हें 'गाथा' कहते हैं । **विशेष**- आचार्य पिंगल ने यथासंभव सभी प्रचलित छन्दों का संकलन किया है, फिर भी कुछ प्रचलित छन्द छूट गए हैं, उनको 'गाथा' की श्रेणी में रखा गया है । ये नीचे दिए जा रहे हैं ।

अर्थ- जो छन्द इस छन्दःशास्त्र (के पूर्व अध्यायों) में वर्णित नहीं हैं, उन्हें 'गाथा' कहते हैं।

Meaning. The metres not discussed in previous chapters belong to the *gātha* category.

11 अक्षरात्मक त्रिष्टुप् छन्द से संबद्ध गाथा
Tristup related *gātha* with 11 syllables

कुड्मल-दन्ती भ्तौ नगौ ग्-इन्द्रिय रसाः ॥ 2 ॥

शब्दार्थ- भ्तौ न्गौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 भगण (ऽ।।), 1 तगण (ऽऽ।), 1 नगण (।।।), 2 गुरु (ऽऽ) होते हैं, **कुड्मलदन्ती**- उसे 'कुड्मल-दन्ती' छन्द कहते हैं। **इन्द्रिय-रसाः** -इन्द्रिय-5, रस- 6, अर्थात् 5, 6 पर यति होती है ।

अर्थ- कुड्मलदन्ती छन्द की योजना यह हैः-

पाद 1 से 4- 1 भगण, 1 तगण, 1 नगण, 2 गुरु, (यति 5, 6 पर) ग्यारह वर्णीय समवृत्तों में इसका स्थान 487 है ।

Meaning. The *kuḍmaladantī* metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *tagaṇa* (ऽऽ।), a *nagaṇa* (।।।) and 2 longs (ऽऽ). Pauses occur at 5, 6 *varṇas*. Its place is 487 in the list of even metres with 11 *varṇas*.

कुड्मलदन्ती छन्द का उदाहरण (Example) - (11x4 वर्ण)

भ त न ग ग

ऽ ।। ऽ ऽ ।। ।।। ऽ ऽ

कुड् म ल-द न्ती, वि क ट-नि त म्बा,
किन्नर- कण्ठी, लघुतर-मध्या ।
बिम्ब-फलोष्ठी, मृग-शिशु-नेत्रा,
मित्र ! भवन्तं, सुखयतु कान्ता ।।

12 अक्षरात्मक जगती छन्द से संबद्ध गाथा

Jagatī* related *gāthas* with 12 *varṇas

वरतनुर्न्जौ ज्रौ षड्रसाः ॥ 3 ॥

शब्दार्थ- **न्जौ ज्रौ**- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 नगण (।।।), 2 जगण (।ऽ।, ।ऽ।), 1 रगण (ऽ।ऽ) हों, **वरतनुः**- उसे 'वरतनु' छन्द कहते हैं । **षड्रसाः**- षट् - 6, रस- 6, अर्थात् 6, 6 पर यति ।

अर्थ- वरतनु छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4- 1 नगण, 2 जगण, 1 रगण, (यति 6, 6 पर) । बारह वर्णीय समवृत्तों में इसका स्थान 1392 है ।

Meaning. The *varatanu* metre has the following syllabic arrangement: a *nagaṇa* (।।।), 2 *jagaṇas* (।ऽ।) and a *ragaṇa* (ऽ।ऽ). Pauses are at 6, 6 *varṇas*. Its place is 1392 in the list of even metres with 12 *varṇas*.

वरतनु छन्द का उदाहरण (Example,12x4 वर्ण)-

न ज ज र

। । । । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ

अ यि ! वि ज ही हि, दृ ढो प गू ह नं,
त्यज नव- संग-म- भीरु ! वल्लभम् ।
अरुण-करोद्ग,म एष वर्तते,
वरतनु ! संप्र-, वदन्ति कुक्कुटाः ।।

जलधरमाला म्भौ स्मौ समुद्रवसवः ॥ 4 ॥

शब्दार्थ- म्भौ स्मौ - जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 मगण (ऽऽऽ), 1 भगण (ऽ।।), 1 सगण (।।ऽ), 1 मगण (ऽऽऽ) होते हैं, **जलधरमाला**- उसे 'जलधरमाला' छन्द कहते हैं । **समुद्रवसवः**- समुद-4, वसु- 8, अर्थात् 4, 8 पर यति ।

अर्थ- जलधरमाला छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4- 1 मगण, 1 भगण, 1 सगण, 1 मगण, (यति 4, 8 पर) । बारह वर्णीय समवृत्तों में इसका स्थान 241 है ।

Meaning. The *jaladhara-mālā* metre has the following syllabic arrangement (in each of its quarters): a *magaṇa* (ऽऽऽ), a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *sagaṇa* (।।ऽ) and a *magaṇa* (ऽऽऽ). It has pauses at 4 ,8 *varṇas*. Its place is 241 in the list of even metres with 12 *varṇas*.

जलधरमाला छन्द का उदाहरण (Example,12x4 वर्ण) -

म भ स म

ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ

ध त्ते शो भां, कु व ल य-दा म-श्या मा,

शैलोत्सङ्गे, जलधर-माला लीना ।

विद्युल्लेखा,-कनक-कृताऽलंकारा,

क्रीडा-सुप्ता, युवतिरिवाङ्के पत्युः ।।

गौरी नौ रौ ॥ 5 ॥

शब्दार्थ- नौ रौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 नगण (।।।, ।।।), 2 रगण (ऽ।ऽ, ऽ।ऽ) होते हैं, **गौरी**- उसे 'गौरी' छन्द कहते हैं । यति पादान्त में ।

अर्थ- गौरी छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4- 2 नगण, 2 रगण, (पादान्त में यति) । बारह वर्णीय समवृत्तों में इसका स्थान 1216वाँ है ।

Meaning. A metre with (the syllabic arrangement) 2 *nagaṇas* (।।।, ।।।) and 2 *ragaṇas* (ऽ।ऽ, ऽ।ऽ) in each of 4

quarters is called *gaurī.* Pauses are at the end of each quarter. Its place is 1216 in the list of even metrics with 12 *varṇas.*

गौरी छन्द का उदाहरण (Example, 12x4 वर्ण)-

न न र र

I I I I I I S I S S I S

प्र ण म त च र णा र वि न्द-द्व यं,

त्रिभुवन-नमितस्य गौरीपतेः ।

सकृदपि मनसैव यः सेवितः,

प्रवितरति यथेष्टमष्टौ गुणान् ।।

ललना भ्तौ न्सौ-इन्द्रियर्षयः ॥ 6 ॥

शब्दार्थ- भ्तौ न्सौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 भगण (SII), 1 तगण (SSI), 1 नगण (III), 1 सगण (IIS) होते हैं । **ललना-** उसे 'ललना' छन्द कहते हैं । **इन्द्रियर्षयः** - इन्द्रिय- 5, ऋषि- 7, अर्थात् 5, 7 पर यति ।

अर्थ- ललना छन्द की योजना यह है -

पाद 1से 4 में संयोजन इस प्रकार है- 1 भगण, 1 तगण, 1 नगण, 1 सगण, (यति 5, 7 पर)। बारह वर्णीय समवृत्तों में इसका स्थान 2023वाँ है ।

Meaning. A metre with (the syllabic arrangement): a *bhagaṇa* (SII), a *tagaṇa* (SSI), a *nagaṇa* (III) and a *sagaṇa* (IIS) in each of its four quarters is called *lalanā.* Pauses are at 5, 7 *varṇas.* Its place is 2023 in the list of even metres with 12 *varṇas.*

ललना छन्द का उदाहरण (Example, 12 x 4 वर्ण)-

भ त न स

S I I S S I I I I I I S

या कु च गु र्वी, मृ ग-शि शु-न य ना,

पीन-नितम्बा, मदकरि-गमना ।

किन्नर-कण्ठी, सुरुचिर-दशना,

सा तव सौख्यं, वितरतु ललना ।।

13 अक्षरात्मक अतिजगती छन्द से संबद्ध गाथा
Atijagatī related *gāthās* with 13 *varṇas*

कनकप्रभा स्जौ स्जौ ग् ॥ 7 ॥

शब्दार्थ- स्जौ स्जौ ग्- जिन छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 सगण (।।ऽ), 1 जगण (।ऽ।), 1 सगण (।।ऽ), 1 जगण (।ऽ।), 1 गुरु होते हैं, **कनकप्रभा**- उसे 'कनकप्रभा' छन्द कहते हैं । यति पादान्त में । तेरह वर्णीय समवृत्त में इसका स्थान 2796वाँ है ।

अर्थ- कनकप्रभा छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4 - 1 सगण, 1 जगण, 1 सगण, 1 जगण, 1 गुरु, (यति पादान्त में)

Meaning. A metre (with the syllabic arrangement) a *sagaṇa* (।।ऽ), a *jagaṇa* (।ऽ।), a *sagaṇa* (।।ऽ), a *jagaṇa* (।ऽ।) and a long (ऽ) in each of its quarters is called *kanakaprabhā*. Pauses are at the end of each quarter. Its place is 2796 in the list of even metres with 13 *varṇas*.

कनकप्रभा छन्द की योजना उदाहरण (Example, 13 x 4)-

स ज स ज ग

। । ऽ । ऽ । । । । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ

क न क-प्र भा पृ थु-नि त म्ब-शा लि नी,
विपुल-स्तनी हरिण-शावकेक्षणा ।
इयमङ्गना नयनयोः पथि स्थिता,
कुरुते न कस्य मदनातुरं मनः? ।।

कुटिलगतिर्नौ तौ ग् स्वरर्तवः ॥ 8 ॥

शब्दार्थ- नौ तौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 नगण (।।।, ।।।), 2 तगण (ऽऽ।, ऽऽ।), 1 गुरु होते हैं, **कुटिलगतिः**:- उसे 'कुटिलगति' छन्द कहते हैं । **स्वरर्तवः**:- स्वर-7, ऋतु-6, अर्थात् 7, 6 पर यति ।

अर्थ- कुटिल गति छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4 - 2 नगण, 2 तगण, 1 गुरु (यति 7, 6 पर) । तेरह वर्णीय समवृत्तों की सूची में इसका स्थान 2368वाँ है ।

Meaning. A metre (with the syllabic arrangement) 2 *nagaṇas* (।।।, ।।।), 2 *tagaṇas* (ऽऽ।, ऽऽ।) and a long (ऽ) in each of its quarters is called *kuṭilagati*. Pauses are at 7, 6 *varṇas*. Its place is 2368 in the list of even metres with 13 *varṇas*.

कुटिलगति छन्द का उदाहरण (Example, 13 x 4)-

न न त त ग

। ।।। ।। ऽ ऽ। ऽऽ। ऽ

अ ध र-कि स ल ये, का न्त-द न्त-क्ष ते,

हरिण-शिशु-दृशां, नृत्यति भ्रू-युगम् ।

ध्रुवमिदमुचितं, यद् विपत्तौ सताम् ,

अति-कुटिल-गतेः, स्यान्महानुत्सवः ।।

14 अक्षरात्मक शक्वरी छन्द से संबद्ध गाथा ।

Śakvarī related *gāthās* with 14 *varṇas*

वर-सुन्दरी भ्जौ स्नौ गौ ॥ 9 ॥

शब्दार्थ- भ्जौ स्नौ गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 भगण (ऽ।।), 1 जगण (।ऽ।), 1 सगण (।।ऽ), 1 नगण (।।।), 2 गुरु (ऽऽ) होते हैं । **वर-सुन्दरी**- उसे 'वरसुन्दरी' छन्द कहते हैं । पादान्त में यति ।

अर्थ- वरसुन्दरी छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4- 1 भगण, 1 जगण, 1 सगण, 1 नगण, 2 गुरु, (पादान्त में यति) । चौदह वर्णीय समवृत्तों की सूची में इसका स्थान 3823वाँ है ।

Meaning. A metre consisting of (the syllabic arrangement) a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *jagaṇa* (।ऽ।), a *sagaṇa* (।।ऽ), a *nagaṇa* (।।।) and 2 longs (ऽऽ) in each of its quarters is called *vara-sundarī*. Pauses are at the end of each quarter. Its place is 3823 in the list of even metres with 14 *varṇas*.

वरसुन्दरी छन्द का उदाहरण (Example)- (14 x 4)

भ ज स न ग ग

ऽ ।। । ऽ ।। ।ऽ। । ।ऽऽ

स्वा दु-शि शि रो ज्ज्व ल-सु ग न्धि-ज ल-पू र्णं,

वीचि-चय-चञ्चल-विचित्र-शत-पत्रम् ।

हंस-कल-कूजित-मनोहर-तटान्तं,

पश्य वर-सुन्दरि ! सरोवरमुदारम् ।।

कुटिला म्भौ न्यौ गौ वेद-रस-समुद्राः ॥ 10 ॥

शब्दार्थ- म्भौ न्यौ गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 मगण (ऽऽऽ), 1 भगण (ऽ।।), 1 नगण (।।।), 1 यगण (।ऽऽ), 2 गुरु (ऽऽ) होते हैं, **कुटिला**- उसे 'कुटिला' छन्द कहते हैं । **वेद-रस-समुद्राः**- वेद- 4, रस- 6, समुद्र- 4, अर्थात् यति 4, 6, 4 पर ।

अर्थ- कुटिला छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4- 1 मगण, 1 भगण, 1 नगण, 1 यगण, 2 गुरु, (यति 4, 6, 4 पर) । चौदह वर्णीय समवृत्तों की सूची में इसका स्थान 1009वाँ है।

Meaning. A metre consisting of (the syllabic arrangement) a *magaṇa* (ऽऽऽ), a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *nagaṇa* (।।।), an *yagaṇa* (।ऽऽ) and 2 longs (ऽऽ) in each of its quarters is called *kuṭilā*. Pauses are at 4, 6, 4 *varṇas*. Its place is 1009 in the list of even metres with 14 *varṇas*.

कुटिला छन्द का उदाहरण (Example,14x4)-

म भ न य ग ग

ऽ ऽ ऽ ऽ ।।। । ।। ऽऽ ऽ ऽ

अ ध्व स्था नां, ज न य ति सु ख,मु च्चैः कू जन् ,

दात्यूहोऽयं, पथि निचुलिनि, तोयोपान्ते ।

कर्णाट-स्त्री, रति-कुहरित-तुल्यच्छेदैर्,

नादैः कण्ठ,-स्खलन-कुटिल,-मन्दावर्तैः ।।

16 अक्षरात्मक अष्टि छन्द

Aṣṭi metres* with 16 *varṇas

शैलशिखा भ्रौ न्भौ भ्गौ भूत-रसेन्द्रियाणि ॥ 11 ॥

शब्दार्थ- भ्रौ न्भौ भ्गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 भगण (ऽ।।), 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 नगण (।।।), 2 भगण (ऽ।।, ऽ।।), 1 गुरु (ऽ) होते हैं, **शैलशिखा**- उसे 'शैलशिखा' छन्द कहते हैं । **भूत-रसेन्द्रियाणि**-भूत-5, रस-6, इन्द्रिय-5, अर्थात् 5, 6, 5 पर यति ।

अर्थ- शैलशिखा छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4- 1 भगण, 1 रगण, 1 नगण, 2 भगण, 1 गुरु, (यति 5, 6, 5 पर) । सोलह वर्णीय समवृत्तों की सूची में इसका स्थान 28119वाँ है ।

Meaning. A metre consisting of (the syllabic arrangement) a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), a *nagaṇa* (।।।), 2 *bhagaṇas* (ऽ।।, ऽ।।) and a long (ऽ) in each of its quarters is called *śailśikhā.* Pauses are at 5, 6, 5 *varṇas.* Its place is 28119 in the list of even metres with 16 *varṇas.*

शैलशिखा छन्द का उदाहरण (Example, 16x4)-

भ र न भ भ ग

ऽ । । ऽ । ऽ । । । ऽ । । ऽ । । ऽ

शै ल-शि खा-नि,कु ञ्ज-श यि त स्य, ह रेः श्र व णे,
जीर्ण-तृणं क,-रेण निदधाति, कपिश्चपलः ।
क्षुद्र-वधाप, वाद-परिहार,-विनीतमते-
स्तस्य न ताव,-तैव लघुता द्वि,-प-यूथ-भिदः ।।

वर-युवती भ्रौ य्नौ न्गौ ॥ 12 ॥

शब्दार्थ- भ्रौ य्नौ न्गौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 भगण (ऽ।।), 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 यगण (।ऽऽ), 2 नगण (।।।, ।।।), 1 गुरु (ऽ) होते हैं, **वरयुवती**- उसे 'वरयुवती' छन्द कहते हैं । यति पादान्त में ।

अर्थ- वरयुवती छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4- 1 भगण, 1 रगण, 1 यगण, 2 नगण, 1 गुरु, (पादान्त में यति) । सोलह वर्णीय समवृत्तों की सूची में इसका 23343वाँ स्थान है ।

Meaning. A metre consisting of (the syllabic arrangement) a *bhagaṇa* (ऽ।।), a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), an *yagaṇa*

(ISS), 2 *nagaṇas* (III, III) and a long (S) in each of its quarters is called *vara-yuvatī*. Pauses are at the end of each quarter. Its place is 23343 in the list of even metres with 16 *varṇas.*

वरयुवती छन्द का उदाहरण (Example,16x4)-

भ र य न न ग

S I I S I S I S S I I I I I I S

कु ञ्ज र-कु म्भ-पी ठ-पी नो न्न त-कु च-यु ग ला,
पार्वण-शर्वरीश-गर्वापह-मुख-कमला ।
पीन-नितम्ब-बिम्ब-संवाहन-शिथिल-गति-
मुञ्ज नराधिराज ! भूयात् तव वरयुवतिः ।।

17 अक्षरात्मक अत्यष्टि छन्द

Atyaṣṭi metres with 17 *varṇas*

अतिशायिनी सौ ज्भौ ज्गौ ग् दिक्-स्वराः ॥ 13 ॥

शब्दार्थ- सौ ज्भौ ज्गौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 सगण (IIS, IIS), 1 जगण (ISI), 1 भगण (SII), 1 जगण (ISI), 2 गुरु (SS) होते हैं, **अतिशायिनी**- उसे 'अतिशायिनी' छन्द कहते हैं । **दिक्स्वराः**- दिक्- 10, स्वर- 7, अर्थात् 10, 7 पर यति ।

अर्थ- अतिशायिनी छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4- 2 सगण, 1 जगण, 1 भगण, 1 जगण, 2 गुरु, (यति 10, 7 पर) । सत्रह वर्णीय समवृत्तों की सूची में इसका स्थान 23900वाँ है।

Meaning. A metre consisting of the (syllabic arrangement) 2 *sagaṇas* (IIS, IIS), a *jagaṇa* (ISI), a *bhagaṇa* (SII), a *jagaṇa* (ISI) and 2 longs (SS) in each of its quarters is called *atiśāyinī*. Pauses are at 10, 7 *varṇas.* Its place is 23900 in the list of even metres with 17 *varṇas.*

अतिशायिनी छन्द का उदाहरण (Example,17 x 4)-

स स ज भ ज ग ग

। । ऽ । । ऽ । ऽ । ऽ । । । ऽ । ऽ ऽ

इ ति धौ त-पु र न्ध्रि-म त्स रान् , स र सि म ज्ज ने न,

श्रियमाप्तवतोऽतिशायिनी, - मप-मलाङ्गभासः ।

अवलोक्य तदैव यादवा, -नपर-वारि-राशेः,

शिशिरेतर-रोचिषाऽप्यपां, ततिषु मङ्क्तुमीषे ।।

(शिशुपाल० 8.71)

अवितथं न्जौ भ्जौ ज्लौ ग् ॥ 14 ॥

शब्दार्थ- न्जौ भ्जौ ज्लौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों क्रमशः 1 नगण (।।।), 1 जगण (।ऽ।), 1 भगण (ऽ।।), 2 जगण (।ऽ।, ।ऽ।), 1 लघु, 1 गुरु होते हैं, **अवितथम्** - उसे 'अवितथ' छन्द कहते हैं । पादान्त में यति ।

अर्थ- अवितथ छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4 - 1 नगण, 1 जगण, 1 भगण, 2 जगण, 1 लघु, 1 गुरु (पादान्त में यति) । सत्रह वर्णीय समवृत्तों की सूची में इसका स्थान 56240वाँ है ।

Meaning. A metre consisting of the (syllabic arrangement) a *nagaṇa* (।।।), a *jagaṇa* (।ऽ।), a *bhagaṇa* (ऽ।।), 2 *jagaṇas* (।ऽ।, ।ऽ।), a short (।) and a long (ऽ) in each of its quarters is called *avitatha.* Pauses are at the end of each quarter. Its place is 56240 in the list of even metres with 17 *varṇas.*

अवितथ छन्द का उदाहरण (Example, 17 x 4)-

न ज भ ज ज ल ग

। । । । । ऽ ऽ । । । ऽ । । ऽ । । ऽ

अ धि ग त-स र्व-शा स्त्र म ति-सु न्द र-की र्ति यु तम् ,

ऋषि-जन-तुल्य-वृत्तमनुबोधित-सर्वजनम् ।

अवितथ-वेद-मार्ग-परिशीलन-दिव्य-गुणं

स्वगुरुमलं नमामि नव-काव्य-समुद्रमरम् ।।

वस्विन्द्रिय-समुद्राश्चेत् कोकिलकम् ॥ 15 ॥

शब्दार्थ- चेत्- यदि, **वसु-इन्द्रिय-समुद्राः**- वसु-8, इन्द्रिय-5, समुद्र-4, अर्थात् यदि अवितथ छन्द में ही 8, 5, 4 पर यति करेंगे, **कोकिलकम्**- तो उसे 'कोकिलक' छन्द कहेंगे ।

अर्थ- यदि पूर्वोक्त अवितथ छन्द में 8, 5, 4 पर यति करेंगे, तो उसे कोकिलक छन्द कहेंगे ।

Meaning. A metre having the syllabic arrangement of *avitatha* and pauses at 8, 5, 4 *varṇas* is called *kokilaka.*

कोकिलक छन्द का उदाहरण (Example, 17 x 4)-

न ज भ ज ज ल ग

। ।।। ऽ। ऽ।।। ऽ। । ऽ । । ऽ

न व-स ह का र-पु ष्प,-म धु-नि ष्क ल,-क ण्ठ त या,

मधुरतर-स्वरेण, परिकूजति, कोकिलकः ।

प्रथम-ककार-विद्ध,-वचनैर्धन,-लुब्ध-मतेस्,

तव गमनस्य भङ्ग,-मिव संप्रति, कर्तुमनाः ।।

18 अक्षरात्मक धृति छन्द

Dhṛti metres with 18 *varṇas*

विबुधप्रिया र्सौ जौ भ्रौ वसु-दिशः ॥ 16 ॥

शब्दार्थ- र्सौ जौ भ्रौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 रगण (ऽ।ऽ), 1 सगण (।।ऽ), 2 जगण (।ऽ।, ।ऽ।), 1 भगण (ऽ।।), 1 रगण (ऽ।ऽ) होते हैं, **विबुधप्रिया**- उसे 'विबुधप्रिया' छन्द कहते हैं । **वसु-दिशः** - वसु-8, दिश् -10, अर्थात् 8, 10 पर यति ।

अर्थ- विबुधप्रिया छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4 - 1 रगण, 1 सगण, 2 जगण, 1 भगण, 1 रगण, (यति 8, 10 पर) । अठारह वर्णीय समवृत्तों की सूची में इसका स्थान 93019वाँ है।

Meaning. A metre consisting of (the syllabic arrangement) a *ragaṇa* (ऽ।ऽ), a *sagaṇa* (।।ऽ), 2 *jagaṇas* (।ऽ।, ।ऽ।), a *bhagaṇa* (ऽ।।) and a *ragaṇa* (ऽ।ऽ) in each of its quarters is called *vibudhapriyā*. Pauses are at 8, 10

varṇas. Its place is 93019 in the list of even metres with 18 *varṇas.*

विबुधप्रिया छन्द का उदाहरण (Example, 18 x 4)-

र स ज ज भ र

ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ । । ऽ । ऽ

कु न्द-कु ड्म ल-को म ल-, द्यु ति-द न्त-प ङ्क्ति-वि रा जि ता,

हंस-गद्गद-वादिनी, वनिता भवेद् विबुध-प्रिया ।

पीन-तुङ्ग-पयोधर,-द्वय-भार-मन्थर-गामिनी,

नेत्र-कान्ति-विनिर्जित,-श्रवणावतंसित-कैरवा ।।

नाराचक्रं नौ रौ रौ ॥ 17 ॥

शब्दार्थ- नौ रौ रौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 2 नगण (।।।, ।।।), 4 रगण (ऽ।ऽ, ऽ।ऽ, ऽ।ऽ, ऽ।ऽ) होते हैं, **नाराचकम्**- उसे 'नाराचक' छन्द कहते हैं । यति 10, 8 पर होती है ।

अर्थ- नाराचक छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4- 2 नगण, 4 रगण, (यति 10, 8 पर) । अठारह वर्णीय समवृत्तों की सूची में इसका स्थान 74944 है ।

Meaning. The *nārācaka* metre has (the syllabic arrangement) 2 *nagaṇas* (।।।, ।।।) and 4 *ragaṇas* (ऽ।ऽ, ऽ।ऽ, ऽ।ऽ, ऽ।ऽ) in each of its quarters with pauses at 10, 8 *varṇas.* Its place is 79944 in the list of even metres with 18 *varṇas.*

नाराचक छन्द का उदाहरण (Example, 18 x 4)-

न न र र र र

। । । । । । ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ

र घु प ति र पि जा त वे दो,-वि शु द्धां प्र गृ ह्य प्रि यां,

प्रिय-सुहृदि विभीषणे, संक्रमय्य श्रियं वैरिणः ।

रवि-सुत-सहितेन तेना,-नुयातः ससौमित्रिणा,

भुज-विजित-विमान-रत्ना,-धिरूढः प्रतस्थे पुरीम् ।।

(रघुवंश 12.104)

19 अक्षरात्मक अतिधृति छन्द

Atidhṛti metre with 19 *varṇas*

विस्मिता य्मौ न्सौ रौ ग् रसर्तु-स्वराः ॥ 18 ॥

शब्दार्थ- य्मौ न्सौ रौ ग्- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1 यगण (।ऽऽ), 1 मगण (ऽऽऽ), 1 नगण (।।।), 1 सगण (।।ऽ), 2 रगण (ऽ।ऽ, ऽ।ऽ), 1 गुरु (ऽ) होते हैं, **विस्मिता-** उसे 'विस्मिता' छन्द कहते हैं । **रसर्तु-स्वराः** - रस-6, ऋतु-6, स्वर-7, अर्थात् 6, 6, 7 पर यति ।

अर्थ- विस्मिता छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4- 1 यगण, 1 मगण, 1 नगण, 1 सगण, 2 रगण, 1 गुरु, (यति 6, 6, 7 पर) । उन्नीस वर्णीय समवृत्तों की सूची में इसका स्थान 75714वाँ है ।

Meaning. A metre consisting of (the syllabic arrangement) an *yagaṇa* (।ऽऽ), a *magaṇa* (ऽऽऽ), a *nagaṇa* (।।।), a *sagaṇa* (।।ऽ), 2 *ragaṇas* (ऽ।ऽ, ऽ।ऽ) and a long (ऽ) in each of its quarters is called *vismitā*. Pauses are at 6, 6, 7 *varṇas*. Its place is 75714 in the list of even metres with 19 *varṇas*.

विस्मिता छन्द का उदाहरण (Example, 19 x 4)-

य म न स र र ग

। ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । । ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

श्रि या जु ष्टं दि व्यैः, स प ट ह-र वै-, र न्वि तं पु ष्प व र्षैं,

वपुष्टच्चैद्यस्य, क्षणमृषि-गणैः, स्तूयमानं निरीय ।

प्रकाशेनाकाशे, दिनकर-करान्, विक्षिपद् - विस्मिताक्षै-

नरिन्द्रैरौपेन्द्रं, वपुरथ विशद्-धाम वीक्षांबभूवे।।

(शिशुपालवध 20.79)

21 अक्षरात्मक प्रकृति छन्द

A *Prakṛti* metre with 21 *varṇas*

शशिवदना न्जौ भ्जौ ज् ज्रौ रुद्र-दिशः ॥ 19 ॥

शब्दार्थ- न्जौ भ्जौ ज् ज्रौ- जिस छन्द के चारों पादों में क्रमशः 1

नगण (।।।), 1 जगण (।ऽ।), 1 भगण (ऽ।।), 3 जगण (।ऽ।, ।ऽ।, ।ऽ।), 1 रगण (ऽ।ऽ) होते हैं, **शशिवदना**- उसे 'शशिवदना' छन्द कहते हैं । रुद्र-दिशः- रुद्र-11, दिक्-10 अर्थात् 11, 10 पर यति ।

अर्थ- शशिवदना छन्द की योजना यह है -

पाद 1 से 4- 1 नगण, 1 जगण, 1 भगण, 3 जगण, 1 रगण, (यति 11, 10 पर) । इक्कीस वर्णीय समवृत्तों की सूची में इसका स्थान 711600वाँ है। इसको कुछ विद्वान् 'पञ्चकावली' छन्द भी कहते हैं ।

Meaning. A metre consisting of (the syllabic arrangement) a *nagaṇa* (।।।), a *jagaṇa* (।ऽ।), a *bhagaṇa* (ऽ।।), 3 *jagaṇas* (।ऽ।, ।ऽ।, ।ऽ।) and a *ragaṇa* (ऽ।ऽ) is called *śaśivadaṇa* (also called *pañcakāvalī*). Pauses are at 11, 10 *varṇas*. Its place is 711600 in the list of even metres with 21 *varṇas*.

शशिवदना छन्द का उदाहरण (Example, 21x4)-

न ज भ ज ज ज र

।।। ।ऽ। ऽ।। ।ऽ। ।ऽ। ।ऽ। ऽ।ऽ

तु र ग-श ता कु ल स्य प रि तः, प र मे क-तु र ङ्ग-ज न्म नः,

प्रमथित भूभृतः प्रतिपथं, मथितस्य भृशं महीभृता ।

परिचलतो बलानुज-बल,-स्य पुरः सततं धुत-श्रिय-

श्चिर-विगत-श्रियो जलनिधे,-श्च तदाभवदन्तरं महत् ।।

(शिशुपालवध 3.82)

इस प्रकार के सहस्त्रों छन्द-प्रस्तार अन्य महाकवियों के ग्रन्थों में प्रयुक्त हुए हैं । उनके कोई विशेष नाम न होने के कारण आचार्य पिंगल ने उनका नाम-विशेष के साथ उल्लेख नहीं किया है। उन सभी छन्दों को गाथा नाम से ही जानें।

Metres abound in Vedic literature and Sanskrit poetry. Indeed, numerous metres have been used by great poets and composers and prosodists have assigned no names to many of them. So *Ācārya Piṅgala* has studied their nature on a general setting under the banner of *gāthā*.

प्रत्ययों का वर्णन

आचार्य पिंगल ने सम, अर्धसम, विषम आदि वृत्तों का आवश्यक विवरण यहाँ तक प्रस्तुत किया है । अनेक कवियों ने इनके अतिरिक्त भी छन्दों का प्रयोग किया है । उसके ज्ञान के लिए यह प्रत्यय-विधि अपनाई गई है ।

प्रत्यय किसे कहते हैं ? इसकी दो परिभाषाएं दी गई हैं:-

(क) छन्दसां भेदादि-प्रत्यायकत्वात् प्रत्ययाः ।

प्रत्यय का अर्थ है- प्रत्यायक, बोधक, सूचक । जिन विधियों के द्वारा छन्दों के भेद आदि का बोध कराया जाता है, उसे प्रत्यय कहते हैं ।

(ख) प्रतीयते संख्यादिकम् एभिस्ते प्रत्ययाः ।

जिन विधियों के द्वारा छन्दों की संख्या आदि का ज्ञान होता है, उन्हें प्रत्यय कहते हैं ।

इस प्रकार प्रत्यय का अर्थ होता है- वे विधियां जिनके द्वारा छन्दों की संख्या और भेदों का ज्ञान होता है, उन्हें प्रत्यय कहते हैं ।

प्रत्ययों के भेद- आचार्य केदार भट्ट (जन्म 1000 AD से पूर्व) ने प्रत्यय के 6 भेदों का वर्णन किया है।

प्रस्तारो नष्टमुद्दिष्टम्, एकद्व्यादि-लग-क्रिया ।
संख्यानमध्वयोगश्च, षडेते प्रत्ययाः स्मृताः ।।

इन 6 भेदों के नाम हैं- 1. प्रस्तार, 2. नष्ट, 3. उद्दिष्ट, 4. एकद्व्यादि-लग-क्रिया, 5. संख्यान, 6. अध्वयोग ।

1. प्रस्तार- प्रस्तार का अर्थ विस्तार है । किसी एक छन्द का कितने प्रकार से या किस सीमा तक विस्तार हो सकता है, अर्थात् किसी 2, 4, 6, 8 अक्षर अथवा मात्रा वाले छन्द के कितने भेद हो सकते हैं । उन भेदों को जानने की विधि का वर्णन करना प्रस्तार है ।

2. नष्ट- नष्ट का अभिप्राय है- अज्ञात, अप्रकट या अव्यक्त । उसको जानने की विधि का वर्णन करना। जैसे- इतने वर्ण (मात्रा) के प्रस्तार का अमुक भेद क्या होगा? किसी छन्द की किस संख्या का भेद किस प्रकार का होगा? कौन सा अक्षर गुरु है और कौन सा लघु है, कौन-कौन से गण इस छन्द में प्रयुक्त हुए हैं।

3. उद्दिष्ट- किसी रूप के विषय में यह बताना कि यह रूप इतने वर्ण के प्रस्तार में अमुक भेद है । इसमें छन्द का रूप दिया जाता है और उसके द्वारा

बताया जाता है कि यह अमुक छन्द का यह भेद है । उद्दिष्ट का अर्थ है- निर्दिष्ट, उक्त या बताया गया । बताए गए गुरु लघु भेदों के आधार पर यह बताना कि अमुक छन्द का यह भेद है, यह उद्दिष्ट विधि है ।

4. एकद्व्यादि-लगक्रिया- इस विधि के द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि किसी छन्द के प्रस्तार जन्य भेदों में कितने भेद सर्वगुरु हैं, कितने भेद 1 गुरु वाले हैं, कितने 2 गुरु वाले, कितने 3 गुरु वाले, कितने 4, 5 आदि गुरु वाले हैं और कितने सर्वलघु । इस विधि से सर्वगुरु, 1 गुरु 2 गुरु आदि भेद कितने होते हैं, यह ज्ञात किया जाता है, उसी प्रकार सर्वलघु, 1 लघु, 2 लघु आदि का ज्ञान किया जाता है । ल-ग-क्रिया का अर्थ है- ल- लघु, ग- गुरु, लघु- गुरु का ठीक-ठीक पता लगाना । एकद्व्यादि0 का अर्थ है कि- 1, 2, 3 आदि लघु कितने हैं । इसी प्रकार 1, 2, 3, 4 आदि गुरु कितने हैं, इसका ज्ञान प्राप्त करना। इस विधि से किसी भी छन्द के लघु-गुरु अक्षरों का ज्ञान हो जाता है ।

5. संख्यान- किस वृत्त के कितने भेद होते हैं, इसके ज्ञान के लिए संख्यान विधि का उपयोग किया जाता है । इस विधि में शून्य (0) और 2 अंकों का उपयोग किया जाता है । उनके आधार पर उस वृत्त के भेदों का पता लगाया जाता है । इसका विस्तृत विवरण आगे सूत्र संख्या 28 से 31 में दिया गया है।

6. अध्वयोग- इस विधि से यह ज्ञात किया जाता है कि अमुक वृत्त तक सारे छन्दों के कुल कितने भेद हुए हैं । जैसे- 4 अक्षर के वृत्त के भेद 16 हुए। इससे पहले 1 अक्षर के 2 भेद, 2 अक्षर के 4 भेद, 3 अक्षर के 8 भेद । अब 4 अक्षर तक के कुल भेदों की संख्या कितनी हुई, इसकी गणना के लिए अलग से 2, 4, 8, 16 का जोड़ निकालने की अपेक्षा दूसरी विधि यह है कि जिस संख्या तक के वृत्तों के भेद जानने हों, उसके भेदों को दुगुना करके उसमें से 2 संख्या कम कर दें । यह पूर्वोक्त सभी भेदों का योग होगा । जैसे- 4 के 16 भेद हुए । अब 4 अक्षर के वृत्त तक के सभी भेदों की संख्या 16X2= 32 में से 2 घटा देने पर 30 हुई । यह 1 से 4 तक के सारे भेदों की संख्या हुई । इस प्रकार कितने ही अक्षर तक वृत्त के भेदों की कुल संख्या सरलता से बनाई जा सकती है । (नियम- द्विद्व्यूनं..., देखें 8.32) वस्तुतः यहाँ पर गुणोत्तर श्रेढ़ी (Geometric Progression) संबंधित सूत्र का प्रयोग आचार्य पिंगल ने किया है । संक्षेप में, सूत्रानुसार, अर्थात् $a + ar + ar^2 + ... + ar^{n-1} = a(r^n - 1)$, $r \neq$

1, के अनुसार 1 से लेकर n अक्षरों द्वारा निर्मित सभी (सम) वृत्तों की संख्याओं का सर्वयोग $= 2 + 2^2 + 2^3 + ... + 2^n = 2^{n+1} - 2$. ध्यान दें $n = 4$ लेने पर सर्वयोग $= 2^5 - 2 = 30$.

इसके अतिरिक्त आचार्य पिंगल ने मेरु-प्रस्तार का भी उल्लेख किया है। यह विधि स्तूप-निर्माण-कला (Pyramid Building) की विधि बताता है। आधुनिक गणित में इसे पास्कल त्रिभुज (Pascal Triangle) कहा जाता है। महान् फ्रेंच गणितज्ञ बी0 पास्कल (Blaise Pascal, 1623-1662) से पूर्व इतिहासकारों के अनुसार वर्ण मेरु की जानकारी चीनी गणितज्ञ चू शिकी (*Chu Shī-kiē*) को 1303 ई0 में थी।

आचार्य पिंगल के मत को पिंगल मत या नाग मत, यवन मत और भरत मत कहा जाता है। इन चारों मतों में प्रस्तार की विधि एक ही है, केवल विधि-क्रम में अन्तर है। प्रस्तार-विधि वैज्ञानिक आधार पर प्रतिष्ठित है।

वस्तुतः पिंगल छंदशास्त्र में वर्णित एवं इसके विभिन्न भाष्यकारों द्वारा व्याख्यात प्रत्यय विचक्षण भारतीय बीजगणित प्रतिभा का द्योतक है। इन सूत्रों में वर्णित गणित की उपादेयता, गंभीरता एवं विचक्षणता का एहसास कोई चार हजार वर्षों बाद यूरोपीय गणित के विकास के बाद संभव हो सका है।

1. प्रस्तार विधि का वर्णन

वर्णिक अथवा मात्रिक प्रस्तार में प्रथम पंक्ति लिखने का नियम-

1. वर्णिक प्रस्तार में जितने वर्ण का प्रस्तार हो उतने ही गुरु चिह्न लिखें। जैसे 3 एवं 4 वर्ण के वर्णीय प्रस्तार में प्रथम भेद क्रमशः ऽऽऽ एवं ऽऽऽऽ हैं।

2. चूंकि मात्रिक प्रस्तार में एक गुरु (ऽ) दो लघु (।।) के बराबर होता है, मात्राओं की संख्या सम होने पर प्रथम पंक्ति में सभी गुरु होंगे तथा मात्राओं की संख्या विषम होने पर सबसे बाएँ लघु होगा, शेष सभी गुरु होंगे। उदाहरणार्थ-

5 मात्राओं के प्रस्तार में प्रथम भेद होगा - ।ऽऽ;

6 मात्राओं के प्रस्तार में प्रथम भेद होगा - ऽऽऽ.

प्रथम पंक्ति से दूसरी एवं दूसरी से आगामी इत्यादि पंक्तियाँ प्राप्त करने का निम्न नियम भाष्यकारों द्वारा दिया गया है जो आठवें अध्याय में व्याख्यात प्रस्तार-नियम पर आधारित है। यह नियम वर्णिक एवं (थोड़ी सावधानी के साथ) मात्रिक प्रस्तार दोनों पर लागू होता है।

भाष्यकारों द्वारा प्रस्तार का निम्न नियम सर्वमान्य किया गया है। आगामी भेद प्राप्त करने के लिए (वर्तमान पंक्ति के) सबसे बाएँ गुरु के नीचे लघु लिखें एवं दाहिनी ओर के सभी चिह्नों को तदैव उतार लें तथा (नये) लघु के बाईं ओर सर्व गुरु लिखकर पंक्ति पूरी करें। इस क्रिया को तब तक करें जब तक सभी लघु न आ जायें।

मात्रिक प्रस्तार में इस नियम को लागू करते समय यह ध्यान रहे कि गुरु के नीचे लघु लिखने पर निर्दिष्ट मात्राओं की संख्या पूरी करने के लिए आवश्यकतानुसार दो लघु (।।) लिखने चाहिएं। इसी प्रकार बाएँ तरफ के लघु मात्राओं को गुरु करते समय आवश्यकतानुसार दो लघु (।।) के बराबर एक गुरु (ऽ) करें। मात्रिक विस्तार संबन्धी सभी विवरण आठवें अध्याय के अंत में अनुस्यूत हैं।

वर्ण-प्रस्तार- वर्ण-प्रस्तार का अर्थ है- वर्णों का विस्तार। पिंगल छन्दःसूत्र में 1 से लेक 26 अक्षर प्रतिपाद वाले छन्द का वर्णन है। प्रत्येक छन्द में लघु-गुरु वर्णों का विशेष क्रम निर्धारित है। वर्ण-प्रस्तार में बताया गया है कि 2, 3, 4, 5, 6 आदि वर्णों के कितने भेद हो सकते हैं, अर्थात् उनमें लघु-गुरु वर्णों को कितने प्रकार से रखा जा सकता है। गुरु-लघु अक्षरों के भेद से छन्द-भेद हो जाता है। इन भेदों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। 26 अक्षरों के सम छन्दों के कुल भेदों की संख्या $2^{26} = 6,71,08,864$ अर्थात् 6 करोड़, इकहत्तर लाख, आठ हजार, आठ सौ चौंसठ होते हैं। यदि 1 से 26 तक के सारे अक्षरों के भेदों को जोड़ा जाए तो इनकी संख्या करोड़ों में आती है, वस्तुतः $2^{27}-2 = 13,42,17,726$ होती है। प्रस्तार विधि के ज्ञान से यह शुद्ध बताया जा सकता है कि यह किस छन्द का कौन सा भेद है। अर्ध-सम एवं विषम छंदों को सम्मिलित करें तो इनके भेद बहुत अधिक हो जाते हैं।

वर्ण-प्रस्तार की विधि- वर्ण-प्रस्तार की मुख्यतः 2 विधियां हैंः-

1. प्रथम विधि- उदाहरण के लिए तीन वर्ण का प्रस्तार लेते हैं। जितने वर्ण का प्रस्तार करना अभीष्ट हो, उतने गुरु वर्ण प्रथम पंक्ति में लिख लें (ऽऽऽ)। इसके पश्चात् द्वितीय पंक्ति में सबसे बाईं ओर के गुरुवर्ण के नीचे लघु का चिह्न लिख दें। शेष चिह्नों को यथावत् उतार दें (।ऽऽ)। तृतीय पंक्ति के लिए द्वितीय पंक्ति के बाईं ओर के पहले गुरु वर्ण के नीचे लघु चिह्न बना दें। चतुर्थ

पंक्ति के लिए सबसे बाईं ओर जो लघु चिह्न था, उसको गुरु चिह्न बनावें (ऽ।ऽ) । यह स्मरण रखें कि बाईं ओर की प्रथम पंक्ति में गुरु के बाद लघु, लघु के बाद गुरु, गुरु के बाद लघु का क्रम चलता जाएगा । इस प्रकार तृतीय पंक्ति में मध्य लघु और शेष दो गुरु (ऽ।ऽ) होते हैं । चतुर्थ पंक्ति में सबसे बाईं ओर के गुरु को लघु लिखें, मध्य में लघु है, अन्त में गुरु । (।।ऽ) । पंचम पंक्ति के लिए चतुर्थ पंक्ति के अन्तिम गुरु के स्थान पर लघु चिह्न दें । शेष दोनों लघु के स्थान पर गुरु चिह्न दें, (ऽऽ।) । षष्ठ पंक्ति के लिए बाईं ओर के प्रथम गुरु के स्थान पर लघु का चिह्न दें । इस प्रकार षष्ठ पंक्ति में मध्य गुरु और 2 लघु रहेंगे (।ऽ।)। सप्तम पंक्ति में षष्ठ पंक्ति के मध्य गत गुरु को लघु कर दें और बाईं ओर के प्रथम लघु के गुरु करें, (ऽ।।) । अष्टम पंक्ति के लिए सप्तम पंक्ति के बाईं ओर के प्रथम गुरु को लघु कर दें । इस प्रकार अष्टम पंक्ति में केवल लघु शेष रहेंगे, (।।।) । प्रत्येक छन्द के प्रस्तार के लिए सर्वगुरु से प्रारम्भ करें और समापन सर्वलघु से करें । इस विधि का सार यह है कि द्वि-आधारी संख्याओं (Binary numbers) को बाएं से दाएं लिखने की आधुनिक विधि है जहाँ गुरु (ऽ) को शून्य (0) एवं लघु (।) के लिए एक (1) लेते हैं । थोड़ी समझदारी के साथ इस नियम को मात्रिक प्रस्तार पर लागू किया जाता है । ध्यान दें मात्रिक प्रस्तार में एक गुरु (ऽ) का मान दो लघुओं (।।) के बराबर होता है ।

इस प्रकार 3 वर्ण के प्रस्तार के 8 रूप होते हैं । (3 वर्ण का प्रस्तार = 2X2X2= 8 अक्षर) ।

भेद	गुरु/लघु	स्वरूप	गणनाम
1	ऽऽऽ	सर्वगुरु	मगण
2	।ऽऽ	आदिलघु	यगण
3	ऽ।ऽ	लघुमध्य	रगण
4	।।ऽ	अन्तगुरु	सगण
5	ऽऽ।	अन्तलघु	तगण
6	।ऽ।	मध्यगुरु	जगण
7	ऽ।।	आदिगुरु	भगण
8	।।।	सर्वलघु	नगण

वर्ण-प्रस्तार की द्वितीय विधि

इस विधि में ऊपर से नीचे की ओर चलना होता है । जितने वर्णों का प्रस्तार करना हो, उतनी ही लकीरें सीधी ऊपर से नीचे की ओर खींचे । 3 वर्ण का प्रस्तार करना है तो तीन लकीरें ऊपर से नीचे सीधी खींची जाएंगी । 4 वर्ण के लिए 4 लाइनें, 5 वर्ण के लिए 5 लाइनें, 6 वर्ण के लिए 6 लाइनें आदि। 3 वर्ण का प्रस्तार 8 होता है, अतः ऊपर से नीचे 1 से 8 अंक भर लें ।

प्रथम पंक्ति- इस प्रकार भरें-

एक गुरु, एक लघु, एक गुरु, एक लघु - ऽ। ऽ। ऽ। ऽ।

द्वितीय पंक्ति- इस प्रकार भरें- (प्रथम पंक्ति से दुगुने गुरु-लघु)

दो गुरु, दो लघु, दो गुरु, दो लघु - ऽऽ, ।।, ऽऽ, ।।, ऽऽ, ।।

तृतीय पंक्ति- इस प्रकार भरें- (द्वितीय पंक्ति से दुगुने गुरु-लघु)

चार गुरु, चार लघु, चार गुरु, चार लघु - ऽऽऽऽ, ।।।।, ऽऽऽऽ, ।।।।

चतुर्थ पंक्ति- 4 वर्ण का प्रस्तार, (तृतीय पंक्ति से दुगुने गुरु-लघु)

आठ गुरु, आठ लघु, आठ गुरु, आठ लघु- ऽऽऽऽ, ऽऽऽऽ, ।।।।, ।।।।, फिर 8 गुरु, 8 लघु ।

पंचम पंक्ति- पांच वर्ण का प्रस्तार- (चतुर्थ पंक्ति से दुगुने गुरु-लघु)

16 गुरु-16 लघु, 16 गुरु, 16 लघु, आदि ।

4 वर्ण का प्रस्तार होगा- 2X2X2X2= 16 वर्ण

5 वर्ण प्रस्तार होगा- 2X2X2X2X2= 32 वर्ण

इसी प्रकार आगे के वर्णों का प्रस्तार क्रमशः दुगुना होता जाएगा । इसके लिए उतनी ही पंक्ति खीचनी होगी ।

वर्ण-प्रस्तार बनाने का नियम- वर्ण-प्रस्तार बनाने का नियम यह है कि 2 संख्या में उतनी बार दो संख्या को गुणा करना । अर्थात् 2 संख्या में निर्दिष्ट संख्या के अनुसार घात करना या गुणा करना ।

जैसे- 2^5, 2^6, 2^7, 2^{10} आदि ।

जैसे- 2 वर्ण के भेद- 2X2= 4 भेद ।

3 वर्ण के भेद- 2X2X2= 8 भेद ।

4 वर्ण के भेद- $2^4 = 16$ भेद ।

5 वर्ण के भेद- $2^5 = 32$ भेद ।

इसी प्रकार आगे के सभी भेद दुगुने होते जाएंगे ।

इन भेदों का अभिप्राय यह है कि इतने प्रकार से गुरु-लघु वर्णों को रखा जा सकता है और इतने छन्द बन सकते हैं । ये भेद छन्दों के लय का संकेत करते हैं । जितने छन्द आचार्य पिंगल ने दिए हैं । उनके अतिरिक्त इतने नए छन्द बन सकते हैं ।

आचार्य पिंगल ने प्रस्तार आदि विधियों का आगामी सूत्रों में वर्णन किया है।

PRATYAYAS
(Cognate Rules)

Pratyaya (प्रत्यय) literally means cognition, i.e., the process of knowing, as per context, the binary expansions, conversions, etc. regarding the tabular representation of long (ऽ) and short (।) syllables of metres. *Ācārya Kedāra Bhaṭṭa* (born before 1000 AD) and other commentators have described six types of *pratyayas* (cognate rules):

P-1. *Prastāra* (प्रस्तार) P-2. *Naṣṭa* (नष्ट)
P-3. *Uddiṣṭa* (उद्दिष्ट) P-4. *Ekaḍvyādi-laga-kriyā* (एकद्व्यादि-लग-क्रिया),
P-5. *Saṅkhyāna* (संख्यान) P-6. *Adhvayoga* (अध्वयोग).

P-1. ***Prastāra.*** *Piṅgala* discusses two methods of writing binary expansions for syllabic metres with the help of long (ऽ) and (।). The first method is exactly akin to the modern way of generating binary numbers with the help of zero (0) and one (1).

However, this is described (on the basis of rules given in pratyayas) by commentators in such a way that it applies to *varnic* and moric expansions both. Notice that in a *varnic* expansion (of even metres), the first row will have all longs, and moric expansion, the first line will have all longs (respectively all longs except the extreme left entry which is a short) if the total number of moras in a row is even (respectively odd). Note that in moric expansions,

one long (ऽ) is equal to two shorts (।।). For example, in a *varṇic* expansion 4 (respectively 5) *varṇas*, the first row has four longs ऽऽऽऽ (respectively five longs ऽऽऽऽऽ). In case of a moric expansions, the first row cosisting of 4 moras will be ऽऽ, while 5 moras will be ।ऽऽ.

The following is the general method of expansion given by commentators.

In order to find the succeeding row from the present (first or any other) row, write short beneath the long at the extreme left and copy the remaining symbols (longs/ shorts) to the right of that long. However, all the symbols to the left of that long should be converted into longs. Continue this process until one gets all shorts (in a row) and that is the last row of the expansion.

In case of moric expansions, one should take utmost care of the number of moras, as in any row their total sum is the same. Moric expansions and related issues are discussed at the end of the eighth chapter.

The second method is perhaps the fastest way of writing binary numbers (of any bits). For example, in order to write binary numbers of n bits (say), first write 0 (or ऽ) and 1 (or ।) alternately (naturally from top to bottom), next write blocks of 2 zeros (00 or ऽऽ) and 2 ones (11 or ।।) alternately; next write blocks of 4 zeros (or longs) and 4 ones (or shorts) alternately, etc. Notice that the last column would consist of blocks of 2^{n-1} zeros (longs) and 2^{n-1} ones (shorts) alternately. Total number of binary numbers (of n bits) thus generated is 2^n. For details see *sūtras* 8.20, 8.21; 8.22 and 8.23. Surprisingly enough, the first rule as described by commentators is applicable to the expansion of moric metres, of course with a little extra precaution in the sense that one long (ऽ) is equal to two shorts (।।) in moric metres.

P-2. *Naṣṭa.* This gives a method to convert a decimal number into the equivalent *Piṅgala* binary number. (Recall that the *Piṅgala* binary system with its digit reversed is the modern binary system.) For details, see *sūtras* 8.24 and 8.25.

P-3. *Uddiṣṭa.* This discusses the conversion of a binary number into its decimal equivalent. *Ācārya Piṅgala* gives two methods (see *sūtras* 8.26 and 8.27).

द्विकौ ग्लौ ॥ 20 ॥

शब्दार्थ- ग्लौ- एक अक्षर वाले छन्द के ग् - गुरु, ल् -लघु, अर्थात् गुरु और लघु, **द्विकौ**- दो प्रकार के भेद होते हैं।

सारणी 8.1

एकाक्षर छन्द के दो भेद

प्रथम भेद	गुरु	द्वितीय भेद	लघु
	ऽ		।
	ऽ		।
	ऽ		।
	ऽ		।

चूँकि सम छन्दों के सभी पाद एक समान होते हैं, अस्तु पिंगल महोदय के अनुसार केवल प्रथम पंक्तियों (Rows) को दिखाएँ तो सारणी 8.1 को निम्न प्रकार व्यक्त किया जाना श्रेयस्कर होगा। वस्तुतः यही प्रक्रिया पूरे छन्दशास्त्र में अपानायी जाती है।

सारणी 8.1 अ

एक अक्षरात्मक छन्द की पिंगल सूची

1.	ऽ
2.	।

Meaning. Taking a long (ऽ) or a short (।) at a time, two even metres can be formed with the help of one syllable. See table 8.1.

Table 8.1

An even metre with a long (ऽ) in all its quarters	An even metre with a short (।) in all its quarters
ऽ	।
ऽ	।
ऽ	।
ऽ	।

Technically speaking, one can have only two (even) matrices of order 4x1, each having either a long (ऽ) or a short (।) as its elements. Since all the four quarters of an even metre are identical, it is enough to depict only the first quarter. Accordingly, *Pingala* lists them as follows:

Table 8.1 A
***Pingala* listing of even metres with 1 syllable**

1	ऽ
2	।

मिश्रौ च ॥ 21 ॥

शब्दार्थ- द्विकौ ग्लौ- दो अक्षरात्मक पाद वाले छन्द का प्रस्तार करने पर द्विकौ अर्थात् दो बार आवृत्त, **ग्लौ-** गुरु और लघु अक्षर, **मिश्रौ च-** मिश्रित रूप से रखे जाते हैं । अर्थात् गुरु के साथ गुरु (ऽऽ), लघु के साथ गुरु (।ऽ), गुरु के साथ लघु (ऽ।) और लघु के साथ लघु (।।) । इस प्रकार दो अक्षर वाले छन्द के 4 भेद हो जाते हैं ।

अर्थ- दो अक्षरात्मक छन्द के 4 भेद होंगे । उनमें गुरु-लघु मिश्रित रूप से होंगे ।

दो अक्षरों से अधिकतम 4 सम छन्द बन सकते हैं । चूँकि सम छन्दों के चारों पादों या पंक्तियों (Rows) में वर्णों के संयोजन में समानता होती है, इसलिए

(सारणी 8.1 अ का अनुसरण करते हुए) इनके प्रस्तार प्रदर्शन हेतु छन्दों के केवल प्रथम पाद को दिखाया जा रहा है ।

सारणी 8.2 /Table 8.2

दो अक्षरात्मक छन्दों के चार भेद

4 metres with 2 syllables

छन्द सं० Metre No.	वर्ण योजना Syllabic arrangement	स्वरूप	Form
1	ऽऽ	सर्वगुरु	All longs
2	।ऽ	आदि लघु (या अन्त गुरु)	First short (or last long)
3	ऽ।	आदि गुरु (या अन्त लघु)	First long (or last short)
4	।।	सर्वलघु	All shorts

Meaning. Taking 2 longs (ऽऽ) or 1 short (।) and one long (ऽ) or 1 long (ऽ) and 1 short (।) or 2 shorts (।।) at a time, four (even) metres can be formed with the help of two syllables.

Thus one can have 4 even metres or 4 even matrices of order 4X2, each having ऽऽ, ।ऽ, ऽ। and ।। as its first row respectively. See **Table 8.2**. It is of paramount importance to note the order of the syllabic arrangement listed above (Table 8.2).

पृथग् ग्लोऽमिश्राः ॥ 22 ॥

शब्दार्थ- पृथक्- तीन अक्षरात्मक छन्द के प्रस्तार में तृतीय पंक्ति को पृथक् रखें । **ग्लः द्विधाः**- गुरु-लघु अक्षरों को पूर्व पंक्ति की अपेक्षा दुगुना करें, **अमिश्राः**- और उन्हें मिश्रित न करते हुए रखें । अर्थात् द्वितीय पंक्ति में 2 गुरु, 2 लघु का क्रम चला है, उसको तृतीय पंक्ति में दुगुना करके 4 गुरु, 4 लघु का

क्रम चलावें । यह ध्यान रखें कि प्रथम पंक्ति में 1 गुरु, 1 लघु का क्रम है । द्वितीय पंक्ति में 2 गुरु, 2 लघु का क्रम है । तृतीय पंक्ति में दुगुना करने से 4 गुरु, 4 लघु का क्रम चलेगा ।

अर्थ- विगत तालिका में गुरु (ऽ) व लघु (।) का क्रम विशेष रूप से अवलोकनीय है । यदि दो अंकों 0 (= गुरु ऽ) एवं 1 (= लघु ।) से संख्या पद्धति का निर्माण करें तथा उनको दक्षिण क्रम में अर्थात् बाएं से दाएं क्रम में लिखें तो (शून्य से प्रारम्भ करके प्रथम चार) पिंगल द्वि-आधारी संख्याएं (Binary numbers) प्राप्त होती हैं । तालिका को पुनः ध्यान से देखें तो (अ) पहिले स्तम्भ में ऽ (गुरु) व लघु (।) क्रम से बारी-बारी आते हैं; तथा (ब) दूसरे स्तम्भ में दो गुरु (ऽऽ) व दो लघु (।।) क्रमानुसार प्रत्यावर्ती होते हैं । इसी व्याख्या के क्रम में यह सूत्र कहता है कि- तीन अक्षरात्मक छन्द के प्रस्तार में तृतीय स्तम्भ में 4 गुरु, 4 लघु का क्रम चलेगा । तालिका 8.3 देखें । इस सूत्र का यह भी संकेत है कि समवृत्तों की पिंगल सूची के आगामी स्तम्भों में क्रमशः $2^3 = 8$, $2^4 = 16$, ..., के गुट्टों में गुरु व लघु प्रत्यावर्ती होंगे ।

Meaning. (This *sūtra,* in continuation of the previous two *sūtras*, explains the occurence of longs and shorts in the successive columns. Notice from Table 8.2 explaining the previous *sūtra* that: (i) long (ऽ) and short (।) appear alternately in the first column, and (ii) 2 longs (ऽऽ) and two shorts (।।) occur alternately in the second column. In the *(Piṅgala)* listing of (even) metres with three syllables, 4 longs (ऽऽऽऽ) and four shorts (।।।।) occur alternately in the third column. (Similarly, in general, blocks of $2^3 = 8$, $2^4 =$ 16, ..., longs and shorts will occur in subsequent columns of *Piṅgala* listing of even metres.)

टिप्पणी- इस सूत्र के कई पाठभेद मिलते है- पृथग् ग्ला मिश्राः, पृथग् ग्लो मिश्राः । सभी सूत्रों का भाव एक ही है । This *sūtra* is found in a slightly different forms else where, but the meaning is the same.

सारणी 8.3 / Table 8.3
तीन अक्षरात्मक छन्दों के आठ भेद
8 metres with 3 syllables

छन्द सं० Metre No.	*वर्ण-योजना* Syllabic arrange-ment	*पिंगल द्वि-आधारी* संख्या (ऽ = 0, । = 1)	*स्वरूप* Nature	*गण* *Gaṇas*
1	ऽ ऽ ऽ	0 0 0	सर्वगुरु All longs	मगण *Magaṇa*
2	। ऽ ऽ	1 0 0	आदि लघु First short	यगण *Yagaṇa*
3	ऽ । ऽ	0 1 0	मध्य लघु Middle short	रगण *Ragaṇa*
4	। । ऽ	1 1 0	अन्त गुरु Last long	सगण *Sagaṇa*
5	ऽ ऽ ।	0 0 1	अन्त लघु Last short	तगण *Tagaṇa*
6	। ऽ ।	1 0 1	मध्य गुरु Middle long	जगण *Jagaṇa*
7	ऽ । ।	0 1 1	आदि गुरु First long	भगण *Bhagaṇa*
8	। । ।	1 1 1	सर्वलघु All shorts	नगण *Nagaṇa*

वसवस्त्रिका: ॥ 23 ॥

शब्दार्थ- त्रिका: - तीन अक्षरात्मक छन्द के प्रस्तार में, **वसव:** - वसु अर्थात् 8 भेद होते हैं । उनके ही नाम मगण आदि हैं ।

अर्थ- तीन अक्षरात्मक छन्द के प्रस्तार के 8 भेद होते हैं । (इसी प्रकार चार, पाँच, आदि अक्षरों के छन्द प्रस्तार के क्रमश: 16, 32, 64 आदि भेद होते हैं ।

Meaning. This *sūtra* reitrates that there will be 8 (even) metres in the listing of 3 syllabic (even) metres.

Comment. The previous table describing the syllabic arrangement of 3 syllabic even metres reveals the binary number coding of the 3 syllables excepting that the order of the bit is reversed from the modern representation. This was so because Vedic and Sanskrit metres are written from left to right. We further observe that the *Piṅgala* ranking is from 1 to 2^n in contrast to the modern ranking from 0 to 2^{n-1}. This is purposefully so because that is the ranking of even metres, the first one contains all longs (or zeros in modern symbols). So one has to count from the beginning any way. The forthcoming discussion will further show that *Piṅgala* (and possibly his predecessors as well) understood the binary number system perfectly and applied the same without any flaw.

2. नष्ट-प्रत्यय के ज्ञान की विधि

नष्ट प्रत्यय किसे कहते हैं ? नष्ट का अर्थ है- अज्ञात, अव्यक्त या अप्रकट। जैसे- यह पूछा जाए कि इतने वर्ण या मात्रा के प्रस्तार में अमुक भेद क्या या कैसा होगा ? यह अज्ञात है, अतः इसे नष्ट कहते हैं । इसका पता चलाना है । इसको ज्ञात करने की विधि को नष्ट-ज्ञान-विधि कहते हैं ।

विधि- जैसे यह पूछा जाए कि 4 वर्ण के प्रस्तार में आठवें भेद का क्या रूप होगा ? इसके उत्तर के लिए यह देखना है कि कौन सा भेद पूछा जा रहा है? वह सम संख्या है या विषम संख्या । यदि वह सम संख्या है तो पहले लघु (।) का चिह्न बनावें । यदि विषम संख्या (3, 5, 7, 9 आदि) मिलें तो गुरु का चिह्न बनावें । उसके बाद उस संख्या को आधा (1/2) करना है । यदि भाग चला जाता है तो उसके लिए लघु (।) चिह्न बनावें । जैसे- 4 वर्ण का 8 वाँ भेद पूछा गया है, तो 8 का आधा 4 होता है, अतः पहले लघु अक्षर (।) रखेंगे। 4 सम संख्या है, अतः उसका आधा 2 हुआ । वहाँ फिर लघु (।) रखेंगे। 2 फिर सम संख्या है, अतः उसका आधा 1 हुआ । अतः फिर लघु का चिह्न

(।) रखेंगे । इस प्रकार अब तक तीन लघु चिहन (।।।) प्राप्त हुए ।

अब 1 संख्या बची है । यह विषम संख्या है । इसमें 2 का भाग नहीं जा सकता है, अतः इसके स्थान पर गुरु (ऽ) का चिहन रखा जाएगा । चार वर्ण का प्रस्तार करना है, अतः 4 चिह्न तक ही हिसाब रखना है । जितने वर्ण का प्रस्तार अभीष्ट है, उतनी ही पंक्ति का हिसाब रहेगा । यहाँ 4 वर्ण का प्रस्तार है, अतः 4 पंक्ति तक ही गणना होगी । 4 वर्ण का 8वाँ भेद हुआ -

।।।ऽ अर्थात् 3 लघु, 1 गुरु ।

प्रश्न- 5 वर्ण के प्रस्तार का 11वाँ भेद बताओ ?

उत्तर- 11 विषम अंक है, 2 का भाग नहीं जाएगा, अतः पहले स्थान पर गुरु (ऽ) लिखा जाएगा और इसमें 1 जोड़ा जाएगा । अब 11+1 = 12 हुआ । यह सम संख्या है, इसमें 2 का भाग दें, अब 6 आया । 6 सम संख्या है, अतः दूसरे स्थान पर लघु (।) चिहन दें । 6 का आधा 3 विषम संख्या है। अतः तीसरे स्थान पर गुरु (ऽ) चिहन दें । इसमें 1 जोड़ने पर 3+1= 4 हुआ, यह सम संख्या है, अतः चौथे स्थान पर लघु (।) चिहन दें । 2 का आधा 1 हुआ, यह विषम संख्या है, अतः पांचवें स्थान पर गुरु चिहन (ऽ) दें। इस प्रकार 5 वर्ण के 11वें भेद का रूप हुआः-

ऽ।ऽ।ऽ, गुरु, लघु, गुरु, लघु, गुरु ।

इसके लिए संक्षिप्त विधि यह अपनावें । जैसे- 5 वर्ण का 11वां भेद बताना है । क्रमशः पहले निर्दिष्ट संख्या लिखें । उससे आगे उसका आधा लिखें। सम संख्या के नीचे लघु (।) का चिहन बनावें और विषम संख्या के नीचे गुरु चिह्न । विषम संख्या के नीचे एक लकीर दें, अर्थात् इसमें 1 जोड़ा गया है । जहाँ विषम संख्या के नीचे लकीर है, वहाँ उसके नीचे गुरु चिह्न आएगा । जैसे- 5 वर्ण का 11वां भेद-

$\underline{11}$	6	$\underline{3}$	2	$\underline{1}$
ऽ	।	ऽ	।	ऽ

इसी प्रकार 8 वर्ण के प्रस्तार का 14वां भेद बनावें ।

14	$\underline{7}$	4	2	$\underline{1}$	$\underline{1}$	$\underline{1}$	$\underline{1}$
।	ऽ	।	।	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

प्रश्न- क्या विविध संख्याओं के वर्ण-प्रस्तारों में कोई समानता होती है?

उत्तर- होती है । प्रस्तार चाहे किसी वर्ण का हो, यह क्रम पर निर्भर है कि आप कौन सा भेद ले रहे हैं । यदि आप उसी भेद को ले रहे हैं तो वर्ण-संख्या में भेद होने पर भी क्रम वही रहेगा । अन्तर केवल इतना होगा कि उसमें लघु-गुरु की संख्या उसी अनुपात से बढ़ेगी । जैसे- 4 से 8 वर्ण के प्रस्तार का 14वां भेद-

4 वर्ण का प्रस्तार- 14वां भेद- । ऽ । ।
5 वर्ण का प्रस्तार- 14वां भेद- । ऽ । । ऽ
6 वर्ण का प्रस्तार- 14वां भेद- । ऽ । । ऽ ऽ
7 वर्ण का प्रस्तार- 14वां भेद- । ऽ । । ऽ ऽ ऽ
8 वर्ण का प्रस्तार- 14वां भेद- । ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ

स्मरण रखें कि प्रस्तार-विधि में वर्ण-संख्या का इतना ही ध्यान रखना होता है कि उतने ही लघु-गुरु होंगे, अधिक नहीं । जिस भेद का ज्ञान करना है, उसका अधिक महत्त्व है । यदि वह सम संख्या है तो उसका लघु-गुरु-क्रम भिन्न होगा । यदि विषम संख्या है तो उसका क्रम भिन्न होगा । वर्ण-संख्या बढ़ने से आगे के लघु-गुरु बढ़ेंगे । प्रारम्भ के लघु-गुरु उसी रूप में रहेंगे । जैसे- 4 से 12 संख्या के वर्ण तक के प्रस्तार का 16वां भेद-

वर्ण 4 का 16वां भेद- । । । ।
वर्ण 5 का 16वां भेद- । । । । ऽ
वर्ण 6 का 16वां भेद- । । । । ऽ ऽ
वर्ण 7 का 16वां भेद- । । । । ऽ ऽ ऽ
वर्ण 8 का 16वां भेद- । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ
वर्ण 9 का 16वां भेद- । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
वर्ण 10 का 16वां भेद- । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
वर्ण 11 का 16वां भेद- । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
वर्ण 12 का 16वां भेद- । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

इसी प्रकार 8 से 12 वर्ण के 11वां भेद लें-

वर्ण 8 का 11वां भेद- ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ
वर्ण 9 का 11वां भेद- ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
वर्ण 10 का 11वां भेद- ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

वर्ण 11 का 11वां भेद- ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

वर्ण 12 का 11वां भेद- ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

आचार्य पिंगल ने नष्ट-प्रत्यय के ज्ञान की विधि अत्यन्त संक्षेप में 2 सूत्रों में दी है ।

लर्धे ॥ 24 ॥

शब्दार्थ- अर्धे- नष्ट संख्या के भेद के ज्ञान के लिए जिस छन्द के जिस भेद का ज्ञान करना हो, उस भेद की संख्या को लिखें और उसका आधा करें। **ल्**- यदि वह सम संख्या है तो उसके आधे भाग के नीचे लघु (।) का चिह्न बनावें। जैसे- 4 अक्षर के प्रस्तार का छठा भेद निकालता है । 6 सम संख्या है, इसका आधा करने पर 3 आएगा । अतः 6 संख्या के नीचे लघु (।) का चिह्न लिखें। 3 विषम संख्या है, इसका आधा समभाग नहीं हो सकता है, इसके लिए क्या करें ? इसका उत्तर अगले सूत्र में दिया गया है ।

अर्थ- किसी छन्द के निर्दिष्ट भेद के ज्ञान के लिए उस भेद का आधा करें। यदि सम संख्या है और भाग लग जाता है तो उस निर्दिष्ट संख्या के नीचे लघु (।) चिह्न दें । विषम संख्या हो तो उसमें भाग देने के लिए अगले सूत्र में विधि बताई है ।

सैके ग् ॥ 25 ॥

शब्दार्थ- यदि विषम संख्या हो तो, **सैके**- उसमें एक संख्या जोड़ दें और उसे सम संख्या बना लें । **ग्**- उस सम संख्या में दो का भाग दें और उस संख्या पर गुरु (ऽ) का चिह्न लगा दें ।

अर्थ- यदि विषम संख्या आती है तो उस प्राप्त संख्या में 1 जोड़ दें उसके नीचे गुरु (ऽ) का चिह्न लगा दें। इसी प्रकार सम संख्या के नीचे लघु (।) का चिह्न लगावें और विषम के नीचे गुरु (ऽ) का चिह्न ।

उदाहरण- 4 वर्ण का छठा भेदः- आधा करते हुए लिखें, विषम में 1 जोड़ें।

6, <u>3</u>+1= 4, 2, <u>1</u>

। ऽ । ऽ

अतः 4 वर्ण के छठे भेद का रूप हुआ- ।ऽ।ऽ

इसी प्रकार अन्य भेदों का स्वरूप निकालें ।

Meaning of *sūtra* 8.24 & 8.25. In order to find the composition of longs and shorts of a metre having *n* (say) bits placed at a particular position p (say) in the listing of even metres, one should use these formulae conjugally in the following manner. (This, in modern system, precisely means that a decimal number (p-1) has to be converted into a modern binary number with *n* bits, wherein the order of the bits is reversed.)

If *p* is even, place a short (I) as a first bit. Suppose $p \div 2 = q$ is again an even number, then place another short (I) next to the previous bit; (here it means to the right of the previous bit). *Sūtra* 8.24 directs to continue this process. However, if *p* is odd then *sūtra* 8.25 advises to place a long (ऽ) as the first bit, and divide (p+1) by 2. If the outcome i.e.$((p+1) \div 2)$ is even then, as before, place a short (I) as the next bit. Continue this conjugal process untill the last bit, viz., n^{th} bit is attained.

This is best described by the following illustrations.

Example 1. Find the syllabic arrangement of the metre at 14^{th} place in the list of *Piṅgala* expansion of even metres having 5 *varṇas.* That is: convert 14 into *Piṅgala* binary number consisting of 5 bits.

Since 14 is even, write a short (I). Again, since $14 \div 2 = 7$ (odd), write a long (ऽ) next to the previous entry.

Again $(7+1) \div 2 = 4$ (even), write a short (I) as the next entry. (Indeed whenever, we get an odd number, add 1 to make it divisible by 2.) Again, $4 \div 2 = 2$ (even), write a short (I) as the next entry.

Finally, we obtain $2 \div 2 = 1$ (odd), place a long (ऽ) as the next entry.

This way the final outcome is । ऽ । । ऽ or 10110.

Example 2. Convert 14 into *Piṅgala* binary numbers consisting of 5, 6, 7 and 8 bits. In view of the previous

discussion and example, we have

$(14)_{Pb(5)}$ = । ऽ । । ऽ = 10110 (i)

$(14)_{Pb(6)}$ = । ऽ । । ऽ ऽ = 101100 (ii)

$(14)_{Pb(7)}$ = । ऽ । । ऽ ऽ ऽ = 1011000 (iii)

$(14)_{Pb(8)}$ = । ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ = 10110000 (iv)

[Here $(14)_{Pb(n)}$ stands for the *Pingala* binary number involving *n* bits corresponding to the number 14.]

The above method is equivalent to the **modern system** of conversion. Further, reversing the sequence of bits in (i) - (iv), one can easily see that the modern binary representation of the natural number 13 in 5, 6, 7 and 8 bits is 01101, 001101, 0001101, 00001101 respectively.

3. उद्दिष्ट प्रत्यय के ज्ञान की विधि

उद्दिष्ट किसे कहते हैं ? उद्दिष्ट का अर्थ है- निर्दिष्ट, संकेतित या निर्देश करके बताया हुआ । वर्ण-प्रस्तार-जन्य भेद को सामने रखकर यह पूछना कि यह अमुक वर्ण या मात्रा के प्रस्तार का कौन सा भेद है, यह उद्दिष्ट है । इस भेद को बताना ही इस विधि का लक्ष्य है । उद्दिष्ट के ज्ञान की दो विधियां हैं । संक्षेप में उनका प्रकार यह है -

प्रथम विधि- अनुलोम विधि, बाएं से दाईं ओर चलना । यह विधि वर्ण एवं मात्रा दोनों प्रस्तारों के लिए लागू होती है ।

ज्ञातव्य रूप को किसी कागज पर लिख लें । इसमें लघु और गुरु अक्षरों का ध्यान रखना है । बाईं ओर से दाईं ओर चलें । प्रत्येक चिह्न पर 1 से प्रारम्भ करके सूची संख्याएं लिखें । वर्ण प्रस्तार में 1 से प्रारम्भ करके संख्या दुगुनी करते जाएं । संख्या निर्दिष्ट चिह्नों के ऊपर या नीचे कहीं भी लिख सकते हैं । अब वर्ण प्रस्तार के संदर्भ में उदाहरण दे रहे हैं । दुगुनी संख्या लिखने के बाद निर्दिष्ट चिह्नों में से लघु चिह्नों के संगत संख्याओं को जोड़कर 1 संख्या और जोड़ दें। यह उत्तर है । जैसे- 5 वर्ण का प्रस्तार-जन्य भेद है,

1	2	4	8	16
ऽ	।	ऽ	।	ऽ

चिह्नों के ऊपर 1, 2, 4, 8, 16 लिखें । लघु चिह्न दो हैं, उन पर

संख्याएँ हैं- 2 और 8 । इनको जोड़कर 1 और जोड़ें । (2+8) + 1 = 11

अतः उत्तर हुआ- 5 वर्ण के प्रस्तार-जन्य भेदों में यह 11वां भेद है ।

अन्य कुछ उदाहरण ये हैं -

(क) 1 2 4 8

। ऽ ऽ ।, अस्तु (1+8)+1=10वां भेद है 4 वर्ण के प्रस्तार का।

(ख) 1 2 4 8 16

। । ऽ ऽ ।, अस्तु (1+2+16)+1= 20वां भेद, 5 वर्ण के प्रस्तार का।

(ग) 1 2 4 8 16

। । ऽ । ऽ, अस्तु (1+2+8)+1= 12वां भेद, 5 वर्ण के प्रस्तार का।

(घ) 1 2 4 8 16 32

ऽ । ऽ । ऽ ।, अस्तु (2+8+32)+1= 43वां भेद, 6 वर्ण के प्रस्तार का ।

(ङ) 1 2 4 8 16 32 64 128

। ऽ । ऽ । ऽ । ऽ,

अस्तु- (1+ 4 + 16 + 64) + 1 = 86वां भेद । यह 8 वर्ण के प्रस्तार का 86वां भेद है ।

इसकी **पूरक विधि** के अनुसार गुरु चिह्नों की संगत संख्याओं के जोड़ को कुल भेदों की संख्या से घटाने पर अभीष्ट उत्तर प्राप्त होता है । जैसे कि ऊपर के उदाहरण (क) में गुरु की संगत संख्याएँ 2 व 4 का जोड़ 6 है । अस्तु, अभीष्ट उत्तर हुआ 16-6= 10, अर्थात् 4 वर्णों के कुल प्रस्तार 16 में से (क) में प्रदत्त वर्णों का संयोजन 10वें स्थान पर है । (ध्यान दें *n* वर्णों के कुल प्रस्तार में भेदों की संख्या 2^n होती है, इसलिए ही यहाँ भेदों की संख्या 16 = 2^4 ली गई है।) इसी प्रकार उदाहरणों (ख), (ग), (घ) व (ङ) में अभीष्ट उत्तर हुए, क्रमशः, 32- 8 (4 + 4) = 20, 32 - (4 + 16) = 12, 64-(1 + 4 + 16)= 43, 256 - (2 + 8 + 32 + 128) = 86. गुरु वर्णों की संख्या कम होने पर इस पूरक विधि को द्रुत गणना हेतु प्रयोग किया जाना श्रेयस्कर है ।

उद्दिष्ट प्रत्यय की प्रथम एवं इसकी पूरक विधियों के सामान्य स्तर पर लोकप्रिय होने के कारण पिंगल ने इनका उल्लेख नहीं किया है । ऐसा प्रतीत होता है कि नष्ट प्रत्यय में वर्णित विधि की प्रतिवर्तित विधि (reverse process) होने के कारण आचार्य पिंगल ने उद्दिष्ट की प्रथम विधि के लिए अलग से कोई सूत्र

नहीं दिया है । पाठक को यह विधि स्पष्ट हो जाने पर उद्दिष्ट की अनुपूरक विधि स्वतः स्पष्ट हो जाती है । ये विधियां परम्परा द्वारा टीकाकार देते रहे हैं ।

द्वितीय विधि- विलोम या प्रतिलोम विधि, दाएं से बाईं ओर चलना ।

ज्ञातव्य वर्ण- प्रस्तार के भेद को कागज पर लिख लें । इसमें दाएं से बाईं ओर चलना है । बाईं ओर चलते समय प्रत्येक संख्या को दुगुना करना है । यदि बीच में कोई गुरु चिह्न आता है तो उसमें से 1 संख्या घटा दें । आगे फिर गुरु आवे तो उस घटी हुई ही संख्या को दुगुना करें और 1 कम करके रखें । लघु आने पर दुगुनी संख्या रखें । इस प्रकार अन्त में जो संख्या आएगी, वह उत्तर होगा । इसमें 1 अंक नहीं जोड़ना है, यह स्मरण रखें । कुछ उदाहरण देखें जिनमें द्वि-आधारी कोड के आधुनिक चिह्न शून्य (0) व एक (1) भी प्रदर्शित किए जा रहे हैं ।

(अ) 0 0 1 1
ऽ ऽ । । यह 4 वर्ण-प्रस्तार में 13वां भेद है ।
13 7 4 2

(ब) 0 1 1
ऽ । । यह 3 वर्ण-प्रस्तार में 7वां भेद है ।
7 4 2

(स) 1 1 0 1 0
। । ऽ । ऽ यह 5 वर्ण-प्रस्तार का 12वां भेद है।
12 6 3 2 1

(द) 0 1 1 1 1
ऽ । । । । यह 5 वर्ण-प्रस्तार का 31वां भेद है ।
31 16 8 4 2

(न) 0 0 0 0 0 0 1
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । यह 7 वर्ण-प्रस्तार का 65वां भेद है।
65 33 17 9 5 3 2

वस्तुतः आचार्य पिंगल द्वारा दी गई यह एक अद्भुत विधि है जिसके द्वारा आधुनिक द्वि-आधारी (binary) संख्याओं को उनके समकक्ष दशमलव (या प्राकृतिक) संख्याओं में तीव्रतापूर्वक बदला जा सकता है । ध्यान दें आधुनिक द्वि-आधारी संख्याओं का प्रारम्भ 1 से होता है, जबकि पिंगल द्वि-आधारी संख्याओं का

प्रारम्भ 0 से होता है । अस्तु, उक्त उदाहरणों (अ) - (न) में आधुनिक द्वि-आधारी संख्याओं के समकक्ष दशमलव संख्याएं क्रमशः 12, 6, 11, 30 व 64 हैं । यह विशिष्ट रूप से पुनः उल्लेखनीय है कि आधुनिक द्वि-आधारी संख्याओं के अंकों के क्रम को उलट देने से पिंगल द्वि-आधारी संख्याएं प्राप्त होती हैं ।

विशेष- इस विधि का प्रयोग यदि *n* वर्णीय समवृत्तों की सूची में अंतिम छन्द, अर्थात् ।।.....। (*n* स्थानों में लघु) पर करें तो स्पष्टतः पिंगल सूची में इसका स्थान 2^n है । अस्तु, पिंगल को यह भलीभांति ज्ञात था कि *n* -वर्णीय समवृत्तों की सूची में कुल 2^n छन्द होंगे । इससे यह भी ज्ञात होता है कि पिंगल को गुणोत्तर श्रेढ़ी का अच्छा ज्ञान था ।

ध्यान दें उद्दिष्ट संबंधी आगामी दो सूत्रों की अंग्रेजी व्याख्या में उद्दिष्ट की प्रथम विधि को द्वितीय विधि से पहिले व्याख्यात किया गया है ।

P-3. *Uddiṣṭa*. In the context of metrical analysis, *uddiṣṭa* stands for the decimal equivalent of a (*Piṅgala*) binary number. This is discussed in the following two *sūtras.*

प्रतिलोमगुणं द्विर्लाद्यम् ॥ 26 ॥

शब्दार्थ- प्रतिलोमगुणम्- उद्दिष्ट का ज्ञान करना हो तो विलोम या प्रतिलोम अर्थात् उलटी विधि अपनावें । दाएं से बाईं ओर चलें । **द्विः**- प्रत्येक अगली संख्या को दुगुना करते जावें । **ल् आद्यम् द्विः** - प्रथम लघु चिह्न पर 2 संख्या लिखें ।

अर्थ- उद्दिष्ट का ज्ञान करने के लिए दाएं से बाईं ओर चलें एवं प्रथम लघुचिह्न पर 2 लिखें । आगामी चिह्नों पर प्रत्येक (पूर्व) संख्या को दुगुना करते जाएं । (यदि प्रथम चिह्न गुरु (ऽ) हो तो 2 में से 1 घटाकर अर्थात् 1 लिखें तथा इसको दुगुना करें । देखें आगामी सूत्र ।)

ततो ग्येकं जह्यात् ॥ 27 ॥

शब्दार्थ- ततः- जब लघु चिह्नों पर दुगुनी संख्या लिख रहे हैं, **गि-** तब आगे गुरु चिह्न आने पर, **एकं जह्यात्**- दुगुने में से एक संख्या कम करते जाएं । जैसे-

13	7	4	2
ऽ	ऽ	।	।

यहाँ पर 4X2= 8 के स्थान पर 1 कम कर देने से 7 संख्या लिखी गई और अगले गुरु पर 7X2 = 14 के स्थान पर 13 संख्या लिखी गई है। यह चार वर्ण वाले प्रस्तार का 13वां भेद है।

अर्थ- लघु चिह्नों के बाद कोई गुरु चिह्न आता है तो दुगुनी संख्या में से एक कम कर दें। (देखें उदाहरण (न)।)

Meaning of *sūtras* 26 & 27. In order to know the *uddiṣṭa,* i.e., the desired number (corresponding to a particular metre having a certain syllabic arrangement of bits in the listing of metres), proceed from right to left. Write 2 beneath the first syllable if the same is short (I) or 1 (= 2 - 1) if the same is long (ऽ). Next multiply the first (numerical) entry (viz. 2 or 1 as the case may be) by 2, and write the product beneath the next syllable if the same is short, otherwise subtract 1 from the product and write the outcome beneath the second syllable as the second entry. Continue this process untill the last syllable. The final outcome is the *uddiṣṭa,* that is the desired number.

Evidently, this *sūtra* gives an ingenius quick method to convert a *Piṅgala* binary number into its decimal equivalent. This method is wisely applicable to coverting a modern binary number into its decimal equivalent. The following examples illustrate the method intended by the *sūtra.*

(a) 0 0 1 1
ऽ ऽ I I Its place is 13 in the list of metres
13 7 4 2 with four *varṇas* or bits.

(c) 1 1 0 1 0
I I ऽ I ऽ Its place is 12 in the list of metres
12 6 3 2 1 with five *varṇas* or bits.

(n) 0 0 0 0 0 0 1
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ I Its place is 65 in the list of
65 33 17 9 5 3 2 metres with 7 *varṇas* or bits.

Almost all commentators of *Piṅgala's* Prosody have given **another method** to find the *uddiṣṭa.* In order to convert *Piṅgala* binary number into its decimal equivalent, we write the corresponding index number, that is 1, 2, 4, 8, 16, 32, etc. in the case of syllabic expansion of even metres beneath the *Piṅgala* binary codes, and discard the numbers which are beneath the long ones, and add the un-discarded numbers. The outcome plus one gives the decimal equivalent.

In essance this process is the reverse process of *naṣṭa* process described earlier. This seems to be the most plausible reason that *Ācārya Piṅgala* did not give a separate fromula for this rule. Evidently, once this process is clear, its complementary rule (see below) is easily obtained as a corollary to this rule.

For example, in case of a stanza having 12 bits or *varṇas*, the following scheme explains the method.

1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0
I	I	S	I	I	S	I	I	S	I	I	S
1	2	4	8	16	32	64	128	256	512	1024	2048
		X			X			X			X

Sum of the un-discarded numbers = 1 + 2 + 8 + 16+ 64 +128 + 512 + 1024 = 1755.

Hence the decimal equivalent is 1755+1=1756, that is, the stanza is placed at 1756 in the list of 4096 metres. Notice that this method is used in modern text-books dealing with the treatment of modern binary numbers.

According to its **complementary rule**, add the numbers corresponding to longs (or 0's) and subtract the same from the total number of (even) metres (i.e. *Piṅgala* binary numbers with the specified bits.) The outcome is the required *uddiṣṭa.* Accordingly, in the above illustration, 4, 32, 256 and 2048 are numbers below the

longs. So 2^{12} minus their sum = 4096 - 2340 = 1756 as anticipated. This is a superfast method provided the number of longs is not much.

At this juncture, we wish to make some historical remarks. Gottfried Leibniz (1646-1716) documented fully the modern binary number system in the 18th century. Leibniz's system used 0 and 1, like the modern binary numeral system. However, in 1854, British mathematician George Boole published a landmark work detailing a system of logic, now popularly called Boolean Algebra. His logical system was responsible in the development of the binary system, particularly in its implementation in electronic theory. Post-*Piṅgala* works on *Chandaḥ-śāstra* discuss usually the applications of *Piṅgala* binary numbers in metrical analysis. Variants of *Meru* (popularly called Pascal's triangle) is widely discussed in discussing various aspects of *vṛtta* and *jāti* metres. It seems that *Meru* and some of its variants were very well-known amongst the ancient prosodists and the binary system was not so popular among the scholars. This assertion is based on the fact that almost every commentary on *Piṅgala's Chandaḥ-śāstra* gives fundamental details of the binary system. *Varṇic Meru* (generally called Pascal triangle in modern mathematical sciences) has been an integral part of *Piṅgala*'s metrical science. The relationship between binomial expansions and *Meru* and its variants were taught at school level in India. Indeed, text-books dealing with school mathematics used to incorporate a discussion on *Meru*. For example, one may refer to ninth century Jain mathematician *Mahāvīrācārya's* magnum opus *Gaṇita Sāra Saṅgraha* (Compilation of Essence of Mathematics) and *Bhāskarācārya's Līlāvatī* (composed in 1150 AD). As

regards the invention of *Piṅgala* binary numbers, nothing definitive can be said. We can only say that the knowledge of metrics was considered essential for the study of Vedas. So Vedic prosody should be as old as Vedas. According to Subhas Kak, extant Vedas date back to 8000 BC at least. It seems that the other method to find the *uddiṣṭa* was not given by *Piṅgala* most likely because it was easy for great scholars of prosody to derive the same as a reverse process of *naṣṭa* rule.

In order to find the *uddiṣṭa* of the last metre in the list of even metres having *n* syllables by both the metres discussed above we depict the calculations below:

$$\begin{matrix} \text{I} & \text{I} & \text{I} & \ldots\text{I} \\ 2^n & 2^{n-1} & 2^{n-2} & \ldots 2 \end{matrix}$$

and

$$\begin{matrix} \text{I} & \text{I} & \text{I} & \ldots\text{I} \\ 2^0 & 2^1 & 2^2 & \ldots 2^{n-1}. \end{matrix}$$

Since the two methods must yield the same result, we have

$$(1 + 2 + 2^2 + \ldots + 2^{n-1}) + 1 = 2^n.$$

This means that *Piṅgala* new methods of geometic progression, viz., $a + ar + ar^2 + .. + ar^{n-1} = a(r^n-1)/(r-1)$, $r > 1$.

4. एकद्व्यादि- लग-क्रिया प्रत्यय के ज्ञान की विधि

इस विधि के द्वारा ज्ञात किया जाता है कि किसी वर्ण के प्रस्तारजन्य भेदों में कितने भेद सर्वगुरु हैं, कितने सर्वलघु हैं, कितने 1 गुरु, 2 गुरु, 3 गुरु आदि, तथा कितने 1 लघु, 2 लघु, 3 लघु आदि भेद हैं ।

ल-ग-क्रिया का अर्थ है- ल-लघु, ग-गुरु अर्थात् लघु और गुरु के ज्ञान की प्रक्रिया । इसके द्वारा सर्वगुरु से लेकर सर्वलघु तक के भेदों का ज्ञान प्राप्त किया जाता है ।

सारणी 8.1 अ से स्पष्ट है कि -(अ) 1-वर्णीय छन्दों की सूची में एक छन्द में 1 गुरु है एवं दूसरे में 1 लघु । सारणी 8.2 देखें । ज्ञात होता है कि-(ब) 2-वर्णीय छन्दों की सूची में - एक छन्द में दोनों गुरु हैं; दो छन्दों में 1 गुरु व 1 लघु हैं; जबकि चौथे छन्द में सर्व (दोनों) लघु हैं । 3-वर्णीय छन्दों के प्रस्तार (सारिणी 8.3) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि -(स) प्रथम छन्द में सर्व (3) गुरु हैं; 3 छन्दों में 2 गुरु व 1 लघु हैं; पुनः 3 छन्दों में 1 गुरु व 2 लघु हैं, तथा अंतिम छन्द में सर्व (3) लघु हैं । अब **प्रश्न यह है कि क्या कोई ऐसी विधि है कि वर्णीय छन्दों का विना प्रस्तार लिखे हुए गुरु-लघु के संयोजन की योजना जान सकें, अर्थात् यह बता सकें कि *n*-वर्णीय छन्दों की सूची में कितने छन्दों में कितने-कितने गुरु व लघु आते हैं ?** यह तो एकदम स्पष्ट है कि प्रथम छन्द में सर्वगुरु तथा अंतिम छन्द में सर्व लघु हैं । कदाचित यह भी स्पष्ट है कि कतिपय छन्दों में 1 गुरु व शेष लघु, 2 गुरु व शेष लघु आदि हैं । छन्दों की सूची का निर्माण किए विना पिंगलोत्तर छन्द-शास्त्रियों एवं टीकाकारों ने वर्ण-मेरु की मदद से गुरु-लघु वर्णों के संयोजन संबंधी प्रश्न का उत्तर सरलतापूर्वक दिया है । उदाहरणार्थ नीचे दिए गए 5-वर्णीय मेरु का अवलोकन करें । यह लिखना कदाचित् संदर्भ से परे नहीं होगा कि गुरु-लघु प्रकरण पर प्रत्यक्षतः भिन्न किंतु वस्तुतः वर्णीय मेरु आधारित संक्षिप्त विधियाँ भी कहीं-कहीं मिलती हैं ।

5 वर्णीय मेरु

					1						पंक्ति 0
				1		1					पंक्ति 1
			1		2		1				पंक्ति 2
		1		3		3		1			पंक्ति 3
	1		4		6		4		1		पंक्ति 4
1		5		10		10		5		1	पंक्ति 5

पूर्व कथित निष्कर्षों (अ), (ब) एवं (स) की पुष्टि मेरु की पंक्तियों 1,2 एवं 3 से होती है । इसी प्रकार 4 वर्णीय प्रस्तारजन्य छन्दों के बारे में मेरु की पंक्ति 4 से जानकारी प्राप्त की जा सकती है । अस्तु, 4 वर्णीय छन्दों की सूची में (पंक्ति 4 बाएं से दाएं देखें) 1 छन्द में सर्व (अर्थात् 4) गुरु हैं, 4 छन्दों में

1 लघु व 3 (= 4 - 1) गुरु हैं; 6 छन्दों में 2 लघु व 2 (= 4 - 2) गुरु हैं, 4 छन्दों में 3 लघु व 1 (= 4 - 3) गुरु हैं, तथा अंतिम 1 छन्द में सर्व (अर्थात् 4) लघु हैं । ध्यान दें गुरु की संख्या क्रमशः 1-1 घटती है तथा लघु की संख्या में क्रमशः 1-1 की वृद्धि होती है । इसी प्रकार मेरु की पंक्ति 5 देखकर यह सुगमतापूर्वक बताया जा सकता है कि 5 वर्णीय प्रस्तारजन्य छन्दों की सूची में 1 छन्द में सर्व (5) गुरु, 5 छन्दों में 4 गुरु व 1 लघु, 10 छन्दों में 3 गुरु व 2 लघु, 10 छन्दों में 2 गुरु व 3 लघु, 5 छन्दों में 1 गुरु व 4 लघु, तथा 1 छन्द में सर्व (5) लघु हैं ।

वस्तुतः कितने ही वर्ण के छन्दों के प्रस्तारजन्य भेदों में गुरु-लघु का संयोजन वर्ण-मेरु की मदद से अति सुगमतापूर्वक बताया जा सकता है । टीकाकारों ने 26 वर्णीय मेरु का वर्णन किया है। वर्ण मेरु को आधुनिक गणित एवं विज्ञान में पास्कल त्रिभुज कहा जाता है । पास्कल त्रिभुज के अनेकों आधुनिक प्रयोग विज्ञान की पुस्तकों में एवं इण्टरनेट पर उपलब्ध हैं। मेरु के अनेक परिवर्तों का प्रयोग पिंगलोत्तर छन्दशास्त्रियों ने किया है । ऐसा प्रतीत होता है कि आचार्य पिंगल के युग में मेरु एवं इसके परिवर्तों तथा द्विपद प्रमेय की अच्छी जानकारी स्कूल स्तर पर ही करा दी जाती थी । उल्लेख्य है कि $(x + y)^n$ के विस्तार के विभिन्न गुणांक ही वर्णीय मेरु की n वीं पंक्ति बनाते हैं । (इसके लिए उच्च माध्यमिक स्तर की बीजगणित की पुस्तक देखी जा सकती है ।)

वर्ण मेरु (पास्कल त्रिभुज) का निर्माण- वर्ण मेरु के सबसे ऊपर संख्या 1 है जिसे शून्य पंक्ति की संज्ञा दी गई है । प्रथम पंक्ति में 1 और 1 आते हैं (क्योंकि 1 वर्णीय छन्द-प्रस्तार में, देखें सारिणी 8.1 अ, 1 गुरु व 1 लघु आते हैं) । द्वितीय पंक्ति की प्रविष्टियों को प्राप्त करने के लिए पूर्व से 1 उतारें, यह हुई प्रथम प्रविष्टि, तथा दूसरी प्रविष्टि 2 को प्राप्त करने के लिए विगत पंक्ति की प्रथम दो प्रविष्टियों 1 व 1 को जोड़ें (अर्थात् 2 = 1 + 1); द्वितीय पंक्ति की अंतिम प्रविष्टि 1 रहेगी । (वस्तुतः प्रत्येक पंक्ति में प्रथम एवं अंतिम प्रविष्टि 1 ही रहेगी ।) अब तृतीय पंक्ति की प्रविष्टियाँ विगत पंक्ति की प्रविष्टियों से इस प्रकार प्राप्त करें- प्रथम प्रविष्टि 1, द्वितीय प्रविष्टि= पूर्व पंक्ति की प्रथम दो प्रविष्टियों का योग अर्थात् 3=1+2; इसी प्रकार अगली प्रविष्टि 2+1= 3 हुई ।

अंतिम प्रविष्टि 1 होगी ही । स्पष्टतः चतुर्थ पंक्ति हुई- 1, 1+3 = 4, 3+3=6, 3+1 = 4 एवं 1 । पंचम पंक्ति हुई- 1, 1+4 = 5, 4+6 = 10, 6+4 = 10, 4+1 = 5 एवं 1। इस प्रकार किसी भी सीमा तक मेरु की पंक्तियों का निर्माण किया जा सकता है। शून्य पंक्ति को मेरु से निकाला जा सकता है ।

P-4 Ekdvyādi-laga-kriyā (Evlk). This precisely means the process of knowing shorts and longs of metres. With a view to explaining it, look at Tables. 8.1A, 8.2 & 8.3. Notice that:

(a) In the list of even metres with 1 syllable, there is (only) one metre having 1 long (ऽ) and there is another metre having 1 short (I).

(b) In the list of even metres with 2 syllables each, the metre at the first (respectively last) place has all (2) longs (respectively shorts), and the remaining two metres have 1 long and 1 short.

(c) In the list of even metres with 3 syllables each, the metre at first (respectively last) place has all (3) longs (respectively shorts), and, in between, there are 3 metres with 2 longs, 1 short, and another 3 metres with 1 long and 2 shorts.

Thus looking into the list of even metres, one can count the number of metres with a given number of syllables, i.e., one can count the metres which have a specified number of longs and shorts.

Now the problem is: Can one tell the number of metres with a certain composition of longs and shorts (such as number of metres with 4 longs and 1 short in the list of metres with 5 syllables) without looking into the list of metres ? The *Evlk* process solves this problem completely through *varṇic meru (VM)* or methods essentially based on *VM*. Recall that the modern name of *VM* is Pascal triangle. Various applications of *VM* is found in Sanskrit (and languages derived from Sanskrit) prosody.

For numerous applications of Pascal triangle, one may refer to internet or books of science and mathematics. As regards the prosody, several variants of *Meru* have been used by prosodists in expansions and related problems.

Construction of *VM* or Pascal Triangle

First, consider the following expansions:

$(G + L)^0 = 1$
$(G + L)^1 = 1G + 1L$
$(G + L)^2 = 1G^2 + 2GL + 1L^2$
$(G + L)^3 = 1G^3 + 3G^2L + 3GL^2 + 1L^3$
$(G + L)^4 = 1G^4 + 4G^3L + 6G^2L^2 + 4GL^3 + L^4$

$\cdots$

$(G + L)^n = 1G^n + nG^{n-1}L + \ldots + nGL^{n-1} + 1L^n.$

Indeed, various coefficients in the expansion of $(G + L)^n$, n=0, 1, 2, ..., are arranged is *VM*. See below the 5-*varna VM*.

5-Varṇic (VM)

					1						Row 0
				1		1					Row 1
			1		2		1				Row 2
		1		3		3		1			Row 3
	1		4		6		4		1		Row 4
1		5		10		10		5		1	Row 5

Notice that the discussion (cf. (a), (b) & (c)) regarding the number of metres having a certain composition of longs and shorts in evident from the above *VM*. Thus, according to Row 4, one may easily conclude that in the list of even metres with 4- syllables: (i) there is only one metre having all (4) longs, (ii) there are 4 metres with 3 (=4-1) longs, 1 short, (iii) there are 6 metres having 2 (=4-2) longs, 2 shorts; (iv) there are 4 metres having 1 (=4-3) long and 3 shorts; and (v) there is only one metre having all (4) shorts.

Further, notice that, as in the expansion of $(G + L)^n$, power of G decreases by 1 and the power of L increases by 1, exactly the same phenomena is found in (i)-(iv). That is, the first metre is the list of even metres with n syllables, the first metre has all (n) longs; then there are (n-1) metres having (n-1) longs, 1 short; then there are $n(n-1)/2$ metres having (n-2) longs, 2 shorts; and so on. Observe the similarily of entries in each row of the *VM*, that is if the left half-part of the *VM* is known, the right half is obviously known.

5. संख्यान-प्रत्यय के ज्ञान की विधि

इस विधि के द्वारा ज्ञात किया जाता है कि वृत्त के कितने भेद होते हैं। इसमें वर्ण-प्रस्तार की पूर्वोक्त प्रक्रिया का उपयोग किए विना शीघ्र उत्तर प्राप्त किया जा सकता है ।

जिस वृत्त के विषय में ज्ञातव्य हो कि इसके कितने भेद होते हैं, उस वृत्त में 2 संख्या का भाग देते हैं । यदि वह वृत्त सम संख्या है तो वृत्त में 2 का भाग लग जाएगा, जो लब्धि हो, उसे नीचे लिखें । सम संख्या वाले वृत्तों में यह नियम सरलता से चल जाता है । जिस संख्या में भाग लग जाता है, उसके आगे दाहिनी ओर 2 की संख्या लिख दें । जहाँ-जहाँ 2 अंक का भाग लग जाए, वहाँ उसके सामने 2 अंक लिखा जाएगा । जैसे- 4, 6, 8 आदि के भेद ।

जब विषम संख्या वाले वृत्त का भेद ज्ञात करना हो, या 2 का भाग देते समय विषम संख्या आवे तो निम्न विधि अपनावें । जहाँ विषम संख्या आवे, वहाँ उसमें से 1 अंक घटावें और उसके सामने दाहिनी ओर शून्य (0) का चिह्न लगावें । विषम संख्या में से 1 अंक घटाने पर सम संख्या मिलेगी, उसमें 2 अंक का फिर भाग दिया जाएगा, यदि सम संख्या आती है तो दाहिनी ओर 2 लिखा जाएगा, यदि विषम संख्या आती है, तो शून्य (0) लिखा जाएगा । जैसे- 3 अक्षर वाले वृत्त के भेद निकालते हैं- 3 में 2 का भाग नहीं जाएगा, तो 3 के सामने शून्य (0) लिखा जाएगा । 3 में 1 घटाने पर 2 में 2 का भाग जाएगा तो दाहिनी ओर ऊपर वाले शून्य के नीचे 2 अंक लिखा जाएगा । 2 में 2 का भाग देने पर 1 बचा । उसमें 2 का भाग नहीं जा सकता है, अतः दाहिनी ओर 2 के नीचे नीचे शून्य रखें ।

इस प्रकार 3 वर्ण के वृत्त के भेद जानने के लिए यह स्थिति हुई -

वर्ण 3 में 2 का भाग नहीं जाएगा, 0 = 4X2 = 8

3 में से 1 घटाया, 2 बचा, भाग जाएगा 2 = 2X2 = 4

1 बचा, 2 का भाग नहीं जाएगा, 0 = 2

4. अब इन चिह्नों से वृत्त के भेद निकालते हैं। इसकी विधि यह है :-

पहले ऊपर से नीचे की ओर आवें । अब नीचे से ऊपर की ओर चलेंगे। नीचे के शून्य के सामने 2 अंक रखें । इसको ऊपर ले जावें और ऊपर के 2 से गुणा करें । इस प्रकार 4 आएंगे । इसे 2 के सामने लिख दें । इस 4 को फिर ऊपर ले जावें, वहाँ 2 से गुणा करें । 4X2 = 8, यह तीन वर्ण के वृत्तों के भेद की संख्या है ।

यह नियम ध्यान रखें कि जहाँ शून्य है, वहाँ 2 से गुणा करना है और जहाँ 2 अंक है, वहाँ नीचे से प्राप्त अंक को उसी अंक से गुणा करना है । यदि नीचे से 4 आया है तो 2 संख्या के सामने 4X4 करेंगे । यदि नीचे से 8 या 16 आया है तो उसे 8X8 = 64, 16X16 = 256 । लिखेंगे । जैसे- 8 वर्ण के भेद ज्ञात करने हैं तो-

8 में 2 का भाग जाएगा, 4 शेष 2 = 16X16 = 256

4 में 2 का भाग जाएगा 2 शेष 2 = 4X4 = 16

2 में 2 का भाग जाएगा 1 शेष 2 = 2X2 = 4

1 में 2 का भाग नहीं जाएगा 0 = 2

इस प्रकार 8 अक्षर वाले छन्द के 256 भेद होंगे ।

आचार्य पिंगल ने इस पूरी प्रक्रिया को 4 सूत्रों में रखा है । 2 सूत्रों में ऊपर से नीचे आना है और शेष 2 सूत्रों में नीचे से ऊपर ले जाकर वृत्त के भेद बताना ।

P-5. *Saṅkhyāna.* The list of even metres with n syllables is known to have 2^n metres. *Acārya Piṅgala* gives some tips to evaluate 2^n quickly for a definite value of n which may be odd or even. The same is discussed in four *sūtras* that follow.

द्विरर्धे ॥ 28 ॥

शब्दार्थ- अर्धे- वृत्त के भेद जानने के लिए उस वृत्त की संख्या को आधा करें, अर्थात् उसमें 2 का भाग दें। **द्विः-** जहाँ भाग जाता है, वहाँ उस संख्या के सामने 2 अंक रख दें। **सूचना-** सम संख्या में ही 2 का भाग जाएगा, अतः यह नियम सम संख्या के लिए समझें । विषम संख्या के लिए अगला सूत्र दिया गया है ।

रूपे शून्यम् ॥ 29 ॥

शब्दार्थ- (यह नियम विषम संख्या के लिए है ।) **रूपे-** रूप अर्थात् विषम संख्या से एक संख्या कम करने पर जो सम संख्या शेष रहती है, **शून्यम्-** उसके सामने शून्य (0) लिख दें । अर्थात् सम संख्या को आधा करते समय उसके आगे 2 अंक लिखें और विषम संख्या के आगे शून्य (0) लिखें । इस प्रकार प्रक्रिया चालू रखें ।

द्विः शून्ये ॥ 30 ॥

शब्दार्थ- शून्ये- जहाँ पर शून्य (0) का चिह्न दिया हुआ है, **द्विः-** वहाँ पर दुगुना करते जावें । शून्य का दुगुना नहीं हो सकता है, अतः शून्य के आगे 2 अंक लिखते हैं । **सूचना-** आगे भी प्रक्रिया में जहाँ शून्य मिलता है, वहाँ नीचे से प्राप्त संख्या को 2 से गुणा करें ।

तावदर्धे तद्गुणितम् ॥ 31 ॥

शब्दार्थ- अर्धे- जहाँ आधा हो जाता है, अर्थात् जहाँ सम संख्या का आधा होकर आगे 2 अंक उपर्युक्त विधि से लिखा गया है, **तावत्-** वहाँ उस संख्या को, **तद्गुणितम्-** उसी संख्या से गुणा करें। अर्थात् जहाँ शून्य का चिह्न दिया गया है, वहाँ 2 से गुणा करें और जहाँ 2 अंक दिया है, वहाँ नीचे से प्राप्त संख्या को उतनी ही संख्या से गुणा करें । जैसे- नीचे से 2 आया, तो 2 संख्या के आगे 2X2 = 4 करेंगे । नीचे से 4 संख्या आई है तो 2 अंक के आगे- 4X4 = 16 करेंगे । उदाहरण ऊपर दिए गए हैं ।

Meaning of *sūtras 8.28 & 8.29.* (Consider the list of even metres with *n* syllables. Make three columns A, B, C. We shall write *n* and its successors in A, while their corresponding entries 2 or 0 will be put in B. Culumn C will be filled according to *sūtras* 8.30 & 8.31.*)*

If the number of syllables (*n*) is even then write 2 (in column B) against *n* (of column A), and if the number of syllables divided by 2 (i.e. $n \div 2$) is again even then write 2 again beneath the previous entry (of column B). *Sūtra* 8.28 directs to continue this process (from top to bottom). However, if the number of syllables (*n*) or any of its successors (which is obtained by dividing (*n*-1) by 2) is odd then place a 0 (zero) instead of 2. But then subtract 1 from the odd number. Since the outcome is even, place 2 (is column B) beneath the previous entry. *Sūtra* 8.29 asks to continue this process in conjunction with the previous *sūtra.*

For example, if the number of syllables *n* = 10 then the total process may be sequenced from top to bottom as below. The process terminates when we arrive at 1 in column A. See *Saṅkhyāna* for *n* = 10 below.

Saṅkhyāna Table, n = 10

A	B	C
10	2	32 x 32= 1024
10 ÷ 2 = 5	0	16 x 2 = 32
5 - 1 = 4	2	4 x 4 = 16
4 ÷ 2 = 2	2	2 x 2 = 4
2 ÷ 2 = 1	0	1 x 2 = 2

Column C is filled up from the bottom to top in accordance with *sūtras* 8.30 & 8.31.

Meaning of *sūtras* 8.30 & 8.31. Write 1 (in C) against 0 (the bottom entry of column B), and multiply 1 by 2 to have the product 1x2=2. The second entry (from the bottom in B) is 2, put the square of the previous entry (2), i.e. 2x2 in this case. Now, if the third entry (from the bottom in B) is 0 then write the previous product (in C) and multiply it by 2 to have the outcome corresponding to the 3rd entry (of B). However, if the third entry is 2, put the square of the previous entry. Continue this process till the upper most entry (in B) is reached. The final outcome is the required number, i.e. the value of 2^n.

Thus, at any stage, we put the previous product p (say) in C when the corresponding entry in B is 0, and multiply the product p by 2 to have $2p$ in column C. If the entry at any stage in column B is 2, the corresponding entry in column C is the product multiplied by itself, and we have p x p in C. See *Saṅkhyāna* Table above.

As another illustration, see *Saṅkhyāna* Table below fot $n = 11$.

***Saṅkhyāna* Table, $n = 11$**

A	B	C
11	0	1024 x 2 = 2048
11 - 1 = 10	2	32 x 32 = 1024
10 ÷ 2 = 5	0	16 x 2 = 32
5 - 1 = 4	2	4 x 4 = 16
4 ÷ 2 = 2	2	2 x 2 = 4
2 ÷ 2 = 1	0	1 x 2 = 2

6. अध्वयोग प्रत्यय के ज्ञान की विधि

अध्वयोग प्रत्यय क्या है ? अध्वयोग प्रत्यय का अर्थ है- निर्दिष्ट संख्या तक कुल कितने भेद हुए, यह बताना । जैसे 1 अक्षर वाले वृत्त के 2 भेद हुए, 2 अक्षर वाले के 2X2 = 4 भेद हुए । इसी प्रकार 3 अक्षर वाले वृत्त के 2X2X2= 8 भेद हुए । 4 अक्षर वाले वृत्त के 2X2X2X2= 16 भेद हुए ।

अब हम यह जानना चाहते हैं कि 1 से 4 अक्षर वाले वृत्तों के कुल कितने भेद हुए तो ऊपर से नीचे तक के भेदों को न जोड़कर सीधे 4 वर्ण के भेदों को दुगुना कर देते हैं । जैसे- 4 वर्ण के भेद 16 हैं । 16X2= 32 हुए । इसमें से 2 अंक घटा दें। 32-2= 30, यह है वृत्त 1 से 4 तक के भेदों की संख्या । इसी प्रकार आगे भी निर्दिष्ट संख्या के भेदों को दुगुना करके 2 घटा दें । यह है उस निर्दिष्ट वृत्त तक के सारे भेदों की संख्या । इसको सीधे ढंग से जोड़ें तो भी 30 अंक आते हैं-

$$2 + 4 + 8 + 16 = 30.$$

वस्तुतः, अध्वयोग प्रत्यय संबंधी आचार्य पिंगल के आगामी सूत्र के अनुसार 1 से n वर्णीय सभी समवृत्तों का योग $(2^{n+1}-2)$ बताया गया है । अर्थात् प्रत्यक्षतः अध्वयोग सूत्र हुआ-

$$2 + 2^2 + ... + 2^n = 2^{n+1} - 2.$$

यह पुनः दर्शाता है कि ज्यामितीय श्रेढ़ी, अर्थात् $a + ar + ar^2 + ...+ ar^{n-1} = a(r^n-1)/(r-1), r \neq 1$, का ही प्रयोग पिंगल महोदय बता रहे हैं । ध्यान दें $a = r = 2$ लिखने पर उक्त अध्व-योग सूत्र प्राप्त होता है ।

P- 6. *Adhva-yoga.* Suppose we have four lists of even metres having respectively 1, 2, 3, and 4 syllables, Then each list consists of 2, 4, 8 and 16 metres, and their sum is 2+4+8+16=30. Under the cognitive process of *adhva-yoga, Acārya Piṅgala* tells a formula to find the total sum (30 in this example) without adding 2, 4, etc. He says that multiply the last number 16 by 2. Then the product subtracted by 2 gives the total sum, i.e. 16x2 - 2 = 30.

द्विर्द्व्यूनं तदन्तानाम् ॥ 32 ॥

शब्दार्थ- तदन्तानाम्- निर्दिष्ट संख्या तक के भेदों के ज्ञान के लिए उस संख्या तक के जितने भेद हैं, **द्विः**- उनको दुगुना कर दें । **द्व्यूनम्** - उस दुगुनी संख्या में से 2 अंक घटा दें । यह उस संख्या तक के भेदों की कुल संख्या है।

अर्थ- निर्दिष्ट संख्या तक के भेदों के ज्ञान के लिए निर्दिष्ट संख्या के भेदों को लें और उन्हें दुगुना करके 2 घटा दें । यह निर्दिष्ट संख्या तक के सारे भेदों का योग है ।

सूत्र के अनुसार 4 के भेद 16 को दुगुना कर दें, 16X2 = 32 । उसमें से 2 घटा दें । 32-2= 30 । यह 30 अंक 1 से 4 तक के सारे भेदों का सूचक है ।

Meaning. The rule is : multiply (here 2^n) by 2 and subtract 2. In order to find the total number of even metres having syllables up to a specified number (*n*, say), multiply by 2 the number of even metres (2^n) having *n* syllables and subtract 2 from the product. The outcome is the total number.

Comment. Let P_n be the list of even metres having *n* syllables. Then the list P_n has 2^n metres, and this is true for each n = 1, 2,..... So the total sum of metres in P_1, P_2, ..., P_n is obviously.

$$2 + 2^2 + 2^3 + ... + 2^n.$$

Piṅgala's formula says that the total sum is also obtained by subtracting 2 from the double of 2^n. Thus, according to the above *sūtra*, the *adhva-yoga* formula is:

$$2 + 2^2 + 2^3 + ... + 2^n = 2^{n+1} - 2.$$

It clearly shows *Piṅgala's* knowledge and application of the geometric progression, viz.,

$$a + ar + ar^2 + ... + ar^{n-1} = a(r^n-1)/(r-1),\ r \neq 1.$$

Evidently, taking a = r = 2 gives the *adhva-yoga* formula.

परे पूर्णम् ॥ 33 ॥

शब्दार्थ- यदि यह जानने की इच्छा हो कि निर्दिष्ट संख्या से अगली संख्या वाले वृत्त के कितने भेद होंगे, **परे पूर्णम्**- तो पूर्वोक्त दुगुनी संख्या को वैसा ही रहने दें, अर्थात् उसमें से पूर्ववत् 2 अंक न घटावें । जैसे- 5 संख्या के भेद जानने हैं । 4 संख्या के भेद 16 ज्ञात हैं । 5 संख्या के भेद के ज्ञान के लिए 4 संख्या के भेद को दुगुना कर दें, अर्थात् 16X2=32 । इसको ऐसा ही रहने दें, इसमें से 2 न घटावें । इसी प्रकार अन्यत्र भी अगली संख्या के भेद के लिए पूर्व संख्या के भेदों को दुगुना कर दें । इस प्रकार अगली संख्या के भेद ज्ञात हो जाएंगे।

अर्थ- यदि यह ज्ञात करना हो कि निर्दिष्ट संख्या से अगली संख्या के वृत्त के कितने भेद होंगे तो निर्दिष्ट संख्या के भेदों को दुगुना कर दें । उसमें से कुछ घटावें नहीं ।

विशेष- इस सूत्र का पाठ भेद है-**'यथाऽवस्थितिः'** अर्थात् दुगुना करने पर जो संख्या आती है, उसे वैसा ही रहने दें । उसमें से 2 न घटावें । पुनश्च, यह सूत्र आगमन विधि देता है । अर्थात्, यदि हमें n-वर्णीय समवृत्तों की सूची P_n में वृत्तों की संख्या 2^n ज्ञात है तो आगामी सूची P_{n+1} में वृत्तों की संख्या ज्ञात करने के लिए 2^n में 2 का गुणा करें । अस्तु अभीष्ट संख्या 2^{n+1} है । चूँकि यह अति सहजता से ज्ञात है कि 1-वर्णीय वृत्तों की संख्या (सारणी 8.1अ) मात्र 2 है, अस्तु 2-वर्णीय वृत्तों की संख्या 2×2 होगी । इसी प्रकार 3-वर्णीय वृत्तों की संख्या $2\times(2\times2) = 2^3$ होगी । इत्यादि । वस्तुतः, आधुनिक गणितीय तर्क पद्धति के अनुसार, आचार्य पिंगल आगमन विधि का उल्लेख कर रहे हैं ।

Meaning. In order to find the total number of metres in the list of even metres having a specified number (*n*, say) of syllables, just multiply the number of metres in the list of even metres having the specified number minus 1 syllables (i.e. *n*-1 syllables) by 2.

Comment. Let P_n be the list of even metres having *n* syllables. Then the list P_n has 2^n metres, *n*=1, 2,... According to the *sūtra,* the list of P_{n+1} would consist of $2\text{x}2^n = 2^{n+1}$ metres. Indeed, *Ācārya Piṅgala* is stating the method of induction in the above *sūtra.* It is well-know that there are only 2 metres having 1 syllable (Table 8.1A).

So, according to the *sūtra*, there would be 2x2 metres in the list of even metres having 2 syllables. Similarly, there would be 2x(2x2) = 8 metres in the list of even metres having 3 syllables, and so on. Since P_1 is true, P_n is true for *n* = 2, 3, ...

Yathāvasthitiḥ (यथाऽवस्थितिः) is an alternate of the above *sūtra* (8.33). This literally means "do not mutate the number obtained by doubling." Evidently it conveys the same meaning.

परे पूर्णमिति ॥ 34 ॥

विशेष- मेरु-प्रस्तार की विधि का इस सूत्र में वर्णन किया गया है। मेरु-प्रस्तार के लिए सबसे ऊपर एक चतुष्कोण बनाया जाता है । उसके नीचे 2 कोष्ठ, उसके नीचे 3 कोष्ठ आदि । इसी प्रकार वृत्त की संख्या के हिसाब से आगे 1-1 कोष्ठ बढ़ते जाएंगे । कोष्ठ बढ़ाने का ढंग यह है कि ऊपर के कोष्ठ के नीचे 2 कोष्ठ बनाते समय दाएं-बाएं दोनों ओर आधा-आधा कोष्ठ निकला हुआ होगा। ऊपर का प्रत्येक कोष्ठ बीच में से आधा विभक्त होगा । नीचे दोनों ओर आधा-आधा निकला होगा । इस प्रकार कोष्ठों की संख्या बढ़ती जाएगी ।

मेरु के निर्माण की विधि का वर्णन पहिले आ चुका है । आचार्य पिंगल ने केवल एक सूत्र के द्वारा मेरु-प्रस्तार का दिशा-निर्देश किया है । पूर्वसूत्र (8.33) की पुष्टि वर्ण-मेरु से भी की जा सकती है । देखें निम्न 7-वर्णीय मेरु।

7 अक्षर वाले वृत्त तक के भेदों का सूचक वर्ण मेरु-प्रस्तार

VM for 7 *varnas*

वर्ण संख्या No. of *varnas*									भेद संख्या No. of metres
					1				
1				1		1			2
2			1		2		1		4
3		1		3		3		1	8
4	1		4		6		4		1	16
5	1	5	10		10	5	1		32
6	1	6	15	20	15	6	1		64
7	1	7	21	35	35	21	7	1	128

विशेष- वर्णिक मेरु के निर्माण में आगामी (पंक्ति की) प्रविष्टियों को विगत (पंक्ति) की प्रविष्टियों से प्राप्त करने की विधि का उल्लेख किया गया है । तदनुसार विगत दो प्रविष्टियों का योग आगामी पंक्ति की प्रविष्टि होती है । इसे स्पष्ट करने के लिए एक वर्णिक मेरु की छठी एवं सातवीं पंक्तियों को दिखाया

गया है । ज्ञातव्य है कि प्रत्येक पंक्ति में प्रथम एवं अंतिम प्रविष्टि 1 होती है । अन्य प्रविष्टियों को संख्याओं के स्थान पर a, b, c, x, y, z का प्रयोग किया गया है ताकि योग की स्कीम को ठीक से समझा जा सके ।

	1	a	b	c	b	a	1	पंक्ति6/Row6
1	x	y	z	z	y	x	1	पंक्ति7/Row7

(8.35)----- $1 + a = x,\ a + b = y,\ b + c = z,$

The *sūtra* intends to give a general outline of *Meru*. The method of construction of a *VM* has already been given. The above *VM* for 7 *varṇas* confirms the procedure outlined in the previous *sūtra* (8.33). For example (cf. the above *VM*), 64 is the number of metres in the list of even metres with 6 *varṇas*, while 64x2=128 is the number of metres in the bit of even metres with 6+1=7 *varṇas.*

Comment. In the construction of a *VM*, the entries of a row are obtained in a recursive manner from the entries of the previous row. each entry (other than the first and the last) in a row is the sum of two entries of the preceeding row. This is explained in the above *Meru* showing only the 6th and 7th rows, wherein various non-unit entries are represented by a, b, c, x, y, z.

परे पूर्णं परे पूर्णमिति ॥ 35 ॥

शब्दार्थ- मेरु-प्रस्तार-विधि में, **परे**- नीचे के कोष्ठ में, **पूर्णम्** - ऊपर के दोनों कोष्ठों का जोड़ रखा जाएगा । **इति**- यह अध्याय की समाप्ति का सूचक है। यह 'इति' ग्रन्थ की समाप्ति का भी सूचक है ।

अर्थ- मात्रा मेरु-प्रस्तार-विधि में नीचे के कोष्ठ में ऊपर के दो कोष्ठों का योग (प्रचलित ढंग से) रखा जाएगा ।

मात्रा-प्रस्तार

अब तक वर्ण-प्रस्तार के विविध रूपों का वर्णन हुआ है। अब मात्रा-प्रस्तार का वर्णन करते हैं। वर्ण-प्रस्तार में वर्णों अर्थात् अक्षरों की संख्या गिनी जाती है।

मात्रा-प्रस्तार में प्रत्येक वर्ण की मात्राएं गिनी जाती हैं। मात्राएं 2 हैं- लघु और गुरु । लघु का चिह्न है-।, इसकी 1 मात्रा गिनी जाती है, गुरु का चिह्न है-ऽ, इसकी दो मात्राएं गिनी जाती हैं । अ, इ, उ, ऋ की गणना लघु में हैं । इनकी 1 मात्रा मानी जाती है । आ,ई, ऊ, ॠ, ए,ऐ, ओ, और, अं, अः की गणना गुरु में है । इनकी 2 मात्राएं मानी जाती हैं ।

मात्राओं के प्रस्तार से पहले मात्राओं की संख्याओं को लिखने की विधि जाननी चाहिए । मात्राओं की संख्या लिखने की विधि यह है कि पहले 2 का भाग देते हुए उतनी गुरु मात्राएं लिखें, यदि विषम संख्या है तो उसका 1 लघु चिह्न होगा और वह प्रारम्भ में लिखा जाएगा । जैसे- 1 से 10 तक की मात्राओं के लिए ये चिह्न होंगे-

1. ।, 2. ऽ, 3. ।ऽ, 4. ऽऽ, 5. ।ऽऽ,
6. ऽऽऽ, 7. ।ऽऽऽ, 8. ऽऽऽऽ, 9. ।ऽऽऽऽ, 10. ऽऽऽऽऽ.

मात्रा-प्रस्तार के भेद-

मात्रा-प्रस्तार के भेद इस प्रकार निकालें । जितनी मात्रा का प्रस्तार ज्ञात करना हो उतनी लघु मात्राएं ऊपर लिखें । उनके नीचे इस प्रकार अंक लिखें । सबसे पहले लघु मात्रा के नीचे 1 लिखें, दूसरे के नीचे 2 लिखें, तीसरे लघु के नीचे 1+2 का जोड़ 3 लिखें । चौथे लघु के नीचे 2+3 का जोड़ 5 लिखें और सातवें के नीचे 8+13 का जोड़ 21 लिखें । इसी प्रकार आगे के लिए पिछले 2 अंको का जोड़ लिखते जाएं । जैसे- यह ज्ञात करना है कि 7 मात्रा के प्रस्तार में कितने भेद होंगे तो ऐसे ज्ञात करें। ऊपर 7 लघु मात्राएं, नीचे पूर्व बताई पद्धति से अंक लिखें ।

।	।	।	।	।	।	।
1	2	3	5	8	13	21

इस प्रकार ज्ञात हुआ कि 7 मात्रा के प्रस्तार में 21 भेद होते हैं । 4 मात्रा के 5 भेद, 5 मात्रा के 8 भेद और 6 मात्रा के 13 भेद होते हैं ।

वस्तुतः एक आदि प्रारम्भ करके विभिन्न मात्रा-प्रस्तारों के भेदों का अनुक्रम हुआ $\{F_j\}$, जहाँ $1 = F_1$, $2 = F_2$, $F_1 + F_2 = F_3$, $F_2 + F_3 = F_4, \ldots,$ $F_j + F_{j+1} = F_{j+2}$, $j = 1, 2, 3, \ldots$

आधुनिक गणितीय विज्ञान में इसे फिबोनिकी अनुक्रम कहते हैं । छन्दशास्त्रियों ने इसका बहुत सटीक प्रयोग मात्रा-प्रस्तार आदि में किया है ।

सात मात्रा के प्रस्तार के रूप-

सात मात्रा के प्रस्तार में 21 भेद होते हैं । इनको लिखने की विधि यह है-

जितनी मात्रा का प्रस्तार लिखना हो, उतनी मात्रा का प्रथम रूप क्रम संख्या 1 पर लिखें । जैसे 7 मात्रा के प्रस्तार का प्रथम रूप है - ।ऽऽऽ, इसमें बाईं ओर से जो गुरु चिह्न मिले, उसके नीचे लघु का चिह्न बनावें, दाईं ओर के चिह्नों को जैसा का तैसा नीचे उतार दें । यदि गणना करने पर 2 अंकों की कमी हो तो बाईं ओर प्रारम्भ में गुरु ऽ का चिह्न दें, यदि 1 अंक की कमी पड़े तो बाईं ओर प्रारम्भ में लघु (।) का चिह्न दें । इस प्रकार संख्या पूरी करें । अतः सात मात्रा का दूसरा भेद हुआ-

ऽ । ऽ ऽ

यहाँ पहले गुरु को लघु किया, बाद के दोनों गुरु उतार दिए । अब ।ऽऽ में गणना करने पर 5 मात्राएं हुईं । 2 कम हैं, अतः प्रारम्भ में गुरु का चिह्न ऽ जोड़ा गया है ।

अब तीसरा भेद बनाना है । पहले गुरु को लघु बनावें, शेष जैसे के तैसे उतार दें । रूप हुआ- ।।ऽऽ, ये 6 मात्राएं हुईं, अतः 1 लघु मात्रा प्रारम्भ में जोड़ें। अतः रूप हुआ-

। । । ऽ ऽ

अब चतुर्थ भेद बनावें। गुरु को लघु बनावें, शेष वैसे ही उतार दें। रूप हुआ- ।ऽ, तीन मात्राएं हुईं, चार मात्राएं शेष हैं, अतः प्रारम्भ में दो गुरु लगावें। रूप हुआ-

ऽ ऽ । ऽ

अब पंचम भेद बनावें । प्रथम गुरु को लघु बनावें, शेष को वैसा ही उतार दें। रूप हुआ- ।ऽ।ऽ, 6 मात्राएं हुईं, एक मात्रा कम है, अतः प्रारम्भ में एक लघु चिह्न बनावें । रूप हुआ-

। । ऽ । ऽ

इसी प्रकार षष्ठ भेद बनावें । प्रथम गुरु को लघु बनावें, शेष वैसा ही उतार दें । रूप हुआ- ।।ऽ, 4 मात्राएं हुईं, 3 शेष हैं, अतः प्रारम्भ में तीन मात्राएं- 1 लघु, 1 गुरु दें । रूप हुआ-

। ऽ । । ऽ

इसी प्रकार सप्तम आदि भेद 21वें भेद तक बनावें । 20वां भेद होगा-

ऽ । । । । ।

इसमें प्रथम गुरु को लघु बनाने पर 2 लघु चिह्न प्रारम्भ में और जुड़ेंगे। इस प्रकार रूप होगा-

। । । । । । ।

अर्थात् सातों लघु मात्राएं । प्रारम्भ गुरु मात्राओं से किया जाता है और समापन लघु मात्राओं से । जब सारी मात्राएं लघु हो जाएं, तो समझना चाहिए कि प्रश्न का उत्तर पूर्ण हुआ ।

7 मात्रा के प्रस्तार में 11वाँ भेद निकालने के लिए 7 लघु एक पंक्ति में लिखें । उनके नीचे क्रमशः 1 से प्रारम्भ करके पूर्ववर्ती 2 संख्याओं का जोड़ आगे लिखते जावें । 7 मात्रा के भेद-

7 मात्राएं-	।	।	।	।	।	।	।
भेद	1	2	3	5	8	13	21

इस प्रकार 7 मात्रा के 21 भेद हुए । इसमें 11वां भेद ज्ञात करना है, तो 21 में से 11 घटावें, शेष बचे 21-11 = 10। इसमें से ऊपर दी संख्याओं को दाएं से बाईं ओर चलते हुए क्रमशः घटावें । जिस संख्या में से घट जावे । उस पर लघु चिह्न दें, जिसमें से न घटे, उस पर गुरु का चिह्न दें । यदि इकट्ठी 2 संख्याओं में से निर्दिष्ट संख्या न घटे, तो एक गुरु चिह्न दें । 21 में से 11 घटाए- 10 बचे । 21 पर लघु चिह्न दें । 10 में से 13 नहीं घटते हैं, तो 8 घटाया, 10-8 = 2 बचे । 13 पर गुरु चिह्न और 8 पर लघु चिह्न दें । 2 में से 5 और 3 नहीं घटते, अतः 2 में 2 घटाया, 2-2= 0 शून्य बचा । अतः 2 के ऊपर लघु चिह्न दें, और 3-5 के ऊपर केवल एक गुरु चिह्न दें ।

	।	ऽ		।	ऽ	।
1	2	**3**	**5**	8	13	21

अतः 7 मात्रा के प्रस्तार के 11वें भेद का रूप हुआ-

। ऽ । ऽ ।

मात्रा मेरु

प्रयोजन- मात्रा मेरु के द्वारा ज्ञात होता है कि नियत संख्या के मात्रा-प्रस्तार

में कितने सर्वलघु, कितने 1 गुरु, कितने 2 गुरु, कितने 3 गुरु आदि होते हैं ।

मात्रा-मेरु बनाने की विधि- जिस प्रकार वर्ण-मेरु बनाने में कोष्ठ बनाए जाते हैं, उसी प्रकार मात्रा मेरु में भी ऊपर से नीचे कोष्ठ बनाए जाते हैं । दोनों में अन्तर यह है कि मात्रा मेरु में 1 कोष्ठ के नीचे दोनों ओर निकले हुए 2-2 कोष्ठ बनाए जाते हैं । 2-2 कोष्ठ का जोड़ा है । दोनों कोष्ठ एक सीध में होंगे, वे इधर-उधर निकले हुए नहीं होंगे । यह एक जोड़ा हुआ । इसके बाद दूसरे, तीसरे, चौथे आदि सभी में 2-2 कोष्ठ बनेंगे । इस प्रकार 2 कोष्ठों को मिलाकर 1 कोष्ठ माना जाएगा । 5 कोष्ठ के लिए ऊपर से नीचे 9 पंक्तियां होंगी। प्रत्येक पंक्ति 1-1 मात्रा की बोधक है । 9 पंक्तियों का अभिप्राय है 1 से 9 मात्राओं से संबद्ध ये पंक्तियाँ हैं ।

5 कोष्ठ वाला मात्रा-मेरु

कोष्ठ संख्या							मात्रा-संख्या
1				1			1
2			1		1		2
			2		1		3
3		1		3	1		4
		3		4	1		5
4		1	6		5	1	6
		4	10		6	1	7
5	1	10		15	7	1	8
	5	20		21	8	1	9

कोष्ठ भरने की विधि-

1. सबसे ऊपर के कोष्ठ में 1 अंक लिखें । 1 मात्रा का प्रस्तार 1 ही होता है ।

2. दो-दो कोष्ठ वाली अगली पंक्तियों के ऊपर के कोष्ठ में प्रत्येक में 1-1 अंक भर दें । नीचे वाली दूसरी पंक्ति में क्रमशः 2, 3, 4, 5 अंक भरें ।

3. दाहिनी ओर की सभी पंक्तियों के अन्तिम कोष्ठ में 1-1 अंक भर दें।

4. अन्य खाली कोष्ठ इस प्रकार भरें । नीचे के खाली कोष्ठ को भरने के लिए ऊपर के 2 कोष्ठों को लेना पड़ता है । ऊपर के कोष्ठ का अंक लें और उसे नैर्ऋत्य कोण (बाईं ओर) के अंक से जोड़ें । जो जो जोड़ आवे, उसे खाली कोष्ठ में भरें । जैसे- चौथी लाइन के लिए ऊपर के 1+2= 3 जोड़कर रखें । पांचवीं लाइन के लिए 1+3= 4 रखें। छठी लाइन में 3+3= 6 और 1+4 = 5 रखें। सातवीं पंक्ति में 4+6= 10, 1+5= 6 रखें । आठवीं पंक्ति में 6+4= 10, 5+10= 15, 1+6= 7 रखें । नौवीं पंक्ति में 10+10= 20, 6+15 = 21, 1+7= 8 रखें । ऊपर की 2 पंक्तियों को जोड़ नीचे भरना होता है ।

नीचे 11 पंक्ति का मेरु देखें, जिसमें दो खानों के यो को तीसरे खाने में रखने की विधि बीजीय संख्याओं द्वारा देखी जा सकती है । यथा- $B + C = F$, $D + F = I$, $F + H = L$, $G + I = M$, $I + L = P$.

लघु-गुरु ज्ञात करने की विधि-

इसमें लघु-गुरु के ज्ञान के लिए अन्त की ओर से चलते हैं । अन्तिम कोष्ठ की संख्या सर्वलघु की होती है । उसके बाईं ओर कोष्ठ की संख्या एक गुरु की होती है । उसके बाईं की ओर संख्या 2 गुरु वाली संख्या बताती है । इसी प्रकार उससे पहले वाला कोष्ठ 3 गुरु वाली संख्या बताता है ।

जैसे- 7 मात्रा वाली पंक्ति में ये नम्बर हैं- 4, 10, 6, 1 । उलटी ओर से चलें । 1 संख्या सर्वलघु बताती है । 6 संख्या 1 गुरु बताती है । 10 संख्या द्विगुरु बताती है और 4 संख्या त्रिगुरु बताती है । इसी प्रकार अन्य मात्रा वाली पंक्तियों का अर्थ समझें ।

Meaning. *Mātric Meru* or Moric Meru *(MM)* is constructed by adding two cells to obtain the next crossed cell (in a traditional manner).

Details regarding Moric expansions related with even metres and *MM* are given below.

Moric Expansion (*Mātric Prastāra*)

We have already discussed various mathematical aspects regarding even metres having syllabic arrangements. Now we discuss briefly even metres having a given number of instants (*mātrās*). Indeed, we are going

to give some details regarding a new kind of binary codes, as discussed by prosodists, wherein the short bit (I) has value 1 (one) and the long bit (ऽ) has value 2 (two). For example, let us consider an even metre having 1 instant. Then obviously there is only one even metre having one instant, viz. a short bit (I). If we consider even metres with 2 instants, there are only two even metres as listed below:

1. ऽ
2. I I

Similarly, if we consider metres with 3 and 4 instants then their sequences are listed below.

Serial No.	Metres with 3 Moras	Metres with 4 Moras
1.	I ऽ	ऽ ऽ
2.	ऽ I	I I ऽ
3.	I I I	I ऽ I
4.		ऽ I I
5.		I I I I

We adhere to the following rules:

(A) If the given number of Moras (say *n*) is even, put equivalent number of long bits and place them in a row. If the number of Mora *n* is odd, put maximum number of longs in a row and place one short bit to the extreme left.

(B) Replace the first long bit from the left by a short, and (i) copy the rest bits which are on the right of the replaced long bit, (ii) convert the remaining bits (which are on the left of the replaced long bit) into longs by applying the Rule A in such a way that the total number of moras remains *n*.

(C) Carry on with Rule B till we get all short bits. When we reach this stage, the expansion is complete.

For example, to depict the expansion of 7 moras. We write "I ऽ ऽ ऽ" in the first row (Rule A). Now, Apply Rule B to get "ऽ I ऽ ऽ". Again apply the Rule B and then Rule A to get "I I I ऽ ऽ ".

Following is the full expansion concerning 7 moras:

1. I ऽ ऽ ऽ
2. ऽ I ऽ ऽ
3. I I I ऽ ऽ
4. ऽ ऽ I ऽ
5. I I ऽ I ऽ
6. I ऽ I I ऽ
7. ऽ I I I ऽ
8. I I I I I ऽ
9. ऽ ऽ ऽ I
10. I I ऽ ऽ I
11. I ऽ I ऽ I
12. ऽ I I ऽ I
13. I I I I ऽ I
14. I ऽ ऽ I I
15. ऽ I ऽ I I
16. I I I ऽ I I
17. ऽ ऽ I I I
18. I I ऽ I I I
19. I ऽ I I I I
20. ऽ I I I I I
21. I I I I I I

Similarly, following is the expansion of 6 moras:

1. ऽ ऽ ऽ
2. I I ऽ ऽ
3. I ऽ I ऽ
4. ऽ I I ऽ
5. I I I I ऽ
6. I ऽ ऽ I
7. ऽ I ऽ I
8. I I I ऽ I
9. ऽ ऽ I I
10. I I ऽ I I
11. I ऽ I I I
12. ऽ I I I I
13. I I I I I I

This new kind of value based binary number system may be called *Pingla* moric binary numbers or simply moric numbers.

The number of metres in the moric list of even metres with a given number of moras is given. This is in conformity to the above discussion.

No. of moras n	1	2	3	4	5	6	7	8	...
No. of moric metres F_n	1	2	3	5	8	13	21	34	...

Notice the relationship:

$F_1 + F_2 = F_3,\ F_2 + F_3 = F_4,\ F_j + F_{j+1} = F_{j+2},\ j = 1, 2, 3, \ldots$

We remark that the sequence $\{F_j\}$ is called Fibonacci sequence in modern mathematical science.

Sanskrit prosodists have used the sequence $\{F_j\}$ with complete precision in converting the *Piṅgla* moric codes into decimals and its vice-versa. Commentators designate $F_1 + F_2 = F_3, \ldots$, moric index numbers. Following the modern nomenclature, we may call then moric binary codes.

In order to illustrate these rules, we find the 11th sequence in the moric list of metres with 7 moras. First we write 7 short bits in Row 1, and write the sequence $\{F_j\}$ beneath these seven bits from left to right. (We ignore F_j, beyond $j = 7$.)

Row 1:	I	I	I	I	I	I	I
Row 2:	1	2	3	5	8	13	21

Since we have to locate the 11th sequence, subtract 11 from 21. We get 10. Now, 13 is not subtractable from 10, so subtract 8 from 10. We get 2. Similarly, 3 & 5 are not subtractable from 2, so subtract the next entry (viz, 2) from 2. We get 0. Thus we have only two entries 8 and 2 in Row 2 which are actually subtractible. We shall merge the short bits above these subtractible entries of Row 2, with the next right short bit in each case to form long bits. Consequently, we get the following:

॥	ऽ	॥	ऽ	॥		
1	2	3	5	8	13	21

So the required sequence is: । ऽ । ऽ ।.

Now we consider the problem of finding the decimal equivalent of a given sequence from the moric list of metres of certain moras. We illustrate this method by finding the decimal equivalent of the sequence । ऽ ऽ । (evidently coming from a moric list of metres with 6 moras or instants).

Write the given sequence in a row. Then write the first 6 elements, viz. 1, 2, 3, 5, 8, 13 of the Fibonacci sequence in the following manner.

Write 1 above the first short bit. Since the second bit is long, write 2 above and 3 beneath the same. Similarly, write 5 and 8 above and beneath the next long bit. Finally, write 13 above the next short bit. In case of a short syllable, write the number just on top, and in case of a long syllable, write the number on the top and the next number beneath the same. Long syllable write on top and at the bottom.

Sum the numbers above the long bits and subtract the sum (7) from the last entry 13. The resultant is the desired number. The whole calculation is depicted below.

1	2	5	13
।	ऽ	ऽ	।
	3	8	

The final outcome is 13 - (2+5) = 6. So the given sequence is listed at the 6th place in the list of moric of metres.

Mātrā (Moric) Meru *(MM)*

The *MM* is used to answer various questions regarding moric metres. The following questions may be addressed with the help of an *MM*.

1. How many sequences have all short bits?
2. How many sequences have only one long bit?
3. How many sequences have only two long bits?

And so on.

Its construction is discussed below.

An *MM* is formed using cells. It contains, one cell at the top, then two rows of two cells, further two rows of 3 cells, and so on. Indeed, apart from the top cell, consecutive rows are double-deckers having the same number of cells. Here A, B, C, etc are put in some cells just to explain the flow chart to obtain (non-unit) numbers of various cells from the addition of those of previous two cells. The following is an elegant way to construct an *MM* to the extent of 11 instants. The same may be extended recursively to any desired number of instants.

Write 1 in the top cell and the two cells of the 2nd row. Indeed, 1 has to be placed in all extreme right cells of all rows. Again, put 1 in each extreme left cell of 3rd, 5th, 7th, ..., row. That is, each extreme cell of upper deck (in each row) contains 1.

Now fill up remaining cells so that, B+C=F, D+F=I, F+H=L, G+I=M, I+L=P. In fact, a cell's number is added to the cross cell's number, and the resultant goes to another crossed cell. If there are multiple cross cells available, the sum goes to the right hand side cell. For example, the sum of G and I shall be placed in M and not in L.

MĀTRIC (MORIC) *MERU*

1 Row 1
A 1 1 B Row 2
C 2 D 1 Row 3
1 E 3 F 1 G Row 4
3 H I 4 1 J Row 5
1 K 6 L 5 M 1 N Row 6
O 4 P 10 Q 6 1 R Row 7
1 10 15 7 1 Row 8
5 20 21 8 1 Row 9
1 15 35 28 9 1 Row10
6 35 56 36 10 1 Row11

In the tabular expansion of 7 moras we may observe that we have (see row 7):

- 1 sequence with all short bits;
- 6 sequences with one long bit;
- 10 sequences with two long bits;
- 4 sequences with three long bits.

Thus in each row (from right to left) of the *MM*:

- The first entry, viz. 1 tells that there is only one sequence with all short bits.
- The member of the next cell tells the number of sequences with one long bit.
- The member of the next to the preceding cell tells the number of sequences with two long syllables, and so on.

One may verify these rules from the previous tabular representations for moric expansions.

अष्टमोऽध्यायः समाप्तः ।

(This is the end of 8th Chapter.)

परिशिष्ट

मेरु-प्रस्तार आदि की कुछ अन्य विधियाँ

कतिपय आचार्यों ने प्रस्तार की कुछ अन्य विधियों का भी उल्लेख किया है। पाठकों के लिए उनका ज्ञान उपयोगी समझते हुए उनका संक्षिप्त विवरण नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

मेरु-प्रस्तार की एक अन्य विधि

मेरु-निर्माण के द्वारा यह जाना जाता है कि अमुक वर्ण के प्रस्तार-जन्य भेदों में कितने सर्वगुरु हैं, कितने 5 गुरु, कितने 4 गुरु, कितने 3 गुरु, कितने 2 गुरु, कितने 1 गुरु और कितने सर्वलघु हैं। जैसे- 5 वर्ण के प्रस्तार में मेरु में क्रमशः ये अंक हैं- 1, 5, 10, 10, 5, 1। 5 वर्ण के प्रस्तार में 32 भेद होते हैं। इनका क्रमशः विवरण उपर्युक्त के अनुसार यह होता है- सर्वगुरु से प्रारम्भ करके सर्वलघु तक जाते हैं। प्रत्येक कोष्ठ में 1 गुरु की संख्या कम होती जाती है। इस प्रकार 5 वर्ण के प्रस्तार में 1 सर्वगुरु, 5 चार गुरु वाले, 10 तीन गुरु वाले, 10 दो गुरु वाले, 5 एक गुरु वाले और 1 सर्वलघु।

इसको निकालने की दूसरी विधि यह है :-

जितने वर्ण की पंक्ति बनानी हो, उतने अंक क्रमशः दाईं ओर से बाईं ओर लिखें और अन्त में बाईं ओर 1 अंक और लिखें, अर्थात् 6 वर्ण के लिए 7 अंक लिखने होंगे। जैसे- 6 वर्ण के लिए- 1 6 5 4 3 2 1। फिर उसी पंक्ति के नीचे अब बाएं से दाईं ओर 1 से लेकर 6 तक अंक लिखें। बाईं ओर के 1 के नीचे कुछ न लिखें। जैसे-

1	6	5	4	3	2	1
	1	2	3	4	5	6

इसके बाद नीचे तीसरी पंक्ति में उत्तर लिखना प्रारम्भ करें। 1 अंक को जैसे का तैसा उतार लें। यह तीसरी पंक्ति का पहला अंक है। इससे आगे इस प्रकार भरें। ऊपर के अंक को ऊपर के अगले अंक से गुणा करें और जो लब्धि हो, उसे नीचे के अंक से भाग दें। यह अंक तीसरी पंक्ति में क्रमशः भरा जाएगा। जैसे-1X6=6 को नीचे के 1 से भाग दें। उत्तर होगा 6। इसे तीसरी पंक्ति में 1 के आगे लिखें। अब 6 को 5 से गुणा करें और 2 से भाग दें-6X5=30

को 2 से भाग देने पर 15 आएंगे। इसे तीसरे स्थान पर लिखें। फिर 15 को 4 से गुणा और इसे 3 से भाग दें। 15X4/3= 20 आएंगे। उसे चौथे स्थान पर लिखें। फिर 20 को 3 से गुणा और 4 से भाग दें - 20X3/4 = 15, इसे पांचवें स्थान पर लिखें। फिर 15 को 2 से गुणा करें और 5 से भाग दें। 15X2/5 = 6 । यह छठे स्थान पर लिखें। फिर 6 को 1 से गुणा करें और 6 से भाग दें। 6X1/6 = 1, इसे सातवें स्थान पर लिखें। इस प्रकार 6 वर्ण के प्रस्तार का उत्तर होता है:-

उत्तर- 1, 6, 15, 20, 15, 6, 1

इसी प्रकार 8 वर्ण के प्रस्तार की तीनों पंक्तियां इस प्रकार होंगी। विधि उपर्युक्त है।

प्रथम पंक्ति -	1	8	7	6	5	4	3	2	1
द्वितीय पंक्ति-		1	2	3	4	5	6	7	8
तृतीय पंक्ति (उत्तर)	1	8	28	56	70	56	28	8	1

इसी प्रकार अन्य वर्णों के प्रस्तार निकालें।

पताका-चक्र

पताका चक्र की उपयोगिता- मेरु-प्रस्तार या मेरु-चक्र से ज्ञात होता है कि अमुक वर्ण के प्रस्तार में क्रमशः सर्वगुरु, 4 गुरु, 3 गुरु, 2 गुरु, 1 गुरु और सर्वलघु वाले कितने भेद होते हैं, परन्तु मेरु-चक्र से यह ज्ञात नहीं होता है कि वे भेद कौन-कौन से हैं। जैसे- 5 वर्ण के भेद हैं- 1 सर्वगुरु, 5 चार गुरु वाले, 10 तीन गुरु वाले, 10 दो गुरु वाले, 5 एक गुरु वाले और 1 सर्वलघु। ये 5 या 10 भेद कौन-कौन से हैं, यह मेरु-चक्र से स्पष्ट नहीं होता है। पताका-चक्र यह बताता है कि 5 वर्ण के 32 भेदों में से ये-ये संख्याएं हैं, जिनमें 4 गुरु, 3 गुरु या 2 गुरु आदि है। इनके स्पष्ट ज्ञान के लिए पताका-चक्र की आवश्यकता है।

पताका-चक्र की विधि-

1. जितने वर्ण की पताका बनानी हो, उससे एक अधिक कोष्ठ बनावें। जैसे- 5 वर्ण की पताका के लिए 6 कोष्ठ बाएं से दाएं बनावें।

2. प्रथम पंक्ति में बाएं से दाएं मेरु-चक्र के अनुसार संख्याएं भरें। जैसे 5 वर्ण की पताका में क्रमशः बाएं से दाएं 1, 5, 10, 10, 5, 1 ये संख्याएं

6 कोष्ठों में भरें ।

3. दूसरी पंक्ति में 1 से प्रारम्भ करके दुगुने अंक इन कोष्ठों में भरें । जैसे- 5 वर्ण की पताका में क्रमशः 1, 2, 4, 8, 16, 32 अंक भरें ।

4. प्रथम पंक्ति में केवल 1 अंक भरा जाएगा, क्योंकि सर्वगुरु केवल एक ही होगा । इसी प्रकार अन्तिम पंक्ति में भी केवल एक संख्या आएगी, क्योंकि सर्वलघु भी एक ही होगा । जैसे- 5 वर्ण के प्रस्तार में प्रथम कोष्ठ में 1 अंक होगा। 5 वर्ण के प्रस्तार के 32 भेद होते हैं, अतः अन्तिम कोष्ठ में केवल एक संख्या 32 होगी ।

अंक भरने की विधि-

1. प्रथम पंक्ति भेदों की संख्या बताती है । उसके अनुसार उतने ही अंक भरे जाएंगे ।

2. द्वितीय पंक्ति में 1 से लेकर दुगुने अंक हैं । जैसे- 5 वर्ण के प्रस्तार में 1, 2, 4, 8, 16 और 32 । इनको ही क्रमशः बार-बार जोड़ना पड़ता है।

3. अंक भरने के लिए अपने से पहले वाले अंक को लेकर जो जोड़ आवे, उसे उस पंक्ति में नीचे लिखें ।

4. जो अंक एक बार आ गया है, उसे दुबारा नहीं लिखेंगे, अपितु उससे अगला अंक लिखेंगे ।

5. जब कोई संख्या छोड़कर उससे अगली संख्या लिखते हैं तो ध्यान रखें कि अब आगे फिर 1 अंक से जोड़ शुरु होगा और क्रमशः 1, 2, 4, 8 को जोड़ेंगे और जो योग आएगा, उसे लिखेंगे ।

6. प्रथम पंक्ति में भेद की जो संख्या लिखी है, उतनी ही संख्या उस कोष्ठ में भरी जाएगी ।

५ वर्ण का पताका-चक्र

भेद-संख्या		1	5	10	10	5	1
इन्हें जोड़ना है	1	2	4	8	16	32	
		3	6	12	24		
		5	7	14	28		
		9	10	15	30		
		17	11	20	31		
			13	22			

18	23
19	26
21	27
25	29

कोष्ठों में अंक भरना-

कोष्ठ 1- सर्वगुरु 1 ही है, अतः अंक 1 भरा जाएगा । अर्थात् 5 गुरु एक ही है ।

कोष्ठ 2- कोष्ठ 2 में ऊपर 2 लिखा है । अब 2+1= 3 लिखें । उससे नीचे 3+2= 5, उससे नीचे 5+4= 9, फिर 9+8= 17 । ऊपर लिखे अंक 1, 2, 4, 8 क्रमशः जोड़े गए हैं । 5 अंक भरने हैं, अतः 17 पर रुक जावें। कोष्ठ 2 में 1 गुरु कम हो जाता है, साथ ही 1 लघु आ जाता है । अतः 4 गुरु+1 लघु- ऽऽऽऽ। होता है ।

कोष्ठ 3- कोष्ठ में ऊपर 4 लिखा है । 10 अंक भरने हैं । 4 को पिछले 2 से जोड़ें, 4+2= 6, फिर 6 को 1 से जोड़ें- 6+1= 7, फिर 7 को 2 से जोड़ें, 7+2= 9, 9 आ चुका है, अतः 10 संख्या लिखें, अब फिर 1 से जोड़ना शुरू करें- 10+1= 11, फिर 11+2= 13, 13+4= 17, यह आ चुका है, अतः 18 भरा जाएगा । अब फिर 1 से जोड़ना प्रारम्भ करें । 18+1= 19, 19+2= 21, 21+4= 25 । 10 अंक पूरे हो गए । कोष्ठ 3 का अभिप्राय है- 1 गुरु और कम हुआ तथा 1 लघु बढ़ा, अर्थात् 3 गुरु और 2 लघु- ऽऽऽ।।

कोष्ठ 4 - कोष्ठ 4 में ऊपर 8 लिखा है । 10 अंक भरने हैं । 8 को पिछले 4 से जोड़ें- 8 + 4 = 12 । 12 को 1 से जोड़ें- 12 + 1= 13 । चूँकि 13 आ चुका है, इसलिए 14 लें तथा 14 को 1 से जोड़ें- 14 + 1 = 15 । फिर 15 को 2 से जोड़ें- 15 +2 = 17 । 17, 18, 19 आ चुके हैं, अतः 20 लिखा जाएगा। अब 20 + 1 = 21 । 21 आ चुका है, अतः 22 लिखें । फिर 1 से जोड़ना प्रारम्भ करें- 22 + 1 = 23 । फिर 23 + 2 = 25 । 25 आ चुका है, अतः 26 लिखें । फिर 1 से जोड़ प्रारम्भ करें। 26 + 1 = 27। 27 + 2 = 29 । 10 अंक पूरे हो गये । कोष्ठ 4 का अभिप्राय है- 2 गुरु और 3 लघु- ऽऽ।।।

कोष्ठ 5- कोष्ठ 5 में ऊपर 16 लिखा है । 5 अंक भरने हैं । 16 ऊपर लिखा हुआ है । 16 को पिछले 8 से जोड़ें- 16 + 8 = 24 । 24 को पिछले 4 से जोड़ें- 24 + 4 = 28 । 28 को पिछले 2 से जोड़ें- 28 + 1 = 29। चूँकि 25 पहिले आ चुका है, इसलिए 30 लें तथा 30 को पिछले 1 से जोड़ें- 30 + 1 = 31 । 5 अंक पूरे हुए । पांचवें कोष्ठ का अभिप्राय है- 1 गुरु 4 लघु- (ऽ।।।।) ।

कोष्ठ 6- कोष्ठ 6 में ऊपर लिखा है- 32 । एक अंक भरना है । 32 भरा हुआ है । कोष्ठ 6 का अभिप्राय है - सर्वलघु अर्थात् 5 लघु - ।।।।।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि कोष्ठ 1 में सर्वगुरु अर्थात् 5 गुरु, ऽऽऽऽऽ कोष्ठ 2 में 4 गुरु+1 लघु, ऽऽऽऽ।, कोष्ठ 3 में 3 गुरु+2 लघु- ऽऽऽ।।, कोष्ठ 4 में 2 गुरु+3 लघु- ऽऽ।।।, कोष्ठ 5 में 1 गुरु+4लघु-ऽ।।।।, कोष्ठ 6 में सर्वलघु अर्थात् 5 लघु- ।।।।।, इस प्रकार सर्वगुरु से सर्वलघु तक की यात्रा पूरी होती है। नष्ट प्रत्यय से ज्ञात होगा कि 5 वर्णों में कौन सा गुरु होगा और कौन सा लघु ।

मर्कटी चक्र

प्रयोजन- मर्कटी एक बृहत् चक्र है । इसमें यह बताया जाता है कि किसी वर्ण के कितने भेद होते हैं । उनमें कुल कितनी मात्राएं होती हैं । कितने अक्षर होते हैं । उनमें से कितने लघु और कितने गुरु होते हैं । जैसे- यह पूछा जाए कि 3 वर्ण के प्रस्तार लिखो, तो उत्तर दिया जाएगा- ऽऽऽ, ।ऽऽ, ऽ।ऽ, ।।ऽ, ऽऽ।, ।ऽ।, ऽ।।, ।।।, इस प्रकार 3 वर्ण के प्रस्तार के 8 भेद होते हैं । इनमें 36 मात्राएं होती हैं, 24 वर्ण होते हैं, 24 वर्ण में 12 गुरु और 12 लघु होते हैं । यह गणना से ज्ञात होता है ।

विधि- मर्कटी चक्र बनाने के लिए निर्धारित कोष्ठ बनाए जाते हैं । जैसे- 10 वर्ण का मर्कटी-चक्र बनाना है तो 1 से लेकर 10 तक के लिए 10 लकीरें ऊपर से नीचे खीचें । फिर 6 भेद बनाने हैं तो बाएं से दाएं 6 लकीरें खीचें ।

10 वर्ण का मर्कटी-चक्र

वर्ण	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
भेद	2	4	8	16	32	64	128	256	512	1024
मात्रा	3	12	36	96	240	576	1344	3072	6912	15360

अक्षर	2	8	24	64	160	384	896	2048	4608	10240
गुरु	1	4	12	32	80	192	448	1024	2304	5120
लघु	1	4	12	32	80	192	448	1024	2304	5120

चक्र भरने की विधि-

कोष्ठ 1(वर्ण)- 1 से लेकर 10 तक संख्याएं भरें।

कोष्ठ 2 (भेद)- 2 से प्रारम्भ करके दुगुना करते हुए अंक भरें। जैसे 2, 4, 8, 16 आदि। इससे प्रत्येक वर्ण के कितने भेद होते हैं, ज्ञात होता है।

कोष्ठ 4 (अक्षर) - प्रथम और दूसरी पंक्ति के अंको को गुणा करके अंक भरें। वर्ण X भेद = अक्षर। जैसे - 1X2= 2, 2X4 = 8, 3X8 = 24, 4X16= 64 आदि। इससे ज्ञात होता है कि किसी वर्ण के भेदों में कुल कितने अक्षर होते हैं।

कोष्ठ 5 (गुरु)- कोष्ठ 4 का आधा करके क्रमशः गुरु वर्ण भरें। जैसे- 2 का आधा 1 कोष्ठ में भरें। कोष्ठ 2 में 8 का आधा 4, कोष्ठ 3 में 24 का आधा 12 भरें।

कोष्ठ 6 (लघु)- कोष्ठ 4 का आधा करके क्रमशः लघु वर्ण भरें। कोष्ठ 5 वाली संख्याएं कोष्ठ 6 में भी होंगी। जैसे- कोष्ठों में क्रमशः 1, 4, 12, 32 आदि।

कोष्ठ 3 (मात्रा)- कोष्ठ 3 में कोष्ठ 4 और कोष्ठ 5 के अंकों का जोड़ क्रमशः भरा जाएगा। जैसे- 2 + 1 = 3, 8 + 4 = 12, 24 + 12 = 36, 64 + 32 = 96 आदि।

मर्कटी चक्र का लाभ यह है कि इस चक्र के द्वारा तुरन्त बताया जा सकता है कि अमुक वर्ण के प्रस्तार में कितने भेद, कितनी मात्राएं, कितने वर्ण तथा कितने गुरु-लघु होते हैं। जैसे- 5 वर्ण वाले वृत्त के प्रस्तार में चक्र देखकर तुरन्त बता देंगे कि 32 भेद, 240 मात्राएं, 160 अक्षर, 80 गुरु और 80 लघु होते हैं।

एकावली मेरु

एकावली मेरु यह मेरु-प्रस्तार का ही एक भेद है। इसमें कोष्ठ बनाने की विधि में अन्तर है। यह स्तूप की तरह न बनकर सीढ़ी की तरह बनता है। इसमें

कोष्ठ दाईं और बाईं ओर न निकलकर केवल दाईं ओर कोष्ठ बढ़ता है । इसके निर्माण की विधि यह है:-

सबसे ऊपर दो कोष्ठ बनावें । उससे नीचे दाहिनी ओर बढ़ता हुआ 1 कोष्ठ और बनावें । 5 वर्ण के एकावली मेरु के लिए ऊपर से नीचे 5 कोष्ठ बनेंगे । प्रत्येक नीचे वाले कोष्ठ में 1 कोष्ठ दाईं ओर बढ़ा हुआ होगा । बाईं ओर पांचों कोष्ठ एक सीध में रहेंगे । 5 वर्ण का एकावली मेरु इस प्रकार बनेगा ।

5 वर्ण का एकावली मेरु

1 वर्ण	1	1				
2 वर्ण	1	2	1			
3 वर्ण	1	3	3	1		
4 वर्ण	1	4	6	4	1	
5 वर्ण	1	5	10	10	5	1

कोष्ठ भरने की विधि-

बाईं ओर ऊपर से नीचे सब कोष्ठों में 1 अंक भरें । इसी प्रकार दाईं ओर भी सबसे अन्तिम कोष्ठ में ऊपर से नीचे 1 अंक भरें । अन्य सभी कोष्ठों के भरने में यह विधि अपनावें । खाली कोष्ठ भरने के लिए ऊपर का अंक लें और उससे बाईं ओर का अंक लेकर दोनों का जोड़ उस कोष्ठ में भरें । जैसे- 1 वर्ण के मेरु में 1, 1 अंक हैं । 2 वर्ण के मेरु में बीच का कोष्ठ खाली है । उसके ऊपर 1 अंक है और बाईं ओर 1 अंक है, अतः 1 + 1 = 2 भरें । इसी प्रकार 3 वर्ण के कोष्ठ भरें। 2 + 1 = 3, 1 + 2 = 3 । 1 वर्ण के कोष्ठ-3 कोष्ठ खाली हैं । 3 + 1 = 4, 3 + 3 = 6, 1 + 3 = 4 । 5 वर्ण के कोष्ठ में 4 कोष्ठ खाली हैं। उन्हें भरें- 4 + 1 = 5, 6 + 4 = 10, 4 + 6 = 10, 1 + 4 = 5 ।

वर्ण-खंड मेरु

यह भी मेरु-प्रस्तार की एक अन्य विधि है । इसमें एकावली मेरु से कोष्ठ भरने की विधि में अन्तर है तथा इसकी आकृति भी भिन्न है । यह ऊपर से नीचे सीढ़ी की तरह न होकर नीचे से ऊपर की ओर सीढ़ी की तरह बढ़ा हुआ होता है।

6 वर्ण का वर्णखंड मेरु- जितने वर्ण का वर्णखंड मेरु बनाना हो, उतने संख्या में बाएं से दाईं ओर कोष्ठ बनावें । 6 वर्ण के लिए 6 कोष्ठ बनेंगे। उससे नीचे की पंक्ति में एक कोष्ठ कम बनेगा । इसी प्रकार नीचे की पंक्ति में पूर्ववत् एक कोष्ठ कम करते जावें । अन्त में सबसे नीचे केवल 1 कोष्ठ रह जाएगा ।

6 वर्ण का वर्णखंड मेरु

1	1	1	1	1	1
2	3	4	5	6	
3	6	10	15		
4	10	20			
5	15				
6					

कोष्ठ भरने की विधि-

सबसे ऊपर की पंक्ति में सभी 6 कोष्ठों में 1 अंक भरें । बाईं ओर प्रथम पंक्ति में ऊपर से नीचे 1 से 6 संख्या भरें । सबसे नीचे कोष्ठ से बाहर नैर्ऋत्य कोण (S.W, दक्षिण-पश्चिम कोण) में 1 अंक लिखें । आगे अंक इस प्रकार भरें- जो कोष्ठ भरना हो, उससे ऊपर का अंक लें और नीचे के कोष्ठ में बाईं ओर जो अंक हो, दोनों को जोड़कर खाली कोष्ठ में भरें । जैसे- द्वितीय पंक्ति के कोष्ठ में क्रमशः 1+2= 3, 1+3= 4, 1+4= 5, 1+5= 6 भरें । तृतीय पंक्ति 3+3=6, 4+6= 10, 5+10 = 15 । चतुर्थ पंक्ति- 6+4= 10, 10+10= 20 । पंचम पंक्ति- 10+5 = 15 । षष्ठ पंक्ति पहले से भरी है ।

गणना की विधि-

जिस वर्ण का प्रस्तार देखना हो, उस संख्या के ऊपरी कोष्ठ से गणना प्रारम्भ करें और नीचे बाईं ओर का 1 कोष्ठ (नैर्ऋत्य कोण) लेते जावें । अन्त में सबसे नीचे लिखे 1 अंक को लें । जैसे- 6 वर्ण का प्रस्तार- ऊपर छठा कोष्ठ लें। नीचे बाईं ओर का कोष्ठ लें । इसी प्रकार आगे करें । 6 वर्ण का प्रस्तार हुआ- 1, 6, 15, 20, 15, 6, 1 । 5 वर्ण का प्रस्तार- प्रथम पंक्ति पांचवें कोष्ठ से प्रारम्भ करें- 1, 5, 10, 10, 5, 1 । 4 वर्ण का प्रस्तार- चतुर्थ कोष्ठ

से प्रारम्भ करें- 1, 4, 6, 4, 1 । 3 वर्ण का प्रस्तार- कोष्ठ 3 से प्रारम्भ करें- 1, 3, 3, 1 । 2 वर्ण का प्रस्तार- 1, 2, 1 । 1 वर्ण का प्रस्तार- 1, 1 ।

एकावली-मात्रा-मेरु

प्रयोजन- एकावली मात्रा-मेरु भी मात्राओं का प्रस्तार बताता है । यह मात्रा-मेरु से उलटा है । इसमें दाहिनी ओर की प्रथम पंक्ति में सर्वलघु, उसके बाद 1 गुरु, 2 गुरु, 3 गुरु आदि की संख्या होती है । इसमें ऊपर की 2 कोष्ठों का योग नीचे भरा जाता है । इसमें मात्रा मेरु से उलटी प्रक्रिया है । इसमें ऊपर के दूसरे कोष्ठ के अंक को नीचे के दाहिनी ओर आग्नेय कोण, दक्षिण-पूर्व के अंक के साथ जोड़कर नीचे लिखते हैं ।

9 मात्रा (5 कोष्ठ) वाला एकावली मात्रामेरु

निर्माण-विधि- पहले एक चौकोण कोष्ठ बनावें । उससे नीचे उसी सीध में उतने ही बड़े 2 कोष्ठ बनावें । ये 2 कोष्ठ ऊपर वाले से 1 कोष्ठ निकले हुए हैं। उसके नीचे उसी सीध में 3 कोष्ठों की 2 पंक्ति बनावें । ये ऊपर से 1 कोष्ठ निकले हुए हैं । इसी प्रकार 1 कोष्ठ बढ़ाते हुए 4 कोष्ठ और 5 कोष्ठ वाली 2 पंक्तियां बनावें ।

मात्रा संख्या						कोष्ठ संख्या
1	1					1
2	1	1				2
3	1	2				
4	1	3	1			3
5	1	4	3			
6	1	5	6	1		4
7	1	6	10	4		
8	1	7	15	10	1	5
9	1	8	21	20	5	

कोष्ठ भरने की विधि- प्रत्येक पंक्ति के पहले कोष्ठ में 1 अंक भरें । नीचे की जो पंक्तियां हैं, उन्हें इस प्रकार भरें । 2-2 कोष्ठ वालों में दाहिनी ओर ऊपर के कोष्ठ में 1 अंक भरें और दूसरी पंक्ति में क्रमशः 2, 3, 4, 5 भरें ।

शेष कोष्ठों में अंक भरने की यह विधि है। ऊपर के 2 कोष्ठ लें। ऊपर के कोष्ठ के अंक को नीचे के दाहिनी ओर के अंक से जोड़कर कोष्ठ भरें। जैसे- 3 मात्रा का कोष्ठ- 1+1= 2 । 4 मात्रा का कोष्ठ- 1+2= 3 । 5 मात्रा का कोष्ठ- 1+3= 4। 6 मात्रा का कोष्ठ- 1+4= 5, 3+3= 6 । 7 मात्रा का कोष्ठ- 1+5= 6, 4+6= 10, 3+1= 4 । इसी प्रकार 8 और 9 मात्रा के कोष्ठ भरें।

लघु-गुरु जानने की विधि-

प्रथम कोष्ठ सर्वलघु की संख्या बताता है । द्वितीय कोष्ठ 1 गुरु की संख्या, तृतीय कोष्ठ द्विगुरु की संख्या और चतुर्थ कोष्ठ त्रिगुरु की संख्या आदि। इस प्रकार 7 मात्रा का प्रस्तार देखने से ज्ञात होता है कि इसमें सर्वलघु 1, एक गुरु 6, द्विगुरु 10 और त्रिगुरु 4 होते हैं । मात्रा-मेरु में बाईं-ओर से सर्वलघु, 1 गुरु आदि बताए जाते है, इसमें दाहिनी ओर से । यही दोनों में अन्तर है ।

खंड-मेरु

प्रयोजन- यह भी मात्रा-मेरु के तुल्य सर्वलघु, एक गुरु, द्विगुरु आदि बताने की विधि है । इसकी विधि मात्रामेरु और एकावली मात्रा मेरु से सरल है। इसमें कोष्ठ भी कम बनते हैं ।

निर्माण-विधि- जितनी मात्रा का विवरण ज्ञात करना हो, उससे एक अधिक कोष्ठ बाएं से दाएं बनावें । जैसे- 7 मात्रा के लिए 8 कोष्ठ बनावें । उससे नीचे की पंक्ति में 2 कोष्ठ कम बनावें । तीसरी पंक्ति में 2 कोष्ठ और कम कर दें। आगे भी 2 कोष्ठ नीचे कम करते जावें । जब 1 या 2 कोष्ठ रहे, रुक जावें ।

7 मात्रा का खंड मेरु

1	1	1	1	1	1	1	1
1	2	3	4	5	6		
1	3	6	10				
1	4						

कोष्ठ भरने की विधि- सबसे ऊपर वाली पंक्ति में प्रत्येक कोष्ठ में 1 अंक भरें । बाईं ओर भी प्रथम पंक्ति में ऊपर से नीचे 1 अंक भरे, शेष कोष्ठ इस प्रकार भरें । खाली कोष्ठ के ऊपर वाले अंक को बाईं ओर (नैर्ऋत्य कोण) के अंक से जोड़कर प्राप्त अंक उसमें भरें । जैसे- दूसरी पंक्ति में 1+1= 2,

1+2=3, 1 + 4 = 5, 1 + 5 = 6 । तृतीय पंक्ति- 2 + 1 = 3, 3+ 3 = 6, 4 + 6 = 10 । चतुर्थ पंक्ति- 3 + 1 = 4 ।

लघु-गुरु जानने की विधि- प्रत्येक पंक्ति के अन्तिम अंक गिने जाएंगे। 7 मात्रा के लघु-गुरु- 1, 6, 10, 4 । 1 सर्वलघु, 6 एक गुरु, 10 द्विगुरु और 4 त्रिगुरु । 6 मात्रा के लघु-गुरु- एक कोष्ठ कम करते जाएं, 1, 5, 6, 1 । 5 मात्रा के लघु गुरु-2 कोष्ठ छोड़कर गिनें- 1, 4, 3 । 4 मात्रा के लघु-गुरु, 3 कोष्ठ छोड़कर गिने- 1, 3, 1 । इसी प्रकार अन्य मात्राओं की गणना करें ।

मात्रा पताका

प्रयोजन- मात्रा-पताका का मात्रा-प्रस्तार में वही उपयोग है, जो वर्ण-पताका का वर्ण-प्रस्तार में । इसमें मात्रा-प्रस्तार के भेदों का ठीक स्थान बताया जाता है । जैसे- 7 मात्रा का प्रस्तार है- 4, 10, 6, 1 । 4 त्रिगुरु, 10 द्विगुरु, 6 एक गुरु और 1 सर्वलघु । इसमें यह बताया जाएगा कि त्रिगुरु 4 कौन से हैं, द्विगुरु 10 कौन से हैं, आदि ।

पताका बनाने की विधि- पताका बनाने की 2 विधियां हैं । दोनों विधियां संक्षेप में दी जा रही हैं ।

प्रथम विधि- (7 मात्रा की पताका)

1. मात्रा-मेरु के अनुसार जितने अंक हों, उतने कोष्ठ बनावें । जैसे- 7 मात्रा के 4 अंक हैं, अतः 4 कोष्ठ बाएं से दाएं बनावें ।

2. इनमें 7 मात्रा-प्रस्तार के अंक क्रमशः भरें । जैसे- 4, 10, 6, 1 ।

3. इन 4 अंकों के लिए ऊपर से नीचे 4 लकीरें खींचे । इनमें तदनुसार 4, 10, 6, 1 अंक भरे जाएंगे ।

4. 7 मात्रा के लिए 7 सूची के अंक नोट करें, पूर्व 2 अंकों का जोड़ आगे की संख्या होगी । जैसे- 1, 2, 3, 5, 8, 13, 21 । ये सात अंक हैं। अन्तिम संख्या 21 है । उसमें से ही 1, 2, 3 आदि संख्याएं घटाई जाएंगी ।

5. सबसे दाईं ओर का कोष्ठ सर्वलघु की संख्या बताता है । जैसे- 7 मात्रा- पताका में 1 सर्वलघु है, 6 एक गुरु हैं, 10 द्विगुरु हैं और 4 त्रिगुरु । बाईं ओर 1-1 गुरु की संख्या बढ़ती जाती है ।

6. एक गुरु वाले कोष्ठ में सूची के अंक 1, 2, 3 आदि क्रमशः एक-एक 21 में से घटाए जाएंगे । द्विगुरु वाले कोष्ठ में 2-2 अंकों का योग क्रमशः

21 में से क्रमशः घटाया जाएगा। जैसे- 1+2+3, 1+3+5, 1+3+8 आदि।

7. यह स्मरण रखें कि जो अंक एक बार आ एग हैं, वे दुबारा नहीं भरे जाएंगे। उनसे अगली संख्या भरी जाएगी।

सात मात्रा की पताका

त्रिगुरु	द्विगुरु	एक गुरु	सर्वलघु
4	10	6	1
1	3	8	21
2	4	13	
4	6	16	
9	7	18	
	10	19	
	11	20	
	12		
	14		
	15		
	17		

कोष्ठ भरने की विधि-

सात मात्रा की पताका है, अतः 7 सूची के अंक अलग से नोट करके रखें। ये हैं- 1, 2, 3, 5, 8, 13, 21 । 1, 2, 3 आदि क्रमशः 21 में से घटावें।

कोष्ठ 1 - बाईं ओर से प्रारम्भ करें। सर्वलघु 1- 21 है, उसे भरें।

कोष्ठ 2 - नीचे से ऊपर चलें। 21 - 1 = 20, 21 - 2 = 19, 21 - 3 = 18, 21 - 5 = 16, 21 - 8 = 13, 21 - 13 = 8 ।

कोष्ठ 3 - 21 में से 2-2 अंकों का योग घटेगा। 21- (1 + 2) = 18। 18 आ गया है, अतः उसे छोड़ दें। 21- (1 + 3) = 17 । 21- (1+ 5) = 15। फिर 21- (2 + 5) = 14, फिर 21- (3 + 5) = 13 । 13 आ गया है, अतः 12 रखें। फिर 21 (5 + 5) = 11, आदि भरें।

कोष्ठ 4- त्रिगुरु वाला कोष्ठ- नीचे से चलें- 21 - (1 + 3 + 8) = 9, 21 - (1 + 3 + 13) = 4 । 21 - (1 + 5 + 13) = 2 आदि ।

द्वितीय विधि (7 मात्रा की पताका)

1. ऊपर से नीचे 7 कोष्ठ बनावें । उनमें 1-1 कोष्ठ छोड़कर सर्वलघु, एकगुरु आदि की संख्या 1, 6, 10, 4 भरें ।

2. फिर ऊपर से नीचे एक और कोष्ठ बनावें । इनमें क्रमशः नीचे से ऊपर 7 सूची के अंक 1, 2, 3, 5, 8, 13, 21 भरें ।

3. फिर बाएं से दाएं एक गुरु 6 के सामने 6 कोष्ठ बनावें । द्विगुरु 10 के सामने 10 कोष्ठ बनावें और त्रिगुरु 4 के सामने 4 कोष्ठ बनावें ।

7 मात्रा की पताका

सर्वलघु	1	21									
		13									
एकगुरु	6	8	13	16	18	19	20				
		5									
द्विगुरु	10	3	5	6	7	10	11	12	14	15	17
		2									
त्रिगुरु	4	1	2	4	9						

कोष्ठ भरने की विधि-

1. ऊपर से नीचे चलें । ऊपर से नीचे 7 कोष्ठ हैं । इनकी प्रथम दो पहले से भरी हैं । प्रथम पंक्ति-सर्वलघु 21 भरी है । तृतीय पंक्ति एक गुरु भरनी है । पांचवीं द्विगुरु और सातवीं पंक्ति भी भरनी है ।

2. **तृतीय पंक्ति**- एक गुरु 6 कोष्ठ भरने हैं । 21 में से क्रमशः 13, 8, 5, 3, 8, 1 घटावें और दाहिनी ओर लिखते जावें । जैसे- 21-13= 8, 21-8= 13, 21-5= 16, 21-3= 18, 21-2= 19, 21-1= 20 ।

3. **पांचवीं पंक्ति**- द्विगुरु । 10 कोष्ठ भरने हैं । अब केवल एक गुरु वाली लाइन में से अंक घटाए जाएंगे । 10 अंक तक भरने हैं । ऊपर से नीचे- 8 - 5 = 3 । आगे केवल 3, 2, 1 अंक ही घटावें । 8 - 3 = 5 । 8- 2 = 6 । 8 -1 = 7 । 13 - 3 = 10 । 13 - 2 = 11 । 13 - 1 = 12 । 16 - 3 = 13 ऊपर आ गया है , अतः छोड़ें । 16 - 2 = 14 । 16 - 1 = 15 । फिर 18 - 1 = 17 ।

4. सातवीं पंक्ति- त्रिगुरु । 4 कोष्ठ भरने हैं । अब केवल द्विगुरु वाली पंक्ति से 3, 2, 1 अंक घटेंगे । 3-2= 1 । 5-3= 2 । 5-2= 3, आ गया है, 5-1= 4 । 6-3= 3, 6-2= 4, ये अंक आ गए हैं । इसी प्रकार 7 में से 3, 2, 1 अंक घटावें, 4, 5, 6 आ गए हैं । 10-2= 8 आ गया है । अतः 10-1= 9 ।

यह विधि प्रथम विधि से सरल है ।

मात्रा-मर्कटी

प्रयोजन- यह मात्रा-संबन्धी ज्ञान के लिए बृहत् सारणी (बड़ा चार्ट) है। इसमें वर्ण-मर्कटी के तुल्य भेद, गुरु, लघु और वर्णों आदि का पूर्ण विवरण है। इसको देखकर तुरन्त बताया जा सकता है कि 11 मात्रा तक के कितने भेद, कितने गुरु, कितने लघु आदि होंगे ।

कोष्ठ बनाने की विधि- बाएं से दाएं 11 कोष्ठ बनावें । ऊपर से नीचे सात पंक्ति बनावें । सात पंक्तियों से पहले क्रमशः ये लिखें- 1 मात्रा (कला), 2. भेद- (भेदों की संख्या), 3. सर्वकला संख्या, 4. गुरु-संख्या, 5. लघु- संख्या, 6 वर्ण-संख्या, 7. पिंड । प्रथम पंक्ति में क्रमशः 1 से 11 तक संख्या लिखें ।

११ मात्रा की मर्कटी

1. मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
2. भेद	1	2	3	5	8	13	21	34	55	89	144
3. सर्वकला	1	49	20	40	78	147	272	495	890	15	84
4. गुरु	0	1	2	5	10	20	38	71	130	235	420
5. लघु	1	2	5	10	20	38	71	130	235	420	744
6. वर्ण	1	3	7	15	30	58	109	201	365	655	1164
7. पिण्ड	1	2	4।।	10	20	39	73।।	136	247।।	445	792

कोष्ठ भरने की विधि-

कोष्ठ 1- 1 से 11 तक अंक क्रमशः भरें ।

कोष्ठ 2- 1, 2, 3, 5, 8 आदि भरे । पूर्व की 2 संख्याओं का जोड़ आगे भरें ।

कोष्ठ 3- पंक्ति 1 और 2 का गुणा भरें । जैसे- 3X3= 9 । 4X5=

कोष्ठ 4 - पहले शून्य भरें । फिर 1 लिखें । आगे प्रत्येक संख्या को दुगुना करके ऊपर के अंक में से घटाकर अगले कोष्ठ में भरें । जैसे- 1X2= 2 को ऊपर के 4 में से घटाया, 4-2= 2 । 2X2= 4 को 9-4 = 5 भरें । इसी प्रकार प्रत्येक संख्या को दुगुना करके ऊपर के अंक में से घटावें ।

कोष्ठ 5 - कोष्ठ 4 के अंक को दुगुना करके कोष्ठ 3 में से घटावें । जैसे- 2X2= 4, 9-4= 5 । 5X2= 10, 20-10= 10 । 10X2= 20, 40-20= 20 आदि ।

कोष्ठ 6 - कोष्ठ 4 और 5 का जोड़ भरें । 1 + 2 = 3 । 2 + 5 = 7 । 5 + 10 = 15 आदि ।

कोष्ठ 7 - कोष्ठ 3 सर्वकला का आधा करें । 4 का आधा 2, 9 का आधा 4।। आदि ।

प्रस्तार के विभिन्न मत

प्रस्तार विधि इतनी प्रसिद्ध हुई कि इसके देश और विदेश में अन्य तीन मत प्रचलित हुए हैं । इनके नाम हैं- 1. जैन मत, 2. यवन मत, 3. भरत मत। अब तक जो विधि वर्णन की गई है, वह पिंगल मत या नागमत है । पिंगल का ही पूरा नाम पिंगल नाग था । इन चारों में सिद्धान्त एक ही है, केवल विधि-क्रम का भेद है । तीनों मतों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है ।

जैन-मतानुसार प्रस्तार

जैन मतानुसार प्रस्तार सर्वगुरु से ही प्रारम्भ करते हैं । भेद यह है कि पिंगल मत में बाईं ओर से गुरु के नीचे लघु लिखते हैं और दाईं ओर के चिह्न जैसे के तैसे उतार देते हैं । बाईं ओर की कमी को गुरु लिखकर पूरी करते हैं, किन्तु जैनमत में दाहिनी ओर के गुरु के नीचे लघु लिखते हैं और बाईं ओर के चिह्न वैसे ही उतारते हैं और दाहिनी ओर की कमी को गुरु लिखकर पूरा करते हैं।

3 वर्ण का प्रस्तार	**4 मात्रा का प्रस्तार**	**5 मात्रा का प्रस्तार**
SSS	SS	SSI
SSI	SII	SIS
SIS	ISI	SIII

ऽ।।	।।ऽ	।ऽऽ
।ऽऽ	।।।	।ऽ।।
।ऽ।		।।ऽ।
।।ऽ		।।।ऽ
।।।		।।।।।

गुरु से प्रारम्भ करेंगे और समापन लघु से । विषम मात्रा में एक लघु मात्रा अधिक पड़ती है, उसका लघु चिह्न दाहिनी ओर अन्त में लिखना चाहिए । 3 वर्ण के प्रस्तार में दाईं ओर से प्रथम पंक्ति में ऊपर से नीचे एक गुरु-एक लघु है। दूसरी पंक्ति में 2 गुरु-2 लघु और तीसरी पंक्ति में 4 गुरु-4 लघु हैं । इसी प्रकार 4 वर्ण के प्रस्तार में चतुर्थ पंक्ति में 8 गुरु-8 लघु होंगे ।

यवन-मतानुसार प्रस्तार

यवन मत में प्रस्तार सर्वलघु से प्रारम्भ किया जाता है और समापन सर्वगुरु से किया जाता है । इसमें दाहिनी ओर से प्रारम्भ किया जाता है । अर्थात् दाईं ओर के लघु के नीचे गुरु लिखेंगे और बाईं ओर के शेष-चिह्न वैसे ही उतार देंगे। जो कमी होगी उसे दाहिनी ओर लघु चिह्न लिखकर पूरा करें ।

3 वर्ण का प्रस्तार	**4 मात्रा का प्रस्तार**	**5 मात्रा का प्रस्तार**
।।।	।।।।	।।।।।
।।ऽ	।।ऽ	।।।ऽ
।ऽ।	।ऽ।	।।ऽ।
।ऽऽ	ऽऽ	।ऽ।।
ऽ।।		।ऽऽ
ऽ।ऽ		ऽ।।।
ऽऽ।		ऽ।ऽ
ऽऽऽ		ऽऽ।

यहाँ दो बातों पर ध्यान दें -

1. यवन मत के मात्रा-प्रस्तार में ध्यान रखें कि जब किसी पंक्ति के दाहिनी ओर एक ही लघु होता तो उसके नीचे गुरु नहीं लिखा जाएगा, अपितु उसके बाईं ओर के गुरु को लांघ कर जो लघु होगा, उसके नीचे गुरु लिखा जाएगा तथा

उसके बाईं ओर के चिह्न जैसे के तैसे उतार कर दाहिनी ओर लघु-चिह्नों से मात्रा पूरी करें । जैसे 5 मात्रा के प्रस्तार में तीसरी पंक्ति के नीचे चौथी पंक्ति।

2. दाईं ओर दो लघु होंगे तो उनके नीचे एक गुरु लिखा जाएगा । जैसे- 5 मात्रा के प्रस्तार में चौथी पंक्ति के नीचे पांचवीं पंक्ति ।

पिंगल मत के प्रस्तार का उलटा यवन-मत का प्रस्तार है । यदि कागज को उलटकर देखें तो ज्ञात होगा कि यह पिंगल का ही क्रम है ।

भरत-मतानुसार प्रस्तार

जिस प्रकार पिंगल मत का उलटा यवन-मत है, उसी प्रकार जैन-मत-प्रस्तार का उलटा भरत-मत-प्रस्तार है ।

(क) वर्ण-प्रस्तार

सर्वलघु से प्रारम्भ करें और सर्वगुरु पर समाप्त करे । सबसे पहले सर्वलघु और बाईं ओर से लघु के नीचे गुरु लिखें । शेष चिह्नों को जैसे का तैसा उतारें। बाईं ओर की कमी को लघु चिह्नों से पूरी करें ।

चार वर्ण का प्रस्तार (16 भेद) -

।।।।	।SS।	।।SS
S।।।	SSS।	S।SS
।S।।	।SSS	।SSS
SS।।	S।।S	SSSS
।।S।	।S।S	
S।S।	SS।S	

सर्वलघु से प्रारम्भ करके सर्वगुरु पर समाप्त करें ।

(ख) मात्रा-प्रस्तार

पहले सर्वलघु लिखो । बाईं ओर से प्रस्तार प्रस्तार करो । बाईं ओर पंक्ति के प्रारम्भ में जो लघु हो, उसे छोड़ दें, उसके दाहिनी ओर जो लघु हो, उसके नीचे गुरु लिखें । दाहिनी ओर के चिह्न जैसे के तैसे उतारें । मात्रा-संख्या पूरी करने के लिए बाईं ओर लघु चिह्न लिखें ।

4 मात्रा का प्रस्तार	5 मात्रा का प्रस्तार	
।।।।	।।।।।	ऽऽ।
ऽ।।	ऽ।।।	।।।ऽ
।ऽ।	।ऽ।।	ऽ।ऽ
।।ऽ	।।ऽ।	।ऽऽ
ऽऽ		

विषम संख्या के प्रस्तार में जब अन्त में सर्वगुरु आवे और उसके बाईं ओर एक लघु हो, तब प्रस्तार समाप्त समझें।

***

छन्दःसूत्रम्

सूत्रानुक्रमणी

(सूचना- अंक पृष्ठ-बोधक हैं ।)

***

छन्दोऽनुक्रमणी

(सूचना- अंक पृष्ठ-बोधक हैं ।)

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी कृत महत्त्वपूर्ण भाषाशास्त्रीय ग्रन्थ

अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन

अर्थविज्ञान भाषाशास्त्र का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अंग है। भारतीय वैयाकरणों ने इसको दार्शनिक रूप दिया है। मूर्धन्य वैयाकरण पतंजलि ने महाभाष्य में और भर्तृहरि ने वाक्यपदीय ग्रन्थ में इस विषय का बहुत सूक्ष्म विवेचन किया है। भर्तृहरि का वाक्यपदीय अर्थविज्ञान का प्रौढ़ ग्रन्थ है। यह भाव-गाम्भीर्य के कारण अति-दुरूह माना जाता है। प्रस्तुत ग्रन्थ में शब्द, अर्थ, शब्दार्थ-सम्बन्ध, शब्दशक्ति, पद और पदार्थ, वाक्य और वाक्यार्थ, अर्थ विकास तथा स्फोट सिद्धान्त का सरल और सुबोध भाषा में गूढ़ार्थ स्पष्ट किया गया है।

भारतीय काव्यशास्त्रियों, दार्शनिकों और वैयाकरणों के शब्दार्थ-सम्बन्ध, शब्दशक्ति और स्फोट-सिद्धान्त पर अपने मन्तव्यों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रयत्न किया गया है कि सभी साहित्यशास्त्रियों और दार्शनिकों के विचारों को उचित स्थान दिया जाय। साथ ही उनका आलोचनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया जाय। इस तुलनात्मक अध्ययन के कारण ग्रन्थ का महत्त्व बहुत अधिक बढ़ गया है।

भाषा की सरलता, सुबोधता, गूढार्थ का स्पष्टीकरण और तात्त्विक विवेचन ग्रन्थ की उपादेयता सिद्ध करता है। अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन विषय पर यह सबसे अधिक प्रामाणिक ग्रन्थ है।

डॉ० द्विवेदी भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र के मूर्धन्य विद्वानों में एक हैं। डॉ० द्विवेदी ने इस ग्रन्थ के द्वारा अपनी शास्त्रीय सूक्ष्म दृष्टि और गाम्भीर्य चिन्तन का मूर्तरूप प्रस्तुत किया है। आशा है यह ग्रन्थ भाषाविज्ञान-प्रेमी सभी विद्वानों का उचित आदर प्राप्त करेगा।

[पृष्ठ संख्या-404]

भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र

इसमें भाषाशास्त्रीय नवीनतम अनुसंधानों का समन्वय करते हुए भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र का प्रामाणिक एवं सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसमें भाषा, ध्वनि-विज्ञान, पद-विज्ञान, वाक्य-विज्ञान, अर्थविज्ञान, विश्व की समस्त भाषाओं का आकृतिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण, भारोपीय परिवार, भारतीय आर्यभाषाएँ, स्वनिम, पदिम, रूपिम, आर्थिक, स्वनिमविज्ञान, भाषाशास्त्र का इतिहास एवं लिपि का इतिहास आदि विषयों का प्रामाणिक विवेचन हुआ है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय में प्राप्त भाषाशास्त्रीय तथ्यों का संग्रह करते हुए भाषाशास्त्र की आधारशिला पाणिनीय व्याकरण का विवेचन भी किया गया है। पुस्तक सभी विश्वविद्यालयों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लिखी गई है।

[पृष्ठ संख्या-568]

***